मुद्रक—श्री अपूर्वकृष्ण वसु,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस-ब्रांच

उपक्रम

राम बनावै तो बनि जावै।
बिगरी बनत-बनत बनि जाय॥

—जगनिक।

महोबे के राजदरबार में आल्हा और ऊदल नाम के दो सहोदर भाई थे जो अपनी वीरता, अदम्य उत्साह और अनुपम साहस के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। वे दोनों बारहवीं शताब्दी में हुए हैं। उनके वीरोचित कार्यों का एक गीत-काव्य में वर्णन कर उनकी कीर्त्ति को अमर बनाने का श्रेय राजकवि जगनिक को है।

जगनिक* महोबे के तत्कालीन राजा परमालदेव के दरबारी कवि थे। पृथ्वीराजरासो के रचयिता चन्दबरदाई इनके समकालीन थे। चन्द ने अपने रासो में जगनिक की प्रशंसा की है। यद्यपि चन्दबरदाई ने भी अपने रासो में 'आल्हाखण्ड' दिया है, तथापि रासो की रचना डिङ्गल भाषा में होने के कारण उनका बनाया आल्हाखण्ड उतना सर्व-प्रिय न हो सका, जितना कि जगनिक का आल्हाखण्ड। जगनिक की रचना सरल भाषा में होने के कारण एक साधारण बुद्धिवाला व्यक्ति भी उसे अच्छी तरह समझ सकता है। एक समय हमारे इस प्रान्त में जगनिक के आल्हाखण्ड का इतना प्रचार था कि कवि लोग अल्हैतों से स्पर्द्धा करने लगे थे। ऐसे कवियों में माखन नमक एक कवि थे, जिन्होंने कहा है—

वेद के पढ़ैया को अढ़ैया को न जोग लागै
आल्हा के गवैया को रुपैया और खानो है।

---

* जगनिक का जन्म संवत् ११२४ वि० में हुआ था।

जगनिक के इस काव्य का प्रचार लिपिबद्ध नहीं, बल्कि मौखिक था। अतः परवर्ती लोगों ने मूल रचना में क्षेपकों की इतनी भरमार की कि एक आधुनिक लेखक को लिखना पड़ा—

"जगनिक के काव्य का कहीं पता नहीं है, पर उसके आधार पर प्रचलित गीत हिन्दी-भाषा-भाषी प्रान्तों के गाँव-गाँव में सुनाई पड़ते हैं। ये गीत आल्हा के नाम से प्रसिद्ध हैं और बरसात में गाये जाते हैं। × × मेघ-गर्जन के बीच में किसी अल्हैत के ढोल के गम्भीर घोष के साथ यह वीर हुङ्कार सुनाई देगी—

बारह बरिस लै कूकर जीयें,
औ तेरह लै जियें सियार।
बरिस अठारह छत्री जीयें
आगे जीअन को धिक्कार॥"

लेखक ने अपने इस कथन के सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं दिया कि वह क्योंकर ऐसा मानता है। जगनिक की कृति का गाँव-गाँव में धूम-धाम से प्रचार होने पर भी उसके काव्य का पता कहीं क्यों नहीं है?

इस गीतकाव्य के सर्वप्रिय होने में प्रायः सभी लोग एकमत हैं। किन्तु खेद तो तब होता है जब हम देखते हैं कि भारतीय बड़े-बड़े विद्वानों ने इसकी उपेक्षा की और जगनिक के नाम से उपलब्ध काव्य की रक्षा के लिए कुछ भी नहीं किया। अनेक धन्यवाद है फर्रुखाबाद के एक भूतपूर्व सेटिलमेंट आफ़िसर मि० चार्ल्स इलियट को, जिसने सर्वप्रथम इस प्रान्त के इस लोकप्रिय गीतकाव्य की ओर यथेष्ट ध्यान दिया। मि० इलियट ने गाँठ का धन लगा कितने ही अल्हैतों को जमा किया और उन सबकी सहायता से आल्हाखण्ड की एक पुस्तक लिखवाई। फिर इस वीर काव्य का अँगरेज़ी में अनुवाद कर, भारतवासियों के वीर-पूजा-प्रेम के निदर्शन-स्वरूप, उसे विलायत भेजा। कहना पड़ता है कि अँगरेज़ों की गुण-ग्राहकता से केवल यही एक ग्रन्थ नहीं, प्रत्युत अनेक ग्रन्थ सुरक्षित रह सके हैं।

अन्त में हमें दावे के साथ कहना पड़ता है कि जो लोग इस ग्रन्थ को उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे हैं, वे यदि इस काव्य के कथानक ही को एक बार आद्यन्त मन लगाकर पढ़ने का कष्ट उठावें तो वे इस काव्य का केवल ऐतिहासिक महत्त्व ही नहीं, प्रत्युत १२वीं शताब्दी के भारत-वासियों की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियों की जानकारी सहज ही में प्राप्त कर सकेंगे। तभी उनको इस काव्य की उपादेयता और इसका महत्त्व भी अपने आप प्रतीत हो जायगा।

आल्हा के कथानक को पढ़ने से जो बातें सहज में मालूम पड़ सकती हैं, वे संक्षेप में ये हैं:—

१—बारहवीं शताब्दी में बलख बुखारे तक हिन्दू-नरेश शासन करते थे।

२—इस काल में प्रत्येक क्षत्रिय की उत्कृष्टता की कसौटी उसका बल, वीर्य और पराक्रम था।

३—वीरता के मद से मस्त तत्कालीन क्षत्रिय नरेशों के सामाजिक कृत्य विवाह आदि और धार्मिक कृत्य गङ्गा-स्नान आदि भी पारस्परिक युद्ध हुए बिना पूर्ण नहीं होते थे।

४—अपने षड्यन्त्रों की सफलता के लिए तत्कालीन राजा लोगों के निकट शपथ और प्रतिज्ञा-पालन का मूल्य एक कानी कौड़ी भी न था।

५—माहिल ने तो शपथ की विडम्बना पराकाष्ठा को पहुँचा दी थी। आल्हा के हाथ से ऊदल का वध करवाने के लिए माहिल ने अपने पुत्र की झूठी सौगन्द खाई। विवाहों के अवसरों पर वर पक्षवालों का अनिष्ट करने को झूठी गङ्गा उठाना कोई बात ही न थी।

६—तत्कालीन युद्ध-पद्धति नियमबद्ध था। युद्धों में कहीं-कहीं तन्त्र-विद्या से भी काम लिया जाता था। उन दिनों तन्त्र-विद्या का इतना जोर था कि राजा लोग देवी के सामने अपने पुत्र और भतीजे का

अपने हाथों से गला काटकर देवी की प्रसन्नता सम्पादन करने तक में ज़रा भी सङ्कोच नहीं करते थे।

७—उस युग में भी वायुयान थे, किन्तु उनका नाम "उड़न-खटोला" था।

८—बारहवीं सदी में यह देश धन-धान्य से परिपूर्ण था। अति-शयोक्ति के लिए पर्याप्त छूट देने पर भी कहना पड़ेगा कि प्रत्येक राजकीय विवाहोपलक्ष्य में लाखों ही के मूल्य के आभूषणादि नेगियों को और अपार धन अपाहिजों तथा भिखमङ्गों को बाँट देना एक साधारण बात थी।

९—यद्यपि इस काल के युद्धों में तोपों से काम लिया जाता था, तथापि अन्तिम फ़ैसला तलवार ही करती थी। इस काल में युद्धों में काम करनेवाले हाथियों और घोड़ों को भी युद्धोपयोगी शिक्षा दी जाती थी। शत्रु द्वारा घेर लिये जाने पर हाथी या हथिनी का सूँड़ में ज़ंजीर दे दी जाती थी। ज़ंजीर को वह ऐसी सफ़ाई से घुमाता था कि बड़े-बड़े योद्धा ज़ंजीर की मार से घबरा जाते थे।

१०—वह काल वीरत्व-प्रधान था। अतः तेली, तमोली, बारी आदि निम्नजातियों के लोग भी रणाङ्गण में बड़ी बहादुरी दिखलाया करते थे; किन्तु इनके सम्पर्क से तत्कालीन नरेशों का नैतिक आदर्श बहुत बिगड़ गया था।

११—दुष्ट और पल्ले दर्जे के चुग़लख़ोर माहिल की सफलताओं से पता चलता है कि इस काल में "मूर्ख और शङ्ख दूसरे की फूँक से बजते हैं" की प्रसिद्ध लोकोक्ति पूर्ण रूप से चरितार्थ होती थी। माहिल की कपट-चाल को ताड़ सकना कठिन था। उसके कपटी स्वभाव का परिचय अनेक बार पाकर भी राजा लोग उसकी बातों में आ जाया करते थे। इससे जान पड़ता है कि उस काल के क्षत्रिय वीर और साहसी अवश्य थे, किन्तु साथ ही उनमें गाँठ की बुद्धि का सर्वथा अभाव था। यही

कारण था कि वे अपने सहचर तेली-तमोली के बहकावे में आकर अपने आत्मीयों और निकट सम्बन्धियों से भी झगड़े कर बैठते थे।

१२—विवाह के पूर्व वर-कन्या के जन्मपत्र नहीं मिलाये जाते थे। वर की वीरता ही विवाह की योग्यता की परख थी।

१३—उस काल में युद्ध की लालसा प्रत्येक व्यक्ति में अतिमात्रा में थी। यहाँ तक कि बारात आने की सूचना स्वरूप 'ऐपनवारी' देकर वर पक्ष का बारी, कन्या पक्षवालों से अपना नेग माँगता था :—

'चलै सिरोही यहँ द्वारे पर,
औ बहि चलै रकत की धार।'

१४—विवाहादि आनन्दवर्द्धक महोत्सव आनन्दपूर्वक सुसम्पन्न होना चाहिए; किन्तु इस युग में ऐसे महोत्सवों के अवसरों पर भी दोनों पक्षों द्वारा निःसङ्कोच भाव से नर-संहार की वीभत्स रीति पूरा हुए बिना नहीं रहती थी। युद्ध के दुर्व्यसन का कुपरिणाम इसको छोड़ और हो ही क्या सकता था?

१५—जो मुसलमान इस काल में हिन्दू राजाओं के दरबारों में थे, वे उस राजा के परम शुभचिन्तक, उत्साह बढ़ानेवाले और गाढ़े समय में उपयुक्त साहाय्य देते हुए, इस वीर काव्य में देख पड़ते हैं। सैयद तालन या ताला सैयद ने अपने सत्य व्यवहार से महोबे के रनवास तक में अपने लिए अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया था। महारानी मल्हना किसी विकट समस्या के उपस्थित होने पर ताला सैयद से परामर्श लेना आवश्यक समझती थी।

१६—महोबे के आल्हा-ऊदल ने वीरता में केवल अपने ही नाम उजागर नहीं किये थे, प्रत्युत उनके कारण समस्त महोबेवालों की वीरता में प्रसिद्धि थी। कवि ने लिखा है :—

"बड़े लड़ैया महुबेवारे
इनते हारि गई तरवारि।"

कुछ इने-गिने सभ्यंमन्य लोगों ने सभ्यता की झूठी शान में अकड़ भले ही आल्हा काव्य न सुना हो, किन्तु जो इसे किसी कुशल अल्हैत से थोड़ा भी सुन लेता है, वह शर्मा-शर्मी भले ही ऐसी महफ़िल में बहुत देर न बैठे, परन्तु उसका अन्तरात्मा वहाँ से उठने को नहीं चाहता। क्योंकि इस काव्य के प्रत्येक पद में वीर रस ठूँस-ठूँसकर भरा हुआ है। रही अतिशयोक्ति की बात, सो तो काव्य-मर्मज्ञों के निकट यह काव्य का एक अलङ्कार समझा जाता है।

फलतः कहना पड़ता है कि आल्हा-काव्य अपने श्रोताओं में वीर-भाव को जगाता है, उनको वीरता का महत्त्व बतलाता है और प्रत्येक श्रोता को वीर बनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

अतः हमने इस अनुपम काव्य के कथानक को सरल भाषा में लिख, इस समय प्रकाशित करना सर्वथा उचित समझा है, जिस समय हमारा देश वीरता के महत्त्व को एकदम भुलाकर जैनियों के "अहिंसावाद" को ज़िन्दाबाद कहते लज्जित नहीं होता।

लखनऊ
ता० १५-९-१९४० } लेखक

विषय-सूची

नं०	विषय	पृष्ठ
१	परमाल का व्याह	१
२	संयुक्ता का स्वयंवर	१५
३	माड़ौ की लड़ाई	२९
४	सूरजमल की लड़ाई	४९
५	करिया की लड़ाई	५२
६	जम्बै की लड़ाई	६२
७	सिरसा की पहली लड़ाई	६६
८	आल्हा का व्याह	७५
९	(पथरीगढ़-विजय) मलखान का व्याह	९२
१०	चन्द्रावलि की चौथी अर्थात् बौरीगढ़ की लड़ाई ...	११२
११	दिल्ली की लड़ाई	१३९
१२	ऊदल का विवाह अर्थात् नरवरगढ़ की लड़ाई ...	१६८
१३	सुलखान का विवाह अर्थात् कुमायूँगढ़ का युद्ध ...	१८८
१४	बुखारे का युद्ध या धाँधू का विवाह	१९९
१५	इन्दल-हरण तथा इन्दल का विवाह, बलखनगर का युद्ध ...	२१२
१६	आल्हा का निर्वासन	२२६
१७	लाखन का विवाह अर्थात् बूँदी (बङ्गाल) का युद्ध ...	२३२
१८	इन्दल का दूसरा विवाह—पथरियाकोट का युद्ध ...	२४१
१९	इन्दल का तीसरा विवाह...	२५४
२०	गाँजर का युद्ध	२६४
२१	सिरसागढ़ का दूसरा युद्ध...	२७०

मन्त्री पण्डित चिन्तामणि को बुलवाकर उनसे सब हाल कहा। पण्डितराज चिन्तामणि ने तुरन्त ही शुभ मुहूर्त निकालकर महोबे के लिए कूच करने की आज्ञा दी। महाराज परमाल मनचीती आज्ञा सुन, बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने नगाड़ची को बुलवाकर कहा—"ये सोने के कड़े लेकर अपने नगाड़ें में डाल दो और युद्ध का नगाड़ा बजाकर ठाकुरों को सचेत करो।" नगाड़ची सोने के कड़ों को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने जैसे ही बुर्ज के ऊपर चढ़कर नगाड़ा बजाया, वैसे ही चन्देली नगर में एक अनोखा उलटफेर देख पड़ा। जो नगर कुछ क्षणों पहले शान्त था, उसी में अब कोलाहल सुन पड़ने लगा। चारों ओर से ठाकुर लोग आकर क़िले के मैदान में जमा होने लगे।

महाराज के हुक्म से तोपख़ाने के दारोग़ा ने सभी बड़ी और छोटी तोपें बाहर निकलवाईं और उन्हें भली भाँति युद्ध के लिए तैयार किया। हाथीख़ाने के दारोग़ा को महाराज ने चोरा और कलँगी देकर हाथियों के सजाने की आज्ञा दी। इसी प्रकार घुड़साल के दारोग़ा को भी चीरा-कलँगी पहनाकर महाराज ने घोड़ों को सजाने की आज्ञा दी। इसके बाद मारवाड़ी और अरबी ऊँट भी सजाये गये।

इन सबके बाद छकड़ों में गोला-बारूद और तलवारें, कटारें आदि हथियार भरे गये। सुन्दर-सुन्दर रथ सजाकर बाहर खड़े किये गये। कहते हैं, इस समय हाथियों, घोड़ों, ऊँटों और बैलों के गलों में सेरों सोने के गहने लटक रहे थे। बेशक़ीमती रत्नजड़ित हार और रेशमी झूलें उनके ऊपर पड़ी हुई थीं। घोड़ों के सिरों पर रत्नजटित कलँगियाँ अनोखी छटा दिखा रही थीं। सुन्दर चन्दन की पालकियों पर कमख़ाब के उहार पड़े हुए थे। रथों के ऊपर सोने के कलसों पर सूर्य की किरणों के पड़ने से वे ख़ूब चमक रहे थे। हाथियों के ऊपर सोने-चाँदी के जड़ाऊ हौदे और हौदों पर सोने के कलसों-समेत अम्बारियाँ रक्खी हुई थीं।

महाराज ने कपड़ों और लड़ाई के सामान के कोठार खोलकर, ठाकुरों को हुक्म दिया कि जो जिसके मन भावे, वह वही पहने। वीर ठाकुरों ने पोशाकें पहन

उन पर ज़िरहबख़्तर पहने। इसके बाद उन्होंने बख़्तरों के छप्पन ख़ानों में छप्पन छप्पन छुरियाँ और एक एक गुजराती कटार बाँधी। दोनों बग़लों में दो दो कड़ाबीनें लटकाकर दो दो तलवारें भी बाँधीं। इतना सब पहनकर उन वीर ठाकुरों ने गैंड़े की खाल की ढालें अपनी पीठों पर कसीं। वीरों को सजा हुआ देख, महाराज ने उन्हें फिर सोने के जड़ाऊ गहने पहनाये।

इसके बाद महाराज ने सब योद्धाओं को एक क़तार में खड़ा करके कहा—"भाइयो, इस समय आप लोग अपने मन में यह न समझें कि हम राजा के नौकर हैं। आप सभी हमारे कुटुम्बी और रिश्तेदार हैं। इसलिए आपको चाहिए कि लड़ाई के मैदान में आप चंदेली राज्य की यशःपताका को फहरावें। लड़ाई के मैदान में पीठ दिखाने से मर जाना या लड़ाई में न जाना ही अच्छा। इसलिए जिन्हें अपनी औरतें प्यारी हैं और जिनके यहाँ हाल ही में औरतों की विदा हो आई है, वे लोग लड़ाई के मैदान में न जायँ। हाँ, जिन्हें सचमुच रणचंडी में श्रद्धा और भक्ति है वे ज़रूर चलें। उनकी तनख़्वाहें दूनी कर दी जायँगी।" उक्त वचन सुनकर, क्षत्रिय जोश में आकर बोले—"महाराज, हम लोग नमकहराम नहीं हैं। जहाँ महाराज का पसीना गिरेगा, वहाँ हम ख़ून बहायेंगे।" इसके बाद महाराज ने सभी सामन्तों और राजाओं की सेनाओं तथा मन्त्री चिन्तामणि को भी तैयार होने की आज्ञा दी।

महाराज परमाल ने मिसरू का पाजामा और दुद्रामी का जामा पहनकर ऊपर से ज़िरहबख़्तर पहना तथा सिर पर कीनख़ाब की सुनहरी पगड़ी बाँधी। इसमें कलँगी और जड़ाऊ सिरपेच लगा हुआ था। महाराज अस्त्र-शस्त्र धारण करके अपने वीरभद्र नामक हाथी पर चढ़े। उनको तैयार देख, सभी वीरों ने रकाबों में पैर डाले। कुछ वीर पालकियों और रथों में भी बैठे। कवि उस समय कहता है, "सब्जे बाना सब्ज निसाना, सब्जे झण्डी भई तैयार।" यानी चन्देलों की फ़ौज का झण्डा और सभी चिह्न हरे रङ्ग के थे। इस समय चारों ओर घोड़ों की हिनहिनाहट से एक विचित्र समाँ देख पड़ता था। इसी समय जैसे ही सेनापति की आज्ञा से चोबदार ने डंका बजाकर झण्डा फहराया, वैसे ही चन्देलों

की फ़ौज ने इष्टदेवी को प्रणाम करके कूच किया। इस अनगिनती सिपाहियों की फ़ौज के चलने से सड़क की धूल उड़कर चारों ओर छा गई। उड़ी हुई धूल में सूरज भी छिप गये। इसी प्रकार तीन मंज़िलें चलकर चन्देलों का कटक महोबे के धुरे पर जा पहुँचा। तुरन्त बढ़इयों ने मैदान में मेख़ें गाड़ दीं और वहाँ तम्बू खड़े कर दिये गये। ठाकुरों ने थकावट दूर करने को घोड़े ढील दिये और हथियार भी खोलकर रख दिये। इसके बाद उन्होंने अपने डेरों को भली भाँति सजाकर प्रधान डेरे के सिरे पर सोने के कलसे रक्खे। चारों ओर क़नातें लगाकर एक दीवाल-सी खड़ी कर दी गई। साथ के सौदागरों ने दूकानें सजाकर वहाँ बाज़ार बना दिया।

कुछ देर आराम करने के बाद ज़रूरी कामों से निबटकर ठाकुरों ने भोजन बनाया और अपने इष्टदेव को भोग लगाकर प्रसाद पाया।

उधर महाराज ने चिन्तामणि से पूछकर एक पत्र लिखवाया और धावन के हाथ उसे महोबे नगर में राजा वासुदेव के पास भेजा। पत्र लेकर धावन अपनी साँड़िनी पर चढ़ा, और लहमे भर में महोबे के फाटक पर जा पहुँचा। वहाँ दरबान से फाटक खुलवाकर धावन नगर में पहुँचा। महोबा नगर की शोभा देखकर वह दङ्ग रह गया। चौपड़ बाज़ार में उसने जौहरियों की दूकानों पर हीरा, मोती, पन्ना, लाल, पुखराज, नीलम, मानिक, चुन्नी, मूँगा, आदि जवाहरों के बड़े-बड़े ढेर देखे। इन दूकानों पर बड़े उमराव और रईस बैठे हुए मोल-भाव कर रहे थे। कपड़ों की दूकानों पर अँगरखा, सिरपेच, कलँगी, पगड़ी, पाजामा आदि लटक रहे थे। उनमें कलाबत्तू के काम से हज़ारगुनी चमक पैदा हो रही थी। सी तरह सभी दूकानें वहाँ सजी हुई थीं। उनकी शोभा देखते ही बनती थी। इनको देखता हुआ वह धावन महल की ड्योढ़ी पर पहुँचा। साँड़िनी से उतरकर धावन राजदरबार में पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि एक ऊँचे सोने के जड़ाऊ सिंहासन पर महाराज वासुदेव परिहार बैठे हुए हैं। नीचे मख़मली तथा कलाबत्तू के काम के क़ालीनों पर बड़े-बड़े वीर दरबारी बैठे हुए हैं। महाराज के बग़ल में उनके दोनों पुत्र माहिल और भोपति बैठे थे। चारों

और इत्रों का छिड़काव था। ठाकुर लोग सिंह की बैठक से बैठे हुए थे। उनके सिरों पर दक्खिनी पगड़ियाँ और सिरपेच बड़े भले लग रहे थे। उनकी बाँहों के जड़ाऊ बजुल्ले और गले में हीरे के कण्ठे उनकी शोभा और छवि को हँस-हँसकर बढ़ा रहे थे। क्षत्रियों के आगे सुन्दर और कोकिल-कण्ठवाली मालज़ादियाँ नाच और गा रही थीं। यद्यपि क्षत्रिय लोग नाच और गान को सुन अपने को भूल गये थे, तो भी उनका सीधा हाथ टिहुने के पास रक्खी हुई नङ्गी तलवार के साथ ही खेल रहा था। धावन दरबार की इस सुन्दर छवि को देखकर मोहित हो गया। इसके बाद उसने सामने बिछे हुए कीनख़ाबवाले फ़र्श पर जाकर, सात पैगों से महाराज वासुदेव की कुन्नस बजाई फिर उसने बड़े अदब के साथ वह पत्री सिंहासन की ओर चला दी। इस आदमी को देखकर राजदरबार में सन्नाटा छा गया। सभी लोगों की निगाहें धावन की ओर उठ गईं। महाराज वासुदेव तुरंत ही क़ैंची से लिफ़ाफ़े को काटकर पत्र निकाल-कर पढ़ने लगे। पत्र पढ़ते ही राजा मालवन्त की त्योरियाँ चढ़ गईं। उनका शरीर क्रोध से काँप उठा। यह देखकर युवराज माहिल ने उस पत्र के विषय में राजा से पूछा। उत्तर में महाराज ने कहा—"कुछ नहीं, तुम भी महोबे की फ़ौज को तैयार करो और युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।" यह कहकर महाराज ने सोने की क़लम उठाकर आप ही उसका जबाब लिखा और धावन को देकर कहा—चन्देले से कहना कि किसी और राजा के धोखे में न रहें। यह राजा वासुदेव का नगर महोबा है। ब्याह के बदले में उनकी मुश्कें बाँधकर उन्हें ऊमे में डलवा दिया जायगा, जहाँ वे भूखे-प्यासे तड़प-तड़पकर मर जायँगे।

इसके बाद राजा वासुदेव ने उसी वक़्त नगाड़ची को सोने के कड़े देकर नगाड़े बजाने का हुक्म दिया। क़िले के फ़ौजदार को बुलवाकर महाराज ने उसे फ़ौज सजाने की आज्ञा दी।

उधर जब धावन ने आकर वह जवाब राजा परमाल को दिया तब उन्होंने फ़ौरन युद्ध का डंका बजवा दिया। पहले डंके में हाथी, घोड़े, ऊँट और तोपख़ाने सँभाले गये, दूसरे डंके के बजते ही वीर लोग अपने-अपने घोड़ों पर

चढ़े और तीसरे डंके के बजते ही सैनिक लोग लड़ाई के मैदान की ओर चले। इसी समय उधर से युवराज माहिल पाँच लाख वीर सिपाहियों के साथ आ पहुँचा। उसने शत्रु की फ़ौज को पास आते देखकर अपना हाथी आगे किया और गरजकर कहा—"अरे! किस राजपूत ने अपनी सिंहनी माता की कोख से जन्म लिया है, और किसने सोते हुए सिंह को जगाकर महोबे के धुरे पर डेरे डाले हैं?" यह सुनकर चन्देलराज ने हँसकर कहा—"अरे वासुदेव के लाल! मेरी सिंहनी माता ने मुझे पैदा किया है। मैं चन्देली का परमाल तेरी बहिन को व्याहने आया हूँ। इसलिए तू अगर अपना भला चाहे तो हमारा विवाह करवा दे, नहीं तो हम महोबे को मिट्टी में मिलाकर, यहाँ बबूल के बीज बोकर, बबुरी-बन खड़ा करवा देंगे। तू याद रख, यह चन्द्रवंश है। हम लोग जिसकी सुघड़ कन्या देखते हैं उसे ज़बर्दस्ती व्याहते हैं।" इतना सुनते ही माहिल ने क्रोध में भरकर तोपों में पलीता लगवा दिया। यह देखकर चन्देली की तोपें भी गड़गड़ाहट के साथ आग उगलने लगीं। तोपों के गोलों से दोनों दलों का बड़ा नुक़सान हुआ। सैकड़ों हाथी, घोड़े, ऊँट और आदमी मारे गये। तोपें आग उगलते उगलते जब काले रंग से लाल रंग की हो गईं, तब तोपख़ाने हटा दिये गये और दोनों ओर के पैदल सिपाही लड़ाई के मैदान में आ डटे। वीर सिपाही अपनी-अपनी कड़ाबीनें सँभाल सँभालकर गोलियाँ चलाने लगे। गोलियों की मार से भी चारों ओर हाहाकर मच गया। फिर वीर लोग भाले और साँगें लेकर झपटे। जिसके भाला घुसता था उसकी देह से फ़व्वारे की तरह ख़ून की धारें निकलने लगती थीं। इसी प्रकार जिस हाथी के भाले घुसते थे वह ऐसा जान पड़ता था मानो काले पहाड़ से ख़ून की नदी निकल रही हो। इसी तरह चार घण्टे तक युद्ध होता रहा और दोनों ओर की फ़ौजों में केवल डेढ़ क़दम का फ़ासला रह गया। तब सिपाहियों में आपस में घमासान युद्ध होने लगा। इस पर कवि कहता है—

पैदल के सँग पैदल भिड़ गये, औ असवारन से असवार।
हौदा के सँग हौदा भिड़ गये, हाथिन अड़े दाँत सों दाँत॥

इस तरह चारों ओर ख़ून ही ख़ून दिखलाई पड़ता था। प्यादों की लाशों से लड़ाई का मैदान पट गया था। लड़ाई के मैदान में एड़ियों तक गहरा ख़ून का तालाब-सा बन गया। वीरों के दुशाले जो वहाँ पड़े थे वे दूर से सिवार की तरह लगते थे। ढालें कछुओं की तरह, सिपाहियों की लोथें मगर की तरह और उनकी टूटी हुई बाँहें मछली की तरह उस ख़ून के तालाब में जान पड़ती थीं। सैकड़ों घायल जवान वहाँ पड़े हुए कराह रहे थे। कोई-कोई प्यास के मारे बुरी तरह तड़प रहे थे। इतना ही नहीं, बल्कि बहुत-से लोग अपने-अपने बेटों के नाम ले-लेकर बुरी तरह चिल्ला रहे थे।

माहिल की दो लाख सेना नष्ट हो गई। चंदेली के वीरों की बेढ़ी मार से महोबिया जवान घबरा गये। यह देखकर माहिल सभी को समझाने लगे। इसी समय चन्देलों ने एक साथ उन पर धावा बोल दिया। अब तो महोबे के सिपाही भाग निकले। यह देखकर माहिल ने अपना हाथी आगे बढ़ाया और परमाल के पास जाकर कहा—पहरुओं और चाकरों की फ़ौज को कटाने से क्या? आओ हम तुम आपस में लड़कर फ़ैसला कर लें। इस पर परमाल राज़ी हो गये।

चन्देलराय को तैयार देख माहिल ने उन पर अपनी तलवार से वार किया, जो परमाल की ढाल पर ही लगकर रह गया। इसी तरह माहिल के दुधारे के सभी वार ख़ाली गये। अपने वारों को ख़ाली जाते देख माहिल बहुत लजाया। इसके बाद उसने गुर्ज उठाकर चन्देलराज के ऊपर फेंका। हर्ष है कि चन्देल-कुल-देवी ने दहिनी होकर उस गुर्ज के वार को बेकाम कर दिया। यह देख माहिल ने कमान सँभाली। कहते हैं कि इस कमान में सिरोही की फोंक और गजवेलि की गाँसी लगी हुई थी। माहिल ने कमान पर तीर रखकर, उसे कान तक खींचकर, बड़े ज़ोर से छोड़ा, मगर वीरभद्र ने हटकर अपने मालिक को बचा लिया। अपने सभी वारों को ख़ाली जाते देख माहिल खीझकर बोला—"रे चन्देल! अब भी लौट जा। जान-बूझकर काल के गाल में मत पड़।" यह सुनकर परमाल ने हँसकर कहा—'लड़ाई से मुँह

मोड़ना क्षत्रियों का काम नहीं। तुम चौथा वार करके अपने मन का हौसला पूरा कर लो। नहीं तो स्वर्ग में बैठकर पछताओगे।" इसी समय माहिल ने राजा को बातों में लगा हुआ जानकर बड़े वेग से साँग का वार किया, मगर फ़ीलवान ने हाथी को हटाकर उस वार को भी बेकाम कर दिया। माहिल के चार वार हो जाने पर, चन्देलराज ने रण-गर्जना की और शीघ्र ही साँग से माहिल के हाथी को मार गिराया। हाथी के गिरते ही परमाल ने माहिल को क़ैद कर लिया। बड़े भाई को क़ैद होते देख छोटा भाई भोपति आगे बढ़ा। भोपति जगनिक महोबे की मनियादेवी को सुमिर और अपनी सिरोही को उठाकर, शीघ्र ही राजा पर बाज़ की भाँति टूटा। परमाल ने जगनिक की सिरोही को आते देख अपनी ढाल अड़ा दी, जिससे सिरोही टूक-टूक हो गिर पड़ी। जगनिक के हाथ में उसकी मूठ ही रह गई। इसके बाद जगनिक ने गुर्ज का वार किया, परन्तु वह भी ख़ाली गया। गुर्ज को पृथ्वी पर गिरा हुआ देख जगनिक सन्नाटे में आ गया। इतने में परमाल ने उसे ग़ाफ़िल देखकर क़ैद करवा लिया।

माहिल और भोपति दोनों को क़ैद करके परमाल ने एक पत्र राजा मालवन्त के पास फिर भेजा और कहलाया, "तुम्हारे दोनों बेटों को हमने क़ैद करवा लिया है। अब अपना भला चाहो तो राजकुमारी से हमारा विवाह कर दो।" वह पत्र पढ़कर और धावन के ज़बानी सँदेसा सुनकर राजा वासुदेव के ग़ुस्से का ठिकाना न रहा। वह फ़ौरन अपना कटक सजवाकर लड़ाई के मैदान में जा पहुँचा। वहाँ पहुँच उसने कहा—"रे कौन-सा वह लुच्चा है, जिसने मेरे बेटों को बाँधकर, मुझसे वैर मोल लिया है? ऐसा कौन सूरमा है जो मेरी कन्या को व्याहने के लिए बिना बुलाये ही यहाँ आया है?" यह सुन परमाल ने कहा—"मैं हूँ चन्देली का राजा परमाल। हम लोग बुलावे की बाट नहीं जोहते। भला आप ही बताइए, सिंह को भी कोई न्यौता देकर बुलाता है! वह तो जहाँ अच्छा शिकार देखता है वहीं जाकर मारता खाता है। इसी तरह हम लोग जिसकी अच्छी बेटी देखते हैं उसे ज़बर्दस्ती व्याहते हैं।" परमाल के ये वाक्य सुन-

कर वासुदेव से न रहा गया। उसने फ़ौरन तोपख़ाने को आग उगलने की आज्ञा दी। यह देखकर चन्देलों की तोपें भी आग बरसाने लगीं। बात की बात में सैकड़ों सिपाही इस जगत् से कूच कर गये। कहते हैं कि जिस हाथी के गोला लगता था वह वहीं चिंघाड़कर प्राण छोड़ देता था। ऊँट गोले खाकर चारों ख़ाने चित्त लेट रहते थे और घोड़े भी चारों सुमों को फैलाकर जी तोड़ देते थे। ऐसे समय आदमियों की कौन कहे। पृथ्वी उनकी लाशों से पटी हुई थी।

गोलों को बन्द कर पैदल लोग अपने-अपने हथियार सँभालकर आगे बढ़े। उन्होंने सबसे पहले बन्दूक़ें चलाना शुरू किया। कवि बन्दूक़ों की गोली के बारे में कहता है—

सन सन सन सन गोली छूटैं, मानो मघा बूँद झरि लाय।
जैसे नागिन घुसै बाँबी में, तैसे पैठ जङ्ग में जाय॥

इस प्रकार कड़ाबीनों से गोलियाँ निकलकर चारों ओर ग़ज़ब ढाने लगीं। हाथी, घोड़े, ऊँट और आदमी सभी को उनका शिकार होना पड़ा।

जब वीर लोग बन्दूक़ों से मनमानी आग उगल चुके तब उन्होंने तीर-कमान और तलवारों को सँभाला। कवि लिखता है—

चलै जुनर्वी औ गुजराती उःना चले विलायत क्यार।
तेगा चले वर्दवान को, कटि कटि मुंड गिरें भहराय।
लागे जाके तीर की गाँसी, सो गिरि परै भरहरा खाय।
बान के डण्डा के लागत खन, नरतन दुइ खंडा होइ जाय।

इस तरह दोनों दल एक दूसरे का नाश करने लगे। कहते हैं कि महोबे में इससे पहले ऐसा युद्ध कभी नहीं हुआ था। इसके लिए कवि कहता है—

पैग पैग पर पैदल गिरगे, दुइ दुइ पैग गिरे असवार।
बिसे बिसे पर हाथी गिरगे, घोड़न ऊँट कौन सुम्मार।

हज़ारों सिपाहियों और जानवरों के घायल होने से उनके ख़ून से तालाब-सा बन गया। इस तालाब में मनुष्यों की पगड़ियाँ कमल के फूलों की नाईं उतरा रही थीं और दुशाले सिवार की तरह बिछे हुए जान पड़ते थे,

ढालें कछुओं की तरह पड़ी हुई थीं और सिपाहियों की लोथें मगरों की तरह उतरा रही थीं।

यह देख महोबे के सिपाही भाग खड़े हुए। सिपाहियों को भागते देख बासुदेव ने अपना हाथी आगे बढ़ाया और परमाल से कहा—"आओ, हम तुम आपस में लड़कर फ़ैसला कर लें। देखें, भगवान् की दया किस पर होती है।"

महाराज परमाल ने फ़ौरन ही हँसकर कहा—"अच्छा, आप वार करें।" राजा बासुदेव ने तुरन्त ही अपनी सिरोही म्यान से खींचकर चन्देले पर चलाई पर वह गैंडे की ढाल पर लगकर टूट गई। यह देखकर बासुदेव ने साँग चलाई पर चन्देले के महावत ने हाथी को हटाकर, अपने राजा को बचा लिया। इसके बाद बासुदेव ने गुर्ज उठाकर मारी, पर वह भी ख़ाली ही गई। अपने तीनों वारों को ख़ाली देख बासुदेव परमाल के लड़ाई के हथकण्डों पर बहुत ख़ुश हुआ और बोला—"बेटा, बस हो चुकी। अब तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हारा ब्याह कर दूँगा।" पर इस पर परमाल को विश्वास न हुआ। उसने बासुदेव की मुश्कें बँधवा लीं। तब बासुदेव ने विश्वास दिलाने के लिए गङ्गा की सौगन्द खाकर विवाह कर देने का वादा किया। तब परमाल ने उसे और उसके दोनों बेटों को छोड़ दिया। बासुदेव अपने दोनों बेटों के साथ राजमहलों में गया और परमाल के साथ घटियायी करने का उपाय करने लगा। उसने बड़ा गहरा ख़न्दक़ खुदवाकर उसे सरकण्डों से पटवा दिया और उस पर एक बढ़िया पलँग बिछवा दिया।

इसके बाद मालवन्त ने परमाल को बुलाकर उसी पलँग पर बैठने को कहा। परमाल उस पर बैठने को जा ही रहे थे कि सामने खड़ी हुई मल्हना ने इशारा करके उस पर बैठने को मना कर दिया।

यह देखकर परमाल लौट गया और बासुदेव से बोला—"राजन्! आप व्यर्थ फ़ौज क्यों कटवाना चाहते हैं? क्या आप नहीं जानते कि संसार में बड़े से बड़े अभिमानी का भी गर्व उसकी कन्या लचा देती है। आपकी कन्या सयानी और विवाह-योग्य है, तब भी आप उसे क्वाँरी रखकर अपने लिए

पाप का बोझ रख रहे हैं। इसका मुझे बड़ा खेद है।" इन वचनों को सुनकर वासुदेव लजाया। उसने फ़ौरन पण्डित को बुलाकर वेदी रचवाई। महलों में मङ्गलाचार होने लगे। नगर में चारों ओर मङ्गलगान होने लगे और बन्दनवारों से नगर की शोभा दूनी हो उठी। राजा परमाल की बारात भी आ गई। द्वाराचार होकर चन्दन-चौकी पर परमाल को आसन दिया गया।

उधर कन्या को उबटन और स्नान करवाकर सुन्दर रेशमी घाँघरा पहनाया गया और बढ़िया चुनरी उढ़ाकर वह मण्डप में बैठाई गई।

पण्डित चिन्तामणि ने तुरन्त ही सन्दूकें खोल-खोलकर, जड़ाऊ गहने निकाल-निकालकर, चढ़ावे में कन्या को पहनाये। मल्हना के हाथों में मेहँदी और पाँवों में महावर बड़ा भला जान पड़ता था।

इसके बाद कन्यादान हुआ और भाँवरें पड़ने का समय आया। कहते हैं कि पहली भाँवर के पड़ते ही माहिल तलवार निकालकर परमाल की ओर लपका। उसे तलवार का वार करने को तैयार देख चन्देली के सेनापति ने ढाल से वार को बेकाम कर दिया। दूसरी भाँवर के समय जगनिक भोपति ने तलवार चलाई तो पण्डित चिन्तामणि ने अपनी ढाल से उसको रोका। किसी न किसी तरह सातों भाँवरें पड़ गईं। महाराज परमाल ने दान में बहुत-सी गौएँ, हाथी और घोड़े दिये और एक बहुत बड़ी रक़म नेगियों को बाँटी। कहते हैं, महोबे में मिले हुए दहेज से कहीं ज़्यादा धन परमाल ने वहाँ बाँट दिया था। इसके बाद परमाल अपनी दुलहिन को विदा करा, चन्देली को लौट गये।

चन्देली के रनिवास में जब यह सुखद समाचार पहुँचा तब वहाँ आनन्द-बधाइयाँ बजने लगीं। रानी का डोला पहुँचने पर परमाल की माता ने उसका परिछन किया और बड़े दुलार से बहू का मुँह देखकर करोड़ों की सम्पदा न्योछावर कर दी। अब तो मल्हना और परमाल दोनों ही चन्देली में बड़े सुख के साथ रहने लगे।

एक दिन मल्हना ने परमाल से कहा कि हमें चन्देली में अच्छा नहीं लगता। सो या तो तुम चलकर महोबे में रहो या हमीं को वहाँ पहुँचा दो। हमें

न उठाऊँगा।" यह कहकर उसने चन्देली का राज्य अपने छोटे भाई चन्द्रावर को देने की घोषणा की।

इसी समय माहिल ने उठकर महाराज परमाल से कहा—"महाराज, हमारी आदत चुग़ली करने की है। इस कुटेव से मजबूर हो मैं माँगता हूँ कि मेरा चुग़ली का अपराध हमेशा माफ़ कर दिया जाया करे।" महाराज परमाल ने उसकी प्रार्थना मंज़ूर कर ली।

इसके बाद बहुत बड़े-बड़े दान करके महाराज परमाल ने दरबार बरख़ास्त किया। सभी राजा ख़ुश होते हुए अपनी-अपनी राजधानियों को लौट गये। महाराज परमाल महोबे में अपनी बारह रानियों में सिरमौर रानी मल्हना के साथ आनन्द से दिन बिताने लगे।

—

संयुक्ता का स्वयंवर

कान्यकुब्ज देश की राजधानी बहुत दिनों तक कन्नौज में रही। वहाँ के राठौर राजाओं में जयचन्द एक नामी राजा हो गये हैं। वे राजा बेनि चकवै के बेटे थे। वे अपने बाप की तरह ही साहसी, बहादुर और पैनी बुद्धि के थे। कन्नौज का राजदरबार सभी रजवाड़ों में सबसे अच्छा समझा जाता था। वहाँ के राठौर बड़े नामी वीर माने जाते थे।

महाराज जयचन्द के संयुक्ता नाम की एक बड़ी रूपवती लड़की थी। उसके सयानी हो जाने पर और उसके लायक़ कोई दूल्हा न पाकर राजा जयचन्द ने समस्त राजाओं को न्योता भेजकर एक स्वयंवर रचा। सभी रजवाड़ों के रूपवान् राजकुमार एवं राजा लोग उस उत्सव में अपने-अपने भाग्य की जाँच करने को गये।

कन्नौज में शुभ घड़ी और शुभ दिन में यह उत्सव किया गया। सभी राजा, अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार, आसनों पर बैठे। जब सभी राजा लोग आ गये तब राजकुमारी संयुक्ता हाथ में जयमाल लेकर स्वयंवर-सभा में आई और अपनी पसन्द का वर ढूँढ़ने लगी। वह सभी राजाओं के सामने से निकल गई, पर उसने किसी की ओर आँख उठाकर भी न देखा। वह जब सभा के फाटक पर पहुँची तब उसने फाटक के एक तरफ़ ओटे पर मिट्टी की बनी एक मूर्ति रक्खी देखी। संयुक्ता को उस मूर्ति के पहचानने में देर न लगी। उसने उसी मूर्ति के गले में जयमाल डाल दी। यह मूर्ति दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान की थी। पृथ्वीराज इस स्वयंवर-सभा में नहीं आये थे। इसलिए उनकी मूर्ति बनवाकर दरवाज़े के ओटे पर रखवा दी गई थी। संयुक्ता पृथ्वीराज की वीरता पर मुग्ध थी। इसी से उसने उनकी मूर्ति के ही गले में जयमाल

डाल दी। यह देखकर सभी राजा उठ-उठकर चले गये। इधर जयचन्द ने चन्द भाट को बुलवाकर उससे पृथ्वीराज के बारे में पूछा। चन्द भाट ने पृथ्वीराज की वीरता, उनके सौन्दर्य और ऐश्वर्य आदि का भली भाँति बखान किया। उसे सुनकर जयचन्द ने उससे कहा कि यदि आप पृथ्वीराज को यहाँ ले आवें तो बड़ा अच्छा हो। चन्द भाट फ़ौरन दिल्ली को रवाना हुआ। दिल्ली में पहुँचकर वह पृथ्वीराज चौहान के पास गया। उसने उनसे सब हाल कहा। अपने अपमान की बातें सुनकर पहले तो पृथ्वीराज की बाँहें फड़क उठीं, परन्तु जब जयचन्द का सविनय बुलावा सुना तब चौहानराज ने उसी दम रवाना होने की तैयारियाँ करवाईं। उन्होंने चुने हुए वीरों को साथ लेकर कन्नौज की ओर कूच किया। चलते समय उन्होंने राजकाज का भार अपने चचा कान्हर को सौंपकर उनसे कहा—"जब तक मैं न आऊँ तब तक आप राजकाज सँभालें।"

आठ दिन बाद पृथ्वीराज कन्नौज पहुँचे। वहाँ उन्होंने वेष बदल लिया। वे चन्द भाट के साथ राजदरबार में चले गये। चन्द भाट के साथ इस वीर मूर्ति को देखकर जयचन्द को सन्देह तो हुआ कि कहीं यही शब्दवेधी चौहान पृथ्वीराज न हों, परन्तु इसकी जाँच करने के लिए जयचन्द ने अपने रनवास से दिल्लीवाली दासी को पान लाने के बहाने बुला भेजा। (इसी दासी ने संयुक्ता को पृथ्वीराज के बारे में बतलाया था, तभी से वह चौहानराज को चाहने लगी थी) उन्होंने सोचा कि यदि यही पृथ्वीराज होंगे तो इन्हें यहाँ अचानक देखकर वह कुछ हिचकिचावेगी और लाज भी करेगी। जब उस बाँदी ने दूर से ही सभा में पृथ्वीराज को बैठा हुआ देखा तब वह आँखों को मींजती हुई सभा में आई और पान देकर, सिर खुजाती हुई, लौट गई। बाँदी की इस चातुरी से जयचन्द पृथ्वीराज को न पहचान सके।

अब जयचन्द ने सेनापति को इनके लिए बाग़ों में डेरे खड़े करवा देने की आज्ञा दी। पृथ्वीराज सेनापति के साथ जब लौटे और उन्होंने जब ओटे पर अपनी मूर्ति द्वारपाल की जगह बैठी देखी तब वे आपे में न रहे।

पृथ्वीराज के आने की ख़बर संयुक्ता ने सुनी तो उसने फ़ौरन देवी-पूजने के बहाने बाग़ में जाने की तैयारियाँ कीं। अपनी सखियों के साथ वह डोले में बैठकर बाग़ में पहुँची। डोले से उतरकर वह पृथ्वीराज के डेरे में गई। उसने जाते ही पृथ्वीराज के गले में जयमाल डाल दी। फिर वह पाँच पानों का एक बीड़ा खिलाकर बोली—"प्राणनाथ! मैंने मन में आपको ही अपना वर बनाने की ठानी है। अगर ऐसा न हो सका तो जन्म भर क्वाँरी ही रहूँगी। आशा है, दया करके आप मुझ हतभागिनी को अपने घर में जगह देंगे।" पृथ्वीराज ने मुसकराते हुए कहा—"प्यारी धैर्य रक्खो। तुम्हारा डोला लेकर ही हम दिल्ली चलेंगे।" यह सुनकर वह वहाँ से डोले में बैठकर लौट आई।

इधर डेरे में पहुँचकर चन्द भाट ने जयचन्द के पास पृथ्वीराज के आने की ख़बर दी। यह सुनकर जयचन्द दो सौ घोड़े, तीस हाथी, शाल-दुशाले, बढ़िया गहने आदि बहुत तरह का सामान साथ लेकर पृथ्वीराज को भेंट देने चले। जयचन्द का आना सुनकर चन्द भाट ने पृथ्वीराज को पान देते हुए कहा कि तुम खड़े होकर इसे जयचन्द को दो। जयचन्द के आते ही पृथ्वीराज ने खड़े होकर वह बीड़ा उन्हें देने के लिए हाथ बढ़ाया। जयचन्द ने हाथ बढ़ाकर जैसे ही बीड़ा लेना चाहा, वैसे ही पृथ्वीराज ने बड़े ज़ोर से दबा दिया। उनका हाथ यहाँ तक दाबा गया कि, वह फट गया और लोहू-लुहान हो गया। यह देखकर जयचन्द के क्रोध का ठिकाना न रहा। ग़ुस्से में आकर जयचन्द ने भेंट की सामग्री तो वहीं रखवा दी और आप राजमहलों की ओर लौट गये। महल में जाकर जयचन्द ने फ़ौरन अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि उन बदमाशों का सिर काटकर फेंक दो।

पृथ्वीराज ने जब यह सुना तब उन्होंने बाग़ से अपने डेरे उखड़वाकर तीन कोस उत्तर की ओर डलवाये। इसके बाद पृथ्वीराज ने एक पत्र लिखकर अपने चाचा कान्हदेव को बुला भेजा। पत्र पाकर कान्हदेव ने फ़ौरन सेना सजाई और तीन दिन रास्ते में बिता चौथे दिन वे पृथ्वीराज से आ मिले।

महाराज जयचन्द का हुक्म पाकर राय लङ्करी तथा धीरजसिंह के सेनापतित्व में राठौर सेना लड़ने को जा पहुँची। राठौरों को मैदान में आया हुआ जानकर पृथ्वीराज ने हरीसिंह को फ़ौज की एक टुकड़ी देकर दुश्मन का सामना करने के लिए भेजा।

हरीसिंह ने मैदान में आते ही राय लङ्करी को युद्ध के लिए ललकारा। देखते ही देखते चारों ओर से घमासान लड़ाई होने लगी। इस युद्ध में कन्नौजियों ने अधिक वीरता नहीं दिखाई, पर उनके सेनापति धीरजसिंह मारे गये। रात होने पर लड़ाई वन्द कर दी गई।

दूसरे दिन सवेरे ही जयचन्द ने कहारों को डोला सजाने की आज्ञा दी और उसमें संयुक्ता को बिठाकर उस डोले को लड़ाई के मैदान में पहुँचा दिया। कन्नौजिया वीर भी डोले की रक्षा के लिए साथ में थे। उधर जब पृथ्वीराज ने डोले के आने की ख़बर सुनी, तब उन्होंने भी हरीसिंह को सामना करने को भेजा।

हरीसिंह ने राय लङ्करी का सामना किया और राजा गोविन्दसिंह ने कन्नौज के प्रसिद्ध वीर भाइयों हमा और जमा का सामना किया। इस दिन की लड़ाई बड़ी भयङ्कर थी। हज़ारों वीर जूझ मरे पर लड़ाई का निपटारा न हुआ। अन्त में राय लङ्करी ने हरीसिंह को मार गिराया और उधर हमा-जमा ने भी राजा गोविन्दसिंह को तलवार के घाट उतारा।

हरीसिंह के जूझ जाने की ख़बर पाकर राजा कुञ्जर ने आकर राय लङ्करी का सामना किया। बड़ी देर तक दोनों अपने-अपने दाँव-पेंच दिखाते रहे। अन्त में राजा कुञ्जर ने लङ्करी राय को मार गिराया।

राय लङ्करी के चन्द्रलोकवासी होने की ख़बर पाकर स्वयं जयचन्द तीन लाख सेना लेकर पहुँचा और दोनों ओर से घमासान लड़ाई होने लगी। बड़ी भयङ्कर मार-काट मची। कुछ देर बाद डोले का रक्षक पंजून मारा गया। तब राजा कुञ्जर डोला उठवाकर पृथ्वीराज के डेरे में पहुँचा। पृथ्वीराज उसको लेकर आठ कोस तक आगे बढ़ते चले गये।

उधर जब जयचन्द को यह ख़बर मिली तब उसने पृथ्वीराज का पीछा किया। रास्ते में मारकाट होने लगी। सोरों में पहुँचकर जयचन्द ने पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लिया। डोला मैदान में रख दिया गया और दोनों ओर के वीर अपनी-अपनी बहादुरी दिखाने लगे। कहते हैं कि इसके पहले ऐसी विकट लड़ाई सोरों में कभी नहीं हुई थी। पृथ्वीराज के पैंतीस सेनापति और जयचन्द की एक लाख सेना मारी गई। अपना अधिक नुक़सान होते देख जयचन्द ने लड़ाई बन्द कर दी और अपने भाई रतिभानु को बुला भेजा। उधर पृथ्वीराज ने विजय का डंका बजवा दिया। वे सोरों से दिल्ली की ओर आठ कोस दूर डोला लेकर निकल गये।

रतिभानु ने जयचन्द का सँदेसा पाकर अपनी फ़ौजों को तैयार होने का हुक्म दिया। हुक्म की देर थी, लड़ाके राठौर फ़ौरन तैयार हो गये। महाराज रतिभानु भी हाथी पर बैठकर सेना में जा मिले।

कहते हैं कि जैसे ही रतिभानु हौदे में बैठने लगे, वैसे ही किसी ने छींक दिया। यह देखकर पण्डितों ने उन्हें बहुतेरा समझाया कि महाराज, आप कुछ देर के लिए नीचे उतर आवें। यह अपशकुन अमङ्गल करनेवाला है। यह सुनकर मुकुन्द ने अपने भाले से रतिभानु पर वार किया। भाले को सम्मुख आता हुआ देख रतिभानु ने अपना हाथी बाईं तरफ़ हटाकर उस वार को ख़ाली कर दिया। इसके बाद मुकुन्द ने अपनी सिरोही का वज्र-तुल्य वार किया, पर रतिभानु की ढाल में लगकर वह टूक-टूक हो गई।

इसके बाद रतिभानु ने अपनी तलवार से मुकुन्द पर वार किया। मुकुन्द ने उससे बचने के लिए जैसे ही ढाल अड़ाई वैसे ही वह ढाल फट गई और तलवार जिरहबख़्तर को चीरती हुई मुकुन्द की छाती में घुस गई। तलवार के लगते ही मुकुन्द ज़मीन पर गिर पड़े। मुकुन्द के मारे जाने की ख़बर सुनकर पृथ्वीराज घबरा गये। तब उनके चाचा कान्हदेव ने उन्हें धीरज बँधाया और वे ख़ुद रतिभानु से लड़ने को बढ़े।

कान्हदेव ने आते ही कहा—"राठौर, अपना नाश व्यर्थ करवाते हो। इसलिए ऐसे ही डोला देकर चले जाओ।" रतिभानु ने उत्तर दिया—"अरे कान्ह! मेरे

रहते यह डोला तुम्हारे ऐसे चरकटों के साथ नहीं जा सकता।" इसी तरह बातों ही बातों में रार बढ़ गई और दोनों ग़ुस्से में भरकर लड़ने को तैयार हो गये।

रतिभानु ने अपनी गुर्ज उठाकर बड़े वेग के साथ कान्हदेव पर फेंकी; पर कान्हदेव उसे बचाकर निकल गये। इसके बाद रतिभानु ने फिर ललकारकर कान्हदेव पर तलवार से वार किया। इस बार रतिभानु की तलवार, कान्हदेव की गैंड़े की ढाल को फाड़ती हुई, उनके मस्तक पर लगी। कान्हदेव बेहोश होकर गिर पड़े। कहते हैं कि कान्हदेव ने बेहोशी में भी कहा था कि "ख़बरदार! डोला कन्नौज को न जाने पावे, नहीं तो सात साख का मुँह काला होगा।"

चाचा को घायल देख पृथ्वीराज स्वयं लाल कमान लेकर रतिभानु के सामने गये। रतिभानु बड़ी वीरता से पृथ्वीराज का सामना करते रहे। थोड़ी देर बाद कान्हदेव भी सिर में टाँके भरवाकर लड़ाई के मैदान में आ पहुँचे।

कहते हैं, यहाँ से दिल्ली सिर्फ़ आठ कोस थी। यहाँ पर रतिभानु ने जो जौहर दिखाया वह इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखा रहेगा।

पृथ्वीराज की लाल कमान ने सैकड़ों तीर छोड़े, पर उस वीर का बाल भी बाँका न हुआ। यह देखकर पृथ्वीराज ने मन ही मन रतिभानु की बहुत बड़ाई की।

अन्त में कान्हदेव ने बदला चुकाया। उन्होंने दाँव देखकर तलवार के वार से उस राठौर वीर का काम तमाम कर दिया। रतिभानु के मारे जाने पर चौहान लोग फूले न समाये। पृथ्वीराज ने कहारों को डोला दिल्ली की ओर ले चलने का हुक्म दिया।

डोले को दिल्ली की ओर जाते देख जयचन्द ने चौहानों का पीछा किया और वे चौहानों को काटते-छाँटते दिल्ली नगर के फाटक तक पहुँच गये।

इस समय सभी चौहान जूझ चुके थे। कान्हदेव भी रतिभानु को मारकर घाव की पीड़ा से मर चुके थे। यह देखकर अकेले पृथ्वीराज ने अपनी लाल कमान सँभाली।

उधर जयचन्द ने भी अपना चमकता हुआ दुधारा सँभाला। ससुर और जमाई को इस तरह जूझने को तैयार देख संयुक्ता का माथा ठनका। वह डोले से निकली। उसने पृथ्वीराज से कहा—"यह क्या? ससुर और पिता में क्या अन्तर है? यह काम आपको शोभा नहीं देता।" यह सुनकर पृथ्वीराज ने अपना तीर तरकस में रख लिया।

इसके बाद संयुक्ता ने जयचन्द से कहा—"ददुआ, मैं आपसे दहेज में और कुछ नहीं चाहती। यही चाहती हूँ कि आप अपने हाथों से मेरी माँग और बेंदी को न पोंछें।" इसी समय चन्द भाट ने आगे बढ़कर कहा—"राठौरराज! अब आप क्यों हथियार उठाते हैं? आँखें खोलकर देखिए, आप लड़ किससे रहे हैं। आपके वीर सैनिकों ने सारी चौहान-सेना को मार डाला है। केवल हम और पृथ्वीराज ही तो बचे हैं। सचमुच जीत तो आप ही की हुई है। अब आप अपनी कन्या को सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद देकर सन्तोष करें। आपकी कीर्ति अमर रहेगी।"

यह सुनकर जयचन्द लड़ाई बन्द कर कन्नौज को लौट गये। उधर संयुक्ता पृथ्वीराज के साथ रङ्गमहल में आनन्द से रहने लगी।

प्राचीन काल में गङ्गाजी के तट पर मुख्य-मुख्य पर्वों पर बड़े-बड़े मेले लगा करते थे। कार्तिकी पूर्णिमा को बिठूर* में बड़ा भारी मेला लगता था और जेठ की उजेले पाख की दशमी को जाजमऊ में राजा से लेकर दीन-दुखियों तक सभी लोग आते थे।

एक बार जेठ के दशहरे में जाजमऊ में बड़ा भारी मेला लगा। देश-देश के राजा गङ्गा-स्नान करने और मेला देखने को अपनी-अपनी फ़ौजों और सरदारों के साथ आये।

मेले की धूम देखकर माड़ौ का राजकुमार करिंघाराय भी जाजमऊ जाने को तैयार हुआ। जब करिया करिंघाराय अपने पिता राजा जम्वै के पास हुक्म लेने

* यह जगह आजकल के कानपुर शहर से एक कोस पूर्व की ओर है। बिठूर में अब भी मेला लगता है।

को पहुँचा तब उन्होंने उसे रोका और कहा—"बेटा! जाजमऊ राजा जयचन्द के राज्य में है और वे ज़रूर वहाँ आये होंगे। बारह वर्षों से हमने जयचन्द को कर नहीं दिया है। अतः तुम्हारा आना सुनकर वे तुम्हें ज़रूर क़ैद करवा लेंगे।" पिता को असम्मत देखकर करिया बोला—"ददुआ! आप चिन्ता न करें। मैं अपनी चतुराई से ख़ता माफ़ करवा लूँगा।" यह सुनकर जम्बै ने हुक्म दे दिया।

पिता का हुक्म पाकर करिया ने अपनी विशाल फ़ौज साथ लेकर बड़ी शान के साथ कूच किया। चलते समय करिया से उसकी बहन विजैसिन ने कहा—"भैया! जाजमऊ के मेले से मेरे लिए कोई निशानी ज़रूर लाना।"

माड़ौ से चलकर करिया अपनी फ़ौज के साथ जाजमऊ पहुँचा। गङ्गा के किनारे ख़ेमे खड़े कर दिये गये। सभी लोग सवारियों से उतरकर अपने-अपने डेरे में विश्राम करने लगे।

करिया ने दशहरे के दिन गङ्गाजी में स्नान करके बहुत कुछ दान-पुण्य किया। दूसरे दिन वह अपने सरदारों के साथ बाज़ार में घूमने को निकला और बहन के लिए एक नौलखा हार ढूँढ़ने लगा। जौहरियों की बड़ी-बड़ी दूकानें ढूँढ़ डाली गईं, मगर नौलखा हार बाज़ार भर में न मिला। इसी समय करिया से उरई के राजा माहिल परिहार की भेंट हुई। कुशल वार्त्ता के बाद माहिल ने पूछा—"बेटा! चिन्तित-से क्यों घूमते हो?" करिया ने उत्तर दिया—"बाज़ार भर में कहीं नौलखा हार नहीं मिला!" माहिल ने हँसकर कहा—"तुम राजा के लड़के होकर बाज़ार में नौलखा हार ढूँढ़ते फिरते हो? देखो, अगर तुम नौलखा हार चाहते हो तो वह तुम्हें महोबे में मिलेगा। महोबे की रानी मल्हना के पास वह हार है और महोबे के राजा परमाल बूढ़े हैं, इसलिए वह हार तुम्हें थोड़ी ही कोशिश में मिल सकता है।"

माहिल की बातें सुनकर करिया बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने फ़ौरन ही महोबे की ओर कूच किया।

इसके कुछ दिनों पहले बक्सर के रहनेवाले रहिमल, टोंडर, दस्सराज और बच्छराज से बनारस के यवन मीरा, ताल्हन तथा उनके नौ बेटों और अठारह नातियों से जाजमऊ ही में कुछ झगड़ा हो चुका था। उस झगड़े को निपटाने के लिए दोनों ही कन्नौज के राजा जयचन्द के पास चले; पर वे रास्ता भूलकर महोवे में जा पहुँचे। फाटक पर पहुँचने पर वे द्वारपाल से कन्नौज का रास्ता पूछने लगे। इन्हें परदेशी समझकर द्वारपाल ने पूछा—"आप लोग वहाँ क्यों जाते हैं?" इसके उत्तर में उन लोगों ने कहा—"हम लोगों में कुछ झगड़ा हो गया है, उसे निपटवाने के लिए कन्नौज जाना चाहते हैं।" यह सुनकर द्वारपाल ने कहा—"देखो, कन्नौज जाकर तुम क्या करोगे? यह महोबा नगर है। यहाँ के राजा परमाल अपनी शूरता, धीरता और न्याय-प्रियता के लिए बावन गढ़ों में विख्यात हैं। तुम लोग हमारे राजाधिराज से ही अपना फ़ैसला करवा लो।" द्वारपाल की बात दोनों दलों ने मान ली और परमाल से हुक्म लेकर वे लोग वहीं बाहर टिक गये। महोबा राज्य के कोठार से उनके भोजन आदि का प्रबन्ध हो गया।

उनके टिकने के तीसरे दिन महोवे पर विपत्ति के बादल आये। राज-कुमार करिया ने अपनी फ़ौज समेत वहाँ जाकर बनाफर* से कहा—देखो, तुम अभी अन्दर जाकर रानी मल्हना से कहो, वह हमें अपना नौलखा हार दे जावे, नहीं तो हम महोवे को उजाड़ देंगे।

करिया का यह दुर्वचन सुनकर सैयद और बनाफर बोले—भाई! हम तो परदेशी हैं, आज तीन दिन से यहाँ मेहमान हैं। यहाँ का हाल हमारा जाना हुआ नहीं।

इस पर करिया ने अपने आदमियों को फाटक तोड़ने का हुक्म दिया। फिर क्या था, महोवे के फाटक पर कुल्हाड़े बजने लगे।

फाटक पर कुल्हाड़े बजते देखकर वहाँ ठहरे हुए परदेशी चिन्तित हुए और दोनों दल आपस का झगड़ा दूर कर करिया की अनीति पर विचार

---

* दस्सराज बच्छराज का नाम है।

करने लगे। अन्त में दोनों दलों ने कहा—"हमने तीन दिन राजा परमाल का नमक खाया है। इसलिए हम लोगों के रहते महोवे का नाश न होना चाहिए।" यह ठहराव पक्का कर बनाफर और सैयद करिया का सामना करने को उठ खड़े हुए। सैयद ने अपने पुत्र और पौत्रों को बढ़ावा देकर लड़ाई के मैदान में आगे बढ़ाया और ख़ुद अपने दुधारे से करिया की सेना का नाश किया। बनाफर भाइयों की बेंड़ी मार से माड़ौ की फ़ौज में घबराहट मच गई। इधर ताल्हन सैयद, काई-सी फाड़ता हुआ, वैरी की सेना में घुसने लगा। बात की बात में महोवे के फाटक पर ख़ून की नदी बह निकली। माड़ौ के हज़ारों वीर मारे गये। फ़ौज को मारकर ताल्हन और बनाफर करिया की ओर लपके। इन लोगों को अपनी ओर आते देख करिया लड़ना छोड़कर भाग गया। उसके भागते ही उसकी बची हुई फ़ौज भी भाग गई।

यह ख़बर जब परमाल ने सुनी तब वे इन अतिथियों पर बड़े प्रसन्न हुए। वे महलों को छोड़कर ख़ुद दरवाज़े तक आये और उन सबको बड़े सम्मान के साथ महलों में लिवा ले गये। राजा ने दरबार में बैठकर उनकी बहुत तारीफ़ की।

इसके बाद बूढ़े परमाल ने बनाफर दस्सराज और बच्छराज को राजपाट और धन-दौलत आदि सभी का मालिक बना दिया और सैयद को अपनी सेना का सेनापति और क़िले का फ़ौजदार।

जवान बनाफरों को देखकर राजरानी मल्हना बड़ी प्रसन्न हुई। उसने राजा परमाल से कहा कि ऐसा करो जिससे ये लोग यहीं रहें। इसलिए इनका विवाह करवाकर इनके लिए सब तरह का सुपास कर दो। मल्हना की बात परमाल को भी अच्छी लगी। फ़ौरन ही उन दोनों भाइयों का विवाह देवै और ब्रह्मा*

---

* इसका नाम तिलका भी था। ये दोनों बहनें मल्हना की छोटी बहनें थीं। इनकी एक बहन अगमा पृथ्वीराज को व्याही थी। इसी के पेट से बेला का जन्म हुआ था।

नामक दो सुन्दरी बहनों के साथ करवा दिया गया। रानी मल्हना ने देवै को, जो दस्सराज की स्त्री थी, मुँहदिखाई में अपना नौलखा हार दे दिया। इसी तरह परमाल की दूसरी दूसरी रानियों ने भी दोनों बहुओं को बढ़िया गहने मुख देखते समय दिये।

कुछ दिनों बाद मल्हना की राय से महोबे से कुछ दूर, दसहरि नामक पुरवा में, बढ़िया महल बनवा दिये गये और उन्हीं महलों में बनाफरों को रहने का हुक्म मिला।

भगवान् की कृपा से कुछ दिनों बाद दस्सराज की रानी दिवला के पेट से वीरश्रेष्ठ आल्हा का जन्म हुआ और बच्छराज की रानी ब्रह्मा के गर्भ से मलखे पैदा हुए। इसी समय राजा परमाल की रानी मल्हना के गर्भ से ब्रह्मा ने जन्म लिया और कन्नौज में रतिभानु की रानी तिलका के गर्भ से लाखन उत्पन्न हुआ। ढेवा* का भी जन्म इसी समय हुआ। अस्तु।

दस्सराज और बच्छराज दोनों भाई प्रतिदिन महोबे जाते और दिन भर राज-काज करके शाम को लौट आया करते थे। उनकी चातुरी पर प्रजा के सभी लोग प्रसन्न थे। उधर सैयद से भी सब लोग प्रसन्न थे। बनाफर और सैयद आपस में भाईचारे का व्यवहार करते थे। न केवल यही, बल्कि वे एक दूसरे को सगे भाई की तरह समझते और चाहते थे।

राजा परमाल से छुट्टी लेकर सैयद अपने कुटुम्ब के साथ कुछ दिनों के लिए बनारस चले गये। सैयद को बनारस गया हुआ जान, माहिल की बन पड़ी। वह फ़ौरन अपनी लिल्ली घोड़ी पर बैठकर माड़ौ को रवाना हुआ। माहिल ने माड़ौ में पहुँचकर करिया से कहा—"राजकुमार! इस समय सैयद बनारस गये हुए हैं, इसलिए चलकर महोबे को लूट लो और हमारी बहन दिवला से हार छीनकर अपनी इज़्ज़त बढ़ाओ। यह सुनते ही करिया फूल-कर कुप्पा हो गया। उसने फ़ौरन फौज को सजने का हुक्म दिया। महोबे को

* यह राजपुरोहित चिंतामणि का पुत्र था।

घुस गया। ऊदल ने भी उसका पीछा कर बगिया को तहस-नहस कर दिया। बगिया को उजड़ी हुई देखकर माली बहुत नाराज़ हुआ। उसको धमकाकर ऊदल ने चुप कर दिया और महोबे लौट आये।

दूसरे दिन फिर सब कुमारों ने वन में शिकार खेलकर हिरनों को मारा और राजरानी के आगे शिकार रखकर इनाम पाया। फिर क्या था, राजकुमार रोज़ शिकार खेल-खेलकर मल्हना और परमाल को प्रसन्न करने लगे। महोबे में घर-घर आनन्द-बधाइयाँ बजने लगीं।



माड़ौ की लड़ाई

अङ्गारे को कपड़े में छिपाया जाय तो वह छिप नहीं सकता, वह तो कपड़े को भी जलाकर राख कर देता है। एक दिन शिकार खेलते-खेलते राजकुमार ऊदल उरई जा पहुँचे। नगर के कुएँ पर पहुँचकर उन्होंने पनिहारी से कहा—"हमारे घोड़े को थोड़ा-सा पानी पिला दो।" यह सुनकर पनिहारी ने कहा—"आप किस देश के ठाकुर हैं?" ऊदल ने उत्तर दिया—"हम माहिल के भानजे हैं और महोबे के रहनेवाले आल्हा के छोटे भाई हैं। हमारा नाम उदयसिंह है।"

यह सुनकर पनिहारी ने कहा—क्षमा कीजिए। मैं पानी नहीं पिला सकती। माहिल राजा नाराज़ होंगे।

उसकी यह ढिठाई देखकर ऊदल ग़ुस्से में भर गये। उन्होंने अपनी ग़ुलेल से कुएँ पर के सब घड़े फोड़ डाले और महोबे को लौट गये।

उधर पनिहारी रोती हुई माहिल के पास पहुँची। उसने रो-रोकर सारी कहानी कही। अपनी पनिहारी की ऐसी बेइज़्ज़ती देखकर माहिल के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने फ़ौरन एक पत्र लिखकर परमाल के पास भेजा। उसमें लिखा था—"महाराज! आपके घर के टुकड़खोरों ने हमारे राज्य में बड़ा उपद्रव मचा रक्खा है। यहाँ आकर आल्हा और ऊदल हमारी प्रजा पर अत्याचार करते हैं। आज ऊदल ने हमारी पनिहारी के सभी घड़े ग़ुलेल से फोड़ दिये। ये दोनों भाई अपने को बड़ा योद्धा लगाते हैं तो माड़ौ के राजा से अपने बाप का बदला क्यों नहीं लेते?"

माहिल का पत्र पाकर परमाल ने उस धावन से कहा—ये लड़के जैसे हमारे हैं, वैसे ही माहिल के हैं। इतने पर भी यदि माहिल को सन्तोष न हो तो

हम मिट्टी की जगह सोने के घड़े भेज दें। परन्तु आप माड़ौ की चर्चा न करें। यदि लड़के सुन पावेंगे, तो रार बढ़ जायगी।

परमाल का उत्तर पाकर माहिल चुप हो गया। तीन महीने बाद ऊदल फिर उरई पहुँचे। बगिया में घुसकर उन्होंने दो हिरनों को मारा। इसी समय माली ने जाकर माहिल के पुत्र अभई (अभयसिंह) से सारा हाल कहा। वह ग़ुस्से में भरकर तुरन्त ही बगिया में पहुँचा और ऊदल को ललकारकर बोला—क्यों? तुमने यहाँ आकर फिर उपद्रव मचाया! अब जो तुम अपना भला चाहते हो तो फ़ौरन यहाँ से काला मुँह कर जाओ। यह सुनते ही ऊदल बेंदुला पर से उतर पड़े। उन्होंने अभई को उठाकर पटक दिया। अभई जब अचेत होकर गिर पड़ा तब ऊदल बेंदुला पर चढ़कर महोबे को चल दिये।

यह ख़बर माहिल ने सुनी तो वह क्रोध से पागल हो उठा। थोड़ी देर बाद उसने अभई को होश में लाकर महोबे को कूच किया। माहिल जिस समय महोबे पहुँचा उस समय वहाँ दरबार लगा हुआ था। इसके पहुँचते ही परमाल ने इसकी आवभगत की और कुशल-प्रश्न पूछा। कुशल का नाम सुनते ही माहिल ने सब क़िस्सा परमाल को सुनाकर अन्त में कड़ककर कहा—"आल्हा-ऊदल बड़े बहादुर हैं तो माड़ौ के राजा करिंघाराय से अपने बाप का बदला क्यों नहीं लेते, जिनको उसने कोल्हू में पेरवाकर, उनकी खोपड़ियों को बरगद में टाँग रक्खा है।" यह सुनते ही ऊदल उठकर वहाँ आ गये और अपने पिता का हाल माहिल से पूछने लगे। उसने कहा—हमें नहीं मालूम, अपनी माता से पूछो। माहिल का उत्तर सुनकर ऊदल तड़प उठे और बोले—"यदि मैं दस्सराज का सच्चा बेटा हूँ तो करिया से ज़रूर बदला लूँगा।" अब ऊदल वहाँ से चल दिये और अपनी माता के पास पहुँचे। ऊदल को देवै ने ग़ुस्से में भरा देखकर पूछा—"बेटा! आज अनमने क्यों हो?" यह सुनते ही ऊदल ने कहा—"अम्मा! आज तक तुम सबने ददुआ का हाल हमसे छिपा रक्खा, पर अब आज सब हाल बता दो। नहीं तो मैं तलवार मारकर मर जाऊँगा।" ऊदल के ये वचन सुनकर देवै सन्न हो गई। माता को चुप देख ऊदल ने

तलवार निकालकर अपनी गर्दन की ओर जैसे ही बढ़ाई वैसे ही देवै ने उसका हाथ पकड़कर कहा—"बेटा, यह सब माहिल ने कराया है।" इसके बाद देवै ने रो-रोकर करिया की पहली चढ़ाई, अपने ब्याह तथा करिया की दूसरी चढ़ाई तक का सब हाल कह सुनाया। फिर उसने कहा—"बेटा, आज तक मैंने अपनी चूड़ियाँ नहीं उतारी हैं। मैंने ठान लिया था कि जब हमारे बेटे करिया से बदला ले लेंगे तभी सागर पर जाकर इन चूड़ियों को उतार दूँगी।" माता की विपत्ति की कहानी सुनकर ऊदल धाड़ मारकर रोने लगे और बोले—"अम्मा, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि माड़ौ के करिंघा से ठीक-ठीक बदला लूँगा। मैं करिया का नाम मिटाकर तुम्हारा प्रण पूरा करूँगा।" अपने बेटे की यह बात सुनकर देवै घबरा गई और बोली—"बेटा, माड़ौ को जीतना प्राणों पर खेलना है। बारह कोस तक बबूल का घना जंगल है और चारों ओर लोहे का कठिन कोट है। इसलिए बेटा, धीरज धरो और कुछ दिनों तक खेलो-खाओ।" माता की बात सुनकर ऊदल ने कहा—"मैं अब किसी की बात नहीं मान सकता। अपना प्रण पूरा करके ही दिखाऊँगा।" बेटे को अपनी बात पर अटल देखकर देवै उसे मल्हना के पास ले गई और उनसे सब हाल कहा। मल्हना ने भी ऊदल को बहुत समझाया, पर वह वीर अपने प्रण से न डिगा। तब कोई चारा न देख मल्हना ने ऊदल को माड़ौ पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया।

ऊदल को साथ लेकर देवै आल्हा के पास पहुँची। ऊदल ने आल्हा से सब हाल कहा और यह भी कहा कि जल्दी माड़ौ के लिए तैयारी करो। आल्हा बोले—भैया! हम लोग अभी इस लायक़ नहीं, कुछ दिनों और ठहरो। अगर जल्दी करोगे तो ददुआ की भाँति हमारी खोपड़ियाँ भी उनकी खोपड़ियों के साथ टँगी हुई दिखाई देंगी। आल्हा का उत्तर सुनकर मलखे बोले—"मैं चलता हूँ, ददुआ का बदला लेकर ही घर लौटूँगा। भगवान् ने अगर साथ दिया तो माड़ौ की नींव तक खोदकर फेंक दूँगा।" मलखे को तैयार देखकर ऊदल प्रसन्न हो गये और ताल्हन सैयद से बोले—"चाचा! आप ही हमारे धर्म के पिता हैं। अब हमें आप माड़ौ के जीतने की तरकीब बताइए।" इस पर ताल्हन बोले—

"मेरे रहते तुम्हारी ज़रूरत नहीं। बेटा ! जहाँ तुम्हारा पसीना गिरेगा वहाँ हमारा ख़ून गिरेगा।" इसके बाद मलखे ने ढेवा से कहा—"भैया ! जल्दी ही अच्छी साइत बता दो और यह भी बताओ कि माड़ौ को किस तरह जीता जाय।" ढेवा ने समरसार नाम की पोथी देखकर अच्छी साइत बता दी और कहा कि, "तुम लोग जोगियों के रूप बनाकर पहले माड़ौ का भेद लो। इसके बाद माड़ौ को जीत लोगे।"

ढेवा की बात सुनकर मलखे ने कपड़े के थान मँगवाकर गेरू से रँगवा लिये और उनकी बाईस-बाईस परतों की पाँच गुदड़ियाँ सिलवाईं। इन गुदड़ियों में हीरा, मोती, पन्ना आदि जवाहरात भी टँकवा दिये और उनके परतों में तलवारें, छुरी आदि पाँचों हथियार भी। इसके बाद आल्हा, ऊदल, मलखे, ढेवा और ताल्हन सैयद ने अपने हाथों में सोने के जड़ाऊ कड़े और कानों में कुण्डल पहने। फिर वे पाँचों जोगी का वेष बनाकर महलों में मल्हना के पास अलख जगाने गये। इस समय ताल्हन के हाथ में सारङ्गी, आल्हा के डमरू, मलखे के पास इकतारा, ढेवा के पास खँजड़ी और ऊदल के पास बाँसुरी थी। वे सभी भगवान् के गुण गाते-गाते महलों में पहुँचे।

इन जोगियों को इस तरह भजन गाते देखकर नगर के सभी स्त्री-पुरुष मोहित हो गये। इस समय मल्हना की बाँदी बाहर थी। जब उसने यह देखा तब अपनी रानी के पास जाकर इन जोगियों की बड़ी बड़ाई की। जोगियों की बड़ाई सुनकर मल्हना ने बाँदी को उन्हें बुलाने के लिए भेजा। जोगियों के आने पर रानी स्वयं द्वार पर जाकर उनका गाना सुनने लगी। कुछ देर बाद उन्हें मोतियों की भिक्षा देकर मल्हना बोली—"बाबा ! तुम लोग किस देश के हो और जोगी क्यों हो गये हो ?" इस पर ऊदल हँसकर बोले—"माई, तुम जोगियों के धोखे में न रहना। मैं तुम्हारा दुलारा बेटा ऊदल हूँ और बदला लेने के लिए हम सब माड़ौ को जा रहे हैं।" अपने पुत्रों और सैयद को देखकर मल्हना फूली न समाई और आशीर्वाद देकर बोली—"बेटा ! अब मुझे भरोसा हो गया कि तुम अपने बाप का बदला लेकर ही लौटोगे।"

इसके बाद वे जोगी देवै के महलों में पहुँचे और देवै भी उन्हें न पहचान सकी। तव ऊदल वोले, "मैया! हम लोग जोगी नहीं, तुम्हारे ही वेटे हैं और ये सैयद चाचा हैं। अब हम माड़ौ में रानी कुसला की ड्योढ़ी पर भीख माँगकर लोहागढ़ का सभी भेद ले लेंगे। फिर माड़ौ विजय करके उसकी नींव तक खुदवाकर फिकवा देंगे।" इन सबको देखकर देवै अवाक् रह गई। इसके बाद उसने अपने पुत्रों की भुजा पूजकर आशीर्वाद दिया कि माड़ौ जीतकर आना।

माताओं का आशीर्वाद पाकर वे लोग वेष बदलकर अपने-अपने रूपों में आ गये। फिर सैयद ने नगाड़ची को सोने के कड़े देकर लड़ाई का डंका वजवाने का हुक्म दिया। डंका बजते ही महोवे के वीर अपना-अपना काम छोड़कर क़िले में पहुँचे। उधर तोपों का दारोग़ा बुलवाया गया और उसे भी तोपें सजाने का हुक्म मिला। दारोग़ा ने कालिका, संकटा, हनूहंकारनि, गर्भगिरावनि, भवानी, सूर्यलपकनि, चन्द्रझपकनि, बुर्जमरोरनि, पर्वतढावनि, क़िलाधँसावनि, लछमना, वबं कि व चंडी आदि नामों की तोपें सजाकर वाहर खड़ी करवा दीं। उधर हथिसार के दारोग़ा ने दुइदन्ता, इकदन्ता, भौंरागंज, अंगद, पंगद, गज, मलयागिरि, मैनकुंज, धौलागिरि, भूरा, मकुना, मुडिया और ऐरावत आदि अनेक हाथियों को सोने-चाँदी के जड़ाऊ हौदों से सजाकर वाहर निकालकर खड़ा कर दिया। घुड़साल के दारोग़ा ने भी हुक्म पाकर कच्छी, मच्छी, अरवी, ताज़ी, मुश्की, लक्खा, रारी, हरियल, पचकल्यानी, सव्ज़ा, सुर्ख़ा, दरियायी, श्यामकर्ण, सुखमंजन, कबूतर, सफ़ेदा, पचरङ्गा, लीला, हिरोंजिनि व और सव जातियों के घोड़ों को सजाकर वाहर खड़ा किया। कहते हैं कि उनके सुम केसर डाली हुई मेंहदी से रँगे गये और उनकी पूछें भी रङ्ग-विरङ्गी कर दी गईं। सोने की लगामों और चाँदी की रकावों से कसे हुए घोड़े वड़े भले जान पड़ते थे। रेशमी तंगों और हीरों-मोतियों की कलँगियों को लगाये हुए वे घोड़े इन्द्र के घोड़े को भी मात कर रहे थे। इसी प्रकार ऊँट भी सजाये गये।

सब के सज जाने पर सैयद ने सिपाहियों के लिए पोशाकों की कोठरियाँ और हथियारों के कोठार खोल दिये और कहा—"वीरो! आज बहुत दिनों बाद तुम्हारी परीक्षा का दिन आया है। देखें कौन-कौन चन्देले नमक को हलाल करते हैं। तुम लोग अपनी-अपनी पोशाकें और हथियार लेकर लड़ने को तैयार हो जाओ। हाँ, जिन्हें अपने प्राण प्यारे हों वे हमारे साथ न चलें, पर जिन्हें वीर और क्षत्रिय होने का दावा हो वे ज़रूर चलें और अपने देश की विजय-पताका को माड़ौ में फहरावें तथा नामवरी पावें।"

सैयद के वचन सुनकर सब लोग एक स्वर से "तैयार हैं", "तैयार हैं" कह उठे। इसके बाद सब लोग कपड़े पहनकर चलने की बाट देखने लगे।

उधर सातों भाई मनिया* माता की पूजा करके परमाल से हुक्म लेने पहुँचे। परमाल ने ख़ुशी से उनकी पीठें ठोंकीं और कहा—"बेटो! एक बात का ध्यान रखना। कभी स्त्री, बच्चा, नपुंसक, शरणागत और निहत्थे के ऊपर हाथ मत डालना। जाओ, तुम्हारी जीत होगी।"

राजा की आज्ञा को माथे चढ़ाकर वे लोग मल्हना, देवै और तिलका के पास गये और उनसे आशीर्वाद लेकर फ़ौज के पास आये। राजकुमारों को देखकर फ़ौज ने उन्हें फ़ौजी सलाम किया और तोपें विकट स्वर से गरजीं। इसके बाद सैयद के हुक्म से कूच का डंका बजा। डंके के बजते ही सब लोग अपने घोड़ों पर सवार होकर इष्टदेव की जय बोलते हुए चल दिये।

सत्रह दिनों की मंज़िल तय करके वे लोग बबुरीवन में पहुँचे। तुरन्त ही एक स्थान पर डेरे खड़े कर दिये गये। कहते हैं, दो कोस तक बराबर फ़ौजी पड़ाव पड़ा हुआ था। डेरों में इस प्रकार ठहरे ठहरे जब दस दिन बीत गये तब ऊदल ने जाकर आल्हा से कहा—"दादा, अब किस नींद में सो रहे हो? क्या यहाँ हम लोग डेरे डालने आये थे? उठिए! झटपट तय कीजिए कि हमें अब क्या करना है।" ऊदल के वचन सुनकर आल्हा ने ढेवा को बुलाया और उससे

* मनिया माता महोबे की प्रसिद्ध देवी हैं।

पूछा कि "हम लोगों को किस दिन और किस समय माड़ौ का भेद लेने को चलना चाहिए?" ढेवा ने पोथी देखकर अच्छी साइत बता दी। तब उन पाँचों वीरों ने जोगियों का रूप बनाया। वे सारी देह में भस्म और माथे पर रामानंदी तिलक लगाये बड़े भले जान पड़ते थे। वे गुदड़ी पहनकर और अपना-अपना बाजा लेकर पहले अपनी माता देवै के डेरे में गये। देवै ने लड़कों को आते देख तुरन्त ही उन्हें आदर से बिठाया। फिर उनके रोचना लगाकर और आरती करके उन्हें कुछ भोजन कराया। चलते समय देवै ने उनकी भुजाएँ पूजीं और मनोरथ सुफल होने का आशीर्वाद दिया।

माता का हुक्म लेकर वे कुमार सैयद के साथ आगे बढ़े और थोड़ी ही देर में बबुरीवन लाँघकर लोहाकोट के फाटक पर जा पहुँचे। फाटक को बन्द देखकर इन्होंने द्वारपाल से फाटक खोल देने को कहा। उसने इनसे पूछा—"महाराज, आप लोग कहाँ से आये हैं और कहाँ जायँगे? आप लोग किस लिए भीतर जाना चाहते हैं?" यह सुनकर सैयद ने कहा—"हम लोग बङ्गाल के रहनेवाले हैं और गोरखपुर में हमारी कुटी है। हिंगलाज जाते हुए रास्ते में ख़र्चा निपट गया है। इसी लिए हम तुम्हारे राज्य में कुछ भीख माँगना चाहते हैं।" साधुओं की बातें सुनकर द्वारपाल ने हरकारे को जम्बै के छोटे राजकुमार अनुपी के पास हुक्म लेने को भेजा। अनुपी ने अपने मन्त्री टोडरमल से राय लेकर जोगियों को आने का हुक्म दिया। हरकारे ने आकर फाटक खुलवा दिया। ड्योढ़ी में घुसते ही जोगी अपनी-अपनी तानें तोड़ने लगे। उनके बढ़िया गीतों से सुननेवाले मुग्ध हो जाते थे। जोगी अनुपी के दरबार में गये। अनुपी को बैठा देख इन सब ने उसे बायें हाथ* से अभिवादन किया। जोगियों की यह ढिठाई देख अनुपी ग़ुस्से में भरकर बोला—"तुरन्त इन दुश्मन जोगियों को निकालकर फाटक के बाहर करो। ये लोग मूर्ख हैं।" अनुपी को ग़ुस्से में भरा देखकर ऊदल बोले—"राजन्! तेरा ध्यान कहाँ है? हम लोग जिस हाथ से प्रभु के नाम की माला

---

* बायें हाथ से शत्रुओं को सलाम किया जाता है।

जपते हैं उससे तुमको सलाम करके अपनी तपस्या को नष्ट करना नहीं चाहते।" ऊदल की ठीक बात सुनकर मन्त्री टोडरमल ने कहा—"राजकुमार, इसके मुँह लगकर तुम शाप के पात्र न बनो। देखते नहीं, इनके मुँह सच्चे जोगियों की तरह कैसे दमक रहे हैं। चुपचाप इनका गाना सुनकर इन्हें भिक्षा दो।" मन्त्री के वचन सुनकर जोगी बड़े प्रसन्न हुए और अपने बाजों को उठाकर बजाने और गाने लगे। इसी समय ओठों पर वंशी धरकर ऊदल बाँकुरा नाचने लगा। जोगियों के नाचने और गाने ने सब पर मोहिनी सी डाल दी। सब के सब मुग्ध हो गये। यह देखकर अनुपी बोला—"महाराज! आप लोग जन्म भर यहीं किसी सुन्दर स्थान में रहें, तो अच्छा हो।" यह सुनकर ढेवा बोला—"राजन्! हम लोग जोगी हैं। हमारा पैर स्थिर नहीं। बहते पानी और रमते जोगी का स्थान नहीं।" इसके बाद अनुपी ने मोहरों के तोड़े मँगवाकर भिक्षा में दिये। जोगी लोग भिक्षा पाकर माड़ौ नगर की ओर चले। एक पहर चलकर वे लोग माड़ौ के राजमहल के द्वार पर गाते बजाते हुए पहुँचे। दरवानी ने इनका नाम-धाम पूछकर इनसे कहा—"महाराज, आप तो सदैव यहीं निवास करें। आपको छोड़ने को जी ही नहीं चाहता।" तब ऊदल ने हँसकर कहा—"बच्चे! क्या पागल है? हम लोग रमते जोगी हैं। कहीं घड़ी भर भी नहीं रहते। हिंगलाज जाते समय ख़र्चा निपट गया है, इससे तेरी नगरी में भिक्षा के लिए आये हैं।" यह सुनकर दरवानी ने तुरन्त ही फाटक खोलकर इनसे भीतर आने को कहा। जोगी लोग प्रसन्न होते फाटक लाँघकर नगर में नाचते गाते और बजाते हुए पहुँचे। इनके नाच को देखकर सर्राफ़, जैाहरी, साहूकार, बनिया और पंसारी अपनी अपनी दूकानें छोड़कर इनके पीछे-पीछे चलने लगे। छतों पर से और झरोखों में से स्त्रियाँ इनको देखकर इन पर रीझ गईं। रास्ते में जोगियों को शाल-दुशाले, अँगूठियाँ, मालाएँ आदि अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ भेंट में मिलती जाती थीं। रुपये और मोहरें जो उनके हाथ में आतीं उन्हें तो वे लोग रख लेते थे, पर जो भूमि पर गिर पड़ते उन्हें वे लोग उठाते न थे। इस तरह सड़क पर रुपयों और मोहरों के ढेर लग गये। सब लोग उन पर पैर

रखते हुए जोगियों के पीछे जा रहे थे। चलते-चलते जोगी पनघट पर जा-कर रुके और वहाँ खड़े होकर अपने कर्त्तव दिखाने लगे। जोगियों के कर्त्तव देखकर पनिहारियों की अजीब दशा हो गई। घड़े को फाँसे हुए पनिहारियाँ घड़ों को फाँसे ही रह गईं, खींचती हुई खींचती ही रह गईं। इस समय रानी कुसला की रूपा नाम की बाँदी भी वहाँ मौजूद थी। लगभग डेढ़ पहर के बाद उसे होश आया कि रानी नाराज़ होंगी और देर लगने का कारण पूछेंगी। घबराती हुई रूपा पानी लिये हुए महलों में गई। बहुत देर बाद उसे आते देखकर कुसला रानी ने कहा—"अरी बाँदी! तू अब तक कहाँ रही? कुछ दाल में काला मालूम पड़ता है। अभी मैं करिया को बुलवाकर तेरा पेट फड़वा-कर भूसा भरवाती हूँ।" रानी को नाराज़ देखकर वह हाथ जोड़कर बोली—"अन्नदाता! क्षमा करो। पनघट पर पाँच जोगी ऐसे आये हुए हैं जिनके गाने, बजाने और नाचने से अकेली मैं ही नहीं, बल्कि सारा नगर ही उन पर लट्टू हो गया है। छोटा जोगी (ऊदल) तो बड़ा रूपवान् और तेजस्वी है। वह ऐसा नाचता है कि देखते ही बनता है।" बाँदी के वचन सुनकर रानी की उत्कण्ठा बढ़ी। उसने तुरन्त बाँदी को उन जोगियों को बुलाने के लिए भेजा।

बाँदी पनघट पर गई और हाथ जोड़कर जोगियों से बोली—"महाराज! आपको महलों में राजरानी ने स्मरण किया है। आप शीघ्र ही चलकर मुँह-माँगी भिक्षा लें।" बाँदी के वचन सुनकर जोगी ख़ुशी से उसके पीछे-पीछे चल दिये। ड्योढ़ी पर पहुँचकर बाँदी बोली—"आप तनिक यहीं ठहरें! मैं आपके आने की ख़बर देकर अभी बुलाने आती हूँ।" अब वह अन्दर चली गई। इधर आल्हा ने आँख घुमाकर देखा तो उन्हें पचशाब्द हाथी और पपीहा घोड़ा दिखाई पड़े। उन्हें देखकर आल्हा की आँखों में आँसू भर आये। आल्हा को रोते देखकर ऊदल ने इसका कारण पूछा। आल्हा ने तुरन्त उन्हें हाथी और घोड़ा दिखाकर कहा कि यही पचशाब्द और पपीहा है। अब ऊदल तड़पा ही चाहते थे कि मलखे ने उन्हें रोक दिया और आगे बढ़ने को कहा।

दूसरे फाटक पर जाकर उन्हें पत्थर के कोल्हू* और बरगद का पेड़ दिखाई पड़े। आल्हा ने बरगद में टँगी हुई खोपड़ियों को देखकर पहचान लिया। सामनेवाले बुर्ज पर दस्सराज और बच्छराज के नर-कङ्काल पड़े सूख रहे थे। आल्हा उन्हें देखकर बहुत दुखी हुए। ऊदल को वे कङ्काल, खोपड़ियाँ और कोल्हू दिखाकर आल्हा रोने लगे। उसी समय लपकती हुई बाँदी भी वहाँ पहुँची। उसने उन्हें रोते देखकर कहा—"तुम लोग रोते क्यों हो? मालूम पड़ता है, तुम लोग राजकुमार हो और यहाँ वेष बदलकर भेद लेने आये हो। मैं अभी जाकर करिया से सब हाल कहती हूँ नहीं तो अपना हाल सच-सच कहो।" यह सुनकर मलखे बोले—"अरी बाँदी चुप रह। मैं नहीं जानता था कि तेरे यहाँ भूत-चुड़ैलों का अड्डा है। देख, मेरा छोटा जोगी डरकर कैसा रो रहा है।" बाँदी ने हाथ जोड़कर कहा—"महाराज! यहाँ भूत वग़ैरह कुछ नहीं है। यह हड़ावर दस्सराज और बच्छराज के हैं। देखो, उन कोल्हुओं में पिरवाकर ये हड्डियाँ यहाँ डाल दी गई हैं। उनके सिर इस बरगद में यह लटक रहे हैं। इन्हीं की आभा दिन-रात आल्हा, ऊदल, मलखे, सुलखे के नाम ले लेकर रोया करती है। आप लोग डरें नहीं, हमारे साथ चलें।"

बाँदी के साथ रङ्गमहल के द्वार पर जा जोगी लोग खड़े हो गये। करिया के महलों की कारीगरी और चित्रकला देखकर सब लोग दङ्ग हो गये। इतने में रानी वहाँ आकर एक परदे के अन्दर बैठ गई। रानी ने इन जोगियों को देखा तो उसका माथा ठनका। उसने कहा—"अरी बाँदी! तू यहाँ भेदियों को लाई है। देख! इनके चढ़ा-उतार मुख, सिंह-सदृश कमर और छाती इनका राजकुमार होना बतलाती है। मैं अभी करिया को बुलवाकर तेरा पेट फड़वाती हूँ।" यह सुनकर ऊदल बोले—"महारानी! हम लोग अपने रूप को कैसे छिपावें? ब्रह्मचर्य और योग से तुम्हें ऐसा जान पड़ता है। हमारे देश में सूखा पड़ गया है, तभी हम तुम्हारी नगरी में आये हैं।" रानी ने हँसकर कहा—"क्षमा करो। अच्छा, यह हीरा-मोतियों से जड़ी गुदड़ी कहाँ पाई

* इन्हीं में बनाफर दोनों भाई पिरवाये गये थे।

है ?" मलखे ने तुरन्त ही उत्तर दिया "यह गुदड़ी हमें कन्नौज में राजा जयचन्द ने दी है। और ये हाथों के कड़े भी उन्हींने दिये हैं।" ठीक उत्तर पाकर, रानी ने कहा—"महाराज, अब हमें कोई सन्देह नहीं। दया करके अपना कर्तब दिखाइए।" कहने भर की देर थी। आल्हा ने तुरन्त अपना डमरू, मलखान ने अपनी बीन, सैयद ने सारङ्गी, ढेवा ने खँजरी और ऊदल ने बाँसुरी लेकर नाचना और गाना शुरू किया। बढ़िया राग-रागिनियों के आलापों से सारा महल गूँज उठा। रानी भी परदा हटाकर जोगियों के सामने जा खड़ी हुईं। वीर उदयसिंह के नाच से रानी बहुत प्रसन्न हुईं। रानी के बाहर आने पर उसके गले के नौलखा हार पर ऊदल की निगाह पड़ी। अपनी माता के गले के हार को देखकर और बरगद में टँगी हुई खोपड़ियों की ओर मुँह करके ऊदल फूट-फूटकर रोने लगे। रानी ने ऊदल को रोते देखकर सैयद से कारण पूछा। सैयद ने कहा—"यह उस सूखती हुई हड़ावर और टँगी हुई खोपड़ियों को देखकर तथा वहाँ डरावनी और रोती हुई आवाज़ों को सुनकर डर गया है। कृपा करके आप बता दें कि यह खोपड़ी वग़ैरह किनकी हैं।" रानी ने हँसकर कहा—"हमारे बड़े बेटे करिया ने महोबे पर चढ़ाई करके वहाँ लूट करवाई थी। उसी लूट में यह हार, पचशाबद हाथी, पपीहा घोड़ा और लाखा पातुर आई है। ये हड्डियाँ और खोपड़ियाँ आल्हा और मलखे के बाप दस्सराज और बच्छराज की हैं, जिन्हें करिया क़ैद करके लाया था। यहाँ वे दोनों उन कोल्हुओं में पिरवा डाले गये। उन्हीं की वे हड्डियाँ सूख रही हैं और वे सिर लटक रहे हैं। दोनों भूत होकर अपने लड़कों की याद किया करते हैं। अगर उनके लड़के लायक़ हों तो इन हड्डियों को ले जाकर गङ्गा में डालें और इनकी गया करें।" अब रानी ने कुछ देर ठहरकर कहा—"आप लोग चिन्ता न करें। यदि यहाँ डर लगता हो तो महलों के अन्दर चलकर आप नाचें।" जोगी लोग तुरन्त ही महल के अन्दर जाकर नाचने-गाने लगे। उनका नाचना देख और गाना सुनकर कुसला ने कहा—"महाराज! मेरी इच्छा यह है कि आप लोग जन्म भर यहीं रहें। यदि न रहना

चाहें तो कम से कम चौमासे भर तो यहीं रहें। चलते समय मैं छकड़ों में धन लदवाकर आपके साथ कर दूँगी। यही नहीं, आप राज-पाट जो चाहेंगे वही मैं आपको भेंट करूँगी। आप चाहें तो मैं सुन्दरी कन्याओं के साथ आपका विवाह करवा दूँगी।" विवाह का नाम सुनते ही मलखे चौंक पड़े और बोले—"राम! राम! पाप की बातें हमसे करने में तुझे लाज नहीं लगती। अब हम लोग यहाँ एक पल भी न रुकेंगे।" यह कहकर वे लोग वहाँ से चल पड़े। जोगियों को अप्रसन्न होकर जाते देख कुसला रानी उनके पैरों पर गिर पड़ी और बोली—"महाराज, भिक्षा तो लेते जाइए।" अब कुसला ने सोने के थाल में मोती भरकर उन्हें भिक्षा में दिये। उन मोतियों में से एक मुट्ठी मोती लेकर, ऊदल उन्हें सूँघने लगे और बोले—"भैया! ये किस पेड़ के फल हैं?" रानी ने ऊदल के भोलेपन पर प्रसन्न होकर कहा—"जोगी! ये फल नहीं, मोती हैं। इनकी क़ीमत हज़ारों रुपये हैं।" यह सुनकर ऊदल ने सब मोती उठाकर फेंक दिये और कहा—"हमें यह कुछ नहीं चाहिए। हमें तो कुछ निशानी दीजिए। जैसे कन्नौज की रानी तिलका ने अपना नौलखा हार दिया था।" हार का नाम सुनकर रानी की दृष्टि अपने गले के नौलखा हार पर पड़ी और मन में यह सोचकर कि, इसमें कुछ दाम भी नहीं लगे हैं उसने वह हार उतारकर, ऊदल को दे दिया। हार को पाकर ऊदल बड़े प्रसन्न हुए। इसी समय रानी ने कहा—"महाराज, यदि तनिक देर और यहीं ठहरे रहें तो मैं अपनी कन्या को बुलवाकर उसे भी आपका दर्शन करवा दूँ।" यह कहकर रानी ने बाँदी को बेटी को बुलाने के लिए भेजा। थोड़ी देर बाद राजकुमारी विजया शृङ्गार किये हुए वहाँ पहुँची। उसने वहाँ जाकर तुरन्त ही ऊदल को पहचान लिया। नयन मटकाते हुए उसने एक पान ऊदल को खिला दिया। विजया के रूप को देख ऊदल अचेत होकर ज़मीन पर गिर पड़े। उधर विजया भी अचेत हो गिर पड़ी। यह देख रानी कुसला चौंक गई और कड़ककर बोली—"जोगी नहीं ये भोगी हैं। किसी राजा के राजकुमार हैं। अर्थात् ये जोगियों के वेश में छिपे हुए राजकुमार हैं। इसी से यह हमारी बेटी पर मोहित होकर

मूर्छित हो गया है।" अब उसने बाँदी को ललकारकर कहा—"जा, जल्दी से करिया को बुलाकर इनके सिर कटवा ले।" रानी को कुपित जानकर मलखे ने तड़पकर कहा—"देख तू राजकुमारों के धोखे में न रहना। तेरी कुमारी ने छोटे जोगी को पान में कुछ खिला दिया है। यदि छोटा जोगी मर गया तो याद रखना, शाप देकर हम सारे नगर को भस्म कर डालेंगे।" इतने में विजया होश में आ गई। तब कुसला ने उससे बेहोशी का कारण पूछा। विजया ने कहा—"अम्मा, देखो न। मुझे यह सोच है कि वारी उमर ही में इन लोगों ने अपने मूँड़ मुँड़वाकर-जोग क्यों ले लिया ? मैं इसी सोच में थी कि पैर फिसल गया और मैं गिर पड़ी।" रानी ठीक उत्तर पाकर शान्त हो गई। इतने ही में ऊदल भी होश में आ गये। तब रानी ने जोगियों से फिर कर्त्तव दिखाने को कहा। फिर नाच-रङ्ग होने लगा। समाप्त होने पर रनिवास की दूसरी रानियों ने भी बहुत से बढ़िया गहने उन्हें दिये।

अब जोगी वहाँ से चल पड़े। जब वे रनिवास की ड्योढ़ी पर पहुँचे, तब विजयसिन विजया ने एक खिड़की से आकर ऊदल की बाँह पकड़ ली। वह ऊदल को अपने साथ लेकर ऊपर चढ़ गई। विजया के महल में जाकर उदय-सिंह एक चन्दन की चौकी पर बैठ गये। विजयसिन ने पंखा झलते हुए कहा—"कहो, आपका ही नाम उदयसिंह है न ? छिपाने की कोशिश न कीजिए, नहीं तो मैं अपने भाई को बुलवाकर आपका सब भेद खोल दूँगी।" ऊदल ने मुँह बनाकर कहा—"क्या पागल हो ! कौन उदयसिंह ? कहाँ रहते हैं ? मैं उन्हें क्या जानूँ ? संसार में बहुत सी शकलें एक-दूसरी से मिलती हैं और तुम ऊदल को क्या जानो ?" विजया ने हँसकर कहा—"माहिल के पुत्र अभई की बरात में तुम सिरउँज गये थे। वहीं मैं भी न्योते में गई थी। जब तुम मंडप के नीचे बैंगनी पगड़ी बाँधकर आये थे, मैं भी वहीं खड़ी थी। वहाँ तुमने जान-बूझकर अपनी कुहनी मारी थी, जिससे मेरा अंगबन्ध टूट गया था। वहाँ तुम्हें देखकर मैंने प्रण किया था कि यदि ब्याह होगा तो तुम्हारे साथ होगा, नहीं तो मैं जन्म भर क्वाँरी ही रहूँगी। आज बहुत दिनों बाद मेरी सच्ची लगन ने तुम्हारे दर्शन करवाये

हैं।" उसकी ये बातें सुनकर उदयसिंह हँस पड़े और बोले—"हाँ, तुमने मुझे सचमुच पहचान लिया।" तब विजया ने प्रसन्न होकर कहा—"तो अब झटपट यहीं हमारा तुम्हारा विवाह हो जाय।" ऊदल ने त्योरी बदलकर कहा—"क्या हम हिजड़े हैं? बाप का बदला लेकर हम तुम्हारे साथ ब्याह करेंगे। यह हम तुमसे सौगन्द खाकर कहते हैं।" ब्याह होने की पक्की बात जानकर विजया बोली—"देखो प्राणनाथ! आप बबुरीवन को तोपों से जलाकर, लोहागढ़ को बारूद की सुरङ्गों से उड़ा दें तो आप जल्दी ही सुगमता से जीत लेंगे।" इसके थोड़ी देर बाद वह फिर बोली—"अगर आप कुछ देर ठहरें तो मैं रसोई बनाकर आपको परोस कर खिलाऊँ। फिर बढ़िया सेज पर कुछ देर आराम करके आप चले जायँ।" ऊदल ने हँसकर कहा—"धीरज धरो। यह सब होगा, परन्तु मैं बिना बदला लिये माड़ौ का जल तक नहीं पीऊँगा। क्वाँरी होने के कारण भी तुम्हारा परोसा भोजन नहीं करूँगा और न सेज पर ही पैर रक्खूँगा।" यह कहकर ऊदल वहाँ से चल दिये और अपनी मण्डली से जा मिले। वहाँ जाकर ऊदल ने सब हाल कह सुनाया। सब सुनकर आल्हा ने कहा—"वैरी की कन्या के साथ ब्याह करना ठीक नहीं। याद रक्खो, जिस दिन उसे अपने बाप और भाई की याद आवेगी उसी दिन वह तुम्हें विष देकर मार डालेगी।"

इस प्रकार बातचीत करते हुए वे लोहागढ़ के फाटक पर पहुँचे। वहाँ दरबान से दरवाज़ा खुलवाकर वे बारहदरी के पास गाते-बजाते हुए पहुँचे। राजा जम्बै के कानों में जब जोगियों की तानें पड़ीं तब उसने उनको अपने पास बुलाया। जोगियों ने दरबार में जाकर राजा जम्बै को बायें हाथ से सलाम किया। जोगियों के इस वैरियों जैसे व्यवहार को देखकर जम्बै बहुत नाराज़ हुआ। उसने तुरन्त ही जोगियों को निकल जाने का हुक्म दिया। राजा को नाराज़ देखकर ऊदल ने अदब के साथ कहा—"महाराज! हम लोग जिस हाथ से अपने इष्टदेव के नाम की माला फेरते हैं और उसका नाम लेते हैं, उस हाथ से मनुष्य को बन्दगी करके हम अपना जोग भङ्ग करना नहीं चाहते।" ऊदल से ठीक उत्तर पाकर जम्बै को सन्तोष हुआ और वह बोला—"यह ठीक है पर तुम्हारे माथे पर बैंगनी पगड़ी का जो

चिह्न दिखाई पड़ता है वह कैसा है ? और तुम्हें यह जवाहिरों से जड़ी हुई गुदड़ियाँ कहाँ मिली हैं ?" ऊदल ने कहा—"महाराज, ये गुदड़ियाँ और ये हाथों के कड़े हमें कन्नौज के राजा जयचन्द ने दिये हैं। कन्नौज से लौटते समय हम महोबे गये। वहाँ के राजा परमाल ने हमको अपने यहाँ चौमासे भर रक्खा। उसी समय वहाँ के दो राजकुमारों आल्हा-ऊदल ने हमको पगड़ी और कलँगी इनाम में दी। हमने वहाँ चार महीने उस चीरा और कलँगी को बाँधा था। इसी से यह निशान पड़ा है। इस समय हम लोग वहीं से यहाँ आ रहे हैं और हिंगलाज को जायँगे।" अपने सभी सन्देहों का ठीक समाधान सुनकर जम्बै ने जोगियों को करतब दिखाने की आज्ञा दी। चटपट आल्हा के डमरू के साथ सब के बाजे बज उठे। ऊदल वंशी बजाकर नाच दिखाने लगे। उसे देख सभी दरबारी प्रसन्न हो उठे और अपने-अपने गहने उतारकर उन्हें देने लगे। पर जोगियों ने वह पाया हुआ सामान सबको वापस कर दिया और कहा—"हम लोग पेट भर अन्न चाहते हैं। दौलत को लेकर हम क्या करेंगे ? रास्ते में चोर बटमार हमेशा हमें तंग करते रहते हैं।" जोगियों के इस त्याग को देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने चन्दन की चौकियाँ मँगवाकर जोगियों को बिठाया और कहा—"महाराज ! आप लोग हमारे यहाँ भी बरसात भर रहकर हमें कृतार्थ करें। आप लोगों का सब खर्च ख़ज़ाने से दिलवा दिया जायगा।" मलखे ने हँसकर कहा—"हम लोग इस समय हिंगलाज को जा रहे हैं। इसलिए ठहरना नहीं हो सकता।" यह सुनकर राजा जम्बै ने उन्हें जड़ाऊ कलँगी इनाम में दी। पर ऊदल ने लेने से इनकार करते हुए कहा—"क्षमा करें, हम लोग यह कुछ नहीं चाहते। हमने काशी में सुना था कि आपके यहाँ की लाखा पातुर बहुत अच्छा नाचती है। इसलिए यदि आप प्रसन्न हैं, तो लाखा का नाच दिखवा दीजिए।" राजा जम्बै ने तुरन्त ही लाखा को बुलवाकर नाचने की आज्ञा दी।

लाखा का नाच देखकर जोगी दंग रह गये और उसकी तारीफ़ करने लगे। इसी समय ऊदल ने आल्हा से कहा—"दादा ! मेरी इच्छा है कि मैं यह हार

लाखा को इनाम में दे दूँ।" यह सुनकर आल्हा चौंक पड़े और बोले—"ख़बरदार! ऐसा मत करना। यदि करिया ने देख लिया तो विपत्ति में पड़ जाओगे।" ऊदल ने आल्हा का कहना न मानकर वह हार लाखा को दे दिया। लाखा ने ज्योंही वह हार देखा त्योंही वह ठिठक गई और सैयद को देखकर जान गई कि "ये बनाफर के बेटे हैं"। उसने वह हार छिपाकर पहन लिया। वहाँ से हटते समय लाखा ने उन सबको भागने का संकेत किया। संकेत पाते ही जोगी चल दिये और बात की बात में फाटक के बाहर हो गये।

इधर नाचने में जैसे ही लाखा का अंचल उड़ा वैसे ही उस हार की चमक से जम्बै की आँखें चौंधिया गईं। उसने तुरन्त ही लाखा से कहा—"यह महोबे-वाला हार तेरे पास कैसे पहुँचा?" लाखा ने उत्तर दिया—"महाराज, माड़ौ में आये बारह बरस हो गये, कभी कुछ इनाम में न पाया और दर दर के भटकनेवाले जोगी हमें यह हार इनाम में दे गये।" यह सुनकर जम्बै की त्योरियाँ बदल गईं। उसने तुरन्त ही करिया को बुलाकर कहा—"शीघ्र ही अपनी माँ से नौलखा हार माँग लाओ।"

करिया को रंगमहल में आया देखकर रानी कुसला प्रसन्नता से फूलों का पंखा लेकर उसके ऊपर डुलाने लगीं और बोलीं—"लाल! आज घबराये हुए कैसे हो?" करिया ने कहा—"दादा ने नौलखा हार मँगवाया है।" रानी ने बहाना बनाते हुए कहा—"वह तो आज कई दिन हुए पटवा के घर बनने को गया है, उसके मोर टूट गये थे।" करिया ने कहा—"तो टूटा हुआ ही मँगवा दो।" यह सुनकर रानी चुप हो गई और घबराई हुई सी बोली—"बेटा, क्या कहें? पाँच जोगियों ने यहाँ आकर बड़ा सुन्दर करतब किया। वे हमसे इनाम में वह हार माँग ले गये।" यह सुनते ही करिया वहाँ से चल पड़ा और उसने आकर सब हाल राजा से कह सुनाया। यह सुनते ही राजा ने कहा—"जाकर झटपट उन जोगियों को पकड़ लाओ। वे जोगी के रूप में भेदिये मालूम होते हैं।" पिता के हुक्म को सिर-माथे रखकर करिया तुरन्त अपने घोड़े पर सवार हो पचपेड़ी की ओर चल दिया। जोगियों से थोड़ी दूर रह जाने पर

करिया ने उन्हें ठहर जाने की आवाज़ दी और कहा—"चलो, तुम्हें राजा ने बुलाया है।" मलखे ने हँसकर कहा—"जा, जा! हम लोग कभी पीछे पैर नहीं रखते।" यह सुनते ही करिया ने अपनी तलवार खींचकर कहा—"ख़बरदार! जो एक भी क़दम आगे बढ़ाया।" करिया की तलवार देखकर जोगियों ने भी अपनी गुदड़ियों में से तलवारें निकाल लीं और करिया की ओर बाज़ की नाईं झपटे। जोगियों को तलवार लेकर अपनी ओर आते देख करिया घबरा गया। उसने अपने घोड़े को मोड़कर माड़ौ की राह ली।

जोगियों का हाल सुनकर जम्बै दङ्ग रह गया। उसने कहा कि वे सच-मुच महोबे ही के राजकुमार थे। इसके बाद राजा ने अपने कुमार सूरज को बुलवाकर सेना तैयार करने का हुक्म दिया।

उधर महोबे के राजकुमार अपने डेरों में पहुँचे। राजमाता देवै ने उनकी आरती उतारकर उन्हें ढाढ़स बँधाया। कुमारों ने सब आपबीती माता से कह सुनाई।

थोड़ी देर बाद ऊदल और ढेवा नर्मदा-तट पर गये और वहाँ वह स्थान ढूँढ़ने लगे जहाँ नदी पांज थी। कपड़े धोती हुई धोबिनों ने उन्हें वह स्थान बता दिया। ऊदल उस स्थान पर चिह्न लगाकर ढेवा के साथ आल्हा के डेरों में आये और हाथ जोड़कर बोले—"दादा, फ़ौज उतारने के लिए हम नर्मदा की पांज-जगह देख आये हैं, परन्तु उस पार घने बबुरीवन में डेरे कहाँ पड़ेंगे, यही हमें चिन्ता है।" आल्हा ने कहा—"चिन्ता क्या है? चन्दन बढ़ई को उसके नौ सौ साथियों समेत वहाँ भेज दो। थोड़ी ही देर में सारा वन साफ़ हो जायगा।" झटपट चन्दन को उसके साथियों समेत वहाँ भेज दिया गया। कहते हैं कि इनकी देखादेखी और राजपूत भी अपने कातों को लेकर बबुरीवन में जा डटे। थोड़ी ही देर में एक बड़ा मैदान साफ़ कर दिया गया। कहते हैं कि केवल एक ही दिन में बारह कोस का बबुरीवन साफ़ किया गया था।

यह ख़बर बात की बात में लोहागढ़ के फाटक के रखवाले राजकुमार (अनुपी) अनूपसिंह के पास पहुँची। बबुरीवन के साफ़ हो जाने की ख़बर

सुनकर वह दङ्ग रह गया। मन्त्री टोडरमल से राय लेकर अनुपी ने अपनी फ़ौज को तैयार होने का हुक्म दिया। तुरन्त हाथी, घोड़े, रथ, ऊँट और पैदल सेना आकर खड़ी हो गई। सब को तैयार देखकर अनुपी भी बाहर निकला। सरदार के आते ही कूच का डङ्का बजा और तुरन्त सेना चल पड़ी।

चंदेल सेना के आने की ख़बर सुनकर ऊदल ने अपने बेंदुल घोड़े को तैयार किया तथा अपनी सेना के सरदारों को बुलाकर कहा—"तुम लोग झटपट तैयार होकर हमारे साथ चलो।" सरदार ने जाकर सभी सैनिकों को तैयार किया। इतने में वीरवर उदयसिंह बेंदुला पर सवार हो वहाँ जा पहुँचे। ऊदल का सङ्केत पाकर सेना उनके पीछे चल पड़ी।

वैरी को आते देखकर अनुपी ने गरजकर कहा—"अरे! किसकी माता ने नाहर को पैदा किया है, जिसने आकर हमारे बबुरीवन को कटवा दिया है?" ऊदल ने बेंदुला को आगे बढ़ाकर कहा—"हमारी माता ने नाहर पैदा किये हैं। हम अपने बाप का बदला लेने को महोबे से चढ़कर यहाँ आये हैं। अगर तुम महोबे की लूट का सब सामान, अपनी बहन विजयसिन का डोला और करिया का सिर काटकर, हमें दे दो तो हम लौट जायँगे।" यह सुनते ही अनुपी की त्यौरियाँ चढ़ गईं। वह अपने मन्त्री से बोला—"तुरन्त इन महोबेवालों को पकड़कर मरवा डालो।" इस पर टोडरमल ने तोपख़ाने को आग उगलने का हुक्म दिया। इधर ऊदल ने भी अपने तोपख़ाने को आग बरसाने का हुक्म दिया। अब क्या था। दोनों ओर से अररर धूँ की आवाज़ें होने लगीं। बारूद के गोलों से हताहत होकर दोनों ओर की फ़ौजें पीछे हट गईं। सैकड़ों हाथी-घोड़े और हज़ारों वीर भस्म हो गये।

तोपों के बाद, दोनों दलों के योद्धा अपने अपने हथियारों को सँभालकर मोर्चे पर आ डटे। तीरों की मार से सैकड़ों वीर खेत रहे। साँग और बर्छियों की बैंडी मार से लोग प्राण लेकर भागने लगे। इसके बारे में कवि कहता है—

छुटे पिचका हैं लोहुन के, औ बुबुकारिन बोले घाव।
हौदा भरिगे तहँ लोहू से, औ चुचुआत फिरैं असवार॥
टूट कै भाला दुइ खंडा भये, लट्टुआ कटि वर्छिन के जायँ।
भारी मार भई भालन की, भारी भई तीर की मार॥

इसके बाद वीरों ने अपने अपने दुधारे खींच लिये और चमचमाती हुई तलवारें बिजली की तरह आँखों में चकाचौंध पैदा करने लगीं। चारों ओर मार-काट होने लगी। वीरवर ऊदल अपने वेंदुला को इधर से उधर नचाते हुए अपने साथियों को उत्साहित करने लगे। अतः महोवे के वीर उत्साहित होकर गाजर-मूली की तरह वैरियों को काटने लगे। महोवियों की वेंड़ी मार देखकर जब माड़ौवाले भागने लगे तब राजकुमार अनुपी घोड़ा बढ़ा ऊदल के पास आकर बोला—"आओ हम तुम आपस में लड़कर निपटारा करें। अब तुम सँभलकर मेरे ऊपर अपने वार करो। देखें तुममें कितना बल है?" ऊदल ने हँसकर उत्तर दिया—"अच्छी बात है। हमारे यहाँ पहले वार करने की रीति नहीं। इसलिए तुम्हीं पहले वार करके हमें दिखा दो कि तुमने अपनी माता का कितना दूध पिया है।" यह सुन अनुपी ने तरकश से एक बाण निकालकर धनुष पर रक्खा। फिर उसे कान तक खींचा और ऊदल के सिर का निशाना बाँधकर छोड़ा। बाण को अपनी ओर आते देख उदयसिंह का वीर वेंदुला सामने से हट बाईं ओर हो गया और तीर ख़ाली गया। इसके बाद अनुपी ने साँग उठाकर ऊदल पर चलाई, पर ऊदल उसे भी बचाकर निकल गये। अपने दोनों वारों को ख़ाली गया देख अनुपी ने खिसियाकर कहा—"ठाकुर! क्यों हमें ग़ुस्सा दिलाते हो? अब भी क्षमा माँग लो तो हम तुम्हें छोड़ देंगे और सही-सलामत महोवे पहुँचा देंगे।" ऊदल ने हँसकर कहा—"नाहक़ गाल न बजाओ। तीसरा वार भी करके अपने अरमान निकाल लो, नहीं तो स्वर्ग में बैठकर पछताओगे।" यह सुनकर अनुपी जल उठा। उसने तुरन्त सिरोही निकालकर ऊदल की छाती की ओर चलाई, परन्तु दैव ने अनुपी का साथ न दिया। वह ऊदल की ढाल से टकराकर टूक-टूक हो गई।

तीनों वार हो जाने पर ऊदल ने अपने हथियार सँभाले और अनुपी से कहा—"ख़बरदार! अब हमारे वार को रोकना। देखें, बघेलों में कैसे वीर होते हैं।" यह कहकर ऊदल ने अनुपी पर तलवार चलाई। उसने तुरन्त ही ढाल सामने अड़ा दी पर वीर के वार को ढाल न सह सकी और वह फट गई। इससे वह तलवार अनुपी के हृदय को चीरती हुई उस पार निकल गई और अनुपी नीचे गिरकर मर गया।

अपने मालिक को गिरते देख टोडरमल तलवार लेकर ऊदल के सामने आया। उसने जैसे ही अपनी साँग ऊदल पर फेंकी वैसे ही उड़न बछेड़ा बेंदुला ऊपर उड़कर अलग जा खड़ा हुआ और साँग धम से ज़मीन पर गिर पड़ी। फिर टोडरमल ने तलवार के वार किये, पर तलवार भी ऊदल की ढाल में लगकर टूट गई। निहत्थे टोडरमल को ऊदल ने क़ैद कर लिया और उसे आल्हा के पास पहुँचा दिया। फिर ऊदल ने जाकर अनुपी की बारहदरी पर अपना झंडा फहराया और वहीं मोर्चे लगा दिये।

सूरजमल की लड़ाई

अनुपी के जूझ जाने पर भागे हुए सिपाहियों ने सूरजमल के यहाँ जाकर शरण ली। सूरजमल माड़ौ नगर के शाही फाटक का रखवाला था। अनुपी बबुरीवन और लोहकोट के द्वार की रक्षा किया करता था। जब सूरजमल ने अपने भाई के मरने और बबुरीवन के काटे जाने का हाल सुना तब वह क्रोध से बौखला उठा। उसने अपने फ़ौजदार को बुलाकर सैनिकों को तैयार होने की आज्ञा दी। कहने की देर थी कि सैनिक सज-धजकर आ खड़े हुए।

गङ्गाजल से भरा कलश मँगवाकर, और सोने के पत्तरों से मढ़ी चन्दन की चौकी पर बैठकर सूरजमल ने नहाया। फिर उसने चन्दन के तेल को बदन पर मलकर बढ़िया धोती पहनी और अपने चौड़े माथे पर चन्दन की सुन्दर खौर लगाई। बीच में कस्तूरी और केसर मिली रोरी का टीका भी लगाया। इसके बाद सूरजमल ने अपनी कुलदेवी और गणेशजी का ध्यान और पूजन किया।

पूजा-पाठ से छुट्टी पाकर सूरज ने ज़िरहबख़्तर पहना और सिर पर जड़ाऊ सिरपेंच बाँधा। फिर उस बघेल कुमार ने अपने ज़िरहबख़्तर में सोलह छूरियाँ लगाईं और कमर में दो तलवारें बाँधीं। दो कड़ाबीनों को उसने अपनी पीठ पर ढाल के साथ लटकाया और सोने की मूँठ की कटार अपनी छाती पर लटकाई। अब उस वीर ने अपनी लाल कमान को कन्धे पर रक्खा। हाथ में भाला लेकर वह अपने घोड़े * के पास जा खड़ा हुआ और बोला—"वीर पशु-राज, देखो तुमने हमारा आज तक जो नमक खाया है उसे आज चुकाना होगा। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है कि तुम अन्त समय तक हमारा साथ दोगे।" यह कहकर वह उस पर सवार हो सेना के पास आया। सबको तैयार खड़ा देख-कर वह बघेल वीर बोला—"वीरो, आज परीक्षा का दिन है। देखें कौन साथ

---

* इसका नाम हरियाले था।

देता है और कौन दग़ा करता है।" यह सुनकर सभी वीरों ने सौगन्द खाकर राजकुमार को विश्वास दिलाया कि हम युद्ध से कभी पीछे न हटेंगे।

तुरन्त कूच का डङ्का बज उठा। वीरों ने घोड़ों की रकाबों में पैर डालकर एड़ लगाई। कवि इस समय कहता है कि—

लालै बाना लाल निसाना, लालै पाग बघेलन क्यार।
क्या गति बरनौं तेहि औसर की, मानौं इन्द्र अखाड़े जाय॥

सूरज का मारू बाजा मैदान में जाकर बन्द हो गया। उसके सिपाहियों ने तुरन्त वहाँ जाकर अनुपी की लाश उठा ली और उसे एक नालकी में रखकर माड़ौ भेज दिया। इसके बाद सूरजमल ने अपने हरियाल घोड़े को आगे बढ़ाया और गरजकर कहा—"कौन है वह शूर जिसने बबुरीवन काटकर अनुपी को मारा है?" जैसे ही यह आवाज़ ऊदल के कानों में पड़ी वैसे ही उन्होंने आगे बढ़कर कहा—"मैं हूँ दस्सराज का बेटा उदयसिंह। अभी क्या हुआ है? केवल अनूपसिंह ही तो मरे हैं! याद रक्खो, पिता का बदला लेकर और माड़ौ की ईंट ईंट खुदवाकर मैं यहाँ गदहों से खेत जुतवा दूँगा।" यह सुनते ही सूरज ने तोपख़ाने के दारोग़ा को तोपें दगवाने की आज्ञा दी और कहा—

मार गिराओ इन पाजिन को, टटुआ टायर लेउ छिनाय।

दोनों ओर की तोपें गरजती हुई आग उगलने लगीं। चारों ओर हाथी, घोड़े और ऊँट चिंघाड़ें मारकर गिरने, मरने और भागने लगे। इस समय आदमियों की लाशों के मारे पैर रखने तक की जगह न थी।

इसके बाद वीरों ने अपनी अपनी कड़ाबीनें लेकर वैरियों का नाश करना शुरू किया। इस युद्ध में बहुत से वीर मारे गये। बन्दूकों के बाद वीरों ने तलवारों से काम लिया। कहते हैं कि इसी समय महोबे के वीरों ने बघेलों को पीछे हटा दिया। तब सूरज ने आगे बढ़कर ऊदल से परस्पर युद्ध करने को कहा। ऊदल ने उसे ख़ुशी से मान लिया। अब दोनों वीर मोर्चे पर आ डटे। सूरज ने अपने हथियारों को सँभालते हुए कहा—"ठाकुर! हमारा कहना मानो। अभी तुम्हारी थोड़ी उम्र है। थोड़े दिनों अभी और खेलो खाओ—नाहक़ प्राण

देने में कुछ लाभ नहीं।" ऊदल ने हँसकर कहा—"हम लोग कभी पीछे पैर नहीं रखते। हाँ, अगर तुम महोवे की लूट का कुल सामान, अपनी बहन विजया का डोला और करिया का सिर काटकर हमें दे दो तो हम भले ही लौट जायँ, नहीं तो नहीं।" यह सुनते ही सूरजमल ने भाला चलाकर ऊदल को मारा, परन्तु बेंदुला* ने उड़कर अपने स्वामी के प्राण बचा लिये। इसके बाद सूरज की सिरोही भी ऊदल की ढाल में लगकर टूट गई। इस समय ऊदल ने सूरज को दुचित्ता देखकर तलवार का वार किया। उस तलवार के वार को सूरज ढाल से न रोक सका। वार के लगते ही तलवार ढाल को फाड़ती हुई सूरज की छाती में घुस गई। सूरज अचेत होकर गिर पड़ा और थोड़ी देर बाद सदा के लिए सो गया। उसके गिरते ही बघेले भाग निकले और ऊदल की जीत हुई।

---

* महोवे के सभी राजकुमारों के घोड़े उड़ते भी थे।

करिया की लड़ाई

अपने राजकुमार के जूझ जाने पर सैनिकों ने सारा हाल लिखकर करिया के पास भेजा। उस पत्र को लेकर धावन घड़ी भर में ही करिया के दरबार में पहुँचा। उस समय के दरबार के बारे में कवि कहता है—

जहाँ कचहरी थी करिया की, अजगर लाग रहा दरबार।
रेख उठन्ते क्षत्री बैठे, ठिहुना धरे नगिन तलवार॥
नचैं कंचना वा बँगला में, पहुँचे तहाँ शुतर असवार।

धावन ने दरबार में सात पैग से कुन्नस बजाकर वह चिट्ठी करिया की ओर चला दी। करिया ने तुरन्त लिफ़ाफ़े को क़ैंची से काटकर पत्र निकाला और पढ़ा। पत्र को पढ़ते ही उसके नेत्र दहकते हुए अंगारे की भाँति लाल हो गये। ओठों सहित उसका सारा अङ्ग क्रोध से काँपने लगा। उसने कहा—

बजै नगारा मेरे दल में, सिगरी फौज होय तैयार।

करिया का हुक्म पाकर फ़ौजदार ने चटपट सब दारोग़ा लोगों को बुलाया और अपनी-अपनी फ़ौजें तैयार करने की आज्ञा दी। उधर करिया ने रंगा और बंगा नामक दो शाहाबादी पठानों को भी बुलाया और उनसे तैयार होने को कहा। उसने अपने लिए पचशावद हाथी सजवाया और पपीहा घोड़े को भी कोतल ले चलने की आज्ञा दी। अब करिया ने नहाकर ध्यान और पूजा-पाठ से छुट्टी पाकर लड़ाई के लायक़ कपड़े पहने और छप्पन छुरियाँ, चार कटारें, दो बन्दूकें, दो तलवारें, गैंडे की ढाल और बर्दवान का तेगा लेकर जिसे जहाँ बाँधना चाहिए, वहाँ बाँध लिया। फिर नागदौन की माला लेकर वह वीरवेष में बाहर निकला। उसके आते ही नौकर ने चन्दन की नसेनी लेकर पचशावद के हौदे तक लगा दी। कहते हैं कि जिस समय वह चढ़ने लगा उसी समय

किसी ने छींक दिया। अशकुन देखकर राजपुरोहित ने करिया को तनिक रुक जाने की सलाह दी; परन्तु करिया ने उसकी एक सुनी। वह चढ़कर हौदे में जा बैठा।

करिया के बैठते ही कूच का डंका बजा। रथ, हाथी, घोड़े, ऊँट, पालकी, नालकी, राह्व, मझोली, रब्बा, फिरक, बहलोल तोपख़ाना, मालख़ाना, रसदख़ाना और लढ़ी वग़ैरह सभी सवारियाँ चल पड़ीं। उधर ऊदल ने दूर ही से कंडालों, तुरही और रणभेरियों की आवाज़ और गर्द-ग़ुबार देखकर समझ लिया कि करिया आ रहा है। इससे वे भी अपनी सजी हुई फ़ौज लेकर मैदान में आ डटे। करिया ने मैदान में आकर पहले अपने छोटे भाई सूरज की लाश उठवाई और एक नालकी में रखवाकर माड़ौ को भेजी। फिर उसने आगे बढ़कर शत्रु को युद्ध के लिए ललकारकर कहा—"किस डाकू ने आकर बबुरीवन को उजाड़ा है और किस शूर-वीर ने हमारे भाइयों को मारा है?" यह सुनकर ऊदल सिंह की तरह गरजते हुए आ पहुँचे और बोले—"तुझे डाकू कहने में लज्जा नहीं आती? रात को सोते हुओं पर हथियार डालने, अबलाओं को लूटने और नगर को बरबाद करने में तूने कौन सा बहादुरी का काम किया था? क्या इसी ओछे कर्म के लिए तू तेग़ बाँधे फिरता है? अभी तो तेरे दोनों भाई ही मरे हैं, परन्तु वह समय दूर नहीं जब तेरा सत्यानाश करके मैं माड़ौ की नींव तक खुदवाकर फिकवा दूँगा और यहाँ गदहों के रहने के लिए स्थान बनवा दिया जायगा।" ऊदल के ये लगते हुए वचन सुनकर करिया का क्रोध भड़क उठा। उसने झटपट अपने तोपख़ाने में पलीता लगाने की आज्ञा दी। फिर क्या था, बात की बात में दोनों ओर की तोपें गड़गड़ाती और भयङ्करता के साथ डकराती हुई आग उगलने लगीं। इधर क्षत्रिय लोग भी अग्नि-बाणों की वर्षा करने लगे। कुछ क्षत्रियों ने अपनी कड़ाबीनों से गोली बरसाना शुरू किया। इस समय का दृश्य बड़ा भयङ्कर था। मनुष्यों और जानवरों की लोथों की पहाड़ियाँ सी बन गई थीं और उनमें से चश्मों की तरह रक्त की नदियाँ सी बह निकली थीं।

जब तोपों का मुँह लाल हो गया तब वे बन्द कर दी गईं और दोनों ओर के वीर अपने-अपने साँड़े लेकर आगे बढ़े। तुरन्त ही,

खट खट खट खट तेगा बाजै, बाजै छपक छपक तलवार

की दशा हो गई। चारों ओर वीर लोग कट-कटकर गिरने लगे। कहते हैं कि इस समय ऊदल अपने बेंदुला को मोर्चे पर नचाते हुए अपनी ओर के वीरों को बढ़ावा दे रहे थे। इस पर कवि ने कहा है—

घोड़ा बेंदुला नाचत आवै, ऊदल कहैं पुकार पुकार।
नौकर चाकर कोऊ नहीं हो, तुम सब भैया लगौ हमार॥
सदा तुरैया ना बन फूलै, यारो सदा न सावन होय।
सदा न माता उर में राखै, यारो जनम न बारम्बार॥
सो पाँव पिछारू तुम मत धरियो, बुड़िहै सात साख को नाम।
पानी दै दै रजपूतन को, ऊदल आगे दओ बढ़ाय॥

इस प्रकार उत्साहित हो महोबे के वीर शत्रु के दल को काई की तरह फाड़ने लगे। जब माड़ौवाले सिपाही अपना नाश ही नाश देखने लगे तब वे पीछे हटने लगे। यह देखकर करिया घबड़ा गया। उसने झटपट पचशावद को साँकल दे दी। उस साँकल को सूँड़ में लपेटकर हाथी ने घुमाना शुरू किया। साँकल की चोट से महोबे की फ़ौज में मर्दा पड़ गया। चारों ओर से रोने और चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं और हाथी भयंकर विनाश करने लगा। इसी समय करिया ने ऊदल से कहा—"ऊदल! अब भी कहा मानो और महोबे को लौट जाओ। नाहक प्राण गँवाकर पछताओगे।" ऊदल ने कहा—"क्षत्रिय लोग कभी पीछे पैर नहीं रखते। हाँ, तुम महोबे की लूट का कुल माल और अपनी बहन विजयसिन के डोले के साथ ही अपने बाप का कटा हुआ सिर लाकर दे दो तो हम लौट जायँगे।"

यह सुनते ही करिया ने ऊदल से पहले वार करने को कहा, पर उन्होंने इन्कार कर दिया। तब करिया ने गुर्ज, तलवार और भाले से तीन वार किये, लेकिन सभी ख़ाली गये। इसके बाद वीर ऊदल ने अपने पहले ही वार में

हैादे की छतरी तोड़ी। दूसरे वार में महावत और खिदमतगार को मारा और तीसरे वार में करिया को बेहोश करके नीचे गिरा दिया। उसको नीचे गिरा देख पचशावद को ग़ुस्सा आया। उसने तुरन्त साँकल फेरकर ऊदल को गिरा दिया। थोड़ी देर में ऊदल सावधान होकर अपने घोड़े पर जा बैठे, परन्तु इसी समय हाथी ने फिर साँकल घुमाकर ऊदल को गिरा दिया। यह देखकर डरा हुआ बेंदुला भाग निकला और फ़ौज में भगा पड़ गया।

यह देखकर रुपना वारी ने घोड़े को एड़ लगाई और डेरों में जाकर आल्हा से कहा—"महाराज! क्या आप लोगों को यही उचित था कि आप यहाँ मौज उड़ावें और वहाँ अकेले ऊदल युद्ध करें? सुस्ती छोड़कर जल्दी चलिए। पचशावद ने ऊदल को साँकल घुमाकर बेहोश कर दिया है और सेना ने उन्हें क़ैद कर लिया है।" यह सुनते ही डेरों में कूच का पहला नगाड़ा बजा तो फ़ौरन क्षत्रिय लोग अपना काम छोड़कर तैयार होने लगे। दूसरे नगाड़े में हाथी, घोड़े आदि सभी सवारियाँ तैयार हो गईं और तीसरे नगाड़े के बजते ही क्षत्रिय लोग सवार होकर अपने काम पर सिलसिले से खड़े हो गये। अब आल्हा, मलखे, ढेवा, अला और सैयद भी अपने-अपने बछेड़ों पर सवार होकर बाहर निकले। इसी समय देवै ने मलखे को बुलाकर कहा—"बेटा! हम भी युद्ध के मैदान में चलेंगी; क्योंकि हमें पूरा भरोसा है कि हमारे याद दिलाने पर पचशावद साँकल घुमाना और दुशमन का साथ देना छोड़ देगा।" सबकी सलाह मिल जाने पर रानी देवै भी पालकी में बैठकर सोना के साथ चलीं।

लड़ाई के मैदान में पहुँचने पर देवै पालकी से उतरीं और हाथी के पास जाकर बोली—"पचशावद! क्या तू महोबे को भूल गया? और क्या परमाल और देवै को भी भूल गया जिन्होंने तुझे दूध, जलेबियाँ और मनों घी पिलाया है? क्या तुझे वह दिन भूल गया जब करिया ने महोबे में जाकर बनाफरों को क़ैद करके लूट करवाई थी और पपीहा, लाखा तथा नौलखा के साथ तुझे भी यहाँ ले आया था? तूने हमारा नमक खाकर हमारे ही साथ दग़ा की। क्या तुझे ऊदल को बाँधते और महोबेवालों को साँकल से घायल करते शरम भी

नहीं आई ? क्या तुझे अपने मालिकों की टँगी हुई खोपड़ियों को देखकर तनिक भी दुःख नहीं होता ? पचशावद, मैं तेरी बलैयाँ लेती हूँ। तू पुरानी बातें याद करके महोबेवालों की मदद कर। याद रख, विजय होने पर तेरे लिए दूना रातब बढ़वा दिया जायगा।" देवै को पहचानकर हाथी ने सिर नीचा करके ऊपर को सूँड़ उठाई। फिर वह साँकल छोड़कर नम्र भाव से खड़ा हो गया। यह देखकर देवै पीछे हटकर पालकी पर बैठ गई।

उधर करिया ने मूर्च्छा से जागने पर ऊदल को क़ैद पाया तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। पर इसी समय मलखे ने जाकर उसे सामना करने को ललकारा। मलखे को देखकर करिया ने कहा—"क्या तुम भी यहाँ अपने प्राण देने आये हो ? याद रक्खो, तुम्हारे पिता की भाँति ही तुम्हारी और ऊदल दोनों की दशा की जायगी। अच्छा, लड़ने आये हो तो पहले अपनी चोट करके अपने अरमान निकाल लो, नहीं तो पछतावा रह जायगा।" मलखे ने कहा—"हमारे यहाँ यह रीति नहीं है। पहला वार तुम्हीं करो।" यह सुनकर करिया ने साँग उठाकर मलखे पर चलाई, पर उसके लगने के पहले ही घोड़ी कबूतरी कूद-कर अलग हो गई। इससे वह साँग पृथ्वी पर गिर पड़ी। यह देखकर करिया ने अपना तेगा चलाया, पर वह मलखे की ढाल में लगकर टूट गया। इसके बाद मलखे ने घोड़ी को एड़ लगाई और हाथी के ऊपर जाकर हौदे की छतरी टूक टूक कर दी। कबूतरी की यह उड़ान देखकर महावत नीचे गिर पड़ा और हाथी सूँड़ दाबकर नीचे बैठ गया। अब मलखे ने ऊदल को छुड़ा लिया। रुपना बारी ने बेंदुला को लाकर खड़ा कर दिया; ऊदल तुरत कूदकर उस पर सवार हो गये। तब महोबियों ने हाथी को ले जाकर देवै के सामने खड़ा किया। देवै ने तुरन्त हाथी के मस्तक को पूजकर रोचना लगाया और लड्डू खिलाकर उसकी पीठ ठोंकी। इसके बाद उस पर नया हौदा रक्खा गया और उस पर आल्हा सवार हुए। महोबेवालों ने पचशावद को अपनी ओर आया देख बड़े ज़ोर से जयकार किया। अब वे दूनी उमङ्ग से शत्रु की सेना को चौपट करने लगे। राजकुमार अपनी-अपनी बराबरी के शत्रुओं के साथ लड़ने लगे। ऊदल ने

रङ्गा को मारकर जयकार किया। उधर ढेवा ने बङ्गा को मारकर सिंहनाद किया। यह देखकर करिया वहाँ आ पहुँचा। उसने जाकर तुरन्त ढेवा पर अपनी साँग फेंकी पर घोड़ी के हट जाने से वह बाल-बाल बच गया। इसी समय ऊदल ने आकर करिया पर तलवार का वार किया, लेकिन पपीहा के कँवर बदल जाने से करिया का भी बाल बाँका न हुआ। इसी समय करिया ने गुर्ज उठाकर ऊदल पर फेका। यह देखकर बेंदुला चारों सुमों से कूदकर अलग हट गया और गुर्ज अररर करके नीचे धम्म से जा गिरा। इसके बाद ऊदल ने जाकर मलखे को करिया के सामने भेजा। मलखे को सामने आते देखकर करिया ने अपनी लाल कमान सँभाली। उसने उस पर बाण रखकर गैदे को कान तक खींचा और मलखे की गर्दन को निशाना बनाकर उस बाण को छोड़ दिया। बाण को आते देख मलखे ने अपनी गर्दन घोड़ी की गर्दन से मिला दी, इससे बाण सन-सन करता हुआ ऊपर से निकल गया। इसके बाद करिया ने साँग फेंकी, पर वह भी ख़ाली गई। तब करिया ने तलवार चलाई, पर वह भी ढाल में लगकर टूट गई। यह देखकर मलखे खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले—"तुम्हारे सभी हथियार झूठे हैं।" यह सुनकर करिया ने कहा—"अच्छा अब की बार देखना।" अब उसने अपनी कड़ाबीन लेकर दाग ही तो दी, परन्तु वह गोली भी ज़िरहबख़्तर में लगकर नीचे गिर पड़ी। इसके बाद मलखे ने 'अच्छा, सावधान' कहकर घोड़ी को एड़ लगाई। घोड़ी ने तुरन्त पपीहा के मस्तक पर अपने सुम रख दिये और मलखे ने तलवार से करिया का सिर उतार लिया।

करिया का कटा सिर लेकर ऊदल आल्हा के पास पहुँचे और बोले—"करिया मार डाला गया। अब इसकी ख़बर फ़ौरन महोबे भेज देनी चाहिए क्योंकि अवधि से अधिक दिन बीत गये हैं। वहाँ अम्माँ और राजा परमाल चिन्ता कर रहे होंगे। इसलिए यह सिर ज़रूर वहाँ भिजवा दो।" यह सुनकर आल्हा ने रूपना को बुलाकर कहा—"यह करिया का कटा सिर ले जाकर तुम जल्दी से महोबे में विजय का हाल सुनाओ और रानी मल्हना को धीरज बँधाकर तुरन्त

लौट आओ।" यह सुनकर रुपना बारी उस सिर को लिये हुए चटपट महोवे को चला।

पाठको! आपने महोवे को लगभग एक साल से छोड़ा है। आइए, अब कुछ महोवे की दशा भी देखें। आल्हा-ऊदल की बताई अवधि बीत जाने पर महोवे में तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ने लगीं, जिन्हें सुनकर मल्हना और तिलका रो-रोकर सिर पीटने लगीं। दोनों रानियाँ सदा सतखंडों पर चढ़कर फ़ौज के लौटने की बाट जोहती रहती थीं। जब कभी धूल उड़ती दिखलाई पड़ती तब वे यही कहतीं कि—"वह फ़ौज आ रही है।" एक दिन उन्होंने माहिल को आते देखा। अपने भाई को देखकर वे दोनों बड़ी प्रसन्न हुईं और सच्चा हाल जानने के लिए आतुर हो नीचे उतरीं। माहिल ने दोनों बहनों के उदास मुखड़े देखकर कारण पूछा तब मल्हना ने कहा—"भैया, सब लोग नौ महीने की अवधि देकर गये थे, परन्तु साल भर हो गया, कुछ भी समाचार नहीं मिला। इससे चिन्ता है।" इसी समय माहिल ने आँखों में आँसू भरकर कहा—"तुम्हें अब तक नहीं मालूम? हमारे यहाँ माड़ो के एक हरकारे ने आकर आज कहा है कि महोवे के सभी राजकुमार मारे गये हैं और सब सेना काटकर फेंक दी गई है। बहन, इसी से मैं भी यहाँ फेरे* के लिए आया हूँ।"

भाई के मुँह से यह बुरी ख़बर सुनकर दोनों रानियाँ पछाड़ खाकर गिर पड़ीं। सारे रनिवास में हाहाकार मच गया। राजा ने जब यह हाल सुना तब वे भी फूट फूटकर रोने लगे। तुरन्त काले झंडे लग गये और सारे नगर में हाहाकार मच गया। महोवे में सबको रोता-कलपता छोड़ माहिल ने अपनी घोड़ी पर सवार हो उरई का रास्ता पकड़ा।

इसी समय रुपना पालकी के साथ महोवे पहुँचा। गाँव की हालत देख और काले झंडों को फहराते देखकर वह बड़े असमञ्जस में पड़ गया। उधर लोगों ने जैसे ही रुपना को पालकी के साथ देखा वैसे ही वे और भी फूट-फूटकर रोने लगे। चारों ओर यह दशा देखता हुआ वह महलों में पहुँचा। राजा ने

* मातमपुर्सी।

रुपना को देखकर कहा—"बेटा! अब तुम कुछ न कहो। और तुमने यह सिर लाकर अच्छा नहीं किया। हम इन्हें देखकर क्या करेंगे! जब हमारे लाल ही हमें छोड़ और महोबे को सूना करके चले गये तब उनके कटे सिर को देखकर हम क्या करेंगे!" यह कहकर परमाल अचेत हो धड़ाम से गिर पड़े। यह हालत देख रुपना ने ठीक-ठीक सेवा कर राजा की मूर्च्छा दूर की और उनसे सब सच्चा हाल कहा। इसके बाद रुपना ने राजा को विश्वास दिलाने के लिए करिया का सिर लाकर दिखा दिया। उसे देखकर राजा को धैर्य हुआ। उन्होंने कहा—"बेटा! जाकर तुम झटपट रानियों को ढाढ़स बँधाओ, नहीं तो सब की सब मर जायँगी।"

रुपना तुरन्त रनिवास में दौड़ा गया। वहाँ जाकर उसने करिया का सिर मल्हना के पैरों पर डाल दिया और सब सच्चा-सच्चा हाल कह सुनाया। अपने बेटों को ज़िन्दा और विजयी सुनकर मल्हना बहुत प्रसन्न हुई। उसने तुरन्त ब्राह्मणों को बुलवाकर बहुत रुपये और सोना दान किया। उधर काले झंडे गिराकर क़िले पर विजयपताका फहराई गई। सारे नगर में ख़ुशी मनाई जाने लगी। सब के द्वारों के सोने के कलश पवित्र जल से भरकर ठीक जगह पर रख दिये गये। सब लोग प्रसन्न हुए और माहिल को गालियाँ देने लगे।

इसी समय रुपना ने मल्हना से लौट जाने के लिए आज्ञा माँगी। मल्हना ने कहा—"बेटा, मैं रसोई बनाती हूँ, बढ़िया ताज़ा भोजन करके जाना।" रुपना ने हँसकर कहा—"नहीं। मुझे आल्हा की आज्ञा है कि विजय की ख़बर देकर तुरन्त लौट पड़ना। इसलिए मैं अब पल भर भी नहीं रुक सकता"। यह कहकर रुपना अपने घोड़े पर सवार हो माड़ौ के लिए चल पड़ा।

पाठको, अब

हियाँ की बातें हियाँही छोड़ो, अब माड़ौ के सुनो हवाल।

राजा जम्बै ने जब युद्ध में करिया के भी मारे जाने की ख़बर सुनी तब उसकी हिम्मत टूट गई। वह रोता-कलपता रनिवास में पहुँचा। रानी कुसला अपने सब बेटों के साथ ही साथ करिया के भी मारे जाने की ख़बर सुनकर अचेत हो

गिर पड़ी। रनिवास में एकाएक हाहाकार मच गया। हाय-हाय सुनकर विजया ऊपर से नीचे आई और पिता से बोली—"दद्दुआ, आप धैर्य धरें। मैं अभी जाकर जादू के ज़ोर से ऊदल को क़ैद किये लेती हूँ।" अब विजया वीर पुरुषों की तरह कपड़े पहन और घोड़े पर सवार होकर रणक्षेत्र में पहुँची। वहाँ उसने तन्त्र करके सारी फ़ौज को अन्धा-सा बना दिया। फिर वह ऊदल को भेड़ा बनाकर अपने गुरु* के पास ले गई। वहाँ जाकर उसने गुरु से कहा—"यह महोवे का बड़ा चोर है। इसे होशियारी से रखना।" अब वह फिर लड़ाई के मैदान में आई और जादू हटाकर महल को लौट गई। जब आल्हा वग़ैरह को होश हुआ तब वे ऊदल को न देखकर बड़े चकराये। उन लोगों ने ढेवा को बुलाकर कहा—"इसी दम विचार कर बतलाओ कि रणदूल्हा† कहाँ हैं।" ढेवा ने तन्त्र के बल से जानकर सारा हाल सुनाकर कहा—"मलखे, तुम और हम जोगी बनकर उस बाबा के पास चलेंगे और नाच-कूद से उसे प्रसन्न करके ऊदल को तुरन्त छुड़ा लायेंगे।" यह सुनते ही मलखे ने दो गुदड़ियाँ मँगवाईं। इधर ढेवा और मलखे रामानन्दी तिलक लगाकर और कानों में गोरखनाथी कुंडल पहनकर तैयार हो गये। इसके बाद उन्होंने गुदड़ियाँ पहनीं फिर अपने-अपने बाजे लेकर वे चल पड़े। गुरु की मढ़ी में जाकर वे दोनों खंजड़ी और बीन बजा-बजाकर नाचने-गाने लगे। गुरु ने इन लोगों का तमाशा देखकर बहुत तारीफ़ की और हाल-चाल पूछकर उनसे दो-चार दिन ठहरने का हठ किया। जोगियों ने कहा—"बाबा, हमें भिक्षा दे दो। हमारा क्या ठिकाना है। हम लोग आज यहाँ तो कल न जाने कहाँ पहुँचेंगे।" यह सुनकर बाबा ने कहा—"अच्छा, थोड़ी देर तमाशा और दिखा दो।" तब ढेवा और मलखे अपने बाजे बजाकर ध्रुपद, धनाश्री, तिल्लाना, तिताला, चौताल, ठुमरी और ख्याल वग़ैरह सुनाकर उसे प्रसन्न करने लगे।

---

* इनका नाम झिलमिल था। ये उस समय के एक बड़े तान्त्रिक (जादूगर) थे।

† ऊदल को 'रणदूल्हा' की उपाधि थी।

बाबा ने प्रसन्न होकर कहा—"अच्छा बेटा, तुम लोगों को जो माँगना हो माँगो, वही हम तुम्हें देंगे।" यह सुनकर मलखे ने कहा—"जो आप प्रसन्न हैं तो हमें यह भेड़ा दे दें। यह हमें बहुत अच्छा लगता है।" यह सुनकर बाबा दङ्ग रह गये। उन्होंने थोड़ी देर बाद कहा कि यह भेड़ा तो विजया का है। इसे हम नहीं दे सकते। इन्कार सुनकर मलखे ने कहा—"जोगी होकर नटते हो। तुम्हारा सभी जोग और जादू नष्ट हो जायगा।" अन्त में लज्जित होकर बाबा ने वह भेड़ा उन्हें दे दिया। उसको पाकर देवा ने कहा—"बाबा, हम इसे चेला करना चाहते हैं। इसलिए आप इसे आदमी बना दें; क्योंकि हमें बहुत दूर जाना है।" बाबा ने तुरन्त जादू के ज़ोर से उस भेड़े को आदमी बना दिया। ऊदल को देखकर मलखे के मुख पर मुस्कान आ गई, परन्तु उसे छिपाकर वे लोग बाबा को प्रणाम करके चल दिये। थोड़ी दूर जाकर ऊदल ने कहा—"भैया, जब विजया के द्वारा यह हमारा-तुम्हारा हाल सुनेगा तब फिर जादू करेगा। इसलिए इसे मार डालना चाहिए।" यह सुनकर वे लोग फिर लौटे और बाबा से बोले—"बाबा, हमें प्यास लगी है। थोड़ा पानी तो पिला दो।" बाबा लोटा-डोर लेकर कुएँ पर पहुँचे और उनके लिए पानी भरने लगे। इसी समय मलखे ने बाबा का सिर काट दिया। अब वे लोग बाबा की जादू की झोली वग़ैरह सामान लेकर अपने डेरों में आ पहुँचे। ऊदल को देखने से सबको ख़ुशी हुई। ऊदल सब लोगों से हैसियत के अनुसार मिले-भेंटे। इसके बाद ऊदल ने आल्हा से कहा—"दादा, अब क्या देर है! झटपट चलकर नगर-द्वार पर तोपें लगवा दो।" आल्हा ने कहा—"नहीं। हमारा करिया से बैर था सो वह मारा गया। अब जम्बै लूटी हुई चीज़ें और विजया का डोला दे दे और खोपड़ियाँ भिजवा दे तो हम उनसे नाहक़ लड़कर उनके वंश का नाश नहीं करना चाहते। अब आल्हा ने इसी आशय का एक पत्र लिखा और उसे धावन के हवाले करके जम्बै के पास भेजा। धावन तुरन्त साँड़िनी पर सवार होकर माड़ौ की ओर चल पड़ा।

———

ला। देवै का हुक्म सुनकर रानी कुसला थर-थर काँपती हुई द्वार पर आई और ऊदल से बोली—"बेटा! स्त्रियों पर हाथ न चलाना।" उदल ने हँसकर कहा—"हम क्षत्रिय हैं। क्षत्रिय लोग वीरों से भिड़ते हैं, स्त्रियों को ज़ोर नहीं दिखाते। अब अपने यहाँ का कुल सामान, विजया का डोला और बावन पश्मीने के बचुके हमारे सामने लाकर रक्खो।" कुसला ने तुरन्त ऐसा करवा दिया।

इसके बाद वे लोग कुसला और देवै के डोले के साथ कोल्हुओं के पास पहुँचे। ऊदल ने सोने के थाल में अपने पिता और चाचा के सिरों को रक्खा और उसकी आरती वग़ैरह की। इसी समय ढेवा ने जम्बै को पकड़कर उन कोल्हुओं में डालकर पिरवा दिया। पति की यह हालत देखकर कुसला अचेत होकर गिर पड़ी और तरह तरह से विलाप करने लगी।

कहते हैं कि इसी समय दस्सराज और बच्छराज की आभा ने कहा—"बेटा! तुम धन्य हो। हमारा मन तुम सब पर प्रसन्न हो गया। ईश्वर करें, तुम फलो और फूलो।"

इसके बाद ये लोग विजया के डोले को लेकर दूसरे महल में गये। ऊदल ने आल्हा से व्याह के विषय में जब कहा तब आल्हा ने साफ़ इन्कार करके कहा—"क्या तुम भूल गये! करिया के मरने पर इसी ने तुमको भेड़ा बनाया था और हम सबको बेहोश किया था। इसलिए जब कभी अपने भाइयों और बाप की यादे आवेगी तभी यह तुमको विष देकर मार डालेगी। इससे इसको जान से मार डालो।" ऊदल ने कहा—"हम अपने हाथ से स्त्री पर तलवार नहीं चला सकते।" तब मलखे ने अपनी तलवार से विजया का सिर काट डाला।

कहते हैं कि मरते समय विजया से ऊदल ने कहा कि अब हमको तुम कहाँ मिलोगी? तब विजया ने उत्तर दिया कि मैं नरवरगढ़ में जाकर फुलवा नाम की राजकुमारी होऊँगी और तुम जब काबुल को जाओगे तब हमसे और तुमसे फिर भेंट होगी।

इसके बाद विजया ने मलखे को यह शाप दिया—"आप मेरे जेठ होते हुए भी मुझे धोखे से मारते हैं इसलिए आप धोखे से ही मारे जायँगे।" विजया के मारे जाने पर ऊदल ने उसकी लाश फुँकवा दी। अब ऊदल और मलखे अपने-अपने पिता की 'गया' करने और उनकी हड्डियों को गंगा में प्रवाहित करने के लिए चल पड़े। ऊदल अपने साथ राजा जम्वै की हड्डियों को भी ले गये थे।

इधर आल्हा विजय-पताका फहराते हुए महोवे लौटे। रुपना वारी ने पहले से जाकर उनके आने की ख़ुशख़बरी मल्हना को सुनाई। तुरन्त नगर सजाया गया। नौवत और निशानों के साथ जाकर परमाल अपने बेटों को लिवा लाये। मल्हना ने उनकी आरती उतारी, उनका मुख चूमा और ग़रीबों को बहुत रुपये बाँटे। नगर के हर एक घर में मङ्गलाचार होने लगे।

जब ऊदल और मलखे गया से लौटे तब देवै और तिलका ने सागर पर जाकर अपना-अपना सौभाग्य-सिंदूर धोया और चूड़ियाँ उतारीं।

अब क्या था, महोवे में नित्य नये मङ्गल होने लगे।

——

सिरसा की पहली लड़ाई

बच्छराज के मरने पर उनकी जागीर सूनी हो गई और राजा परमाल उसका कुछ प्रबन्ध न कर सके। यह देख दिल्ली के चौहान राजा पृथ्वीराज ने उनकी जागीर और सिरसा नगर पर अपना अधिकार जमा लिया। पृथ्वीराज ने अपने एक पुत्र को, जिसका नाम पारथ था, वह जागीर दे दी। अब पारथ अपने पिता की छत्रछाया में उस जागीर को बेखटके सँभालने लगा।

इसके बहुत वर्षों बाद एक दिन मलखे अपने बड़े भाई आल्हा से आज्ञा लेकर शिकार खेलने के लिए चले। होनहार से वे सिरसागढ़ के अन्तर्गत एक जङ्गल में जा निकले। मलखे वहाँ पहुँचे ही थे कि एक हिरन भागता हुआ इनके पास से निकला। इन्होंने तुरन्त ही उसके पीछे घोड़ा दौड़ाकर उसे मार गिराया। इतने में ही पारथ उसी हिरन की खोज में दौड़ता हुआ आया। वह उस हिरन को मलखे के हाथों मरा देखकर बड़ा नाराज़ हुआ और बोला—"तुम किस देश के ठाकुर हो? हमारे राज्य की हद में आकर हमारे ही शिकार को मारकर तुमने अपने रास्ते में काँटे बोये हैं।"

मलखे ने गरजते हुए कहा—"यह तो महोबे की सीमा में है। यहाँ तेरा राज्य कहाँ से आया? अपने राज्य की सीमा में मैंने तुझे कभी नहीं देखा! आज तू यहाँ आकर इसे अपना राज्य बताता है। देख, किसी और के भरोसे न रहना। जो ज़्यादा रार बढ़ाई तो तेरे वंश को साफ़ करके ही छोड़ूँगा।" पारथ ने और भी ज़ोर से गरजकर कहा—"यह महोबे की सरहद में नहीं, बल्कि दिल्ली की सरहद में है। महोबे के बच्छराज के मरने पर हमारे पिता पृथ्वीराज चौहान ने इस पर अधिकार करके हमें यहाँ की जागीर सौंप दी है।" यह सुनकर मलखे हँसने लगे और बोले—"चलो, अच्छा बताया। मैं ही तो बच्छराज का बेटा हूँ। इसलिए क़ायदे से यहाँ का अधिकारी मैं ही हूँ।

अच्छा, अब तुम अपना भला चाहो तो सिरसा ख़ाली करके चले जाओ।" पारथ ने कहा—"जाओ-जाओ, तुम्हारे ऐसे सैकड़ों देखे हैं।" मलखे ने उत्तर दिया—"ठीक है। कहीं चनों के धोखे मिर्च न चबा जाना। तुम्हें गिनता ही कौन है? अगर तुम्हारे बाप पृथ्वीराज के बाप सोमेश्वर भी आकर लड़ें तो उन्हें भी मैं निकाल बाहर कर दूँगा। इसलिए मैं तुम्हें आठ दिन की मोहलत देता हूँ। इतने में तुम गाँव ख़ाली करके चले जाओ, नहीं तो दिल्ली की ईंट ईंट खुदवाकर फिंकवा दूँगा।"

इसी तरह बातों-बातों में रार बढ़ गई। वे दोनों वहीं आपस में भिड़ने लगे। कुछ देर बाद पारथ पीठ दिखाकर भाग निकला। तब मलखे भी दशहरिपुरवा को लौट आये। वहाँ उन्होंने आल्हा से कहा—"हमारे रहने के लिए अलग प्रबन्ध कर दो।" आल्हा ने उत्तर दिया—"बेटा, हम स्वयं राजा परमाल के राज्य में रहते हैं। हम किसी को कोई जगह कैसे दे सकते हैं? इसलिए तुम राजा के पास महोबे में जाकर रहने के लिए कोई गढ़ी माँग लो।" इसी समय मलखे से ताल्हन ने कहा—"बेटा, तुम अपने पिता की जागीर सिरसागढ़ पर क्यों नहीं अधिकार करते? चलो, हम सब चलकर चौहानों को वहाँ से निकाल बाहर करें। हाँ, इसमें राजा की सलाह ज़रूर ले लें।"

यह सुनकर मलखे महोबे को रवाना हुए। दरबार में पहुँचने पर मलखे ने राजा को पाँच पैग से प्रणाम करके उनके चरणों में अपना सीस नवाया। राजा ने मलखे को उठाकर आशीर्वाद दिया और कहा—"बेटा, कहो कैसे आये। आज तुम्हारा मुखड़ा उदास क्यों है? तुम्हारे भरोसे तो मैं महोबे का राज्य करता हूँ। मुझे तुम्हारी ताक़त का पूरा भरोसा है। मैं अपने रहते तुमको चिन्तित देख सकूँ, यह मुमकिन नहीं।" मलखे ने हाथ जोड़कर कहा—"महाराज, चिन्ता का तो ऐसा कोई कारण नहीं। हाँ, मैं अपने ददुआ की जागीर को पृथ्वीराज से, जो उन्होंने दबा ली है, छीन लेना चाहता हूँ। इसी का हुक्म लेने को मैं यहाँ आया हूँ।"

परमाल ने मलखे को पृथ्वीराज के साथ लड़ने से बहुत रोका। यहाँ तक कहा कि "तुम कहो तो तुम्हें हम महोबा नगर दे दें या जो नगर चाहो वही दे दें; पर पृथ्वीराज से मत लड़ो।" लेकिन मलखे ने एक न सुनी। यह देखकर ऊदल* ने कहा—"दादा, ठीक है। सिरसा लेकर आप वहीं आराम से रहें। जब कभी आप पर पिथौरा (पृथ्वीराज) फिर हमला करे तब आप हम लोगों को बुला लें। हम लोग उसे मारकर भगा दिया करेंगे।"

ऊदल की ये बातें सुनकर मलखे तड़प उठे और बोले—"मैं क्या कायर हूँ जो तुम लोगों को बुलाया करूँगा? क्या मैं तुम्हारे ही बल पर वहाँ राज्य करने जाता हूँ!" ऐसी-ऐसी बातें कहकर मलखे के अंग-अंग फड़कने लगे। उनको नाराज़ देख परमाल ने मलखे को ठंडा किया और लाचार होकर सकुचाते हुए आज्ञा दे दी। आज्ञा पा, मलखे परमाल को प्रणाम कर मल्हना के पास पहुँचे और उनसे भी आज्ञा ली। फिर देवै और तिलका से आज्ञा लेकर वे चल पड़े। मलखे को जाते देख उनके मुँहलगे इष्ट-मित्र भी उनके साथ चलने को तैयार हुए। मलखे ने उन सबको साथ चलने से बहुत रोका फिर भी उनमें से एक भी न रुका। इस तरह वे एक सौ सात वीरों के साथ सिरसा की ओर रवाना हुए।

मलखे को अकेला जाते देखकर परमाल काँप उठे। उन्होंने तुरन्त दूसरे राजकुमारों को मलखे की मदद करने की आज्ञा दी। हुक्म पाकर आल्हा वग़ैरह सभी राजकुमार और सैयद लड़ाई की तैयारियाँ करने लगे। बात की बात में लड़ाई का सामान सजाया और साफ़ किया जाने लगा। क्षत्रिय लोग लड़ाई के लिए फेंट बाँध-बाँधकर खड़े हो गये।

जब सभी राजकुमार तैयार हो अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो गये तब कूच का डंका बजा। कहते हैं कि फ़ौज के आगे तुरही और कंडोलों वग़ैरह

---

* आल्हा, ऊदल और सैयद ये तीनों आदमी मलखे के पीछे-पीछे यह देखने आये थे कि देखें क्या होता है।

बाजों की आवाज़ों, हाथी-घोड़ों की चिंघाड़ों, सवारियों की खड़खड़ाहट और चोबदारों व डंकेदारों के ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ देने से ऐसा मालूम पड़ता था कि तूफ़ान आ रहा है। दो-चार गाँवों में फ़ौज पहुँचने के पहले, लोगों को किसी बड़े भारी संकट की दहशत जान पड़ती थी।

उधर वीर मलखान ने वाहनपुर में जाकर सिरसा की सरहद की पूजा की फिर सबको नाश्ता करा वे चल पड़े। बिल्ह नदी को पार करके उसने सिरसा से तीन कोस पहले ही डेरा डाल दिया।

सबेरे मलखे ने दिशा-फ़राग़त वग़ैरह ज़रूरी कामों से छुट्टी पाकर एक चिट्ठी पारथ के नाम लिखी कि "सिरसा छोड़कर भाग जाओ। और जो लड़ना हो तो मैदान में आकर अपनी बहादुरी दिखाओ।" यह चिट्ठी मलखे ने एक धावन के हाथ पारथ के पास भेजी।

पारथ ने चिट्ठी पाकर उत्तर दिया कि बिना लड़ाई में जीते मलखे सिरसा की भूमि में पैर तक नहीं रख सकते। जवाब लेकर धावन डेरों की ओर रवाना हुआ।

इसी समय महोवे की फ़ौज मलखे के डेरों के पास आ पहुँची। मलखे ने बढ़कर आल्हा के चरण छुए। तुरन्त वहाँ सारी सेना के डेरे और तम्बू खड़े हो गये। क्षत्रिय लोग फेंट खोलकर विश्राम करने लगे और राजकुमार लोग आल्हा की कचहरी में बैठकर इस मसले पर ग़ौर करने लगे। ठीक इसी समय धावन ने आकर चिट्ठी का जवाब दिया। आल्हा ने चिट्ठी पढ़कर मलखे को सुनाई। उसको पढ़कर सभी कुमार नाराज़ हो गये। आल्हा ने अपने फ़ौजदार को बुलाकर झटपट फ़ौज के तैयार होने की आज्ञा दी।

उधर सिरसा नगर की सब गलियों में क्षत्रियों को तैयार होने के लिए डुग्गी पिटवाई गई। सिरसा में लड़ने के लिए तुरन्त तैयारियाँ होने लगीं। सिरसा के सभी हाथी, घोड़े, ऊँट और दूसरी सवारियाँ तैयार की गईं। राजपूत लोग मुस्तैद होकर खड़े हो गये। पारथ तैयार होकर जब हाथी पर बैठ गया तब कूच का डङ्का बजा।

मैदान में पहुँचने पर पारथ ने महोवे की फ़ौज को तैयार पाया। यह देख उसने तोपख़ाने के दारोग़ा को तोपें दागने की आज्ञा दी। सिरसा की तोपों के जवाब में महोवे की तोपें भी आग उगलने लगीं। गोलों और गोलियों की मार से दोनों दलों में हाहाकार मच गया। इसी समय अग्निबाण भी छूट-छूटकर मनुष्यों का सफ़ाया करने लगे।

कहते हैं कि जब आग उगलते-उगलते तोपें लाल हो गईं और बन्दूक़ें तथा तीर छोड़ते-छोड़ते हाथों में घाव हो गये, तब इन हथियारों की लड़ाई बन्द कर दी गई और दोनों ओर से साँगें चलने लगीं। साँगों की लड़ाई के बारे में कवि ने लिखा है—

चार घड़ी भर चलो साँगड़ा, भारी भई साँग की मार।
हौदा भरि गये हैं लोहू से, औ चुचुआत फिरें असवार॥
मानो टेसू बन में फूले, ऐसी रही लालरी छाय।
छुटैं पिचक्का तहँ लोहू के, जहँ बह चली रक्त की धार॥

साँगों के बाद तलवारों और तेगों की लड़ाई शुरू हुई। कहते हैं कि अब तक सिरसा की फ़ौज का तीन चौथाई हिस्सा साफ़ हो चुका था। बाक़ी ने अपनी यह दशा देख भगदड़ मचा दी। अकेला पारथ ही लड़ाई के मैदान में रह गया। अपने को अकेला देखकर पारथ भी हिम्मत हार गया और पीठ दिखाकर वहाँ से भाग निकला। मलखे विजयी होकर डेरों को लौटे।

उधर पारथ ने सिरसा में जाकर अपने पिता को चिट्ठी लिखकर मदद मँगाने की सोची। उसने तुरन्त साँड़िनी सवार को बुलवाया और उसको चिट्ठी देकर कहा—"यहाँ का सब हाल उनको सुना देना और झटपट जवाब लेकर लौटना।"

पारथ की चिट्ठी पाकर पृथ्वीराज बड़े नाराज़ हुए। उन्होंने तुरन्त चौंड़ा, धाँधू और अपने बेटे चन्दन को बुलवाकर सब हाल सुनाया और उन्हें झटपट तैयार होकर सिरसा जाने की आज्ञा दी। इसके बाद पृथ्वीराज ने धीरसिंह को

भी सेना लेकर सिरसा जाने के लिए चिट्ठी भेजी। धीरसिंह ने लड़ाई का न्यौता पाकर सिरसा जाने की तैयारी की।

उधर चन्दन, चौंड़ा और धाँधू अपनी फ़ौजें लेकर सिरसा आ पहुँचे और धीरसिंह की बाट जोहने लगे। जब आल्हा ने धीरसिंह के आने की खबर सुनी तब उन्हें धीरसिंह को देखने की बड़ी इच्छा हुई। इसका कारण यह था कि उन दिनों धीरसिंह बड़े शूरवीर समझे जाते थे। इसलिए आल्हा उन्हें देखना चाहते थे। आल्हा तुरन्त पपीहा घोड़े के ऊपर सवार होकर उस तरफ़ चले जिस तरफ़ से धीरसिंह का लश्कर सिरसा का बचाव करने को आ रहा था। धीरे-धीरे पपीहा धीरसिंह के हाथी के सामने जा पहुँचा। यह देखकर पीलवान ने कहा—"ठाकुर! तुम कौन हो? अपना घोड़ा हटा लो और हाथी को निकल जाने दो।" आल्हा ने कहा—"हमारा घोड़ा तनिक नटखट है। इसलिए तुम्हीं बचकर निकल जाओ।" यह सुनकर धीरसिंह को ग़ुस्सा आ गया। उन्होंने तुरन्त साँग उठाकर आल्हा पर छोड़ दी। साँग को आते देख आल्हा ने पपीहा को इशारा किया तो वह तुरन्त कूदकर अलग खड़ा हो गया। इससे साँग नीचे गिर पड़ी। यह देखकर धीरसिंह ने दूसरी साँग चलाई, पर लगने के पहले ही आल्हा ने झपटकर उसको पकड़ लिया। धीरसिंह ने उसे छुड़ाने की लाख कोशिशें कीं, पर वे आल्हा के हाथ से साँग को न छुड़ा सके। इधर आल्हा ने साँग पकड़कर ऐसा धक्का मारा कि हौदा उलटने लगा। तब धीरसिंह हाथी पर से कूद पड़ा और जान गया कि यह ज़रूर कोई वीर राजा है। इससे उसने आल्हा का हाल पूछा। आल्हा ने अपना परिचय धीरसिंह को दे दिया और यह भी कहा कि आपकी वीरता सुनकर मैं आपको देखने चला आया हूँ। यह सुनकर धीरसिंह लजा गया और बोला—"धन्य है। महोबे में जब ऐसे-ऐसे योद्धा हैं तभी परमाल राज्य कर रहे हैं। अच्छा, अब आज से हमारी और आपकी सच्ची मित्रता हुई। जो हमारे योग्य काम हो वह बता दो।" आल्हा ने कहा—"हम चाहते हैं कि आप पारथ को समझा दें ताकि हमारा सिरसा हमें मिल जाय।" धीरसिंह ने कहा—"ठीक है, हम जाकर

पारथ को समझावेंगे। न मानेगा तो फिर लड़ाई के मैदान में भेंट होगी। अच्छा, पालागन।" अब धीरसिंह आगे बढ़ा। आल्हा ने भी "पालागन" कहकर अपने डेरों का रास्ता लिया।

धीरसिंह ने सिरसा पहुँचकर पारथ को बहुत समझाया, पर वह हठी चौहान किसी तरह राज़ी न हुआ। अन्त में लाचार होकर धीरसिंह चुप हो गया।

चन्दन ने धीरसिंह के आ जाने पर तैयार होने का डङ्का बजवा दिया। अब क्या था, चौहान सेना तैयार होकर खड़ी हो गई। फ़ौज को तैयार देख चन्दन, धाँधू, चौंड़ा, पारथ और धीरसिंह अपने-अपने हाथियों पर सवार होकर आ खड़े हुए। इसी समय कूच का डङ्का बजा। इष्टदेवी की जय बोलकर ये लोग चल पड़े।

विरोधी दल के मारू बाजे सुनकर ऊदल ने भी अपनी फ़ौज तैयार करवाई। अब तुरन्त वे मोर्चे पर जा खड़े हुए। यह देखकर पारथ ने कहा—"हम चाहते हैं कि दोनों ओर के बड़े-बड़े योद्धाओं को आपस में एक दूसरे से लड़ाई हो और जो जीते वही सिरसा का मालिक हो।" यह सुनकर आल्हा बहुत ख़ुश हुए और बोले—"ठीक है। नाहक़ सिपाहियों को कटवाना अच्छा नहीं।"

अब दोनों ओर के वीर अपने-अपने जोड़ के वीरों को चुन-चुनकर लड़ने को तैयार हो गये। इसमें पारथ का मलखे से, चन्दन का ऊदल से, धीरसिंह का ताल्हन से, आल्हा का चौंड़ा से और धाँधू का ढेवा से जोड़ बदा गया। कहते हैं कि दो घंटे तक तो हथियारों से युद्ध हुआ। इसके बाद वे लोग कुश्ती लड़ने लगे। एक घंटे तक कुश्ती हुई। अन्त में सभी महोबेवालों की जीत हुई।

अपनी जीत देखकर मलखे ने अपनी फ़ौज को एक साथ सिरसावालों पर हमला करने का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही महोबे की फ़ौज ने एक साथ धूम से धावा बोल दिया। रणचंडी चेत उठी। तलवारों की खटाखट और तीरों की सरसराहट से कायरों के दिल दहल गये और वे मैदान छोड़-छोड़कर भागने लगे। महोबेवाले दिल्ली की फ़ौज को काई की तरह फाड़ते हुए आगे बढ़ने

लगे। मलखे, ऊदल और ढेवा मोर्चों पर डट-डटकर दुश्मन का वण्टाढार करने लगे। उधर आल्हा का पचशावद हाथी लड़ाई के मैदान में साँकल घुमाता हुआ शत्रुओं को बुरी तरह चौपट करने लगा। महोबे के वीरों के आगे किसी को आने का साहस न हुआ। दिल्लीवाले मुँह छिपा-छिपाकर भागने लगे। इसी समय मलखे ने आगे बढ़कर सिरसा के तोरण-द्वार पर धावा बोला। हाथियों के धक्के से फाटक चरचराकर फटा और गिर पड़ा। फाटक के टूटते ही महोबे की फ़ौज नगर में घुस पड़ी और सिरसा के बाज़ारों में लूटमार मचाने लगी। सिरसा के बनियों ने, अपने को लुटता देखकर, मलखे से बड़ी आजिज़ी से कहा—"महाराज, अब तो हम आपकी दीन प्रजा हैं। आप दया करें। हमारा सर्वस्व लुट रहा है।" उनके गिड़गिड़ाने पर मलखान ने सिपाहियों को लूट बन्द करने की आज्ञा दी।

मलखे ने जाकर राजमहलों पर अपना झंडा फहरा दिया। सारे नगर में शान्ति हो गई।

दूसरे दिन सिरसा नगर सजाया गया। राजदरबार में तरह-तरह के जलसे किये गये। इसके बाद नगर के सेठ-साहूकारों और सरदारों ने नज़रें दीं। महाराज मलखान के स्वागत में घर-घर मङ्गलाचार हुए।

उधर पारथ ने भागकर दिल्ली में दम लिया। उसने अपने बाप के पास पहुँचकर अपनी दुर्गति का सारा हाल कह सुनाया। पृथ्वीराज ने पारथ को ढाढ़स बँधाकर कहा—"कुछ दिन ठहरो; समय देखकर सिरसा पर हमला किया जायगा।"

सिरसा में जब शान्ति हो गई तब आल्हा, ऊदल, ढेवा और बाल्हन महोबे को लौट आये। मलखे ने कल्लू मुंशी, शोभा सुनार और चिन्तामणि लुहार की वीरता पर प्रसन्न होकर बहुत सा इनाम दिया।

सिरसा-विजय का समाचार सुनकर महाराज परमाल बहुत प्रसन्न हुए। मल्हना ने बहुत सा धन दीन-दुखियों को बाँटा। सारे नगर में आनन्द-बधाई बजने लगी।

मलखे ने सिरसा में अपने लिए एक नया महल बनवाया; सिरसा नगर की सड़कों और दूकानों को भली भाँति सजवाया। मलखे की न्यायपूर्ण और योग्यता से हुकूमत करने की बातें सुन-सुनकर देश-देश के बनिये और ठाकुर आकर सिरसा में रहने लगे।

चारों ओर से बेखटके होकर मलखे ने एक आवेदनपत्र राजा परमाल के पास भेजा। उसमें राजा परमाल से यह भी विनय की कि आप मेरी माता और इष्ट-मित्रों को सिरसा भेज दें।

मलखे की चिट्ठी पाकर राजा परमाल बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने मल्हना को मलखे की चिट्ठी पढ़कर सुनाई। मल्हना ने बड़ी ख़ुशी से रानी तिलका और उनके हितू व्यवहारियों को सिरसा भेज दिया।

रानी तिलका ने सिरसा पहुँचकर अपने बेटे की भुजा पूजी। फिर उसने बहुत सा धन ब्राह्मणों को दान में दिया।

इस प्रकार सिरसागढ़ में नित्य नये-नये मङ्गल होने लगे। राजा परमाल भी दिल्ली के आक्रमण से बेखटके हो गये; क्योंकि दिल्ली और महोबे के रास्ते में सिरसा की चौकी पर मलखान का अधिकार हो गया था। इन बनाफर-राजकुमारों के भरोसे राजा परमाल महोबे में बेखटके राज्य करने लगे।

आल्हा का ब्याह

नैनागढ़ के महाराज की बेटी का नाम वैसे तो सुलक्षणा था; पर दुलार के कारण उसे सुनवाँ कहते थे। उसका रूप और उसके गुण बेजोड़ थे। उसने अपने पिता के कुलगुरु से तन्त्रविद्या और जादूगरी सीखकर बड़ा नाम कमाया था। जब सुनवाँ बारह वर्ष की हुई तब अपनी सखी-सहेलियों के दबाव डालने पर उसने एक दिन अपनी माँ से कहा—"अम्माँ! हमारी सखियों का ब्याह हो चुका है, फिर तुम हमारा ब्याह क्यों नहीं करतीं? सखियाँ कहती हैं कि तुम्हारे पिता क्या ग़रीब हैं या अच्छे कुल के नहीं हैं जो तुम्हारा ब्याह अभी तक नहीं हुआ? इसलिए तुम हमारा ब्याह जल्दी करवा दो।" बेटी के मुँह से ये वचन सुनकर रानी बहुत झेंपी। उसने पति को बुलवाकर सारा हाल कहा और यह भी कहा कि जल्दी से टीका भेजकर उसका ब्याह कर डालो।

राजा ने तुरन्त राजपुरोहित को बुलवाकर लग्नपत्रिका लिखवाई और तीन लाख रुपये का सामान और द्रव्य मँगवाया। अब चारों नेगियों को अपने छोटे पुत्र विजयसिंह के साथ कर दिया और वह टीका देकर कहा—"जाओ किसी योग्य राजा के यहाँ टीका चढ़ा देना; पर ध्यान रहे महोबे में टीका न चढ़ेगा। वहाँ परमाल ने बनाफरों को अपने यहाँ रक्खा है। कोई भी ठाकुर बनाफरों को क्षत्रिय नहीं मानता। इसलिए वे अच्छे कुल के नहीं हैं।"

राजकुमार विजयसिंह टीका लेकर सब रजवाड़ों में घूमा, पर किसी ने ब्याह मंज़ूर न किया। बात यह थी कि उन दिनों क्षत्रियों में कुछ ऐसी रीति थी कि लड़कीवाले लड़केवालों से घमासान युद्ध किया करते थे और बारातवालों की जीत होने पर ही ब्याह होता था। कभी-कभी तो विवाह के बाद ही नई ब्याही हुई दुलहिन विधवा होकर सती हो जाया करती थी। बहुत सी रियासतें नैनागढ़ से बड़ी थीं, फिर भी किसी राज्य ने नैनागढ़ के साथ विवाह करना मंज़ूर न किया। इसका एक कारण यह भी था कि नैनागढ़ के नैपाली राजा

ने बहुत पूजा-पाठ करके इन्द्र को प्रसन्न कर लिया था। इससे इन्द्र ने उसे एक 'अमर ढोल' नाम का नगाड़ा दिया था। इसका शब्द सुनते ही मरे हुए और घायल योद्धा जीवित हो जाते थे। राजाओं ने सोचा कि अमर ढोल की बदौलत नैनागढ़ के सैनिक जिन्दा बने रहेंगे और विजयी होंगे। इसलिए वहाँ जाने से सेना का नाश ही होगा, लाभ कुछ नहीं।

टीके को किसी राजा ने जब स्वीकार न किया तब राजकुमार नैनागढ़ को वापस लौट आया। यह देखकर राजा नैपाली ने स्वयंवर की भाँति एक नगाड़ा नगर के फाटक पर रखवा दिया और सब रजवाड़ों में खबर भेज दी कि "जो क्षत्रिय राजा इस नगाड़े को बजाकर युद्ध में जीतेगा, उसी के साथ सुनवाँ का ब्याह किया जायगा।" अब क्या था, देश-देश के राजा आये परन्तु अमर ढोल की करामात सुनकर किसी को ढोल बजाने का साहस न हुआ।

इधर सुनवाँ ने आल्हा के रूप, गुण और वीरता पर रीझकर यह प्रतिज्ञा की कि "विवाह करूँगी तो आल्हा के साथ, नहीं तो क्वाँरी ही रहूँगी।" यह प्रण करके सुनवाँ ने ऊदल के नाम एक चिट्ठी लिखी—

"प्रिय उदयसिंह,

मैं नैनागढ़ के नैपाली राजा की बेटी सुनवाँ हूँ। मेरे पिता ने जो टीका मेरे ब्याह के लिए भेजा था उसे किसी राजा ने स्वीकार नहीं किया। इधर मैंने आपके बड़े भाई की प्रशंसा सुनकर यह प्रतिज्ञा की है कि विवाह करूँगी तो आपके बड़े भाई के साथ ही, नहीं तो जिन्दगी भर क्वाँरी ही रहूँगी। अब अगर आप राजपूत कहाने का कुछ भी हौसला रखते हों तो यहाँ आकर मुझे ब्याहकर ले जाइए। इसका ध्यान रहे कि मेरे बाप आपको जाति में ओछा समझकर विवाह नहीं करेंगे और घमासान युद्ध होगा। इसलिए आप अच्छी तरह तैयार होकर आइएगा।

आपकी भावज।"

पत्र लिखकर सुनवाँ ने उसे एक तोते के गले में बाँध दिया और उसे यह कहकर उड़ा दिया कि "देखो, महोबे में जाकर यह पत्र ऊदल को देना।

जो विवाह हो जायगा तो मैं तुम्हारी चोंच सोने से मढ़वा दूँगी।" वह तोता तीसरे दिन महोबे पहुँचा और वहाँ की बगिया में जाकर एक आम के पेड़ पर बैठ गया। दैवयोग से उसी समय वहाँ ऊदल भी जा पहुँचे। उन्होंने तोते को बैठा हुआ देखकर कहा—"तोते! तुम किस देश से आये हो? जो तुम महोबे में ही आ रहे हो तो हमारे साथ चलो। मेरा नाम ऊदल है। मैं आल्हा का छोटा भाई हूँ।" ऊदल का नाम सुनकर तोता उड़कर उनके पैरों के पास जाकर बैठ गया। ऊदल ने उसके गले में बँधे हुए पत्र में अपना नाम लिखा देखा तो उन्होंने उसे खोलकर पढ़ा। पत्र को पढ़, ऊदल तोते को साथ लेकर राज-दरबार में पहुँचे। वहाँ उन्होंने राजा परमाल को प्रणाम किया और उस पत्र को परमाल की ओर बढ़ाकर वे अपने आसन पर बैठ गये। परमाल ने पत्र को पढ़कर गद्दी के नीचे दबा दिया। फिर वे दूसरे काम में लग गये। यह देखकर मलखे ने उठकर पूछा—"ददुआ, यह पत्र कहाँ से आया है और इसमें क्या लिखा है?" परमाल ने कहा—"नैनागढ़ के नैपाली राजा की बेटी सुनवाँ का पत्र है। वह आल्हा के साथ विवाह करना चाहती है; पर हमें यह विवाह मंज़ूर नहीं। अमर ढोल की करामात से वहाँ के मरे हुए सैनिक ज़िन्दा हो जाते हैं और विपक्षी को हार जाना पड़ता है, इसलिए न तो कोई और राजा व्याह करने को तैयार हुआ और न मैं ही स्वीकार करता हूँ।"

यह सुनकर मलखे गरजकर बोले—"ददुआ, आपको यह विचार नहीं कि शादी के पैग़ाम को लौटाने में लोग क्या कहेंगे? हम लोग राजपूत होकर कभी युद्ध से मुँह न मोड़ेंगे।" परमाल से यह कहकर मलखे ने ऊदल से कहा—"जाओ, झटपट बारात की तैयारी करो।" यह सुनकर राजा को बड़ी चिन्ता हुई। वे दरबार छोड़कर तुरन्त रनिवास में पहुँचे और मल्हना से बोले—"देखो, नैनागढ़ के नैपाली राजा की बेटी ने आल्हा के साथ व्याह करने का संदेश भेजा है। नैपाली के पास अमर ढोल होने से किसी राजा ने यह व्याह स्वीकार नहीं किया, पर मलखे और ऊदल व्याह की तैयारी कर रहे हैं। तुम उन्हें बुलवाकर समझा दो; मान जायँ तो अच्छा है।" मल्हना ने तुरन्त उन दोनों को बुलवा-

कर कहा—"बेटा ! नैनागढ़ को जीतना बहुत कठिन है। अमर ढोल के कारण तुम लोग हारकर लौटोगे।" यह सुनकर मलखे ने कहा—"अम्माँ, तुम वीरपत्नी और वीरों की माता होकर भी ऐसा कहती हो ! संसार में कोई भी अमर नहीं है, इसलिए अगर हम लोग प्राणों के डर से रुक जायँगे तो सात शाख की यशः-पताका झुक जायगी और हम लोग क्षत्रिय तक न कहला सकेंगे।" यह सुनकर मल्हना ने ख़ुशी से उन्हें आज्ञा दी और कहा—"झटपट आल्हा को बुलवाकर मंडप रचाया जाय और बारात की तैयारी की जाय।" मलखे ने चूड़ामणि पण्डित को बुलवाकर मण्डप वग़ैरह का काम छिड़वा दिया। उधर आल्हा को उबटन आदि लगाकर गङ्गाजल से नहलाया गया। फिर सात सौभाग्यवती स्त्रियों ने आल्हा के तेल चढ़ाया और पण्डित ने कंकण बाँधकर आशीर्वाद दिया—"जाओ, राज़ी-ख़ुशी तुम्हारा विवाह हो जाय।" अब ब्रह्मा को छोड़कर और सभी राजकुमारों के हाथों में जूझ-कङ्गन बाँधा गया।

उधर सैयद ने सारी सेना को सजाकर तैयार किया। बाराती लोग भी तैयार होकर अपनी-अपनी सवारियों पर सवार हो गये। जब विधि से सभी काम हो चुके, तब आल्हा एक बढ़िया पालकी में बैठकर बाहर आये। अब क़ूच का डङ्का बजा। तरह-तरह के बाजों की मधुर ध्वनि चारों ओर सुन पड़ी। बारात में हाथी, घोड़े, ऊँट, रथ, पालकी, नालकी, म्याना, पीनस, तामजान, राढ़, बहलोल, मझोली, फिरक और गाड़ियाँ सिलसिले से एक दूसरी के पीछे चलने लगीं। चलते समय ऊदल ने अपने आने की सूचना का पत्र लिखकर उस तोते के गले में बाँधकर उसे उड़ा दिया।

राजकुमार अपने-अपने उड़नबछेड़ों पर सवार हो उन्हें नचाते-कुदाते चलने लगे। रास्ते में जहाँ कहीं रात हो जाती थी, वहीं पड़ाव डाल दिया जाता था; चबैनी बाँटी जाती थी और बारातियों और सवारों को भोजन करवाया जाता था। इस तरह ये लोग सात दिन की मंज़िल तय करके आठवें दिन नैनागढ़ की सरहद में पहुँचे। नैनागढ़ जब तीन कोस रह गया, तब महोबेवालों के डेरे वहीं पड़ गये। बढ़इयों ने तुरन्त मेखें छाँट-छाँटकर गाड़ दीं और तम्बू खड़े कर दिये।

तम्बुओं के बाहर चारों ओर से क़नातें खड़ी कर दी गईं। वहाँ बाज़ार भी तुरन्त लग गया और हर तम्बू के ऊपर सोने के कलश रखकर लाल पताका लगा दी गई। बीच के बड़े तम्बू में आल्हा की कचहरी लगी। उधर क्षत्रियों ने कपड़े उतारकर अपने लिए रसोइयाँ चढ़ा दीं। ब्राह्मण स्नान-ध्यान करने लगे और राजा लोग अपने-अपने डेरों में बैठकर कोकिल-कंठी कंचनियों के मधुर गीत सुनने लगे। इसी समय मलखे ने चूड़ामणि पण्डित को बुलवाकर एपनवारी भेजने का मुहूर्त्त पूछा। पण्डित ने कहा—"एक घंटे बाद अच्छा मुहूर्त्त आने पर एपनवारी भेज देना।" मलखे ने तुरन्त रुपना बारी को बुलाकर कहा—"रूपन, तुम तैयार होकर एपनवारी दे आओ।" यह सुनकर रुपना ने कहा—"महाराज, हम नैनागढ़ में अकेले जाकर अपने प्राण न देंगे।" इस पर ऊदल ने कहा—"रूपन, वीर होकर कायर की सी बात कहते तुझे शर्म नहीं आती! याद रख, दादा का व्याह तो हो ही जायगा, लेकिन यह दिन फिर न आवेगा और यह बात कहने के लिए रह जायगी। आज तक हमने तुझे नेगी नहीं समझा है, हम लोग तुझे सदा अपना भाई समझते रहे हैं।" रुपना ने कहा—"अच्छा, मुझे बैंजनी पगड़ी और आल्हा का घोड़ा व ढाल-तलवार दे दो। मैं अभी जाता हूँ।" ऊदल ने तुरन्त सब चीज़ें मँगाकर रूपन को दीं और कहा—"एक घंटे बाद चले जाना।"

अब ऊदल और मलखे नैनागढ़ की ओर चले। फाटक पर जाकर उन्होंने दरबानी से पूछा—"यहाँ यह नगाड़ा क्यों रक्खा है?" दरबानी ने कहा—"जो राजकुमारी को व्याहने की हिम्मत करे वह इस नगाड़े को बजावे।" ऊदल ने तुरन्त डंका उठाकर नगाड़ा बजा दिया और चले आये। दरबानी ने नगाड़े का बजाना देख, अपनी साँड़िनी तैयार की और महलों की ओर चल पड़ा। दरबार में पहुँचकर उसने सात पैग से कुन्नस बजाकर कहा—"अन्नदाता! किसी देश के राजकुमार बारात साजकर धूरे पर आये हैं और उन्होंने नगाड़ा भी बजाया है।" यह सुनकर नैपाली ने अपने बेटों को यह देखने के लिए भेजा कि वे लोग कौन हैं और कहाँ से आये हैं। जिस को

आज्ञा पाकर जोगा, भोगा और विजया तीनों राजकुमार धूरे की ओर चले। वहाँ से लौटकर उन्होंने नैपाली से कहा—"न जाने किस देश के राजा की बारात है। पाँच कोस तक उनके डेरे लगे हुए हैं और उनके तम्बुओं पर ओर से छोर तक लाल झंडे लगे हुए हैं।" यह सुनकर नैपाली सोच-विचार में मग्न हो गया।

इसी समय एपनवारी लेकर रुपना ड्योढ़ी पर पहुँचा और द्वारपाल से बोला—"जाकर महाराज से कह दो कि महोबे से आल्हा बारात लेकर आये हैं और हम एपनवारी लाये हैं। अब हमारा नेग मिल जाना चाहिए।" इस पर द्वारपाल ने पूछा—"नेग में तुम्हें क्या मिलना चाहिए?" रुपना ने कहा—"हम चाहते हैं कि ड्योढ़ी पर हमसे और नैनागढ़ के वीरों से डटकर तलवार चले। सैकड़ों वीर जूझें और .खून की नदी बह निकले।" यह सुनकर द्वारपाल चुपचाप महाराज के पास गया और बोला—"अन्नदाता, बारात से एपनवारी लेकर एक बारी आया है। वह कहता है कि महोबे के राजकुमार आल्हा की बारात आई है और हमारा नेग महाराज दें।" सुनकर नैपाली ने पूछा—"नेग में क्या चाहता है?" द्वारपाल ने कहा—"उसकी माँग यह है कि ड्योढ़ी पर .खूब डटकर तलवार चले और .खून की धार बह निकले।" तलवार का नाम सुनकर नैपाली की आँखें मारे क्रोध के लाल हो गईं। उसने अपने बेटों से कहा—"जाओ, उस दुष्ट को पकड़ लाओ।" राजकुमार जाने के लिए अपने आसनों से उठे ही थे कि बारी दरबार में जा पहुँचा। एपनवारी को राजा की गद्दी पर फेंक और प्रणाम कर वह खड़ा हो गया। नैपाली ने कहा—"तुम कौन हो और कहाँ से आये हो?" रुपना ने उत्तर दिया—"महोबे के राजकुमार, आल्हा की बारात आई है और एपनवारी देकर हमें यहाँ भेजा है। अब आप मुझे नेग में यह दें कि यहाँ पर .खूब डटकर तलवार चले; सैकड़ों जूझें और .खून की नदी सी बह निकले।" यह सुनकर नैपाली ने अपने दरबारियों से कहा—"झटपट इस दुष्ट को पकड़कर मार डालो।" हुक्म की देर थी, ठाकुरों ने तुरन्त अपनी-अपनी तलवारें निकालकर उस पर धावा

बोल दिया। पटना के पूरन ठाकुर से रुपना का घमासान युद्ध हुआ। अन्त में पूरन ठाकुर अचेत होकर गिर पड़े। इसी तरह लड़ते-लड़ते रूपन गद्दी के पास जा पहुँचा। भाले की नोंक से एपनवारी उठाकर वह बाहर निकल गया और अपने घोड़े पर सवार होकर युद्ध करने लगा। रुपना के सभी कपड़े ख़ून से तर हो गये। घोड़ा भी रक्त से लथपथ हो गया। उसकी बैंड़ी मार से नैनागढ़ के सभी क्षत्रिय हट गये और वह निकलकर अपने डेरों की ओर चल पड़ा। उसके चले जाने पर नैपाली ने कहा—"भला जिसके नेगी इतने वीर हैं उस राजा की वीरता का क्या ठिकाना?" इस पर उसके लड़के बोले—"दादा! आप धैर्य रक्खें। हम उन्हें पकड़कर मरवा डालेंगे।" अब जोगा भोगा नाम के दोनों भाई बाहर आये। उन्होंने फ़ौजदार को बुलाकर सेना की तैयारी करने की आज्ञा दी।

तुरन्त लड़ाई के डंके बजने लगे और क्षत्रिय लोग हथियार बाँध-बाँधकर मैदान में इकट्ठे होने लगे। हाथी, घोड़े, ऊँट और तोपख़ाने वग़ैरह भी सिलसिलेवार खड़े किये गये। नैनागढ़ की सब फ़ौज जब इकट्ठी हो गई तब जोगा और भोगा दोनों भाई अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर बाहर आये। इसी समय कूच का डङ्का बजा और सैनिक लोग जय का नारा बुलन्द करके लड़ने को चल पड़े।

उधर रुपना जब डेरों में पहुँचा तब उसकी पोशाक ख़ून से रँगी देख मलखे ने पूछा—"कहो, नेग में क्या मिला?" रुपना ने हँसकर उत्तर दिया—"हमें जो मिला वह तुम हमारे कपड़ों से जान सकते हो; पर तुम लोग नाच-रङ्ग में मस्त होकर अच्छा नहीं कर रहे हो। देखो, सामने नैनागढ़ की फ़ौज आ रही है।" यह सुनकर ऊदल ने अपनी सेना को लड़ने के लिए तैयार हो जाने को नगाड़ा बजवा दिया। झटपट मलखे और ऊदल अपनी-अपनी फ़ौजें लेकर मैदान में जा पहुँचे। जब ऊदल की फ़ौज शत्रु के सामने पहुँची तब जोगा ने ऊदल से कहा—"तुम किस देश के ठाकुर हो और यहाँ क्यों आये हो?" ऊदल ने कहा—"हम महोबे से आये हैं और आल्हा के छोटे भाई हैं। कृपा करके आप

अपनी बहन का व्याह हमारे बड़े भाई से कर दें तो बड़ा अच्छा हो; नहीं तो आपको प्राणों से हाथ धोने पड़ेंगे।" यह सुनकर जोगा ने कहा—"देखो! माड़ौ के धोखे न रहना, यह नैनागढ़ है। जो तुम अपनी ख़ैर चाहो तो चुपचाप लौट जाओ।" ऊदल ने उत्तर दिया—"नाहक़ गाल बजाने से क्या फ़ायदा! तुम तो चीज़ ही क्या हो, मैं तुम्हारे पिता को क़ैद करके भाँवरें डलवा लूँगा।" यह सुनकर जोगा ने अपने तोपख़ाने के दारोग़ा से कहा—"झटपट तोपें छुड़ाकर इन दुष्टों को मार भगाओ।" अब क्या था, दोनों ओर की तोपों के मुँह में जलते हुए पलीते रख दिये गये। देखते ही देखते तोपें आग उगलने लगीं। तोपों का युद्ध हो चुकने पर दोनों ओर के सिपाही साँगें लेकर मोर्चे पर आ डटे। साँगों की लड़ाई में बड़ी मारकाट हुई। इसके बाद दोनों फ़ौजें तलवारें चलाने लगीं। वीरवर दूल्हा उदयसिंह अपने वीरों को बढ़ावा देते हुए मोर्चे पर इधर से उधर दौड़ने लगे। महोबेवालों ने ख़ूब डटकर युद्ध किया और नैनागढ़ के सिपाहियों को गाजर-मूली की तरह काट-कूट डाला। जब जोगा ने अपने तीन लाख सैनिकों में से केवल डेढ़ लाख को ज़िन्दा देखा, तब वह दङ्ग रह गया। कुछ देर बाद उसने अपने घोड़े को एड़ लगाई। वह बात की बात में नैनागढ़ जा पहुँचा। वहाँ उसने अपने पिता से सारा हाल कह सुनाया। नैपाली ने कहा—"चिन्ता क्यों करते हो? मैं अमरढोल देता हूँ, उसे बजाकर तुम अपनी मुर्दा फ़ौज को जीवित कर लेना।" अब नैपाली ने अमरढोल निकालकर जोगा को दे दिया।

अमरढोल को लेकर जोगा अपनी फ़ौज में आ पहुँचा। वहाँ उसने जैसे ही अमरढोल बजाया वैसे ही जूझे हुए सैनिक ज़िन्दा हो उठे। महोबेवाले जिसको मारते थे, उसे जोगा इसी तरह ज़िन्दा कर लेता था।

यह हालत देखकर महोबे के वीरों की हिम्मत टूट गई। इसी समय ऊदल ने मलखे से कहा—"दादा! अब युद्ध बन्द करके यह पता लगाओ कि मरे हुए सैनिक ज़िन्दा कैसे हो जाते हैं।" यह सुनकर मलखे ने लड़ाई बन्द करने का नगाड़ा बजा दिया। वे सेना लेकर अपने पड़ाव में लौट आये। अब

ऊदल वेष बदलकर नैनागढ़ को चले और नैपाली के महलों के नीचे चारों ओर घूमने लगे। इस समय सुनवाँ अपने सतखंडे पर खड़ी हुई लड़ाई के मैदान की ओर निहार रही थी। जब उसने उधर से ऊदल को आता देखा और यह भी देखा कि वे महलों के नीचे चिंतित होकर घूम रहे हैं, तब वह नीचे उतरी और एक झरोखे में आकर बैठ गई। कुछ देर बाद उसने ऊदल के हाथ में जूफ़ का कंगन बँधा देखकर कहा—"क्या तुम ऊदल के यहाँ से आये हो?" ऊदल ने कहा—"आप कौन हैं? आपको शत्रु से क्या काम?" सुनवाँ ने कहा—"मैं सुनवाँ हूँ, तुम्हारे हाथ में कंगन देखकर मुझे विश्वास है कि तुम वहीं से आये हो।" सुनवाँ का नाम सुनकर ऊदल ने हँसकर कहा—"हमारा ही नाम ऊदल है। अब तुम यह तो बताओ कि यहाँ मरे हुए सैनिक कैसे ज़िन्दा हो उठते हैं।" सुनवाँ ने कहा—"हमारे यहाँ इन्द्र का दिया हुआ अमरढोल है। युद्ध में मरे हुए वीर उसी के प्रभाव से जीवित हो जाते हैं। तुम कुछ चिन्ता न करो। कल सवेरे हम देवी पूजने के समय उसे अपने साथ लावेंगी। तुम माली का वेष बनाकर मठिया में आना। तुम्हारी चिन्ता जाती रहेगी।" यह सुनकर ऊदल अपने पड़ाव की ओर लौट पड़े।

सवेरा होते ही ऊदल, माली के वेप में, मठिया पर पहुँचे। इधर से सुनवाँ ने नहा-धोकर अपनी माँ से कहा—"मैं देवी की पूजा करने जा रही हूँ। मुझे अमरढोल दे दीजिए।" रानी ने कहा—"बेटी! युद्ध के दिनों में ढोल मिलना मुश्किल है।" सुनवाँ ने कहा—"मुझे ढोल न मिलेगा तो मैं पेट में छुरी मारकर मर जाऊँगी।" यह सुनते ही रानी राजा के पास गई और बोली—"बेटी देवी पूजने को जाती है और अमरढोल माँगती है।" राजा ने ढोल देने से साफ़ इन्कार कर दिया। तब रानी ने कहा—"उसमें नुक़सान ही क्या है? युद्ध के समय तक वह लौट आवेगी और ढोल आपको मिल जायगा।" रानी के ज़ोर देने पर राजा ने उसको ढोल दे दिया।

माता से ढोल मिलने पर सुनवाँ अपनी सहेलियों के साथ डोली में बैठकर मठिया के पास पहुँची। डोली से उतरकर ढोल बजाती हुई सुनवाँ मन्दिर को

चली। ढोल की आवाज़ सुनकर ऊदल फूलों की डलिया लेकर सुनवाँ के पास गये। सुनवाँ फूल लेकर और ढोल वहीं रखकर देवी की पूजा करने को मठिया के भीतर चली गई। इसी समय ढोल लेकर ऊदल वहाँ से चलते बने।

ढोल लेकर ऊदल अपने डेरों में पहुँचे और मलखे से बोले—"लीजिए, मैं यह ढोल ले आया। अब झटपट युद्ध की तैयारियाँ कीजिए।" तुरन्त डंका बजा और क्षत्रिय कपड़े पहनने लगे। थोड़ी देर में सब सैनिक तैयार हो सामने आकर सिलसिले से खड़े हो गये। दूसरे डंके में हाथी, घोड़े वग़ैरह सभी सवारियाँ और तोपख़ाने तैयार हो गये और तीसरे डंके में ठाकुर लोग अपने-अपने हाथियों वग़ैरह पर सवार हो गये। अब ऊदल बेंदुला पर, मलखे कबूतरी पर, सैयद सिंहनी पर, ढेवा मनुरथा पर, जगनिक हरनागर पर, रुपना बारी पपीहा पर और मन्ना गूजर अपने सब्ज़े घोड़े पर सवार हो सेना के आगे आ खड़े हुए। इसी समय कूच का डङ्का बजा और सब सैनिक महोबे की मनियाँ देवी की जय बोलकर चल पड़े।

महोबे की फ़ौज जब मोर्चे पर पहुँची तब एक हरकारे ने जाकर नैनागढ़ में ख़बर दी। जोगा, भोगा और विजया तुरन्त अपनी फ़ौज सजाकर चल दिये।

दोनों ओर की फ़ौजों में जब एक मील का फ़ासला रह गया तब दोनों ओर से तोपें छूटने लगीं जिससे चारों ओर धुआँधार हो गया। सैकड़ों वीर बिना लड़े ही मारे गये। छूटते-छूटते जब तोपें आग की गर्मी से लाल हो गईं तब वे पीछे हटा दी गईं और दोनों ओर के वीर आगे बढ़कर तलवारें चलाने लगे। ढेवा, सैयद, जगनिक और मन्ना ये चारों वीर अपना-अपना जौहर दिखाने लगे। वीरवर मलखे काई सी फाड़ते हुए शत्रु का बंटाढार करने लगे। रुपना बारी नौजवान वीरों का सफ़ाया करने लगा। उधर रणदूल्हा उदयसिंह बाईस हौदों को ख़ाली करके जोगा के सामने जाकर कहने लगे—"ठाकुर! आओ, हम और तुम आपस में खुल खेलें। देखें, किसका भाग्य अच्छा है।" यह सुनकर जोगा ने कहा—"ठीक है। तुम मेहमान हो इसलिए पहले तुम्हीं वार कर लो।" ऊदल ने कहा—"नहीं, पहले तुम्हीं वार करो।" यह सुनकर

जोगा ने अपनी कमान निकाली और मज़बूती के साथ तीन बार तीन बाण छोड़े पर वे तीनों ख़ाली गये। इसके बाद जोगा ने तीन बार तलवार का वार किया, परन्तु वह बेकार हुआ। इसी समय ऊदल ने अपने भाले का वार किया, परन्तु जोगा के घोड़े ने पीछे हटकर अपने मालिक के प्राण बचाये। यह देखकर भोगा ने ऊदल पर वार किया, परन्तु उसी समय मलखे ने आकर वह वार रोक दिया और ख़ुद भोगा से लड़ने लगे। थोड़ी देर बाद मलखे ने अपना गुर्ज उठाकर भोगा पर चला दिया। गुर्ज का चपेटा खाकर भोगा का घोड़ा बीस क़दम पीछे हट गया। मलखे का क्रोध देखकर ऊदल ने कहा—"दादा, ये साले हैं, इन्हें मारना नहीं। जो ये न होंगे तो विवाह के समय धान* कौन देगा?" यह सुनकर मलखे ने भोगा को जान से मारने का इरादा छोड़ दिया। अब वे दूसरे वीरों का नाश करने लगे। महोबेवालों की विकट मार से घबराकर नैनागढ़ की फ़ौज में भगदड़ मच गई। तीन लाख सैनिकों में दो लाख मारे गये और महोबे के केवल दस हज़ार वीर काम आये। यह देख भोगा पिता के पास ढोल लेने गया। नैपाली ने ढोल ढूँढ़ा तो मालूम हुआ कि उसे कोई चुरा ले गया। ढोल को चोरी गया जान भोगा ने अपनी फ़ौज को लड़ाई के मैदान से वापस बुला लिया और युद्ध बन्द कर दिया।

इधर नैपाली यज्ञ और बलि का सामान लेकर देवी के मन्दिर में पहुँचा और यज्ञ करने लगा। राजा ने सभी बलियाँ जब दे दीं और देवी प्रसन्न न हुई तब वह स्वयं अपने सिर की बलि चढ़ाने को तैयार हुआ। यह देखकर भगवती प्रसन्न हो गईं और बोली—"क्या चाहते हो?" राजा ने गिड़गिड़ाकर कहा—"किसी ने ढोल चुरा लिया है और हमारा नाश हो रहा है। रक्षा करो! रक्षा करो!!" वह देवी के चरणों में गिर पड़ा। देवी ने कहा—"धैर्य धरो! भला होगा।" अब देवी अन्तर्धान हो गईं। देवी ने इन्द्र के पास जाकर वह ढोल आल्हा के यहाँ से उठवा लिया। ढोल को लेकर दूत जब इन्द्र की

---

* हिन्दुओं के यहाँ विवाह के समय की एक रस्म।

सभा में पहुँचे तब इन्द्र ने उस ढोल को फोड़वा दिया। ढोल का नाश करवाकर देवी ने स्वप्न में नैपाली से सारा हाल बता दिया। इससे नैपाली प्रसन्न हुआ।

दूसरे दिन नैपाली ने अपने मित्र राजा अरिनन्दन को पत्र द्वारा युद्ध का न्यौता भेजा। सुन्दरवन का राजा अरिनन्दन युद्ध का न्यौता पाकर नैनागढ़ के लिए रवाना हुआ। सात दिनों के बाद सुन्दरवन की वह फ़ौज नैनागढ़ की नदी के उस पार आ पहुँची। अरिनन्दन ने वहीं डेरे डाल दिये।

दूसरे दिन अरिनन्दन नदी में नावें डलवाकर और उन पर बिछौने बिछवाकर कंचनियों का नाच करवाने और स्वयं बैठकर देखने लगा। दैवयोग से उसी समय आल्हा नदी पर नहाने गये। उन्होंने जब नदी में नावों पर नाच होते देखा, तब वे उसी ओर जाकर नाच देखने लगे। अरिनन्दन ने आल्हा को खड़ा देखकर अपने एक आदमी को भेजा। उसने आल्हा का परिचय लेकर अरिनन्दन से कह दिया। आल्हा को जानकर अरिनन्दन बड़ी इज़्ज़त के साथ उठा और उन्हें एक बढ़िया आसन पर बैठा दिया। नर्त्तकी के नाच में जब आल्हा मस्त हो गये तब अरिनन्दन ने एक चाकर को इशारा किया। उसने फ़ुर्ती से नाव खोल दी। नाव के खुलते ही राजा ने आल्हा को क़ैद कर लिया। उस पार अपने डेरों में जाकर अरिनन्दन ने तुरन्त कूच का डंका बजवा दिया। बात की बात में मेखें उखड़ गईं और सुन्दरवन का लश्कर अपने घर को लौट गया।

इधर आल्हा को क़ैद होकर सुन्दरवन को जाते देख रुपना बारी, जो आल्हा के साथ नहाने गया था, लौटा। उसने आकर सारा हाल ऊदल से कहा। यह सुनकर मलखे घबरा गये तब ऊदल ने उन्हें हिम्मत बँधाकर ढेवा को बुलाया और उससे पूछा कि, "आल्हा का छुटकारा किस प्रकार हो सकता है?" ढेवा ने विचारकर कहा—"देखो, तुम घोड़ों को साथ लेकर सौदागर के वेष में सुन्दरवन को जाओ और हिकमत से आल्हा को छुड़ा लाओ।" यह सुनकर ऊदल ने तुरन्त काबुली बाना बनाया। अब वे दुला तथा करिलिया को साथ लेकर वे सुन्दरवन की ओर चल दिये।

चार दिनों बाद ऊदल सुन्दरवन के गढ़ में पहुँचे। उन्होंने द्वारपाल से कहा—"जाकर महाराज से कहो कि काबुल से घोड़ों का एक सौदागर आया है। उसके घोड़े बहुत बढ़िया हैं। आप लेना चाहें तो हाज़िर करूँ।" महाराज ने तुरन्त ही सौदागर को बुला भेजा। घोड़ों को लेकर ऊदल कचहरी में पहुँचे। बढ़िया घोड़ों को देख अरिनन्दन बहुत ख़ुश हुआ। उसने कहा—"इनका मोल क्या है?" ऊदल ने कहा—"महाराज! पहले इन घोड़ों को फिरवाकर इनकी चाल देख लीजिए, फिर मैं दाम बता दूँगा।" इस पर अरिनन्दन ने अपने यहाँ के प्रसिद्ध घुड़सवारों को बुलाकर कहा—"इन घोड़ों को फेरकर इनकी चाल देखो और इनकी क़ीमत आँको।" कहते हैं कि कोई भी सवार उन घोड़ों को न फेर सका। यह देखकर ऊदल ने कहा—"महाराज! मैं काबुल से नौ घोड़े लाया था, जिनमें पाँच तो महोबे में बेचे हैं और दो झुन्नागढ़ में। इससे अगर कोई आदमी झुन्नागढ़ का या महोबे का हो तो वह इन्हें फेर सकता है।" यह सुनकर राजा ने आल्हा को बुलवाया और कहा—"जो तुम इन घोड़ों को फेर दो तो क़ैद से छोड़ दिये जाओ।" यह सुनते ही आल्हा ऊदल की ओर देखकर मुस्कराये और करिलिया पर कूदकर बैठ गये। इसी समय ऊदल भी उछलकर बेंदुला पर बैठे और दोनों भाइयों ने एक-एक चाबुक घोड़ों के जमाया। बस, सबके देखते ही देखते दोनों घोड़े हवा हो गये।

अपने उड़नबछेड़ों पर दोनों भाई डेढ़ दिन और रात बराबर चलकर नैनागढ़ पहुँचे। आल्हा और ऊदल के आ जाने पर मलखे ने नगाड़ची को बुलाकर युद्ध का डंका बजाने को कहा। उसने जाकर उसी दम डंका बजा दिया। सिलसिले से तीन बार नगाड़ा बजने पर क्षत्रिय लोग युद्ध के लिए तैयार हो मैदान में खड़े हो गये। सेना को तैयार देखकर आल्हा, ऊदल, मलखे, देवा और सैयद भी अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर बाहर आ गये। कूच का डंका बजा और सेना ने लड़ाई के मैदान का रास्ता लिया।

महोबे की फ़ौज को मोर्चे पर आई देख एक हरकारे ने जाकर नैपाली से सब हाल कहा। उसने तुरन्त अपने तीनों बेटों को बुलाकर सामना करने को उनसे

की आज्ञा दी। जोगा, भोगा और विजया तीनों अपनी फ़ौज सजाकर मोर्चे की ओर चल दिये।

मोर्चे पर पहुँचकर जोगा ने ऊदल से कहा—"ठाकुर! लौट जाओ; नाहक़ प्राण गँवाने से कुछ लाभ न उठाओगे। तुमने नीच होकर भी यदि ब्याह का नाम लिया तो तुम्हारा सिर कटवाकर फिकवा दूँगा और खाल खिंचवाकर भूसा भरवा दूँगा।" इसी तरह बातों ही बातों में तकरार बढ़ गई और दोनों ओर से तोपें छूटने लगीं। तोपों के धुएँ से चारों ओर अँधेरा फैल गया। बारूद की बदबू और धुएँ से दोनों ओर की सेना पीछे हटने लगी। सैकड़ों वीर घायल होकर तथा जूझकर पृथ्वी पर गिरने लगे। हाथी-घोड़े चिंघाड़ते तथा हिनहिनाते इधर से उधर दौड़ने और घायल होकर गिरने लगे।

आग उगलते-उगलते जब तोपें लाल हो गईं तब उनका चलाना बन्द कर दिया गया और क्षत्रिय लोग तलवारें लेकर एक-दूसरे पर बाज़ की नाईं टूट पड़े। कहते हैं कि महोबे के वीरों की बेढब मार से जब नैनागढ़वालों के पैर उखड़ गये, तब जोगा ने ऊदल से आपस में भिड़ने को कहा। उसको ऊदल ने ख़ुशी से मानकर कहा—"मैं इसके लिए तैयार हूँ, पर पहला वार तुमको करना पड़ेगा।" यह सुनकर जोगा और भी ख़ुश हो गया। उसने 'होशियार' कहकर अपनी कमान पर तीर चढ़ाया और उसे ज़ोर से खींचकर ऊदल के सिर की ओर छोड़ दिया। तीर को आते देख ऊदल ने अपने घोड़े को इशारा किया जिससे वह सामने से हटकर बाईं ओर खड़ा हो गया और तीर सन-सन करता हुआ निकल गया। फिर जोगा ने भाले का और तलवार का वार किया, पर ऊदल बाल-बाल बच गये। अपने वारों को ख़ाली गया हुआ देख जोगा चकरा गया। इस समय वह कुछ दुचित्ता सा हो गया था। यह देखकर ऊदल ने चुपचाप अपना घोड़ा बढ़ाया और ढाल की ओझड़ मारकर जोगा को घोड़े पर से नीचे गिरा दिया। जोगा के गिर जाने पर ऊदल ने उसे पकड़-कर क़ैद कर लिया।

अपने भाई को क़ैद हुआ देखकर भोगा ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया। उसको आगे बढ़ते देख मलखे ने बढ़कर कहा—"ठाकुर! होशियार!" मलखे की आवाज़ सुनकर भोगा ने तलवार खींच वार कर दिया। उसको मलखे ने ढाल से बचा लिया और पैंतड़ा बदलकर ढाल की ओझड़ से भोगा को भी घोड़े से गिरा दिया। क्षत्रियों ने उसको भी झटपट क़ैद कर लिया। इसी समय ढेवा ने विजया को क़ैद किया और जगनिक ने पूरन ठाकुर को। नैनागढ़ की सेना के चारों सेनापति जब क़ैद हो गये तब सेना भी भाग गई और ऊदल जीत का डङ्का बजाते हुए डेरों को लौट गये। यह देखकर माहिल से न रहा गया। उन्होंने तुरन्त अपनी घोड़ी कसवाई और सवार होकर नैनागढ़ को रवाना हो गये।

माहिल को आते देख राजा नैपाली ने खड़े होकर उनकी आव-भगत की और उनको एक ऊँचे आसन पर बिठाया। राज़ी-ख़ुशी का हाल पूछने के बाद माहिल ने कहा—"राजन्! देखो, एक बात का ध्यान रखना। भूलकर भी बनाफरों के हाथ में अपनी कन्या का हाथ न देना; नहीं तो कोई भी क्षत्रिय तुम्हारे हाथ का छुआ पानी तक न पियेगा। जो तुम उनसे युद्ध में नहीं जीत सकते, तो तुम आल्हा को और उनके कुटुम्बियों को विवाह का बहाना करके अपने यहाँ बुला लो। कुछ सैनिकों को कोठरियों में पहले से छिपाकर बैठा दो। फिर उनके आते ही धोखे से उनके सिर कटवा लो।" माहिल की सलाह सुनकर नैपाली बड़ा प्रसन्न हुआ। वह ख़ुद झटपट महोबे के डेरों की ओर चल दिया। वहाँ पहुँचकर नैपाली रुपना बारी से आल्हा का डेरा पूछकर उनके डेरों में गया। नैपाली को देखकर आल्हा उठकर खड़े हो गये और उसका स्वागत करके उसे एक चन्दन की चौकी पर आसन दिया। चौकी पर बैठकर नैपाली ने आल्हा की अधीनता मानते हुए कहा—"राजकुमार, आप धन्य हैं और आपके माता-पिता धन्य हैं जिनके यहाँ आप जैसे वीर और योग्य पुत्र पैदा हुए। अब आप किसी तरह की शङ्का न कर व्याह के लिए चलिए। आप अपने साथ अपने भाइयों को भी ले चलें।" मलखे ने कहा—"हमारे साथ फ़ौज ज़रूर जायगी।"

यह सुनकर नैपाली ने कहा—"राजकुमार नाहक़ शङ्का न करो। ब्याह होते ही हम बेटी को विदा कर देंगे और तुम लोगों को ख़ुशी-ख़ुशी लौटा देंगे।" ऊदल ने कहा—"हमें तुम्हारा विश्वास नहीं।" नैपाली ने मुँह बनाकर कहा—"बेटा! दामाद और बेटा बराबर होते हैं। तुमको इतने पर भी विश्वास नहीं है तो मैं गङ्गाजी को साक्षी बनाकर कहता हूँ कि तुम्हारे साथ विश्वासघात न किया जायगा।" नैपाली के इन वचनों पर सभी को विश्वास हो गया। आल्हा तुरन्त बढ़िया पालकी में बैठकर वीरों के साथ चल दिये। पालकी के पीछे-पीछे मलखे, सुलखे, ऊदल, ढेबा, सैयद, रुपना बारी तथा दूसरे नेगी थे। चलते समय सरल-हृदय मलखे ने क़ैदी राजकुमारों और पटना के सूरज राजा को छोड़ दिया।

नैनागढ़ के राजमहल में तुरन्त मंडप गाड़ा गया और परिडत लोग शास्त्र की रीति से दस्तूर करने लगे। इधर नैपाली ने दो हज़ार क्षत्रियों को बुलाकर कोठरियों में छिपा दिया और अपने पुत्रों को सब बातें समझाकर आँगन में खड़ा कर दिया।

फिर आल्हा को बुलाकर कन्यादान की विधि की जाने लगी। जब गाँठ जोड़कर पहली भाँवर पड़ने लगी तब जोगा ने तुरन्त तलवार खींचकर आल्हा पर वार किया, पर ऊदल ने उसे अपनी ढाल से रोक लिया। इस तरह सातों भाँवरों में किसी न किसी ने उत्पात मचाया, पर सब की कोशिशें बेकार हुईं और आल्हा के साथ सुनवाँ का विवाह हो गया। विवाह हो जाने पर ऊदल ने पालकी मँगवाई और उसमें सुनवाँ को बैठा दिया। अब आज्ञा पाकर कहारों ने पालकी उठाई। पालकी उठते देख कोठरियों से बाहर निकलकर क्षत्रियों ने राजकुमारों पर नङ्गी तलवारों से हमला किया। थोड़ी ही देर में उन क्षत्रियों को ऊदल वग़ैरह ने मार गिराया। फिर तीनों सालों को बाँधकर वे डेरों में ले चले। इसी समय नैपाली ने सेना के साथ उन कुमारों पर हमला कर दिया। कहते हैं कि नैपाली आल्हा को जादू के ज़ोर से क़ैद करके लौट आया।

ऊदल ने डेरों में जाकर जब आल्हा के क़ैद होने की ख़बर सुनी तब वे अपनी भाभी सुनवाँ के डोले के पास जाकर बोले—"भाभी! दादा कैसे

छूट सकते हैं ?" सुनवाँ ने कहा—"हम और तुम दोनों नगर में चलकर पता लगा लेंगे।" अब सुनवाँ मरदाने लिबास में करिलिया घोड़े पर बैठकर ऊदल के साथ रवाना हुई और नगर में जाकर पुहपा मालिन के घर पहुँची। मालिन से पूछकर सुनवाँ ने ऊदल को बता दिया कि आल्हा शीशमहल में नज़रबन्द हैं। इसके बाद सुनवाँ ने गुजरिया का वेष बना लिया। वह सिर पर दही की मटकी रखकर "दही लो" "दही लो" की आवाज़ें लगाती हुई शीशमहल पहुँची। महल के अन्दर जाकर गुजरिया ने आल्हा से पूछा—"महाराज, दही लीजिएगा ?" गूजरी के रूप को देखकर आल्हा लट्टू हो गये। उन्होंने पूछा—"गूजरी ! तुम कहाँ रहती हो ?" सुनवाँ ने कहा—"मैं चित्तौड़ के सामन्त मोहन राजा की बेटी हूँ और आपका भेद लेने आई हूँ। अब आप मुझे अपना कोई गहना निशानी के तौर पर दीजिए।" आल्हा ने तुरन्त अपनी अँगूठी उतारकर दे दी।

सुनवाँ जब आल्हा को शीशमहल में देख आई तब ऊदल दोनों घोड़ों को लेकर सौदागर के वेष में नैपाली के पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने सुन्दरवन की तरह बहाना करके आल्हा को घोड़े की चाल दिखाने को बुलवा लिया। नैपाली की आज्ञा पाकर आल्हा करिलिया पर बैठे और ऊदल का इशारा पाकर वहाँ से चल दिये। इसी समय ऊदल भी बेंदुला पर बैठकर चल दिये। नैनागढ़ के क्षत्रिय देखते ही रह गये।

डेरों में आकर आल्हा, ऊदल और सुनवाँ ने सबको रीति से अभिवादन किया। तुरन्त डेरे उखड़ गये और महोबेवाले महोबे को चल दिये।

घर पहुँचकर राजकुमारों ने देवै और तिलका के पैर छुए। फिर मल्हना ने दुलहिन को परिछन किया और मुँह देखकर नौलखा हार दिया। इसी तरह दूसरी रानियों ने भी मुँह देखने के नेग में बहू को क़ीमती गहने दिये।

राजा परमाल ने तोपें दगवाईं और बहुत सा धन दीनों और ग़रीबों को बाँटा।

पथरीगढ़-विजय

मलखान का ब्याह

उस ज़माने में पथरीगढ़ को "बिसहिन" और "कसौंदी का कोट" भी कहते थे। यहाँ की धरती कँकरीली और पथरीली थी। इसी लिए इसका नाम पथरीगढ़ पड़ गया था। यहाँ के राजा का नाम गजसिंह बिसेने था। गजसिंह बड़े प्रतापी राजा थे। इनके यहाँ एक श्यामा भगतिन नाम की विकट जादूगरनी थी और अगिनियाँ नामक एक घोड़ा भी था। कहते हैं कि लड़ाई के मैदान में जब यह घोड़ा अपनी पूँछ फटकारता था तब उसमें से आग की लपटें निकलती थीं जिससे शत्रु की सेना झुलसकर भाग जाती थी। राजा गज ने उन दोनों की मदद से बड़े बड़े रजवाड़ों को फ़तह कर लिया था। इससे पास के सभी राजा उससे डरते थे।

राजा गजसिंह के सूरजमल और कांतामल नाम के दो लड़के थे और गजमोतिन 'गजमा' नाम की एक लड़की थी। कहते हैं कि गजमोतिन बड़ी रूपवती थी। गजमोतिन जब बारह वर्ष की हुई तब उसने अपने साथ की ब्याही हुई सहेलियों के साथ चढ़ाऊपरी करके अपना भी विवाह करना चाहा। इसलिए उसने एक दिन अपनी माता से कहा—"अम्माँ! हमारे साथ की सभी सहेलियाँ हाथों में सहाना जोर और पैरों में बिछुआ पहने हैं। ये चीज़ें हमको भी पहना दो।" बेटी की ये भोली बातें सुनकर रानी पहले तो हँसी, पर तुरन्त ही लज्जा से उसका सिर नीचा हो गया। रानी उसी दम वहाँ से उठकर राजा के कमरे में गई और बोली—"आप तो पड़े पड़े चैन की बंशी बजा रहे हैं, कुछ घर की भी ख़बर है! गजमा बारह वर्ष की हो गई और अभी तक कुमारी है; लोग क्या कहते होंगे! इसलिए किसी राजकुमार को तुरन्त टीका भेज दो।" रानी की ये मतलब की बातें सुनकर राजा की आँखें खुलीं। उन्होंने उसी दम

सूरजमल को बुलाया और पाँच पालकियाँ, नव्वे गजरथ, एक हज़ार अरबी घोड़े, बहुत से शाल-दुशाले और गहने तथा एक बेशक़ीमत सिरपेच मँगवाकर उसके सुपुर्द किया। और सोने के रत्नजड़े थालों में तीन लाख अशर्फ़ियाँ रखकर कहा—"जाओ, यह टीका किसी अच्छे ख़ानदान के बड़े राजा को चढ़ा देना, पर महोवे में न जाना। वहाँ के राजा परमाल का सम्बन्ध नीच बनाफरों से होने के कारण उनका कुल हीन हो गया है।" पिता की आज्ञा मानकर चारों नेगियों के साथ सूरजमल दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज चौहान त्रिसहिन का नाम सुनते ही टीका लेने को राज़ी न हुए। उन्होंने कहा—"हम वहाँ जाकर श्यामा भगतिन के फन्दे में नहीं पड़ना चाहते।

इसके बाद सूरज नैनागढ़, बौरीगढ़, नरवरगढ़ और कन्नौज वग़ैरह कई रजवाड़ों में गये, पर कहीं कोई भी टीका लेने को तैयार न हुआ। सूरजमल ने उरई में जाकर माहिल से टीके के विषय में सलाह लेनी चाही, इससे वे उरई की ओर चले। दैवयोग से उरई के रास्ते में उन्हें ऊदल मिल गये। उन्होंने नेगियों को सूरजमल के साथ जाते देखकर कहा—"ठाकुर! कहाँ किस काम के लिए जाते हो?" सूरज ने सिटपिटाकर उत्तर दिया—"कहीं नहीं। गंगा नहाने आये थे, अब तनिक माहिल परिहार के यहाँ उनके बेटे अभयसिंह से मिलने जाते हैं।" ऊदल ने हँसकर कहा—"क्यों बात बनाते हो। चारों नेगियों के साथ गंगा नहाने जाते हमने आज तक किसी को नहीं देखा! सच्ची बात यह है कि तुम अपनी बहन का टीका चढ़ाने को घूम रहे हो।" यह सुनकर सूरज ने कहा—"हाँ, सच तो यही है। हम सभी रजवाड़ों में हो आये, पर किसी ने भी हमारा टीका नहीं लिया। हम माहिल से पूछने जाते हैं कि अब हमें क्या करना चाहिए। वैसे तो महोवे में तुम्हारे ही भाई क्वाँरे हैं पर दद्दुआ ने तुम्हारे यहाँ की मनाही कर दी है; क्योंकि तुम्हारा कुल हीन समझा जाता है।" यह सुनते ही ऊदल क्रोध से फड़कने लगे और बोले—"जो हम कुल में हीन होते तो माहिल भी ऐसे ही होते, क्योंकि वे हमारे मामा हैं और नैनागढ़ के नैपाली भी कुलहीन होते जो हमारे ससुर हैं। इसलिए तुम जाकर

बकवाद न करो। चुपचाप चलकर टीका चढ़ा दो, नहीं तो तुम्हारी कुशल नहीं है।" लाचार होकर सूरज महोबे को चला। नगर की शोभा देखकर वह चकित रह गया। वह मन ही मन नगर की बड़ाई करता हुआ परमाल के दरबार में पहुँचा। वहाँ की अद्भुत शोभा और सजावट को देखकर सूरज मन ही मन उस राज की सराहना करने लगा। उसने परमाल को क़ायदे से प्रणाम किया और टीके की चिट्ठी गद्दी की ओर बढ़ाकर वह नम्र भाव से खड़ा हो गया। परमाल ने चिट्ठी को पढ़कर गद्दी के नीचे दबा दिया। फिर वे अपने काम में लग गये। इसी समय आल्हा ने उठकर हाथ जोड़कर कहा—"दादा! यह कहाँ का पत्र है और क्यों आया है?" परमाल ने कहा—"झुन्नागढ़* से राजा गजसिंह ने अपनी कन्या का टीका भेजा है। हमारे विचार से यह सम्बन्ध अच्छा नहीं। हम वहाँ मलखे का विवाह करके अपना नाश नहीं करवाना चाहते।" यह सुनकर ऊदल उठ बैठे और बोले—"आप तो सदा ऐसा ही कहा करते हैं। टीका फेरकर हम अपनी हँसाई नहीं करायेंगे। आपके प्रताप से आज तक सब जगह विजय हुई है और आगे भी होगी। हम लोगों को तो केवल आपकी दया और आज्ञा की ज़रूरत है।" ऊदल के हठ पर परमाल राज़ी हो गये। अब रनिवास में मंगलगान आरम्भ हो गया। मल्हना ने मोतियों का चौक पुरवाकर चन्दन की चौकी पर मलखे को बैठाया। फिर गणेश-पूजन करके सूरज ने मलखे के पैर धोये और टीके के सामान का संकल्प किया।

टीका चढ़ जाने के बाद ऊदल ने नेगियों को बहुत से गहने दिये और गहनों के बहुत से डब्बे उन नेगियों के लिए दिये जो झुन्नागढ़ में ही थे; महोबे नहीं आये थे। इसके बाद सब लोगों ने बैठकर सूरज के साथ भोजन किया।

चलते समय सूरज ने ऊदल से विवाह का दिन पूछा। तब ऊदल ने पं० चूड़ामणि से पूछकर बता दिया कि माघ सुदी १२ का शुभ मुहूर्त है। मुहूर्त्त जानकर सूरज कसौंदी की ओर रवाना हुए।

---

* पथरीगढ़ को झुन्नागढ़ भी कहते हैं।

माहिल को जब इसकी खबर लगी तब उसने तुरन्त अपनी लिल्ली घोड़ी कसवाई और उस पर बैठकर वह कसौंदी की ओर चला। कसौंदी पहुँचकर माहिल ने घुड़साल में घोड़ी खड़ी कर दी और स्वयं राजदरबार में पहुँचा। गजसिंह ने माहिल को देखकर उसकी आवभगत की और एक ऊँचे आसन पर उसको बैठाकर राज़ी-खुशी का हाल पूछा। माहिल ने उत्तर दिया—"हाँ, उरई में सभी कुशल है पर आपने अपने बुढ़ापे में एक बड़ा भारी बेजा काम किया है। आपके पुत्र सूरजमल ने महोबे में मलखे को टीका चढ़ाकर आपकी सुफ़ेदी में स्याही पोत दी है। जो मलखे के साथ गजमा का व्याह हो गया तो याद रखना, कोई भी क्षत्रिय तुम्हारे घड़े का पानी तक न पियेगा।" माहिल यह कह ही रहा था कि सूरजमल ने आकर पिता को प्रणाम किया। सूरज को देखकर राजा गजसिंह ने पूछा—"बेटा! कहो टीका कहाँ चढ़ाया?" सूरज ने कहा—"ददुआ! हम सभी रजवाड़ों में गये पर किसी ने भी टीके को नहीं लिया। तब हम उरई की ओर चले लेकिन रास्ते में ऊदल ने हमें महोबे में मलखे को टीका चढ़ाने के लिए लाचार किया। इससे हमने जाकर टीका चढ़ा दिया। जो आपको यह सम्बन्ध मंजूर न हो तो वे लोग जब बारात में आयेंगे तब हम लोग उन्हें मार भगायेंगे।"

इधर जब माघ का महीना लगा तब महोबे में घर-घर मंगलाचार होने लगे। परमाल ने अपने सभी रिश्तेदारों को न्यौते भेजे। न्यौते पाकर सिरुँज के रूपसिंह, कन्नौज के जयचन्द, नैनागढ़ के नैपाली, दिल्ली के पृथ्वीराज, उरई के माहिल, बौरीगढ़ के वीरसिंह के पुत्र मोहन तथा पवाँज के मदनगोपाल अपना-अपना लश्कर लेकर महोबे आये। ऊदल ने आगे बढ़कर सबका स्वागत किया और उनको ठहरने के लिए स्थान दिया। इस तरह महोबे के चारों ओर कोसों तक राजाओं के डेरे पड़ गये। उनके तम्बुओं पर रंग-बिरंगे झण्डे फहराने लगे।

सब राजाओं और न्यौहारियों के आ जाने पर महोबे में बारात की तैयारी होने लगी। हाथी, घोड़े, तोपखाने वगैरह सभी तैयार किये गये। फिर आल्हा,

ऊदल, सुलखे, देवा, ब्रह्मा और सैयद वग़ैरह सभी जुर्रु* का कङ्गन बाँधकर अपने-अपने घोड़ों पर चढ़े। मलखे ने मंडप और गणेशपूजन किया कि पण्डित चूड़ामणि ने उनके हाथ में कंगन बाँधा। इसके बाद प्रचलित रीति-रस्मों को पूरा करके मलखे पालकी में बैठकर बारात में आये। अब बाजे बजने लगे और कूच के डंके के साथ ही बारात जूनागढ़ की ओर रवाना हुई।

आठ दिन का रास्ता तय करके आल्हा ने कसौंदी से आठ कोस पूर्व अपने डेरे डाले। इसके बाद उन्होंने चूड़ामणि से पूछकर रुपना बारी को एपनवारी भेजने के लिए बुलाया। रुपना बारी ने उत्तर दिया, 'महाराज! यहाँ हम एपनवारी लेकर किसी तरह नहीं जा सकते। हमें अपनी जान भारू नहीं है। नाई को भेजकर आप यह काम पूरा करवा लें।" यह सुनकर ऊदल ने कहा—"रूपन! आज तुम्हें क्या हो गया है? बहादुर होकर और हमारे भाई होकर तुम्हें ऐसा कहने में लज्जा नहीं आती है?" इस पर रूपन ने कहा—"अच्छा, मेरे लिए मलखे के हथियार और कबूतरी घोड़ी मँगवा दो।" ऊदल ने चटपट सब चीज़ें मँगवाकर दीं। रुपना तुरन्त ही बैजनी पगड़ी बाँध और हथियार कसकर कबूतरी पर सवार हो गया और एपनवारी लेकर बात की बात में सबकी आँखों से ओझल हो गया।

राजद्वार पर जाकर रुपना ने द्वारपाल से कहा—"जाकर अपने महाराज से कहो कि महोबे का रुपना बारी एपनवारी ले लेकर आया है। इसलिए महाराज उसे लेकर हमें हमारा नेग दें।" नेग का नाम सुनकर द्वारपाल ने पूछा—"नेग में तुमको क्या मिलता है?" इस प्रश्न के उत्तर में रुपना ने जो कहा, उसे कवि ने इस प्रकार कहा है—

चारि घरी भरि चले सिरोही, गलियन बहै रक्त की धार।

---

* पुराने ज़माने में क्षत्रिय लोग जब ऐसी मुहिम पर जाते थे जिसमें युद्ध का खटका होता था तब अपने हाथ में एक विशेष प्रकार का कंकण पहनते थे। इसी को जुर्रु का कङ्गन कहते थे।

द्वारपाल ने जाकर सब हाल महाराज से कह दिया। महाराज ने जब नेग में सिरोही का नाम सुना तब वे बड़े नाराज़ हुए। उन्होंने अपने पुत्र सूरज से कहा—"जाकर उस दुष्ट का सिर काटकर फेंक दो।" राजा यह कह ही रहे थे कि रुपना वहाँ पहुँच गया। उसने एपनवारी गद्दी की ओर फेंककर कहा—"अब हमारा नेग मिल जाना चाहिए।" यह सुनते ही गजसिंह ने अपने दरबारियों को उसे पकड़ने का हुक्म दिया। तुरन्त मानसिंह ने उठकर अपने गुर्ज का वार किया। रुपना ने गुर्ज से बचकर अपने भाले से मानसिंह को घायल करके गिरा दिया। उनको घायल कर रुपना ने भाले की नोक से एपनवारी उठा ली और दरबार से बाहर आ गया। वहाँ पर रुपना को क्षत्रियों ने घेर लिया। वहाँ खटाखट तलवारें चलने लगीं। वीर रुपना ने बीन-बीनकर क्षत्रियों को तलवार के घाट उतारा। कहते हैं कि तीन घड़ी तक रुपना ने अपनी तलवार के जौहर दिखलाये। फिर उसने कबूतरी के एड़ लगाई और बात की बात में वह डेरों में पहुँच गया। ऊदल ने रुपना को ऊपर से नीचे तक लाल ही लाल देखकर कहा—"रूपन! ऐसे अवसरों पर क्या यहाँ होली खेलने की रीति है? इस समय तुम बड़े अच्छे लगते हो। कहो, नेग में तुम्हें क्या मिला।" रुपना ने उत्तर दिया—"हाँ, ऐसी ही होली अब आपको भी खेलनी पड़ेगी। मैंने तो सभी क्षत्रियों को आपके प्रताप से नीचा दिखलाया। अब देखिए आगे क्या होता है।"

माहिल ने रुपना को जब ज़िन्दा लौटा हुआ देखा तब उसने लिल्ली पर सवार होकर बिसहिन का रास्ता लिया। राजा गज ने माहिल को एक ऊँची चौकी पर बैठाकर कुशल पूछी। माहिल ने कहा—"आपकी दया से हम अच्छी तरह हैं और यहाँ बारात में आये हैं। अब हमें आपसे यही कहना है कि आप बनाफरों के साथ सम्बन्ध न करें। यदि करेंगे तो धर्म और कर्म से गिर जावेंगे। हमारे विचार से आप उनसे युद्ध में भी जीत नहीं सकते। इसलिए आप हमारी राय से काम करें। वह यह कि सूरज को भेजकर आप उन्हें पहले नज़र दिलवा दें। पीछे पथरीगढ़ में जनवासा दें, जिससे तम्बुओं की

मेखें तक उस ककरीली भूमि में न गड़ें। साथ ही आप शर्वत के घड़ों में विष मिलाकर भेजें, जिससे सभी महोबेवाले उसे पीकर मर जावें।" माहिल की बातें सुनकर राजा गजसिंह बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरन्त मोहरों के दो तोड़े सूरज को नज़र करने के लिए दिये और माहिल की कही हुई सभी बातें उसे समझा दीं। सूरज ने बात की बात में विष मिले शर्वत के घड़ों को बहँगियों पर लदवाकर डेरों की ओर कूच किया।

डेरों में पहुँचकर सूरज ने बहँगियाँ रखवा दीं और आल्हा के पास जाकर नज़र दी और पैर छुए। फिर उसने हाथ जोड़कर कहा—"ठाकुरपति! झटपट यहाँ से चलकर पथरीगढ़ में डेरे डालिए। जनवासा वहीं रक्खा गया है।" यह सुनकर आल्हा ने कूच का डंका बजवा दिया। तुरन्त वहाँ से डेरे उखड़-कर पथरीगढ़ को रवाना हुए। पथरीगढ़ में जब बढ़इयों से मेखें न गड़ीं, तब ऊदल और मलखे ने लोहे के घन से लोहे की मेखें गाड़ीं और तम्बू तनवा दिये। यह देखकर सूरज दंग हो गया। पथरीगढ़ में जब आल्हा का दरबार लग गया तब सूरज ने कहा—"महाराज! शर्वत के नौ हज़ार घड़े लाया हूँ। सबको बँटवा दीजिए।" आल्हा ने तुरन्त रुपना को बुलाकर कहा—"पहले एक गिलास शर्वत मुझे दो।" रुपना ने तुरन्त ही सोने के जड़ाऊ गिलास में एक घड़े में से शर्वत लेकर आल्हा की ओर बढ़ाया। गिलास लेने को आल्हा ने जैसे ही हाथ बढ़ाया वैसे ही किसी ने छींक दिया। छींक को सुनकर आल्हा ने ढेवा को बुलाया और पूछा—"विचार कर बताओ कि यह शर्वत पीना चाहिए कि नहीं।" ढेवा ने तुरन्त अपने देवता का स्मरण करके सारा भेद जान लिया और कहा—"नहीं, इसे खन्दक में फिंकवा दो। इसमें तो विष मिला है।" यह सुनकर ऊदल ने एक कुत्ते को बुलाया और उसे वह शर्वत दिया। कहते हैं, वह शर्वत पीते ही कुत्ता मर गया।

यह देखकर ऊदल ने चारों नेगियों को और बहँगीवालों को मारकर भगा दिया। फिर आल्हा ने सूरज को खूब फटकारा। वह लज्जा से सिर नीचा किये हुए लौट गया। सूरज ने बिसहिन में जाकर सब हाल कह सुनाया।

तब गज राजा ने माहिल से सलाह ली। उसने कहा—"वे इस प्रकार बच गये तो अब एक काम कीजिए। आप आल्हा की अधीनता स्वीकार कर लें और नज़र देकर केवल मलखे को यहाँ ले आवें; लेकिन उसके पास कुछ हरबा-हथियार न रहे, और उस हालत में उसे मारकर ख़न्दक़ में डाल दें। राजा गजसिंह तुरन्त जनवासे को गये। वे रुपना से आल्हा का डेरा पूछकर वहाँ पहुँचे। गजसिंह को देख आल्हा ने उठकर उनका स्वागत किया और एक ऊँचे आसन पर उनको बैठाया। फिर विसेनपति ने नज़र देकर कहा—"राजकुमार! अब हम तुम्हारी चातुरी और कर्तव्यपरायणता देखकर प्रसन्न हो गये हैं, और तुमसे विरोध नहीं करना चाहते। अब तुम व्याह के लिए केवल मलखे को पालकी में बैठाकर भेज दो। तुम्हारे विश्वास के लिए मैं गङ्गा की क़सम खाकर कहता हूँ कि किसी प्रकार का विश्वासघात न किया जायगा।" यह सुनकर सीधे सच्चे आल्हा को विश्वास हो गया। उन्होंने तुरन्त मलखे को जाने की आज्ञा दी। मलखे ने जामा और पगड़ी पहनी और हथियार बाँधकर पालकी में बैठने चले। इसी समय विसेने गजसिंह ने कहा—"नहीं, ऐसा न करो। हथियार बाँधकर चलोगे तो हमारी हँसाई होगी। जब हम क़सम खाकर कह चुके तब भी आप हथियार बाँधकर चलते हैं! हमारे यहाँ हथियारबन्द दूलह के साथ कन्या की भाँवरें नहीं पड़तीं।" यह सुनकर आल्हा ने मलखे से हथियार रख जाने को कहा। मलखे ने हथियार रख दिये और ख़ाली हाथ पालकी में जाकर बैठ गये।

मलखे की पालकी जैसे ही क़िले के अन्दर पहुँची वैसे ही फाटक बन्द कर दिया गया और गजसिंह ने अपने वीरों से कहा—"पकड़कर इसे ख़ूब मारो और मुश्कें बाँधकर ख़न्दक़ में डाल दो।" आज्ञा होते ही क्षत्रिय लोग मलखे की पालकी पर टूट पड़े। यह देखकर मलखे पहले तो हक्का-बक्का से हो गये पर तुरन्त उन्होंने पालकी से बाँस निकालकर चलाना शुरू किया। बाँस की वेंड़ी मार से जब क्षत्रिय लोग भागने लगे तब गजसिंह ने हाथ जोड़कर मलखे से कहा—"बस राजकुमार! क्षमा करना, हमारे यहाँ ऐसी ही रीति है। अब

चलकर विवाह की वेदी पर बैठो।" रीति का नाम सुनकर मलखे चुप हो गये और बाँस रखकर पालकी में बैठ गये। जब मलखे सिंहपौरि पार कर गये तब पालकी से उतारे गये। इसी समय क्षत्रियों ने पीछे से मलखे को पकड़ लिया और उन्हें चन्दन के खम्भे से कसकर बाँध दिया। फिर बग़ीचे से हरे पतले बाँस कटवाकर मँगवाये गये और मलखे को उन्हीं हरे बाँसों से पीटा गया। बेचारे मलखे की सारी देह में घाव हो गये। शरीर का जामा रक्तमय चमड़ी में मिलकर ग़ायब सा हो गया। वे बुरी तरह चिल्लाने लगे। मलखे की यह दशा देख एक बाँदी ने गजमोतिन से जाकर यह हाल कहा। पति की दुर्दशा का हाल सुनकर गजमा वहाँ गई और मलखे को देखकर पिता से बोली—"दद्दुआ! यह कौन है? और क्यों पीटा जाता है?" गजसिंह ने कहा—"बेटी! यह एक सामन्त है। इसने सात बरस से चौथ नहीं दी है। इसी लिए इस पर मार पड़ रही है।" इसी समय गजमा ने मलखे के हाथ का कंगन दिखाते हुए कहा—"सामन्त कहते हुए आपको लज्जा नहीं आती? इसी दम इनकी मुश्कें खोलकर क्षमा माँगिए, नहीं तो बात बिगड़ जायगी।" यह सुनकर मलखे लजा गये और ग़ुस्से में भरकर जैसे ही उन्होंने ज़ंजीरों को ऐंठा वैसे ही ज़ंजीरें चटचट करती हुई टूट गईं। फिर मलखे ने वह चन्दन का खम्भा उखाड़कर घुमाना शुरू किया। खम्भे की मार से सिंहपौर लाशों से पट गई और वहाँ रक्त का तालाब सा भर गया। इसी समय गजसिंह ने हाथ जोड़कर कहा—"राजकुमार! शान्त हो जाइए, मैंने जैसा किया वैसा फल पाया। लज्जा से मेरा सिर झुका जाता है, अब आप पालकी में बैठकर महलों में चलें।" यह सुनकर गजमा तो अन्दर चली गई और मलखे खम्भ रखकर पालकी में बैठने लगे। इसी समय क्षत्रियों ने चारों ओर से मलखे को फिर घेरकर बाँध लिया और एक ख़न्दक़ में डाल दिया। ख़न्दक़ में गिराये जाने पर मलखे ने जीवन की आशा छोड़ दी। वे मौत की घड़ियाँ गिनने लगे। उनकी यह दशा सुन बाँदी ने जाकर फिर गजमा से कहा तो वह तुरन्त ही अचेत होकर गिर पड़ी। जब दिन बीत गया

और रात हो गई तब वह उस ख़न्दक़ की ओर भोजन का थाल और पानी का गड़ुआ लेकर चली। ख़न्दक़ के पास पहुँचकर गजमा ने उसके अन्दर रेशम की रस्सी लटका दी और मलखे से बोली—"प्राणनाथ, झटपट निकलकर भोजन कीजिए। फिर अपने डेरे से फ़ौज लाकर मेरे दुष्ट पिता की अक़्ल ठीक कीजिए।" मलखे ने राजकुमारी के वचन सुनकर कहा—"नहीं, हम चोरी से निकलकर भागना नहीं चाहते और न क्वाँरी कन्या के हाथ का बनाया भोजन ही करना चाहते हैं। हाँ, जो तुम हमें चाहती हो तो हमारे दादा आल्हा के पास हमारी ख़बर पहुँचा दो।" यह सुनकर गजमा अपने महल को लौट गई। वहाँ जाकर उसने पत्र में मलखे का सारा हाल लिखा और उसे अपनी मालिन को देकर कहा—"देखो! जनवासे में जाकर तुम यह पत्र आल्हा को देना और उनसे कहना कि क्या आपको डेरों में पड़े-पड़े मौज उड़ाना शोभा देता है! आपके छोटे भाई ख़न्दक़ में पड़े मौत की घड़ियाँ गिन रहे हैं!" पत्र को लेकर मालिन ने कहा—"बेटी! यह तो ठीक है, पर सिंहपौर का फाटक बन्द होने से मैं बाहर कैसे जाऊँगी?" कुछ देर तक सोचने के बाद गजमा ने कहा—"कोई चिन्ता नहीं। दरबानी से कहना कि, गजमा ने पूजा के लिए फ़ूल मँगाये हैं। इसलिए मैं फूल लेने को बग़ीचे तक जाती हूँ।" इसे ठीक उपाय समझ मालिन ने वह पत्र अपने जूड़े में छिपा लिया। अब वह वहाँ से चल पड़ी। फाटक पर पहुँचने पर सूरज ने मालिन की दृष्टि देखकर पहचान लिया कि यह कोई भेदिनी है। इससे सूरजमल ने सिपाहियों को उसे लूटने की आज्ञा दे दी। अपने को लुटते देखकर मालिन रोकर कहने लगी—"मैं जाकर अभी गजमोतिन से कहती हूँ कि मुझे सूरजमल ने फ़ूल लेने बगिया में नहीं जाने दिया और पीटकर मेरा सारा ज़ेवर लुटवा लिया।" गजमा का नाम सुनकर सूरजमल चौंक पड़े और बहन के क्रोध की याद करके उन्होंने उसका सारा ज़ेवर लौटा दिया। यही नहीं, उसे समझा-बुझाकर सूरजमल ने फाटक भी खुलवा दिया। मालिन ख़ुशी से लम्बे-लम्बे डग भरती हुई जनवासे में पहुँची। वहाँ पर वह सबसे पहले माहिल के डेरे में जा आल्हा का डेरा पूछने

लगीं। दोनों ओर से आग बरसने से फ़ौजों में त्राहि त्राहि मच गई। सिपाही और हाथी-घोड़े प्राण लेकर इधर-उधर भागने लगे। हज़ारों वीर बिना कौशल दिखाये ही यमपुरी का रास्ता नापने लगे। जब आग उगलते-उगलते तोपें लाल हो गईं तब वे शान्त कर दी गईं। इसके बाद दोनों ओर के वीर फिर अपने अपने तेगे लेकर मैदान में कूद पड़े। क़न्नागढ़ से आई हुई तीन लाख सेना महोबे के वीरों की थैं ड़ी मार से आधी रह गई। यह देखकर सूरजमल ने ऊदल से द्वन्द्वयुद्ध करने को कहा जिसे उन्होंने ख़ुशी से मान लिया। फिर ऊदल के कहने से पहला वार सूरजमल ने किया। उस तलवार के वार को ऊदल ने अपनी ढाल से रोक लिया। सूरज ने ज़ोर से तीन वार तलवार के वार किये, पर वे तीनों ही ख़ाली गये। फिर ऊदल ने अपना गुर्ज उठाकर सूरज पर फेंका। उसको अपनी ओर आते देखकर सूरज घोड़ा भगाकर सामने से हट गया। इसी समय ऊदल के सामने जा कान्तामल ने उन पर तलवार का वार किया जो ऊदल की ढाल में लगकर ख़ाली गया। इस पर ऊदल ने उस पर भाले का वार किया। वह भाला जैसे ही कान्तामल के लगा, वह भाग निकला। उधर देवा ने बढ़कर मानसिंह के हौदे पर वार किया। तब मानसिंह ने घायल होकर मोर्चा ही हटा दिया। उधर सूरज ने भागकर अपने पिता से सारा हाल कह सुनाया। तब गजसिंह ने श्यामा भगतिन को बुलाकर आज्ञा दी कि वहाँ जाकर महोबे की फ़ौज को अचेत कर दे। अब श्यामा को लेकर सूरज लड़ाई के मैदान में आ पहुँचा। श्यामा ने अपने तन्त्रबल से महोबे की फ़ौज को अचेत कर दिया। देवा को छोड़कर सभी सैनिक और सरदार जहाँ के तहाँ चित्र जैसे खड़े के खड़े रह गये। यह देखकर देवा आल्हा के पास पहुँचा। उसने सारा हाल आल्हा से कह सुनाया। आल्हा ने कहा—"तुम चटपट महोबे जाकर सुनवाँ को यह सब हाल सुनाओ और उसे अपने साथ यहाँ ले आओ।" यह सुनकर देवा ने घोड़े पर सवार होकर उसके एक एड़ लगाई और तीन दिन का मार्ग तय कर वह महोबे में पहुँचा। देवा को द्वार पर खड़ी हुई राजमाता देवै मिलीं। उसने देवा से युद्ध के समाचार और अपने पुत्रों

का हाल पूछा। ढेवा ने श्यामा भगतिन के जादू की सारी कथा कह सुनाई। इसी समय वहाँ सुनवाँ भी आ पहुँची। उसने जब यह हाल सुना तब वह तुरन्त अपनी इष्टदेवी के मन्दिर में गई। विधि से पूजन करने के बाद सुनवाँ ने अपना सिर काटकर चढ़ाने के लिए कटार उठाई। यह देखकर भगवती अष्टभुजा ने आकाशवाणी द्वारा कहा—"बेटी! धैर्य धर। तेरे मनोरथ पूरे होंगे।" तब जगदम्बा से अमृत लेकर सुनवाँ महलों को लौट आई। वहाँ उसने मर्दाना वेष धरकर अपनी सासों के चरण छुए और उनसे आज्ञा लेकर वह पपीहा घोड़े पर सवार होकर ढेवा के साथ हो ली।

तीन दिन चलकर दोनों सवार पथरीगढ़ के डेरों में आ पहुँचे। सुनवाँ ने पपीहा से उतरकर आल्हा के चरण छुए। फिर वह ढेवा के साथ लड़ाई के मैदान में गई। वहाँ उसने महोबे की फ़ौज पर वह अमृत छिड़क दिया। इससे वह अचेत फ़ौज होश में आ गई। ऊदल ने तुरन्त अपनी भाभी के पैर छूकर चरणरज माथे में लगाई। महोबे की फ़ौज सुनवाँ के गुण गाने लगी।

दूसरे दिन ऊदल ने फिर बिसहिन पर चढ़ाई की तो वहाँ के वीर भी मैदान में आ डटे। दोनों फ़ौजों में जब एक खेत का अन्तर रह गया तब दोनों ओर से तोपें छूटने लगीं। हाथी, घोड़े और ऊँट चिंघाड़ते, हिनहिनाते और बलबलाते हुए इधर-उधर भागने लगे। इनमें से जिसके गोला लगता वही पर्वत की एक शिला की भाँति धम से गिर पड़ता था। तोपों की मार से मृतक वीरों को गिनना असम्भव सा था। इस युद्ध में मनुष्य तो चींटी की भाँति इधर-उधर लुढ़कते दिखाई पड़ते थे। यह कहना ठीक होगा कि युद्ध का मैदान लाशों से पट गया था। यह दशा देख और तोपों को बहुत गर्म देखकर युद्ध बन्द करवा दिया गया। अब तलवारें चलने लगीं। पाठको! तलवारों की लड़ाई में महोबेवालों की सदा जीत रही है, जैसा कि कवि ने कहा है—

बड़े लड़ैया महुबेवाले, जिनसे हार गई तलवार।

महोबे के वीरों की बेंड़ी मार से डरे हुए भुन्नागढ़ के वीर भाग निकले। यह देखकर सूरजमल ऊदल के पास फिर द्वन्द्वयुद्ध करने आये। ऊदल को

गये। उन्होंने तुरन्त अपनी कमान से आल्हा के मस्तक को निशाना बनाकर तीर छोड़ा। तीर को आते देख, आल्हा ने पचशावद को निशाने से हटा लिया। और वह तीर सनसनाता उनके कान के पास से निकल गया। इसके बाद गजसिंह ने तलवार के दो वार किये, पर दोनों ख़ाली गये। दूसरे वार में तो वह मानाशाही सिरोही ही आल्हा की ढाल में लगकर टूट गई। केवल मूठ को हाथ में देखकर गजसिंह घबरा गये। इसी समय आल्हा ने पचशावद की सूँड़ में साँकल दे दी। पचशावद ने साँकल को घुमाना शुरू किया। साँकल की मार से गजसिंह घोड़े से नीचे गिर पड़े। तब आल्हा ने उन्हें क़ैद करवाकर अपने हौदे में कसवा दिया। तुरन्त महोबे की फ़ौज में जीत का डंका बज उठा। फिर वे लोग बिसहिन में घुसकर उस ख़न्दक़ के पास पहुँचे। ऊदल ने मलखे को आवाज़ देकर रेशम का रस्सा लटका दिया। रस्से को देखकर मलखे ने कहा—"भैया! हमारी देह साँकलों से कसी हुई है, इसलिए हम कैसे चढ़ सकते हैं।" यह सुनकर ऊदल हँसे और बोले—"दादा! इसी बल-बूते पर सिरसा में राज्य करते हो? बनाफर होकर कायरों जैसे वचन बोलने में आपको लज्जा नहीं आती?" यह सुनते ही मलखे के शरीर में बिजली सी दौड़ गई। उन्होंने जोश में आकर जैसे ही अपने भुजदण्डों को ऐंठा वैसे ही साँकलें चट चट कर टूट गईं। फिर ऊपर आकर उन्होंने आल्हा के पैर छुए। यह देखकर बन्दी गजसिंह ने आल्हा से बहुत विनय की और गंगाजी को साक्षी देकर कहा—"अब हम लोग आपके साथ कभी विश्वासघात न करेंगे।" यह सुनकर भोले-भाले आल्हा ने गजसिंह और उनके दोनों पुत्रों को छुड़वा दिया और अपनी फ़ौज समेत आल्हा अपनी छावनी की ओर लौट आये। उधर गजसिंह महलों में जाकर विवाह की तैयारियाँ करने लगे।

माहिल ने जब यह सुना तब वह तुरन्त अपनी लिली पर सवार होकर झूनागढ़ में जा पहुँचा। गजसिंह ने बड़ी प्रसन्नता से उसका स्वागत किया और कुशल पूछी। माहिल ने कहा—"हाँ! हमारे यहाँ तो कुशल है, परन्तु तुम्हारे यहाँ अनिष्ट होनेवाला है। याद रक्खो, जो तुमने बनाफरों को लड़की दे दी तो

तुम ठकुराइत से निकाल दिये जाओगे। तुम्हारे यहाँ का जल कोई हाथ धोने तक को न लेगा। बनाफरों ने तुम्हें क़ैद करके तुम्हारी बेइज़्ज़ती की और तुम उन्हीं को कन्या देने जा रहे हो। बड़े दुःख की बात है। इसलिए अब भी यदि तुम इस पाप से बचना चाहते हो तो एक काम करो। बारात में से घर पीछे एक एक आदमी बुलवा लो और कोठरियों में अपने वीरों को नङ्गी तलवारें देकर छिपा दो। जैसे ही भाँवरें पड़ने को हों, उन पर हमला करके उन्हें गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दो।" यह राय सुनकर मूर्ख गजसिंह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने आँगन में सुन्दर मोतियों का चौक पुरवाकर विवाह का सभी सामान जुटा दिया। फिर सूरज, पथरीगढ़ में आल्हा के डेरे में जाकर, बोला—"झटपट दूलह को तथा घर के ख़ास-ख़ास आदमियों को भेज दीजिए। विवाह की लग्न में अब देर नहीं है। आल्हा ने तुरन्त ऊदल को बुलाकर सब बातें समझा दीं। सब लोग तैयार होकर बाहर आ खड़े हुए। बढ़िया बाजे बजने लगे और उसके पीछे चन्दन की पालकी में, जिसमें मोतियों की झालरें और कमख़ाब पर कलाबत्तू के काम का उहार पड़ा हुआ था, मलखे बैठकर चलने लगे। पालकी के पीछे आल्हा, ऊदल, सुलखे, ढेवा, लाखन, ब्रह्मा, जोगा, भोगा, मोहनसिंह, जगनिक और ताल्हन अपने-अपने बछेड़ों पर सवार होकर चलने लगे। जैसे ही बारात द्वार पर पहुँची वैसे ही सखियाँ मङ्गलाचार करती हुई गुलाबजल और कस्तूरी-युक्त केशर की पिचकारियाँ चलाने लगीं। चारों ओर से फूल बरसाये जाने लगे। फिर वे लोग आँगन में गये। कुलपुरोहित ने कन्यादान करवाकर ग्रन्थिबंधन करवाया, और हवन वग़ैरह के बाद जैसे ही भाँवरें पड़ने को हुईं, वैसे ही सूरजमल ने मलखे को मारने के लिए तलवार चलाई। इसी समय ऊदल ने ढाल अड़ाकर वह वार रोक दिया। दूसरी भाँवर के समय कांतामल ने तेगे का वार किया। तब सुलखे ने ढाल अड़ाकर मलखे को बचाया। यह देखकर तीसरी भाँवर के समय सूरज के छिपे हुए साथियों ने तलवार चलाना शुरू किया। तुरन्त आल्हा, ऊदल व उनके दूसरे साथियों ने उठकर उनका सामना किया। बात की बात में बिसेन-क्षत्रियों

को महोवियों ने काटकर उनकी लाशों का खलिहान की तरह ढेर लगा दिया। आँगन में रक्त का कुण्ड सा भर गया। गड़ा हुआ चन्दन का खम्भ टूक-टूक हो गया और गजमा के लहर-पटोर रक्त से लथपथ हो गये। जब विसहिन के विसेने वीर जूझ गये और उनमें से कुछ भाग निकले, तब पुरोहित ने भालों का नया मण्डप गाड़कर बाक़ी तीनों भाँवरें डलवा दीं। कहते हैं कि इन भाँवरों के समय आल्हा ने गजसिंह और उनके दोनों बेटों को फिर बन्दी करवा लिया था। जब भावरें पड़ चुकीं तब आल्हा ने उन तीनों को छुड़वाकर कहा—"हम लोग जाते हैं। जल्दी भात बनवाकर हम लोगों को भोजन करने के लिए बुलावा भेजना।" अब आल्हा मलखे को पालकी में बैठाकर साथियों समेत डेरों को लौट गये। इनको सकुशल लौटा हुआ देखकर माहिल को सन्देह हुआ। वह चटपट अपनी लिल्ली पर चढ़कर विसहिन को रवाना हुआ। गजसिंह ने माहिल को सब हाल कह सुनाया और यह भी कहा कि वे भात खाने के लिए कह गये हैं। यह सुनकर माहिल ने कहा—"फिर क्या चिन्ता है? तुम रसोई तैयार करवाओ और सूरजमल को भेजकर बनाफरों के घर के आदमियों को बिना हथियारों के बुलवा लो। जब वे लोग भोजन को बैठ जावें तो छिपे हुए क्षत्रियों से उन पर धावा बुलवा दो।" यह मनभावनी सलाह पाकर विसेनेराय ने भात तथा कच्ची रसोई बनने का हुक्म दिया। रसोई तैयार हो जाने पर गजसिंह स्वयं बारातियों को बुलाने चले।

जिस समय गजसिंह डेरों में पहुँचे उस समय आल्हा के डेरे में दरबार लगा हुआ था। सब क्षत्रिय अपने-अपने पद के सिलसिले से यथायोग्य स्थानों पर बैठे हुए थे। आल्हा एक रत्नजड़ित सोने के सिंहासन पर बैठे हुए ऐसे जान पड़ते थे मानो इन्द्र देवसभा में बैठे हों। उन सबके सामने सुन्दर नर्त्तकी नाच कर रही थी। इसी समय गजसिंह पहुँचे। उनको देखकर सबने उनका स्वागत किया। फिर गजसिंह ने अशर्फ़ियों का एक तोड़ा आल्हा को भेंट किया और हाथ जोड़कर कहा—"राजकुमार! धन्य है आपके माता और पिता को जिनके घर आप ऐसे शूरों ने जन्म लिया। अब आप इसे बन्द करके जल्दी भोजन के लिए

चलें, पर हमारे यहाँ यह रीति है कि जितने आदमी भाँवरों के समय जाते हैं उतने ही आदमी भात खाने जाते हैं।" यह सुनकर आल्हा ने ताल्हन को छोड़कर उन सभी को तैयार करवाया जो भाँवरों के समय गये थे। सभी लोग अपने-अपने वस्त्र पहनकर तथा हथियार बाँधकर तैयार हुए। बिसेने राय ने हथियारों को देखा तो आल्हा से हाथ जोड़कर कहा—"राजकुमार! अब तो आप लोग हमारे गरुये नाते के लड़के हैं, तो क्या हम लोग ऐसे अजान हैं कि आपके साथ अब भी विश्वासघात करेंगे? आप निश्चिन्त रहें। हम लोग अब ऐसी नीचता स्वप्न में भी नहीं कर सकते।" यह सुनकर आल्हा ने सबको हथियार ले चलने से रोक दिया। सब लोग गंगाजल से भरे अपने-अपने सोने के गड़ुए लेकर झुन्नागढ़ की ओर चल दिये। महलों में सब लोग अपने-अपने स्थान पर जाकर भोजन करने के लिए बैठे। झुन्नागढ़ के बारी ने ढाक के हरे पत्तों की पत्तलें, जिनमें चारों ओर हरे आम के पत्तों की पतवारें लगी हुई थीं, लाकर दीं। सूरजमल ने पत्तलें सबके आगे डाल दीं। ऊदल ने उस बारी को नेग में तुरन्त सोने के कंगन दिये। फिर सूरज और कान्तामल ने भात लाकर उन पत्तलों में परोसा। भात के अलावा और पदार्थ भी परोसे गये। जब पारस हो चुका तब बिसेनेराय गजसिंह ने आकर रत्न-जटित सोने के कंगन मलखे को कच्ची की नज़र में दिये। नज़र पाकर मलखे ने जैसे ही पत्तल से कौर उठाया वैसे ही कोठरियों में से क्षत्रिय लोग निकल पड़े। यह देखकर महोबे के जवान अपने अपने गड़ुए लेकर उठ बैठे और तलवारों का बदला गड़ुओं से देने लगे। कुछ वीरों ने अपने-अपने पटे उठाकर चलाना शुरू किया। कहते हैं कि गड़ुओं और पटों की मार से बिसेने लोग बिलबिलाकर इधर-उधर भागने लगे। भोजन के स्थान में चारों ओर ख़ून ही ख़ून दिखलाई देने लगा। बिसहिन के वीरों की लाशों के ढेर लग गये। बचे-बचाये वीर भाग निकले। जब शत्रु लोग सामने से हट गये तब आल्हा ने अपने साथियों से कहा—"भाइयो, हम तो समधियाने के इस अन्न को खाकर ही चलेंगे।" बस, आल्हा अपने पटे पर जा बैठे। उनको देखकर सभी लोग बैठकर भोजन

करने लगे। यह देखकर गजमा ने अपनी माँ से कहा—"अम्मा! तुम जाकर दद्दुआ से कह दो कि व्यर्थ में लड़कर औरतों को विधवा न बनावें। महोबे-वालों से लड़कर दद्दुआ जीत नहीं सकते। इसलिए अब भलाई इसी में है कि वे जाकर उनकी अधीनता मान लें।" यह सुनकर रानी गजसिंह के पास गई। उसके समझाने पर गजसिंह की आँखें खुलीं। उन्होंने आल्हा के पास जाकर क्षमा माँगी और कहा—"झटपट विदा करवा लीजिए।" यह सुनकर आल्हा बड़े प्रसन्न हुए। भोजन कर चुकने के बाद वे डेरों को लौटे। आल्हा ने डेरों में कूच का डंका बजवा दिया और विदा के लिए ऊदल के साथ पालकी भेज दी।

पालकी के आते ही रानी ने गजमा को पहना-उढ़ाकर तैयार कर दिया। अत्यन्त रूपवती गजमोतिन जब पहन-ओढ़कर माता से भेंटने लगी तब सबकी आँखों से आँसू बहने लगे। इस प्रकार अपनी माता, पिता, भाई, भौजाई, सखी-सहेलियों से मिल-भेंटकर जब गजमा पालकी में बैठी तब ऊदल ने बहुत से गहने लेकर बिसहिन के नेगियों को पहना दिये। ऊदल पालकी के पास सोने की मोहरें लुटाते हुए डेरों तक आये। डेरों में जाकर ऊदल ने बिसहिन के भाट-भिखारियों और नेगियों को फिर गहने और रुपये इनाम में दिये। फिर गजसिंह ने आकर आल्हा को नज़र दी और दुबारा क्षमा माँगी। आल्हा वग़ैरह सभी सरदारों ने गजसिंह से यथायोग्य अभिवादन किया और महोबे को चल पड़े। आठ दिन चलकर बारात महोबे में लौट आई। बारात के आने से पहले ही रुपना ने आकर मल्हना को सूचना दे दी, और कुम्भागढ़ का सब हाल भी कह सुनाया। मल्हना ने यह शुभ सूचना देने लिए रुपना को सोने के कड़े दिये।

इसी समय गजमा की पालकी द्वार पर आ पहुँची। मल्हना ने तुरन्त ही थाल सजाकर दुलहिन का परिछन किया। मलखे व गजमा ने माताओं के पैर छुए। सबने मिलकर उन दोनों को आशीर्वाद दिया। महोबे में सलामी की तोपें दागी गईं।

फिर ऊदल ने सैनिकों को खिलतें बाँटीं। परमाल ने दीनों, ब्राह्मणों और अपाहिजों को दान-दक्षिणा और रुपये दिये। बाहर से आये हुए रिश्तेदारों को यथायोग्य बिदाई दे उनको विदा किया। महोबे में घर-घर मंगलाचार होने लगा।

चन्द्रावलि की चौथी अर्थात् बौरीगढ़ की लड़ाई

सावन का सुन्दर महीना लगते ही घर-घर हिंडोले पड़ गये। तीज का त्यौहार स्त्रियाँ मनाने तथा राग मलार अलापने लगीं। इधर तो यह हाल था, उधर रानी मल्हना अपने सतखण्डे पर खड़ी खड़ी सोच रही थी कि जब से विवाह हुआ है तब से चन्द्रावलि का देखना तो दूर की बात है, आज तक किसी प्रकार की ख़बर तक नहीं मिली। हर एक घर की लड़कियाँ सावन मनाने आ गईं, पर हमारी बेटी राजकन्या होकर भी नहीं आई। वह इसी विचार में पड़ी थी कि जब मेरे पुत्र बड़े हो जावेंगे तब चन्द्रावलि की चौथी लेकर बिदा करा लायेंगे। इसी सोच में पड़कर मल्हना रोने लगी। इसी समय ऊदल वहाँ पहुँचे। उन्होंने मल्हना को रोते देख हाथ जोड़कर पूछा—"माताजी! आप क्यों रोती हैं?" रानी बात टालकर ऊदल से बोली—"घर-घर लड़कियाँ सावन गाती हैं और तीज का त्यौहार मनाती हैं, पर हमारे घर में कोई ऐसी लड़की नहीं जो तीज का त्यौहार मनाती।" ऊदल बिना सच्ची बात जाने चुप कब बैठनेवाले थे। वे अपनी कटारी निकालकर बोले—"मुझे सब हाल सच्चा-सच्चा बतला दो कि आप क्यों रोती थीं, नहीं तो मैं कटारी मारकर प्राण त्याग दूँगा।"

रानी मल्हना ने जब यह सुना तब वह अधिक बहाना न कर सकी, और बोली कि बेटा, तेरी एक बहन चन्द्रावलि है, जिसका विवाह बौरीगढ़ में हुआ है। जब से उसकी बिदाई हो गई है, किसी ने उसको नहीं बुलाया। ऐसा महोबे में कोई भी नहीं पैदा हुआ जो बेटी को लिवा लावे।" वीरों के लिए इतना उत्तेजन काफ़ी है। इसका ऊदल पर पूरा प्रभाव पड़ा। वे बोले—"हमें आज तक किसी ने यह नहीं बतलाया। अब आप मुझे सब समझा दें कि बहन का विवाह कैसे हुआ और वीरशाह के घर उसकी बिदा कैसे हुई?" रानी मल्हना ने सब हाल ऊदल से बतलाते हुए कहा—"जब तुम छोटे थे, तब उसका विवाह हुआ था। चन्द्रावलि की सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा

सकता। उसकी चर्चा चारों ओर देश देश फैल गई थी। यह समाचार बौरीगढ़ के राजा वीरशाह ने भी सुना। वह तुरन्त तुम्हारे ददुआ के ऊपर सेना सजाकर चढ़ आया। उसने महोवे से एक कोस पर डेरा डाल दिया। फिर राजा को एक पत्र भेजा। उसमें लिखा कि चन्देलराज, हम पुत्र को व्याहने के लिए आये हैं। आप अपनी बेटी का व्याह कर दें, नहीं तो ज़बर्दस्ती करवा लिया जायगा।

राजा चन्देले ने जब पत्र पढ़ा तब उचित सलाह लेने के लिए मुझे बुला भेजा। मैंने कहा—"आप बेटी का विवाह किसी राजा के साथ अवश्य करेंगे। चन्द्रावलि क्वाँरी तो रहेगी नहीं, इससे आप मेरी बात मानें तो यही अच्छा है। लड़की अब सयानी हो गई है। राजा वीरशाह प्रसिद्ध यादव-कुल का है। राजकुमार इन्द्रसेन भी सुन्दर युवक है। इसलिए चन्द्रावलि का विवाह इन्द्रसेन के साथ कर दीजिए। आपके घर भगवान् की दया से पारस है, इससे आसानी से ख़ूब दहेज भी दीजिए।

यह सुनकर तुम्हारे चाचा ने बौरीगढ़-नरेश को विवाह की मंज़ूरी भेज दी और चन्द्रावलि का विवाह भी हो गया। आज बेटी को गये बारह वर्ष बीत गये पर उसने लौटकर फिर अपना नैहर न देखा।

माता के वचन सुनकर ऊदल बोले—"माताजी! आप ख़र्चा मँगवा दीजिए; मैं विदा कराने अभी जाता हूँ।" यह सुनकर रानी मल्हना ने समझाते हुए कहा—"बेटा! मेरी बात मानो और विदा करवाने का हठ मत करो; क्योंकि देश में तुम्हारे शत्रु मौजूद हैं। कोई जाकर चुग़ली कर देगा तो नाहक़ झगड़ा खड़ा हो जावेगा। इससे वहाँ जाने का इरादा छोड़ दो।"

ऊदल अब क्यों मानने लगे! मल्हना की बात काटकर और कड़ककर बोले—"मैं आपकी यह बात नहीं मानूँगा। मैं बहन को विदा करवाने ज़रूर जाऊँगा, चाहे मेरे प्राण ही क्यों न चले जायँ। आप कुछ चिन्ता न करें और मेरे जाने का प्रबन्ध करवा दें।"

राजा परमाल ने कहा—"बेटा! तुम मेरी बात मानकर वहाँ न जाओ। हमें लड़की की विदा की तनिक भी इच्छा नहीं। चन्द्रावलि से हमें कोई मतलब नहीं।" यह सुनकर ऊदल बोले—"अब तो मैं किसी प्रकार नहीं मान सकता। आप अभी प्रबन्ध करवा दें। मैं अभी जाऊँगा और अगर मैं देवै का पुत्र हूँ, तो जल्द बहन को विदा कराकर वापस आऊँगा।"

राजा परमाल ऊदल को हठ करते देख रानी मल्हना के पास गये और बोले—"तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। तुमने ऊदल से बौरीगढ़ का सब हाल क्यों कह दिया?" इस पर रानी ने कहा—"स्वामी! मेरी बात मानकर चौथी का सब सामान मँगवा दीजिए। हर मनुष्य धन चाहता है। आप बहुत सा धन चौथी में भेजेंगे तो बौरीवाले धन के लोभ से तुरन्त विदा कर देंगे।" यह सुनकर राजा ने ऊदल की तैयारी करवा दी।

राजा ने चौथी में साठ पालकियाँ सजवा दीं। साथ-साथ अस्सी गजरथ, चालीस हाथी और एक हज़ार बढ़िया घोड़े सजवा दिये। इसके सिवा मुहरों के बारह तोड़े, बीस दुशाले और सवा लाख का चीरा-कलँगी ऊदल को सौंप दिया। इस प्रकार कुल सात लाख का सामान चौथी में भेजा गया। रानी मल्हना ने बावन मटके रँगवाकर सजवाये। इस प्रकार सब सामान छकड़ों पर लदवाकर परमाल ऊदल से बोले—"बेटा! तुम पृथ्वीराज से जाकर मिलना और वीर चौहान जैसी शिक्षा दें, वैसा बौरीगढ़ में जाकर करना।" अब बेंदुला घोड़े पर सवार हो ऊदल नाई, बारी, भाट और पुरोहित को साथ लेकर चल दिये।

जैसे ही ऊदल ने दिल्ली की राह पकड़ी वैसे ही उरई का राजा माहिल महोबे पहुँचा। वहाँ उसको किसी ने भी यह समाचार नहीं बतलाया किन्तु गाँव के एक अहीर के लड़के ने उससे सब हाल कह दिया। हाल सुनकर माहिल ने दिल्ली का रास्ता पकड़ा। दिल्ली पहुँचकर वह राजा पृथ्वीराज के दरबार में गया। पृथ्वीराज ने माहिल को देखकर ऊँचे आसन पर बिठाया और कुशल-समाचार पूछे। माहिल ने उत्तर दिया—

"राजा चन्देले ने सलाह की है कि चलकर दिल्ली लुटवा लेनी चाहिए। इसलिए बौरीगढ़ का बहाना करके पहले ऊदल को भेजा है और पीछे से जल्द वीर मलखान आवेंगे। आप मेरी बात को सत्य मानिए।" माहिल की बातें सुनकर वीर चौहान ने कहा—"महाराज! ऐसा मत कहो। उनको दिल्ली लुटवाने से क्या मतलब? हमने उनका ऐसा कौन सा अपराध किया है, जिससे वे ऐसा करेंगे? तुम जब दिल्ली आते हो तब कुछ न कुछ झूठ ज़रूर कहते हो।" यह सुनकर माहिल मन ही मन बहुत झेंपा और वहाँ से चल दिया। वह वहाँ से सीधा बौरीगढ़ को गया।

ऊदल जब दिल्ली पहुँचे तब उन्होंने बाग़ में विश्राम किया। पृथ्वीराज को ऊदल के आने के समाचार मिले, तो राजा ने अपने सूरज नाम के पुत्र को बुलाया और आज्ञा दी कि तुम जाकर ऊदल को बुला लाओ। आज्ञा पाकर सूरजमल बाग़ में पहुँचे जहाँ ऊदल का डेरा लगा हुआ था। ऊदल को प्रणाम कर उन्होंने कहा—"भाई साहब, आपको राजा साहब ने याद किया है। आप मेरे साथ चलिए।" यह सुनकर ऊदल उनके साथ हो लिये। दरबार में पहुँचने पर ऊदल ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। जैसे ही राजा ने ऊदल को देखा वैसे ही उन्हें छाती से लगा लिया।

राजा ने ऊदल से पूछा कि तुमने कहाँ जाने का विचार किया है। ऊदल ने उत्तर दिया—"महाराज! बहन को विदा कराने बौरीगढ़ जा रहा हूँ।" जब राजा को मालूम हुआ कि ऊदल बौरीगढ़ जा रहे हैं तब उन्होंने कहा—"बेटा, बौरीगढ़ का राजा बड़ा निर्दय है। इससे हमारा कहना मानकर लौट जाओ।"

यह सुनकर ऊदल ने कहा—"महाराज, यह तो मैं किसी प्रकार नहीं मान सकता। अगर वीरशाह मेरी बहन चन्द्रावलि को विदा न करेंगे तो मैं बौरीगढ़ लुटवा लूँगा। इस शरीर में प्राण रहें या न रहें, किन्तु मैं बहन की बिदा ज़रूर करवाऊँगा।" पृथ्वीराज ने मन ही मन कहा—"यह किसी प्रकार न मानेगा।" फिर उन्होंने सवा लाख का चीरा-कलँगी मँगाकर ऊदल को दिया और कहा—

"तुम जाकर यह बौरी में दे देना। इससे तुम्हारा काम पूरा हो जायगा और राजा वीरशाह चन्द्रावलि को बिदा कर देंगे।"

रानी अगमा को ऊदल के आने का समाचार मिला तो उसने ऊदल को अपने पास बुलवाया। राजमहल में पहुँचने पर वहाँ जितनी सखियाँ थीं वे सब ऊदल को एकटक देखने लगीं। ऊदल ने रानी अगमा के चरण छुए। फिर रानी अगमा ने ऊदल से कहा कि बौरीगढ़ का राजा बड़ा कठोर है। उसकी मार तुम नहीं झेल सकोगे। इससे तुम मेरी बात मानकर महोबे को लौट जाओ। रानी की बात सुनकर ऊदल ने कहा—"मैं जब बहन को बिदा करवा लाऊँगा तभी महोबे को वापस जाऊँगा। यदि राजा वीरशाह बहन की बिदा न करेंगे तो ऐसी मार मारूँगा जिससे उनका राज्य चौपट हो जावेगा।" ऊदल के क्रोध भरे वचन सुनकर रानी ने विचार किया कि यह दस्सराज का बेटा है। बड़ा लड़ाका और हठी है। यह मेरी बात किसी प्रकार नहीं मानेगा। इसका ऊदल नाम प्रसिद्ध है। इसलिए रानी ने सवा लाख के लहरपटोरे मँगवा-कर ऊदल को सौंप दिये और कहा—"यह तुम समधिन रानी को भेंट दे देना। इससे तुम्हारा काम सिद्ध हो जावेगा।" ऊदल रानी अगमा के चरण छूकर वहाँ से चल दिये और कई दिनों तक बराबर चलकर बौरीगढ़ के निकट पहुँच गये। जब बौरीगढ़ एक मील रह गया तब ऊदल ने वहीं पर पड़ाव डाल दिया।

ऊदल ने राजा वीरशाह को श्रीगणेश लिखकर, चिट्ठी में लिखा—"मैं चौथी करवाने के लिए महोबे से आया हूँ। मेरा नाम उदयसिंह है। मैं बहन की बिदा करवा ले जाऊँगा।" इस पत्र को ऊदल ने एक धावन के हाथ वीरशाह के पास रवाना किया। धावन पत्र लेकर बौरीगढ़ पहुँचा और जहाँ राजा वीरशाह की कचहरी लगी थी वहाँ जा और राजा को प्रणाम कर वह पत्र उनकी गद्दी पर रख दिया। राजा ने पत्र उठाया और खोलकर उसे पढ़ा। उसे पढ़ वह बहुत ख़ुश हुआ। उसने अपने पुत्र ज़ोरावर को बुलाकर पत्र का सब हाल सुनाया और कहा कि जब से विवाह हुआ था तब से महोबे का कोई समाचार नहीं मिला था। आज महोबे से एक लड़का आया है जो अपना नाम उदयसिंह बतलाता है। तुम

उसके पास जल्दी जाओ और उसे यहाँ बुला लाओ। पिता की आज्ञा सुनकर ज़ोरावर ऊदल के पास पहुँचा। इधर राजा वीरशाह ने ख़ासी तैयारियाँ कर लीं और अपने बँगलों को सजवा लिया। राजा जैसी पगड़ी बाँधे हुए थे वैसी ही मँगवाकर सबको बँधवा दीं। सब के सिरों पर एक ही रङ्ग की कलँगियाँ लगवा दीं। सब एक ही उम्र के थे और सब के साज भी एक ही से थे। ऐसी सजावट बँगला की करवाई गई कि स्वयं राजा के लिए भी उसे पहचानना कठिन था।

ज़ोरावर को देखकर एक हरकारे ने दौड़कर राजपुत्र के आने की ख़बर ऊदल को दी और समझाया कि तुम ज़ोरावर को प्रणाम करो। ऊदल को जैसे ही राजपुत्र के आने का समाचार मिला वैसे ही वे उठकर खड़े हो गये और ज़ोरावर को प्रणाम किया। जब दोनों परस्पर अभिवादन कर चुके तब ज़ोरावर ने कहा—"आपको राजा साहब ने बुलाया है। आप मेरे साथ चलें।" ऊदल बेंदुला घोड़ा सजवाकर ज़ोरावर के साथ हो लिये। कचहरी के सामने पहुँचकर वे अपने घोड़े को नचाने लगे। सब क्षत्रिय यह कौतुक देखने को बाहर आ गये और एकटक इस शोभा को देखने लगे। ऊदल के श्यामल शरीर और मृगनयनों के सामने कोई भी युवक न टिक सका और सबने अपनी आँखें नीची कर लीं।

ऊदल ने पहले बँगले की ओर देखा और फिर वहाँ उपस्थित क्षत्रियों की ओर देखा। सबकी उम्र प्रायः समान थी और सब के सिरों पर एक सी पगड़ियाँ बँधी थीं। सब के तुर्रे और निशान एक ही से थे और सबका रङ्ग भी एक ही सा था। अब ऊदल सोचने लगे कि राजा यादवराय ने मुझे धोखा दिया। किन्तु राजा के प्रताप को देखकर ऊदल ने उनको पहचान लिया और फिर प्रणाम किया। ऊदल ने राजा परमाल का पत्र तथा जो चौथी का सामान साथ ले गये थे वह राजा के सामने रख दिया। राजा ने पत्र पढ़ा और ऊदल को हृदय से लगा लिया। चौथी का सामान देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और ऊदल से कहा—"तुम लोगों ने तो बौरीगढ़ को बिलकुल ही भुला दिया और कभी हमारे देश में भूलकर भी नहीं आये। अब हम चौथी पाकर बहुत

प्रसन्न हुए। तुम अपने मन में धीरज रक्खो।" यह सुनकर ऊदल ने कहा—"महाराज! हम चौथी के मटके लाये हैं, उनको महलों के भीतर पहुँचवा दीजिए।"

राजा ने पुत्र ज़ोरावर को रनिवास में यह समाचार भेजने की आज्ञा दी। महलों में जैसे ही चौथी की ख़बर पहुँची वैसे ही सब सखियाँ बुलवाईं गईं और मङ्गल-गान होने लगे। राजा वीरशाह ने अपने नगर को सजवाया। प्रत्येक गली सजाई गई। प्रत्येक घर के द्वार पर वन्दनवार बाँधे गये और कलश रखवा दिये गये। स्थान-स्थान पर बाजे बजाये जाने लगे और राजा के द्वार पर नौबत सुनाई पड़ने लगी। गलियारों में नगाड़े बजाये जाने लगे। यहाँ तक कि नगर की इतनी शोभा बढ़ गई जिसका वर्णन करना कठिन है। अब ऊदल को रङ्गमहल से बुलौआ हुआ और वे महल की तरफ़ गये।

ऊदल बेंदुला घोड़े पर चढ़े हुए और उसे नचाते चले जाते हैं और उनके पीछे-पीछे उनका लश्कर चला जाता है। चन्द्रावली को जब ऊदल के आने की ख़बर मिली तब वह बहुत प्रसन्न हुई। ऊदल जिस गली से होकर जाते उस गली में ग़लीचों के पाँवड़े पहले ही से बिछा दिये जाते थे। ऊपर से फूलों की वर्षा होती थी और सखियाँ अबीर उड़ाती थीं। इत्र और गुलाब छिड़का जाता था। छज्जों पर ललामी छाई हुई थी। केशर के पिचक्के छोड़े जाते थे, जिससे चारों ओर गलियाँ सुगन्ध से भर गई थीं। स्त्रियाँ ऊदल के सुन्दर रूप को देखकर मोहित हुई जाती थीं और कहती थीं—"इनकी माता की कोख को धन्य है, जिससे ऐसा पुत्र पैदा हुआ है।" बौरीगढ़ की अनोखी शोभा देखकर ऊदल बहुत प्रसन्न हुए। वे धीरे-धीरे चलकर रङ्गमहल के फाटक पर पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही धूमधाम से सलामी हुई।

ऊदल ने रङ्गमहल के फाटक पर पहुँचकर घोड़ा नचाया। वीरशाह की रानी सोने का थाल लेकर बाहर आईं। उन्होंने ऊदल की भुजा पूजकर आरती उतारी। बेंदुला से उतरकर ऊदल ने महारानी के सामने जाकर उनके चरण छुए, फिर ऊदल ने लहरपटोर तथा चौथी के मटके महारानी के सामने रक्खे। जो जो सामान ऊदल ले गये थे वह सब महारानी के सामने रख दिया। सोने-

चाँदी के गहने ऊदल ने नेगियों को बुलवा कर बाँट दिये। बाक़ी गहने उन्होंने रानी को सौंपकर कहा कि जो आपके नेगी बच रहे हों, उनमें इन्हें बँटवा दीजिए। बौरीगढ़ के नेगी गहने पाकर बहुत ही प्रसन्न हुए और बड़ाई करने लगे। वे कहने लगे—"ठाकुर ऊदल, तुम युग-युग जीते रहो। ऐसा नेग तो हमने कभी नहीं पाया था।"

चन्द्रावलि तुरन्त वहाँ आ गई और ऊदल से मिलने लगी। उसने ऊदल से कुशल-प्रश्न पूछा, फिर वह महोबे के समाचार पूछने लगी। इतने में कलहप्रिय राजा माहिल बौरीगढ़ आ पहुँचा। जहाँ राजा वीरशाह का दरबार था वहाँ माहिल उतर पड़ा और राजा के पास जाकर उन्हें उसने प्रणाम किया। राजा वीरशाह ने माहिल को देखकर उसे बैठने को आदर से ऊँचा स्थान दिया और कुशल-समाचार पूछे।

माहिल ने राजा वीरशाह को उत्तर दिया कि हमसे कुछ कहा नहीं जाता। महोबे में बात बिगड़ गई और राजा चन्देले ने क्रुद्ध होकर आल्हा, ऊदल को महोबे से निकाल दिया है। इससे दोनों भाई खिसिया गये हैं और गौरी को कूच किया; किन्तु ऊदल आपके यहाँ आया है और वह चन्द्रावली की बिदा करा ले जावेगा। वह चन्द्रावलि को वहाँ ले जाकर अपनी दासी बनावेगा। इससे तुम्हारे कुल में बट्टा लग जावेगा। अब प्रार्थना यह है कि आप मेरी बात मानिए और ऊदल के साथ बिदा न कीजिए; नहीं तो सब बात बिगड़ जावेगी। ऊदल को आप जान से मार डालिए और उभे में डाल दीजिए।"

दुर्भाग्यवश राजा वीरशाह ने माहिल की बात पर विश्वास कर लिया और यह आज्ञा कर दी "ऊदल के लिए जो रसोई तैयार की जाय उसमें ज़हर मिला दिया जावे।" ऐसा ही हुआ। ऊदल के लिए रङ्गमहल से बुलौआ हुआ और ऊदल हथियार बाँधकर चलने लगे। इस पर इन्द्रसेन ने कहा—"तुम हथियार नाहक़ बाँध रहे हो। इनको खोलकर रख दो। हम क्या तुम्हारे साथ घटियाई करेंगे!" ऊदल ने उसकी बातों में आकर हथियार खोलकर रख दिये और हाथ में एक गडुआ लेकर वे चल दिये। ऊदल जब चौके में

भोजन के लिए पहुँचे तब वीरशाह के सातों पुत्र भी वहाँ पहुँचे। चन्द्रावली खिड़की में बैठी ऊदल की बाट जोह रही थी। उनको देखकर उसने इशारा किया, जिससे ऊदल सब समझ गये। उन्होंने झट इन्द्रसेन से अपना भोजन का थाल बदल लिया, जिस पर इन्द्रसेन ने कहा कि तुमने हमारा थाल क्यों बदल लिया है? उदयसिंह ने बहाना बनाकर इन्द्रसेन से कहा—"मेरे देश में यह रीति है कि बहनोई से थाल बदला जाता है।" यह सुनकर सातों बेटे अत्यन्त क्रुद्ध हुए और गड़ुये लेकर ऊदल पर टूट पड़े और मारने लगे। ऊदल ने भी झपटकर अपना गड़ुआ उठा लिया और उन सातों के गड़ुओं के वारों को अपने गड़ुये से बचाने लगे। उन चोटों को बचाकर ऊदल ने महल के अन्दर गड़बड़ी मचा दी। वीर ऊदल ने वीरशाह के सातों पुत्रों को घायल कर दिया जिससे वे सब अत्यन्त लज्जित हुए।

इस उपद्रव का वृत्तान्त सुनकर क्षत्रियों ने अपनी-अपनी तलवारें खींच लीं, परन्तु ऊदल का गड़ुआ जिसके लग जाता वह पृथ्वी पर लेट जाता था। ऊदल का शरीर वज्र के समान दृढ़ था। वह भीमसेन का अवतार है। यह दस्सराज का पुत्र बड़ा ही बहादुर है और किसी से नहीं हारता है। फिर गड़ुये से लड़ते-लड़ते ऊदल ने उसे फेंक दिया और चौके से एक पटा उठा लिया। पटा लेकर वे क्षत्रियों को मारने लगे जिसकी मार से क्षत्रियगण तितर-बितर हो गये। जब चन्द्रावली ने यह हाल देखा तब पति की तलवार उठाकर ऊदल को दे दी; किन्तु वीर वीर ही होते हैं और किसी तरह अपने में बट्टा नहीं लगने देते। ऊदल ने सोचा कि अगर मैं इस तलवार से युद्ध करूँगा तो मेरा क्षत्रियपन नष्ट हो जावेगा। इसलिए उस तलवार को फेंककर वे अकेले क्षत्रियों के बीच में घिर गये। वीरशाह के सातों पुत्रों ने ऊदल को धोखा दिया और साँकलों से बाँधकर चुङ्गल दहक में डलवा दिया और उस दहक के मुँह पर एक पत्थर रखवा दिया।

यह हाल पोहपा मालिन देख रही थी। उसने चटपट जाकर चन्द्रावली से कहा—"ऊदल महल में ज़ञ्जीरों से बँध गये हैं और चंगुल दहक में डाल

दिये गये हैं।" चन्द्रावलि ने जब ये समाचार सुने तब वह बहुत घबराई। उसने भोजन बनाकर एक थाल में परोसे। फिर एक रेशम का रस्सा लेकर वह चंगुल पर पहुँच गई। दहक पर पहुँचकर उसने शिला हटा दी और उसमें रेशम का रस्सा फाँस दिया फिर कहा—"भैया ऊदल, तुम चंगुल से बाहर निकल आओ और भोजन कर लो।"

ऊदल ने उत्तर दिया—"बहन, तुम मेरी बात मान जाओ और महोबे को यह सन्देशा भेज दो कि ऊदल दहक में पड़े हुए हैं। यदि हम तुम्हारी अर्थात् स्त्रीजाति की सहायता से बाहर निकले तो हमारी रजपूती में बट्टा लग जावेगा। मैं ऊभे के अन्दर भोजन नहीं करूँगा। तुम इसी दम महोबे को ख़बर भेज दो।"

सब बातों पर भली भाँति विचार कर चन्द्रावली ने महोबे को एक पत्र लिखा, जिसमें ऊदल का समाचार लिखकर यह भी लिखा कि तुम्हें अकेले ऊदल को भेजना उचित न था। यहाँ पर ऊदल ऊभे में पड़े हैं। सब समाचार लिखकर पत्र हीरामनि तोते के गले में बाँध दिया और उसको आज्ञा दी, 'इस पत्र को महोवे ले जाओ और इसे मेरी माता मल्हना को, जो महोवे की महारानी है, देना।' तोता उस पत्र को लेकर महोबे की ओर उड़ा। मार्ग में माहिल ने तोते को देखा और तुरन्त पहचान लिया। इससे राजा माहिल ने भी महोबे का रास्ता पकड़ा। तोता उड़ते-उड़ते नरवर-गढ़ में पहुँचा और बगिया में बैठ गया। माहिल ने तोते को बगिया में बैठा देखा और राजा नरपति के पास जाकर प्रणाम किया तथा ऊँचे स्थान पर बैठकर राजा से कहा कि बगिया में एक बहुत ही उत्तम तोता बैठा हुआ है। उसे आप तुरन्त पकड़वा लीजिए और महलों के अंदर भेज दीजिए।

राजा ने मकरंदी को बुलवाया और आज्ञा दी कि जो तोता फुलबगिया में बैठा हुआ है, उसे पकड़वाकर महलों में भिजवा दो। आज्ञा पाकर मकरंदी बँगले से निकलकर फुलबगिया की ओर चल दिया और बहेलिया को बुलवा-कर उससे तोता पकड़वा लिया तथा महलों में भेज दिया। जब सब काम पूरा हो गया तब माहिल नरवरगढ़ से चल दिया और उरई पहुँचा। इधर रानी

तोता को देखकर बहुत प्रसन्न हुईं और उसके गले की चिठ्ठी खोलकर पढ़ने लगीं। रानी को जब ऊदल का सब समाचार ज्ञात हुआ तब उन्होंने चिठ्ठी तोते के गले में बँधवा दी और उससे कहा कि तुम चटपट महोबे को जाओ; सब हाल तुरन्त रानी मल्हना से जाकर कहो, नहीं तो सब काम चौपट हो जावेंगे। रानी की आज्ञा पाकर सुआ वहाँ से उड़ा और महोबे में जा पहुँचा। रानी मल्हना इधर सतखंडे पर खड़ी ऊदल का रास्ता देख रही थीं। तोता वहाँ जाकर बैठ गया। उसको देखकर मल्हना ने कहा—"तुम पत्र कहाँ से लाये हो, वह हमको बतलाओ।" यों तोते से पूछ रानी उसकी गर्दन से पत्र को खोलकर उसे पढ़ने लगी।

पत्र पढ़ने के बाद रानी मल्हना तोते से कहने लगीं कि तुम चन्द्रावली से कह देना कि महोबे से लश्कर आ रहा है और तुम्हारी बिदा शीघ्र करवा लेगा। फिर एक पत्र लिखकर सुआ की गर्दन में बँधवा दिया। इधर तोता महोबे से उड़कर बौरीगढ़ को रवाना हुआ उधर रानी मल्हना ने रुपना बारी को बुलवाकर आज्ञा दी कि "तुम शीघ्र सिरसा जाओ और मलखे को अपने साथ ही लिवा लाओ।" आज्ञा पाकर रुपना सिरसा को चल दिया। सिरसा पहुँचकर उसने मलखे को प्रणाम किया और रानी मल्हना का सन्देश कहा। मलखे तुरन्त घोड़ी कबूतरी सजवा चार घड़ी में महोबे पहुँच गये। घोड़ी से उतरकर मलखे ने मल्हना के पास जाकर चरण छुए। मल्हना ने चन्द्रावली का भेजा हुआ पत्र मलखे को दिया। जब मलखे ने पत्र पढ़ा तब रानी से प्रण किया कि मैं बौरीगढ़ जाऊँगा और चन्द्रावली की चौथी करवा लाऊँगा।

माता मल्हना से बातें करके मलखे आल्हा के पास पहुँचे और उनको प्रणाम किया तथा सब समाचार सुनाया। आल्हा को जब ऊदल का हाल मालूम हुआ तब वे बहुत घबराये और ढेबा को बुलाकर सगुन पूछा। ढेबा ने सगुन लेकर आल्हा से कहा कि तुम जोगियों का रूप धारणकर बौरीगढ़ चलो। तुम्हारे सब काम पूरे हो जावेंगे। आल्हा ने जोगी का वेष धारण करने के लिए गुदरी मँगवा ली और मलखे को आज्ञा दी कि सब सेना तैयार कराओ।

आल्हा की आज्ञा पाकर मलखे लश्कर में पहुँचे और नगाड़ची को बुलवाकर उसे सोने के कड़े पहनाये और हुक्म दिया कि "महोबे की सब फ़ौज सजकर फ़ौरन तैयार हो जावे।" नगाड़े पर चोब पड़ते ही सब क्षत्रिय होशियार हो गये। पहला डङ्का सुनते ही क्षत्रियों ने ज़ीनबन्दी की और दूसरी आवाज़ सुनते ही हथियार बाँध लिये तथा तीसरा डङ्का बजते ही सब क्षत्रिय अपनी-अपनी सवारियों पर सवार हो गये। पचशावद हाथी को सजवाकर आल्हा सवार हुए। वीर मलखान घोड़ी कबूतरी पर बैठे। हरनागर घोड़े पर ब्रह्मा और मनुरथा घोड़े पर ढेवा सवार हुआ। अष्टधातु की बनी हुई जो बड़ी बड़ी तोपें थीं वे आगे को बढ़वा दी गईं। जब मारू बाजा बजने लगा, जैसा कि युद्ध के समय बजाया जाता था और जो वीरों को उत्साहित करता था, तब महोबे से लश्कर ने कूच कर दिया और पाँच दिन में सब लश्कर दिल्ली पहुँच गया। सब फ़ौज बग़ीचे में ठहर गई। अब मलखे अपनी घोड़ी पर सवार होकर पृथ्वीराज के दरबार में पहुँचे। मलखे घोड़ी से उतर पड़े और थनवार* ने घोड़ा थाम लिया। वीर मलखान ने राजा पृथ्वीराज के सामने जा प्रणाम किया। राजा ने मलखे को देखकर उनसे बैठने को कहा और समाचार पूछे। वीर मलखान के लिए एक ऊँची चौकी पड़ गई। उस पर बैठकर वे पृथ्वीराज से कहने लगे—"ऊदल बिदा करवाने बौरीगढ़ गया था। वहाँ पर वीरशाह ने उसके साथ घटी की और उसको ऊभे में डलवा दिया दिया है। आपकी आज्ञा हो तो मैं जाकर बौरीगढ़ को धूल में मिला दूँ। आप मुझे सहायता दीजिए। मैं अभी यहाँ से कूच करना चाहता हूँ।"

पृथ्वीराज ने जब यह सुना तब उन्होंने सूरज को बुलाकर आज्ञा दी—"बेटा! तुम शीघ्र फ़ौज सजाकर मलखे के साथ बौरीगढ़ जाओ।" चौंड़ा ब्राह्मण को बुलवाकर कहा कि "तुम मलखे के साथ जाओ और वीरशाह को समझा देना कि शीघ्र आल्हा के साथ बिदा कर दें, नहीं सब काम बिगड़ जावेंगे।" राजा की आज्ञा पाकर चौंड़ा सूरज को साथ लेकर चल दिया। चौंड़ा इकदंता हाथी पर

---

* साईस।

और सूरज सब्जे घोड़े पर चढ़े। फ़ौज को सजाकर दोनों लश्कर साथ-साथ बौरीगढ़ को चल दिये। सात दिन लगातार चलकर वे सब बौरीगढ़ की सरहद में पहुँच गये। बौरीगढ़ जब तीन कोस रह गया तब मलखे ने वहाँ पर डेरा डाल दिया। सभी सैनिकों ने अपने कपड़े उतार दिये और हाथियों के हौदे भी खोल दिये गये। घोड़ों की ज़ीनें उतारी गईं और क्षत्रिय लोग रसोइयाँ बनाने लगे। भोजन करके सब ने विश्राम किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल वीर मलखे सोकर उठे और आल्हा से कहने लगे "दादा, अब गुदड़ी मँगवा लीजिए तथा जोगियों के भेष में चलिए और ऊदल को छुड़ा लीजिए।" मलखे के कहने से आल्हा ने चारों गुदड़ियाँ मँगवा लीं और चारों ने उनको पहनकर अपने-अपने बाजे उठा लिये। ब्रह्मानंद ने बाँसुरी ली, वीर मलखे ने डमरू, आल्हा ने एकतारा और ढेवा ने खंजरी उठा ली। चारों जोगी पैदल ही बौरीगढ़ की ओर चल दिये। जैसे ही ये जोगी नगर के फाटक पर पहुँचे वैसे ही दरबानी ने रोका और पूछा—"महाराज! आप कहाँ से आ रहे हैं और कहाँ को जावेंगे?" मलखे ने दरबानी से कहा—"फाटक जल्दी खुलवाओ। हम बंगाल के रहनेवाले हैं और हिंगलाज को जावेंगे। बौरीगढ़ में जाकर भिक्षा माँगेंगे तथा महल में आवाज़ लगावेंगे।" दरबानी ने जोगियों की बातें सुनकर तुरन्त फाटक खोल दिया। चारों जोगी बाजे बजाते हुए आगे बढ़ने लगे। वे मार्ग में गाना गाने लगे जिसको सुनकर प्रजा मोहित होने लगी। सब प्रजा कहती कि जोगी बड़े रूपवान् हैं, बड़े तेजस्वी हैं और किसी शुभ घड़ी में पैदा हुए हैं। इन पर मोहित होकर किसी ने शाल-दुशाले दिये, किसी ने मोहनमाला दी। चलते-चलते जोगी महल के दरवाज़े पर पहुँचे और वहाँ अलख जगाने लगे।

जोगियों को देखकर केसरि बाँदी उन पर लट्टू हो गई। वह महारानी के पास जा हाथ जोड़कर बोली—"चार जोगी ऐसे सुन्दर आये हैं कि उनका वर्णन करना कठिन है। वे बहुत ही अच्छा गाते हैं और बहुत ही अच्छा बजाते हैं। महारानी, आप भी उनको चलकर देख लीजिए।" रानी ने बाँदियों को

आज्ञा दी कि शीघ्र जोगियों को यहाँ बुला लाओ। केसरि बाँदी वापस आई और जोगियों से बोली कि आपको महारानी ने याद किया है। आप महल में चलकर कीर्तन कीजिए। चारों जोगी रंगमहल की ओर चल दिये और ड्योढ़ी पर पहुँचे। दरवाज़े पर रानी ने जोगियों के रूप को देखा और सब सखियाँ, जो रानी के साथ थीं, जोगियों के रूप पर मोहित सी हो गईं। अब महारानी ने जोगियों से कहा—"महाराज, आप अब कीर्त्तन सुनाइए।" यह सुनकर ब्रह्मा बाँसुरी, ढेवा खंजरी, आल्हा एकतारा और वीर मलखान डमरू बजाने लगे। वे राग-रागिनी अलापने और फिर मलार गाने लगे। महारानी जोगियों पर मोहित होकर बोली—"आप यहीं रहिए, आपकी यहाँ नित्य मनभावती सेवा होगी।" मलखे ने कहा—"रानी तुम्हारी बुद्धि कहाँ है? कहीं कोई बहते हुए पानी और रमते हुए जोगी को बिलमा सकता है। आज हम इस समय इस स्थान पर अलख जगाते हैं तो कल इस समय किसी मार्ग पर चलते होंगे।"

चन्द्रावली को जब इन जोगियों के आने का समाचार मिला तब उसने बाँदी से कहा—"हमारी माता से यह विनय करना कि जोगियों को यहाँ पहुँचा दें। मैं भी आज उनका कीर्तन सुनकर अपने जीवन को सार्थक करूँगी।" चन्द्रावली की आज्ञा पाकर बाँदी वहाँ से जोगियों को बुलाने के लिए महारानी के पास पहुँची और हाथ जोड़कर रानी से विनय की—"बहूजी भी कीर्तन सुनना चाहती हैं। वे जोगियों को बुला रही हैं।" बाँदी की प्रार्थना पर रानी ने जोगियों से निवेदन किया—"आप लोग बाँदी के साथ चले जाइए जिससे मेरी बहू भी कीर्तन सुन अपने को कृतार्थ कर ले।" जोगी तो यह चाहते ही थे। वे तुरन्त बाँदी के साथ हो लिये और चन्द्रावली के पास पहुँचे। जोगियों को देखते ही चन्द्रावली ने उनसे कहा—"आप ऐसे स्वरूपवान् हैं कि आप जोगी से तो प्रतीत नहीं होते। मुझे तो आप राजपुत्र मालूम पड़ते हैं। आप कैसे जोगी हैं, इसका सत्य सत्य हाल मुझे बतला दीजिए।" मलखे ने शीघ्र उत्तर दिया—"चन्द्रावली! हम सबको ब्रह्मा ने रूपवान् बनाया है और हम सुखपूर्वक रात-दिन भजन करते हैं। हम सब ने कन्नौज में कीर्तन किया था,

जिससे राजा जयचन्द प्रसन्न हो गये और हमको गुदरी बनवाकर पहनाई, फिर वहाँ से चलकर हम सब महोबे पहुँचे। वहाँ राजा परमाल राज्य करते हैं। महोबे में भी हमने कीर्त्तन किया और रानी मल्हना ने प्रसन्न होकर सबको सोने के कड़े पहनाये।" यह सुनकर चन्द्रावली ने कहा—"मल्हना मेरी माता हैं और महाराज आप विश्वास करें, ब्रह्मा मेरा भाई है और अब जब आप महोबे जावें तब मेरे कुशल-समाचार वहाँ कह दें। ऊदल यहाँ मेरी बिदा करवाने के लिए आये थे। उनको यहाँ ऊभे में डलवा दिया गया है। उनको छुड़ाने के लिए आल्हा और साथ में वीर मलखान भी आवें। ब्रह्मा भैया भी साथ-साथ आवें और ऊदल को ऊभे से निकलवा लें।"

अब मलखे ने चन्द्रावली से कहा—"बहन! ब्रह्मा तुम्हारे सामने खड़े हैं और सामने ही ढेवा हैं और मैं ही मलखान हूँ। ऊदल किस ऊभे में पड़े हैं यह हमें बतला दो।" चन्द्रावली ने मलखे को बतलाया—"ऐ प्यारे भैया! महल के पीछे की ओर एक ख़ंदक़ है, उसी में उदयसिंह पड़े हैं।" चारों जोगी वहाँ से चल दिये और ख़ंदक़ पर पहुँचे। उस ऊभे को अच्छी तरह देखकर जोगी अपने लश्कर में पहुँच गये।

अगले दिनःही से उस ऊभे तक एक सुरङ्ग खुदवाना प्रारम्भ कर दिया गया। जब सुरङ्ग खुदते-खुदते ऊदल तक पहुँच गई तब वहाँ से ऊदल को शीघ्र ही निकाल लिया गया। ऊदल लश्कर में पहुँचे और आल्हा को मस्तक झुकाकर प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़कर मलखे, ढेवा और ब्रह्मा को प्रणाम किया। लश्कर में अब :शीघ्र ही सलामी दागी गई और नाच-रङ्ग होने लगा। फिर मलखे ने आल्हा से कहा—"दादा! अब आप शीघ्र तैयार हो जाइए।" आल्हा ने आज्ञा दी—"सेना में अब डङ्का बजा दिया जावे और शीघ्र ही सब लश्कर तैयार हो जावे।" जैसे ही लश्कर में डङ्का बजा, सब योद्धा तैयारी करने लगे। पहला डङ्का ज्योंही बजा त्योंही वीरों ने ज़ीनबन्दी की और दूसरा डङ्का बजते ही हथियार बाँध लिये। तीसरा डङ्का जैसे ही बजा वैसे ही योद्धा अपनी सवारियों पर उछलकर सवार हो गये। मारू डङ्का जब बजाया गया तब लश्कर

ने कूच कर दिया। आल्हा हाथी पचशावद पर सवार थे। अष्टधातु की बड़ी बड़ी तोपें आगे कर दी गईं। महोबे की सेना चार घड़ी में बौरीगढ़ पहुँच गई और चारों ओर से बौरीगढ़ को घेर लिया। वीरशाह को भी पता चल गया कि बनाफर राय सेना लेकर आ गये हैं।

महोबे की फ़ौज के आने का समाचार सुनते ही राजा वीरशाह ने अपने सातों बेटे बुलवा लिये और आज्ञा दी कि शीघ्र आकर बतलाओ कि कौन सा वीर चढ़कर आया है और उसको तुरन्त गिरफ़्तार करवा लो। सब फ़ौज लड़ने को तैयार हो जावे। आज्ञा पाकर सातों राजकुमार वहाँ से चल दिये और लश्कर में पहुँचे और आज्ञा दी कि शीघ्र ही सेना सजकर तैयार हो जावे। बौरीगढ़ में जैसे ही नगाड़े पर चोट पड़ी कि सब क्षत्रिय लड़ने को तैयार हो गये। बौरीगढ़ की सेना सजकर आगे बढ़ने लगी और जुझाऊ बाजा बजने लगा। धीरे धीरे सेना युद्धक्षेत्र में पहुँच गई। थोड़े से क्षत्रियों तथा ज़ोरावर को साथ लेकर सूरज आगे को बढ़ने लगे। युद्धक्षेत्र में जाकर उन्होंने चिल्लाकर आवाज़ दी—"वह कौन वीर है जो चढ़कर यहाँ युद्ध करने आया है? वह आगे आकर हमारे प्रश्न का उत्तर दे।"

वीर कभी बात सहन नहीं कर सकते। सूरज की बात से मलखे का रक्त खौलने लगा। आगे बढ़कर उसने उत्तर दिया—"हम महोबे से चढ़कर आये हैं। मेरा नाम वीर मलखान है। ऊदल विदा करवाने के लिए आये थे और यह तुम्हारी सभ्यता है कि तुमने उनको क़ैद करवा लिया। यद्यपि रिश्ते में तुम हमारे बहनोई हो तो भी तुमने हमारे साथ घटियाई की। अब हम तुमको समझाते हैं कि ऊदल को छोड़ दो और चन्द्रावली को विदा कर दो। इसी में भलाई है। वृथा झगड़ा मत बढ़ाओ। हमारा कहना मानो, नहीं तो अनर्थ हो जायगा और हाथ कुछ न लगेगा।"

यह सुनकर सूरज ने मलखे को उत्तर दिया—"तुम लाखों तदबीरें क्यों न करो, मगर हम तुम्हारे साथ किसी तरह विदा न करेंगे।" इस रूखे उत्तर का मलखे के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसे एकदम जोश आ गया और वह

क्रोध से तड़पकर सूरज पर आ धमका और कहा—"अगर तू बहन की विदा न करेगा तो तुझ पर इतनी मार पड़ेगी कि छठी का दूध याद पड़ेगा। साथ ही राज्य भी चौपट हो जायगा। सारा संसार हम लोगों को अच्छी तरह जानता है। हम तेरे बौरीगढ़ को लुटवा लेंगे।" सूरज ने नाराज़ होकर अपनी सेना को आज्ञा दी—"फ़ौरन तोपें दागो और इन पाजियों को यहाँ से भगा दो।" तोपची तो तैयार ही बैठे थे। उन लोगों ने तुरन्त उठकर तोपों में बत्ती लगा दी। दोनों ओर से तोपें दागी जाने लगीं और आसमान तक धुआँ फैल गया। अररर धम की आवाज़ के साथ गोले गिरने लगे। बन्दूकों की गोलियाँ सन सन करती हुई चलने लगीं। उस समय की वीरों की दशा का वर्णन करना कठिन है। उनको तो मार-मार की रट लगी हुई थी। तीन घड़ी तक इसी प्रकार लड़ाई होती रही। फिर सबने तलवारें खींच लीं। तेग खट-खट शब्द करने लगे। तलवारों की झुपक-झुपक सुन पड़ने लगी। युद्ध में जुनब्बी तथा गुजराती तेगे चल रहे थे और नानाशाही कटारें चलाई जा रही थीं। बर्दवान के तेगे चल रहे थे तथा विलायती जल्ला हथियार चल रहा था।

युद्ध उग्र रूप धारण कर रहा था। पैदल पैदल के साथ और घुड़सवार घुड़सवार से भिड़े हुए थे। इस प्रकार वहाँ पर घोर युद्ध हुआ। इतने अच्छे-अच्छे सुन्दर युवा वीर काम आये। हाथियों के हौदों से हौदे सटे हुए थे और हाथियों के दाँत परस्पर भिड़े हुए थे। घमासान युद्ध होने लगा। दोनों सेनाएँ मार-मारकर चिल्ला रही थीं। महोबे के सिपाहियों ने अपने जीवन की आशा छोड़कर आगे बढ़ना प्रारम्भ कर दिया और ऐसी पैनी मार मारी कि बौरीगढ़ के सिपाही घबराकर पीछे भागने लगे। महोबे के योद्धा युद्ध में अचपलता दिखला रहे थे और दनादन चोटें कर रहे थे। अन्त में बौरीगढ़वाले मोर्चा छोड़कर भाग गये।

बौरीगढ़ के सिपाही जब युद्ध से हार मानकर भागने लगे तब सूरज ने अपना घोड़ा आगे बढ़ा दिया और मलखे के निकट जाकर उसे ललकारा और कहा—"तुम अब भी मेरा कहना मानो और महोबे सकुशल लौट जाओ।" मलखे

ने उत्तर दिया—"तू बहनोई होता है इससे फिर तुझे समझाता हूँ कि तुरन्त ऊदल को क़ैद से छोड़ दे और बहन को बिदा कर दे। यदि तू हमारी इतनी बात मानने के लिए तैयार हो तो हम महोबे लौट जावेंगे।" मलखे के ये वचन सूरज को बाण के समान लगे। उसने क्रुद्ध होकर झट अपनी साँग उठा ली और मलखे पर धमक दी, किन्तु मलखे तो बहुत ही चतुर था। झट पैतरा काटकर इस वार को बचा गया। अब सूरज ने सिरोही खींच ली और मलखे पर वार किया। इस वार को भी मलखे बचा गया। उसने सूरज से कहा—"तुम्हारा काल अब निकट आ गया है। तुम अब घोड़े पर होशियारी से बैठना।" मलखे म्यान से सिरोही खींचकर चलाने ही वाले थे कि इतने में आल्हा ने अपना हाथी आगे बढ़ा दिया और कहा—"इनको गिरफ़्तार कर लो, मगर इन पर वार न करना नहीं तो सब काम बिगड़ जावेंगे।" इसलिए मलखे ने ढाल की झोंक से सूरज को गिरा दिया और दोनों भुजाएँ कसकर ज़ंजीरों से बाँध दीं। सूरज क़ैद कर लिया गया।

ज़ोरावर ने जब सूरज का यह हाल देखा तब उसने अपना घोड़ा आगे बढ़ा मलखे को एक डाँट बतलाई और अपनी तलवार खींच ली। ज़ोरावर ने कसकर मलखे पर तलवार चला दी, किन्तु मलखे युद्धविद्या में निपुण था। उसने झट अपनी घोड़ी आगे बढ़ा दी और ढाल मारकर ज़ोरावर को भी बँधवा लिया।

जब दोनों पुत्र बाँधे गये तब हरकारा दौड़ता हुआ वीरशाह के निकट पहुँचा और सूचना दी कि महाराज दोनों पुत्र गिरफ़्तार हो गये हैं और आपकी कुल सेना तितर-बितर हो गई है। राजा को जब यह समाचार मिला तब उसने शीघ्र अपने पुत्र इन्द्रसेन को बुलाया और आज्ञा दी कि तुम अपनी सेना सजाकर युद्धक्षेत्र में जाओ और महोबेवालों को भगा दो। राजा की आज्ञा पाते ही इन्द्रसेन ने अपने सब भाइयों को बुला लिया और अपने लश्कर में घोषणा कर दी कि शीघ्र सब सेना तैयार हो जावे। आज्ञा पाते ही सब सेना तैयार हो गई। अब ज्योंही मारू बाजा बजा त्यों ही यादव-सेना आगे बढ़ गई और चार घड़ी ही में युद्धभूमि में जा पहुँची।

युद्धक्षेत्र में पहुँच इन्द्रसेन ने करारी ललकार दी और तड़पकर कहा—"कौन सा क्षत्रिय ऐसा पैदा हो गया है, जिसने चढ़ाई की है? वह सामने आकर उत्तर दे। मेरे भाइयों को किसने बाँधा है? इतना ऊँचा हौसला किसका हो गया है? किसने इतनी ढिठाई की है?" ये बातें मलखे को बुरी लगीं। वह घोड़ी बढ़ाकर आगे गया और उत्तर देते हुए बोला—"आप मेरे बहनोई हैं इसलिए मैं आपका आदर करता हूँ। सावन के त्योहारों को मनाने के लिए हर एक घर की लड़कियाँ अपने-अपने मायके जाती हैं। ऊदल भी इसी लिए बहन की विदा करवाने आये थे, मगर आपने उनको क़ैद कर लिया। यह बड़े दुःख की बात है। अब प्रार्थना यही है कि आप ऊदल को छोड़ दीजिए और बहन को विदा कर दीजिए। फिर हम महोबे लौट जावेंगे और सारा झगड़ा शान्त हो जावेगा।"

इन्द्रसेन ने कहा—आप लाखों मूँड़ क्यों न मारें मगर आपके साथ विदा किसी तरह न होगी।" यह सुन मलखे जल-भुनकर ख़ाक हो गये और उन्हें क्रोध आ गया। वे बोले—"हम सबके प्राण हो क्यों न चले जावें, लेकिन बिना विदा कराये हम किसी प्रकार वापस नहीं जा सकते। मेरा नाम वीर मलखान है जिसको आप भी अच्छी तरह जानते हैं। हम लोग पीछे पैर रखनेवाले नहीं हैं। आप और किसी के भरोसे न रहें। मैं बौरीगढ़ को धूल में मिला दूँगा और राजमहल में आग लगा दूँगा। आप बहन को विदा न करेंगे तो आपके राज्य को चौपट कर दूँगा।"

ऐसे अपमानजनक शब्द सुनकर इन्द्रसेन कैसे चुप रह सकता था। उसने क्रुद्ध होकर आज्ञा दी—"शीघ्र तोपों में बत्ती लगा दो और इन पाजियों को मार-कर खदेड़ दो।" तोपची राह देख ही रहे थे। आज्ञा सुनकर झट आग लगा दी और तोपों का धुआँ आसमान तक छा गया। दोनों ओर से तोपों में बत्तियाँ छुला दी गईं और आकाश में धुएँ के काले-काले बादल-से मँडराने लगे। अँधेरी रात सी दीखने लगी। तोपों के गोले अररर करते धड़ाम-धड़ाम छूटने लगे और तीर चलने के सननन शब्द सुनाई देने लगे। चार घड़ी तक निछूछे

गोलों और तोपों की अँधाधुन्ध मार होती रही। तोपें चलते-चलते अब लाल पड़ गई थीं और इतनी गर्म हो गई थीं कि अच्छा गबरू उनको छू तक नहीं सकता था। जब यह हालत हो गई तो तोपों की लड़ाई बन्द कर दी गई। अब दोनों ओर के सिपाही उत्साह में भर आगे बढ़ने लगे। बढ़ते-बढ़ते दोनों सेनाओं के बीच में केवल तीन पग का अन्तर रह गया। क्षत्रियों ने फिर सिरोही खींच ली और खटखट का शब्द करते हुए तलवारें चलने लगीं। बूँदी की कटारी और विलायत का ऊना खटकने लगा। बर्दवान के तेगों से युद्ध होने लगा। बहुत से सुन्दर क्षत्रिय कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे। सिरोही की बड़ी बेंड़ी मार थी। यह चार घड़ी तक लगातार होती रही, जिससे रक्त की नदी बहने लगी। अब महोबे के सिपाही मार-मार काट-काट चिल्लाते हुए आगे बढ़े। महोबे के सिपाही बड़े वीर योद्धा थे। उनकी मार बौरीगढ़ के सिपाही सहन न कर सके और वे सब हथियार छोड़-छोड़कर भाग गये। उधर ऊदल अपना बेंदुला घोड़ा दबाये हुए चले आये और सामनेवाले झुंड पर टूट पड़े। जब मोहन ने अपने सिपाहियों को पीठ दिखाते देखा तब क्रुद्ध होकर अपना घोड़ा आगे बढ़ा दिया। मोहन सीधा ऊदल के सामने जा डटा और करारी ललकार दी। उसने कहा—"ऊदल, तुम घोड़े पर सावधानी से बैठना, क्योंकि अब तुम्हारा काल निकट आ गया है।" वह इतना ही कह पाया और तुरन्त तलवार खींचकर ऊदल पर झपटा। ऊदल ने ढाल अड़ा ली और वार बचा गया। मोहन ने तीन सिरोही लगातार खींच-खींचकर मारीं, परन्तु ऊदल का बाल भी बाँका न हुआ। फिर ऊदल ने मोहन पर भाले से आक्रमण किया जो घोड़े के लगा। भाला लगते ही घोड़ा पृथ्वी पर गिर पड़ा और ऊदल ने शीघ्र ही मोहन को गिरफ़ार करवा लिया।

ऊदल ने जब मोहन को बँधवा लिया तब जगमनि से न रहा गया। भाई की दुर्दशा देखकर उसका रक्त खौल उठा, इसलिए उसने झट तलवार खींच ली। इतने में ढेवा सामने आ गया। उसने कहा—"जगमनि! तुम घोड़े पर साव-धानी से बैठना।" जगमनि ने ढेवा पर वार किया, परन्तु ढेवा उसको बचा

गया। अब ढेवा ने ढाल की चोट मारकर जगमनि को गिरा दिया और शीघ्र बँधवाकर अपने लश्कर में भेज दिया। उधर उदयसिंह ने मोती और पूरन दोनों भाइयों को क़ैद कर लिया। इन्द्रसेन ने जब देखा कि मेरे सब भाई बँध गये हैं, तब उसके होश उड़ गये। उसने अपने पक्ष के क्षत्रियों से कहा—"भाइयो! हमारे धर्म की लाज रखना! तुम सबकी गिनती नौकर-चाकरों में नहीं है। तुम हमारे भाई होते हो। यदि राजपूती की धाक बनाये रखना चाहते हो तो महोवे के लश्कर को परास्त कर दो।" इन्द्रसेन ने इस प्रकार अपने योद्धाओं को बढ़ावा देकर आगे बढ़ाया। अब वौरीगढ़ के सिपाही दोनों हाथों में तलवारें लेकर युद्ध करने लगे। ज्योंही मलखे ने यह देखा त्योंही अपनी घोड़ी आगे बढ़ा दी। जिस स्थान पर चौंड़ा ब्राह्मण खड़े थे वहीं पर वीर मलखान पहुँच गये और चौंड़ा से कहने लगे—"चौंड़ा, इन सबको बँधवा लो। देखो कोई भी भागकर न जाने पावे।" चौंड़ा अपने हाथी को आगे बढ़ाकर सामने के गोल में धँस गया फिर अपने इकदंता हाथी को साँकल थमा दी। युद्धभूमि में अब चौंड़ा का हाथी बिगड़ गया और सैनिकों को गिराने लगा। इस मार को वौरीगढ़वाले सिपाही न सहन कर सके और इधर-उधर भागने लगे। इन्द्रसेन यह दशा देखकर बहुत नाराज़ हुआ। वह अपना सुर्खा नामक घोड़ा आगे बढ़ाता हुआ चला आया और मलखे के मोर्चे पर पहुँच गया। उसने मलखे के निकट जाकर ललकार दी कि अब तुम साव-धान हो जाओ; काल तुम्हारी बाट देख रहा है। इतना कहकर उसने मलखे के ऊपर अपना गुर्ज छोड़ दिया। मलखे गुर्ज की चोट बचा गये। अब मलखे ने भाला मारा जो घोड़े को लगा। घोड़ा गिर पड़ा। अब इन्द्रसेन पैदल रह गया और मलखे ने उसे भी बँधवा लिया। इस प्रकार राजा वीरशाह के सातों पुत्र युद्धक्षेत्र में परास्त हुए और गिरफ़्तार हो गये।

वीरशाह के सातों पुत्र जब गिरफ़्तार हो गये तब एक हरकारा वहाँ से दौड़ता हुआ वीरशाह के पास पहुँचा और बोला—"आपके सातों बेटे क़ैद हो गये हैं।" इस ख़बर को सुनते ही वीरशाह के पैरों के नीचे की ज़मीन

खिसकने लगी और वे भौंचक्के से रह गये। अब उन्होंने डंकावाले को बुलाकर आज्ञा दी—"नगाड़ा बजवा दिया जाय और सब सेना सजकर तैयार हो जावे।" जैसे ही डंका बजाया गया, सब क्षत्रिय सजने लगे। पहले डंके के बजते ही सब सैनिकों ने ज़ीनबन्दी की और दूसरे डंके पर हथियार बाँध लिये। ज्योंही तीसरा डंका बजा, त्योंही वे कूदकर सवार हो गये। अपने लिए राजा ने भूरा हाथी सजवाया। अब शीघ्र ही राजा वीरशाह हाथी पर सवार हो गये और फ़ौज को आगे बढ़ने की आज्ञा दी। एक पहर के पश्चात् सेना युद्ध-भूमि में पहुँच गई। राजा ने स्वयं मोर्चेबन्दी करवा दी और अपने हाथी को आगे बढ़ा दिया। राजा वीरशाह जब निकट पहुँच गया तब ललकार कहा—"मेरे पुत्रों को किस वीर ने गिरफ़्तार किया है, वह सामने आकर उत्तर दे।" मलखे ने अपनी घोड़ी आगे बढ़ा दी और प्रणाम करके उत्तर दिया—"यादव-राय! हम सब आपका बड़प्पन मानते हैं, किन्तु आप व्यर्थ झगड़ा बढ़ाते हैं। ऊदल बहन को विदा कराने आये थे। आपने उनको कूभे में डाल दिया। आपने हम लोगों के साथ जैसा व्यवहार किया वह आपको शोभा नहीं देता। अब भी आपकी कुछ हानि नहीं हुई है। उचित यही है कि आप बहन की विदा कर दीजिए, ऊदल को छोड़ दीजिए। फिर शीघ्र ही सारा झगड़ा अपने आप शान्त हो जावेगा।" वीरशाह ने कहा—"तुम मेरी बात मानकर सातों पुत्रों को छोड़ दो और महोबे को जाओ।" मलखे आगबबूला हो गये और बोले—"महाराज! यदि आप बहन की विदा न करेंगे तो बौरीगढ़ को धूल में मिला दूँगा। हम सब के प्राण-पखेरू ही क्यों न उड़ जावें, मगर बहन को विदा करवाये बिना हम लोग महोबे को वापस नहीं जा सकते।" इतने में चौंड़ा ब्राहाण आगे बढ़ गया और राजा से इस प्रकार बातचीत करने लगा—"महाराज! पृथ्वीराज ने यह सन्देशा कहा है कि आप विदा शीघ्र करवा दें। यदि आप मेरी बात न मानेंगे तो सब काम बिगड़ जायँगे और हाथ कुछ न लगेगा।"

राजा ने चौंड़ा से कहा—"ब्राह्मण देवता! लाखों उपाय क्यों न करो, मगर हम आल्हा के साथ विदा किसी प्रकार न करेंगे।" चौंड़ा ने ललकारकर

कहा—"पृथ्वीराज चौहान की यह आज्ञा है कि यदि वीरशाह मेरी बात न मानें तो वीरगढ़ को नष्ट कर देना।" ज्योंही वीरशाह ने ये कठोर शब्द सुने, त्योंही उनके शरीर में आग सी लग गई। उन्होंने आज्ञा दी कि शीघ्र तोपों में बत्ती लगा दी जावे। तोपची, जो सदैव आज्ञा की बाट देखते रहते थे, उठ खड़े हुए और तोपों में बत्ती लगा दी। तोपों में बत्ती लगते ही चारों ओर अँधेरा छा गया और धुआँ आसमान तक फैल गया। दोनों फौजों में हाहाकार मच पड़ने लगा। चारों ओर अररर करके गोले छूटने लगे।

जिस हाथी के गोला लगता, उसमें इस प्रकार छेदकर दरार कर देता मानों चोर ने सेंध लगाई हो। जिस ऊँट के गोले लगते वह चक्कर खाकर धड़ाम से गिर पड़ता। जिस घोड़े के गोला लगता, वह चारों पैरों से खड़ा नहीं हो सकता और धूल में लोटने लगता। जिस क्षत्रिय के गोला लगता वही फटे कपड़े के समान उड़ जाता। जिस किसी के बम का गोला लगता उसी का हाड़-मांस शरीर से निकल जाता। जिस किसी के गोला छर्रा लगता है उसके शरीर के दो टुकड़े हो जाते हैं। इस प्रकार चार घड़ी तक गोले चलते रहे और अँधाधुन्ध तोपों की मार होती रही। चलते-चलते तोपें लाल-लाल हो गईं, जिनकी गरमाहट से उन पर हाथ नहीं रक्खा जाता था। अब तोपों की लड़ाई बन्द हो गई और लम्बे हथियार बन्द हो गये।

दोनों ओर की फ़ौजें आगे बढ़ने लगीं और बढ़ते-बढ़ते भिड़ गईं। अब क्षत्रियों ने अपनी-अपनी सिरोही खींच लीं और तलवारें खटाखट चलने लगीं। वहाँ पर गुप्ती और गुजराती तलवारों की मार हो रही थी। कत्ता भी विलायत का चल रहा था। बर्दवान के तेगा मार-मार मचाये थे जिनसे सुघड़ युवा कट-कटकर गिर रहे थे। चारों ओर हवा बन्द थी। वैरी मिले हुए थे। वहाँ पर बिना जाने हुए अँधाधुन्ध तलवारें चल रही थीं। युद्ध में घायल मनुष्य पड़े हुए थे जो प्यास-प्यास ही की ध्वनि लगा रहे थे। युद्ध और भी उग्र हो रहा था। यहाँ तक कि पैदल-पैदल से और सवार सवारों से भिड़ गये। हौदा जाकर हौदों से मिल गये। बढ़ते-बढ़ते हाथियों के दाँतों

से दाँत मिल गये। युद्धक्षेत्र में हाहाकार शब्द सुनाई पड़ रहा था। वीरों के शरीर से निकली चर्बी इतनी इकट्ठी हो गई थी मानों टाल सी लगी हो तथा ऐसी हो गई थी मानों कीचड़ के चहला उठ रहे हों। चारों ओर रक्त की धारा बह रही थी।

उस समय वीरों की लुटी हुई ढालें उस रक्त में ऐसी जान पड़ती थीं मानों नदी में गीदड़ पड़े हैं। इधर महोबे के सिपाही दोनों हाथों में तलवारें लिये युद्ध कर रहे थे। एक ओर से ऊदल और एक ओर से मलखान युद्ध कर रहे थे। एक तरफ़ ढेवा बढ़ा हुआ था जो केवल मार-मार पर ही उतारू था। इनकी विकट मार बौरीगढ़ के सिपाही सहन न कर सके और प्राण लेकर भागने लगे और जो योद्धा युद्ध को सदैव तैयार रहते थे वे भी हट गये। कायर सिपाही तितर-बितर हो गये। जो गाँजा पीनेवाले थे उनके नशे उतर गये और वे भी भाग खड़े हुए। इधर अफ़ीमची युद्ध में पिले हुए थे। उनके पैर उठाये नहीं उठते थे। वे अपनी आँखों की पलकों को खोलते थे और फिर बन्द कर लेते थे। युद्ध में जो वीर लम्बी धोती पहननेवाले थे उन सबने नाले का रास्ता पकड़ लिया और उठकर भागने लगे। जब राजा ने अपनी सेना की यह दशा देखी तब वे घबरा गये। उन्होंने क्रुद्ध होकर अपना हाथी आगे बढ़ा दिया। जिस स्थान पर मलखे का मोर्चा था वहाँ राजा पहुँच गये। जाकर डाँट दी कि अब तुम सावधान हो जाओ। यह कह उन्होंने अपना भाला उठाकर मलखे को मार दिया। रणकुशल वीर मलखान चोट बचा गया। उधर मलखे आगे बढ़कर आल्हा के निकट पहुँचे और उनसे प्रार्थना की—"महाराज! ये आपकी जोड़ के हैं, आप इन्हें बाँध लीजिए।"

आल्हा ने शीघ्र अपना हाथी आगे बढ़ा दिया और राजा वीरशाह के निकट पहुँचकर उनको प्रणाम किया। राजा से आल्हा ने प्रार्थना की—"महाराज! आप मेरा कहना मानकर चौथी की बिदा करवा दीजिए और व्यर्थ में बखेड़ा न बढ़ाइए।" वीरशाह ने उत्तर दिया—"बनाफर राय! तुम माड़ौ की याद भूल जाना जहाँ पर बाप का वैर चुका लिया था। इसका नाम बौरीगढ़ है, इतनी बेड़ी

मार पड़ेगी कि भागते-भागते महोबे तक नहीं बच सकोगे। इससे मेरी बात मानकर महोबे को लौट जाओ।"

यह सुन आल्हा मारे क्रोध के आपे में न रहे। उनकी भुजाएँ फड़कने लगीं। वे तड़पकर बोले—"हम पीछे पैर नहीं रख सकते। युद्ध में पीठ दिखाना क्षत्रियों का धर्म नहीं है, युद्ध में मर जाना अथवा विजय प्राप्त करना ही वीरों के लिए ठीक है। हम बहन की बिदा करवावेंगे, चाहे प्राण ही क्यों न चले जावें। वीरशाह ने अपना भाला उठा लिया और आल्हा पर चला दिया। आल्हा तो रण-विद्या में दक्ष थे। उन्होंने तुरन्त अपना हाथी आगे बढ़ा दिया और चोट ख़ाली चली गई। इस पर वीरशाह ने फिर गुर्ज उठाकर आल्हा पर फेंका, परन्तु आल्हा इस वार को भी बचा गये और गुर्ज पृथ्वी पर जा गिरा। अब आल्हा ने अपना हाथी आगे बढ़ा वीरशाह के हौदे से अपना हौदा सटा दिया तब वीरशाह ने आल्हा पर कटार छोड़ी; लेकिन आल्हा इस तीसरे वार को भी बचा गये और उनके शरीर में घाव तक न हुआ। इधर पचशावद हाथी ने वीरशाह के हाथी के टक्कर मारी। इससे राजा वीरशाह के हाथी की अंबारी नीचे गिर गई। अब आल्हा ने अपने हाथी से नीचे उतरकर राजा को बँधवा लिया। जैसे ही राजा क़ैद हुए वैसे ही प्रलय सी हो गई। वीरशाह की सब सेना तितर-बितर हो गई। इधर महोबे के वीरों ने बौरीगढ़ जा घेरा। फिर एक दूत भेजकर ब्रह्मानन्द को तम्बू से बुलवा लिया। आल्हा ने अब ब्रह्मानन्द से कहा कि महल में आग लगवा दो।

वीरशाह ने आल्हा से कहा—"बतलाओ, यह सामने किसका पुत्र खड़ा हुआ है।" आल्हा ने उत्तर दिया—"यह लड़का राजा परमाल का है और रानी मल्हना ने भेजा है। यह बिदा करवाने के लिए आया है परन्तु आपने व्यर्थ में झगड़ा मोल लिया। रानी ने ऊदल को भेजा था मगर आपने उसको क़ैद ही कर लिया।" यह सुनकर राजा रोने लगे और कहने लगे—"माहिल तेरा सत्यानाश हो। इसमें मेरी कुछ भी भूल न थी। मैंने बिदा की सब तैयारी करवा दी थी, इतने में माहिल आया। उसने मुझसे कहा कि राजा परमाल ने

क्रुद्ध होकर आल्हा-ऊदल को देश से निकाल दिया है। इससे खीझकर ऊदल यहाँ आये हैं और वे तुरन्त बिदा करवा लेंगे। अगर आप बहू की बिदा इनके साथ करोगे तो बात में बट्टा लग जावेगा। ऊदल बिदा करवाकर महोबे ले जावेंगे और उसे अपनी दासी बनावेंगे। जब माहिल ने गंगा की शपथ खाकर ये बातें कहीं, तब विवश होकर हमने उसकी बातों को सत्य मान लिया। फिर हमने ऊदल को गिरफ़्तार करवा ऊभे में डलवा दिया। अब तुम हमारी बात पर विश्वास करो और पुत्रों को छोड़ दो। हम अब बहू को बिदा कर देंगे। मेरी बात को पत्थर की लीक समझो। हमें धोखा दिया गया। माहिल ने सब काम बिगाड़ दिया। भावी प्रबल होती है और भगवान् की लीला बड़ी विचित्र है।"

आल्हा ने ऐसे दीन वचन सुनकर शीघ्र ही वीरशाह के सातों पुत्रों को छोड़ दिया। राजा जब रंगमहल में रानी के निकट गये तब रानी ने उनसे कहा—"हे स्वामी! आप मेरी विनय मानिए और बहू को बिदा कर दीजिए। व्यर्थ झगड़ा न कीजिए। ये महोबे के बड़े वीर योद्धा हैं। इन पुत्रों से गरुआ सम्बन्ध है और पारस पत्थर पर अधिकार है जिससे लोहा छूते ही सोना हो जाता है।" राजा ने रानी की बात पर टालमटूल न की और बिदा की तैयारी करवा दी। फिर राजा वीरशाह ने आल्हा, ऊदल, ब्रह्मानन्द, ढेवा और वीर मलखान को बुलवाया और आदर से अपने पास बैठाया। शीघ्र ही वीरशाह के सातों पुत्र भी आकर मिल गये। फिर सब प्रसन्नता से एक दूसरे के गले लगे। उस समय की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। रानी ने वहाँ आकर आरती सजवाई और बहू का परछन किया। चन्द्रावली पालकी में जा बैठी। तुरन्त उसकी पालकी वहाँ से उठाई गई और डेरों के निकट आ पहुँची। महोबेवाले विजय का डंका बजाते हुए बौरीगढ़ से महोबे को रवाना हुए और समय पर सब महोबे पहुँचे।

रानी मल्हना ने जब सब के साथ चन्द्रावली के आने का समाचार सुना तब वह बारहों रानियों को साथ लेकर दरवाज़े पर आरती लिये आ गई।

उसने मंगलाचार आरम्भ कर दिया। जिस समय द्वार पर पालकी आई उस समय मल्हना रानी बहुत प्रसन्न थी। आगे बढ़कर उसने चन्द्रावली को पालकी से उतारा। वे सब रंगमहल में पहुँचीं। महोबे के प्रत्येक घर में आनन्द-बधाइयाँ बजने लगीं और हर्षसूचक तोपें छोड़ी गईं। इस प्रकार बौरीगढ़ का युद्ध समाप्त हुआ और आल्हा ऊदल को विजय प्राप्त हुई। फिर इन महोबे के वीरों ने दिल्ली में ब्रह्मानन्द का विवाह किया, जिसमें घोर युद्ध हुआ।

दिल्ली की लड़ाई

सुनते हैं कि राजा दुर्योधन ही कलियुग में पृथ्वीराज के रूप में उत्पन्न हुआ था। द्रौपदी ने बेला के नाम से पृथ्वीराज के यहाँ जन्म लिया, संसार भर में प्रसिद्ध अर्जुन महोबे में ब्रह्मानन्द के नाम से प्रकट हुए। ये राजा परमाल के पुत्र थे और रानी मल्हना की कोख से पैदा हुए थे। बेला ने (पृथ्वीराज की) रानी अगमा की कोख से जन्म लिया था। उसकी सुन्दरता और उसके लावण्य का वर्णन करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। उसका भोला मुखड़ा चन्द्रमा के समान सुहावना था और प्रत्येक अङ्ग से शोभा फूटकर निकली पड़ती थी। उसकी चाल मस्त हाथी की सी थी। मृग के छौने जैसे उसके नेत्र थे और कोयल की सी मीठी बोली थी। वह अपनी सहेलियों के साथ नित्य तरह-तरह के खेल खेला करती थी। जिस समय वह बारह वर्ष की थी उस समय उसने सोलहों शृङ्गार किये। बेला को सजी-सँवरी देखकर एक सखी ने उससे कहा—"पृथ्वीराज की सुकुमारी लाड़ली बेटी! मेरी बात सुनो। तुम राजा और रानी अगमा की लड़ैती हो। यहाँ तुम्हारे साथ की जितनी सखियाँ हैं उन सबका विवाह हो चुका है; लेकिन तुम्हारा विवाह अभी तक नहीं हुआ। इसका क्या कारण है? क्या तुम्हारे पिता जाति से बाहर हैं?"

इन बातों को सुन बेला बहुत लज्जित हुई। वह सबका साथ छोड़कर रङ्ग-महल में चली गई। बेटी को आती देख रानी अगमा ने उसे स्नेह से छाती से लगा लिया और उसको अनमनी देखकर पूछा—"बेटी! तू इतनी उदास क्यों है? मुझे सच सच बतला।" बेला ने धीमे स्वर में कहा—"हे माता! मेरे साथ खेलनेवाली सखी-सहेलियाँ मुझसे हँसी करती हैं और कहती हैं कि तुम्हारे साथ की सभी सखियों का विवाह तो हो चुका, किन्तु तुम्हारे पिता क्या कुलहीन हैं जिससे अभी तक तेरा विवाह नहीं हुआ?" यह सुन रानी

ने बेला को झट हृदय से लगा लिया और उसे धीरज बँधाते हुए कहा—‘ बेटी, धैर्य धर, मैं जल्दी टीका भिजवाऊँगी और तुरन्त तेरा विवाह करा दूँगी।”

यों बेटी को समझाकर रानी उठ खड़ी हुई और अपना गडुआ लेकर महाराज के पास पहुँची। पृथ्वीराज ने सत्कार के साथ महारानी से कहा—“तुम इस समय किस काम से आई हो?” रानी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की—“स्वामी! बेटी सयानी है और विवाह-योग्य हो गई है। अब उसका विवाह कर दीजिए। झटपट टीका भिजवा दीजिए।” राजा ने उत्तर दिया—“रानी, ठीक है, जल्दी टीका भेज देंगे और विवाह का प्रबन्ध करेंगे।”

अब राजा वहाँ से उठे और राजदरबार में आये। उन्होंने फ़ौरन् चौंड़ा ब्राह्मण तथा ताहर को बुला लिया। इसके सिवा नाऊ, बारी, भाट तथा पुरोहित को भी बुलाया। इनसे राजा ने सब हाल कहा और ताहर को साथ ले रङ्गमहल में पहुँचे। उन्होंने टीके का सारा सामान तैयार कराया। पृथ्वीराज ने सोने का थाल और सोने से मढ़ा हुआ नारियल मँगवाया; बढ़िया शाल-दुशाले, जड़ाऊ गहने, अस्सी गजरथ, साठ पालकियाँ, एक हज़ार घोड़े और तीन लाख अशर्फ़ियाँ मँगवाकर ताहर के हवाले कीं। पृथ्वीराज ने लग्नपत्रिका के साथ-साथ यह भी लिख दिया कि “सबसे पहले द्वार की लड़ाई होगी, फिर भाँवरों में घमासान युद्ध होगा। जब दूलह कुँवर कलेवा करने आयेगा तब हम उसका सिर कटवा लेंगे। जिस राजा को यह बात मंजूर हो, वही इस टीका को चढ़वा ले।” इस ढङ्ग से राजा ने पत्र लिखवाकर लिफ़ाफ़े में बन्द करवा दिया और उसे ताहर को सौंपकर यह आज्ञा दी—“संसार में यह धर्मनीति प्रसिद्ध है कि सदा बराबरवाले ही से विवाह-सम्बन्ध करना चाहिए। इसी लिए तुमको समझाता हूँ कि टीका समझ-बूझकर चढ़ाना। तुम सब देशों में टीका ले जाना, मगर महोबे में भूलकर भी न जाना। बनाफरों के सम्पर्क से महोबे के राजा परमाल कुलहीन समझे जाते हैं।” इस बात को ताहर ने ध्यान से सुन, चौंड़ा ब्राह्मण तथा चारों नेगियों को साथ ले, दिल्ली से कूच कर दिया। रास्ते में चौंड़ा ने कहा—“झुन्नागढ़ में गज राजा के पुत्र क्वाँरे हैं। गज राजा की कीर्त्ति संसार में प्रसिद्ध है। वहीं चलकर टीका चढ़ा

देना ठीक है।" इस प्रकार बातचीत करते हुए उन्होंने झुन्नागढ़ का मार्ग लिया। वे सात दिन में झुन्नागढ़ पहुँच गये।

गज राजा की कचहरी में पहुँचकर ताहर ने राजा को प्रणाम किया। राजा ने ताहर को आशीर्वाद देकर निकट बैठा लिया और कुशल-प्रश्न के बाद आने का कारण पूछा। ताहर ने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। फिर लग्नपत्रिका निकालकर महाराज गजसिंह को दी और उत्तर की बाट जोहने लगे। राजा ने पत्र को खोलकर पढ़ा और अन्त में उसको वापस करते हुए ताहर से कहा—हम विवाह नहीं करना चाहते। हम दिल्ली में जाकर रक्त रेलियाँ नहीं करना चाहते।

अब ताहर ने वहाँ से नरवरगढ़ का रास्ता लिया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने राजा नरपति को प्रणाम किया और लग्नपत्र दिया, किन्तु नरपति ने भी उसे पढ़कर लौटा दिया।

ताहर नरवरगढ़ से बूँदी पहुँचे पर वहाँ के राजा ने भी जब टीका लौटा दिया तब ताहर बहुत झेंपे। अब उन्होंने चौंड़ा से कहा—"ब्राह्मण देवता! मेरी बात ठीक समझो। बेला मेरे लिए वैरिन हो गई; क्योंकि उसके योग्य कोई वर नहीं मिला। अब हम और तुम उरई चलेंगे, जहाँ पर माहिल राज्य करते हैं। राजा माहिल जहाँ कहेंगे, वहीं टीका चढ़ा देंगे।" इस प्रकार चौंड़ा और ताहर विचारकर उरई की ओर चल दिये और आठ दिन में वहाँ जा पहुँचे। माहिल की कचहरी में चौंड़ा तथा अन्य नेगियों समेत ताहर पहुँचे। उन्होंने जब सामने जाकर राजा माहिल को प्रणाम किया तब उसने ताहर से आने का हाल पूछा और ढाढ़स बँधाकर कहा—"बेटा! हमारे होते हुए तुम इस ज़रा से काम की चिन्ता में न पड़ो।" ताहर ने कहा—"मामा! चार महीने से हम लोग मारे मारे फिरते हैं। मेरे लिए बेला शत्रु हो गई है। हम देश-देशान्तर में ख़ाक छान आये, मगर किसी राजा ने टीका चढ़ाने की मंज़ूरी नहीं दी। अब हमें कोई योग्य वर बतलाइए, जिसको हम टीका चढ़ा आवें।" माहिल ने ताहर से कहा—"कन्नौज में राजा जयचन्द का पुत्र लक्ष्मणसिंह (लाखन) क्वाँरा है, तुम वहीं जाकर टीका चढ़ा दो।"

ताहर ने कन्नौज का मार्ग लिया। वे तीन दिन में कन्नौज पहुँच गये लेकिन जब ड्योढ़ी पर पहुँचे तब दरवान ने रोका और पूछा—"आप लोग कहाँ से आ रहे हैं और कहाँ जावेंगे?" ताहर ने दरवान से कहा—"जाकर राजा से कहो कि हम दिल्ली से लाखन का टीका चढ़ाने आये हैं।" दरवान ने जाकर राजा को ताहर के आने का समाचार सुना दिया। राजा साहब ने ताहर को तुरन्त बुला भेजा। उन्होंने वहाँ जाकर महाराज को प्रणाम करके गद्दी पर पत्र रख दिया। पत्र पढ़ते ही राजा जयचन्द की दृष्टि बदल गई। उन्होंने ताहर से कहा—"हमें ब्याह करने की इच्छा नहीं है। तुम और कहीं जाकर टीका चढ़ाओ। दिल्ली में विवाह करके हम अपने शरीर कटवाना नहीं चाहते।"

कन्नौज से भी निराश होने पर ताहर को बहुत लज्जा आई। वे फिर उरई को चले। उरई जब केवल तीन कोस रह गई तब सबने बगिया में डेरा डाल दिये। दैवयोग से उसी समय मलखे शिकार खेलते खेलते वहाँ पहुँचे। ताहर को देखकर मलखे ने पूछा—"भाई ताहर, तुम किस काम से यहाँ आये हो?" ताहर ने बहाना बनाकर कहा—"हम लोग गङ्गा नहाने गये थे, वहाँ से लौट रहे हैं।" मलखे ने हँसकर कहा—"पृथ्वीराज के पुत्र होकर तुम झूठ क्यों बोलते हो? तुम्हारे साथ चारों नेगी और चौंड़ा ब्राह्मण है। इसलिए ज़रूर कुछ दाल में काला है।" तब ताहर ने कहा—"हम बहन का टीका चढ़ाने को लाये हैं, परन्तु कोई भी राजा विवाह करने को तैयार नहीं होता।" मलखे ने कहा—"आप लग्नपत्र मुझको दिखला दीजिए।" चौंड़ा ने लग्न-पत्रिका मलखे को दे दी। पत्र पढ़कर मलखे मन में बहुत प्रसन्न हुए और ताहर से बोले—"ताहर, तुम मेरी बात मानो। महोबे में राजा परमाल के पुत्र ब्रह्मानन्द क्वाँरे हैं। परमाल के घर पारस है, जिसको छूते ही लोहा सोना हो जाता है इसलिए तुम ब्रह्मानन्द को टीका चढ़ा दो जिससे तुम्हारे सभी काम पूरे हो जावें।" ताहर ने उत्तर दिया—"राजा पृथ्वीराज महोबे में ब्याह करना नहीं चाहते। इससे हम वहाँ न जायँगे।" मलखे ने ताहर से कहा—"वहाँ ब्याह न करने का क्या कारण है? क्या चन्देले कुलहीन हैं? इनका

चन्द्रकुल संसार में विख्यात है और राजा परमाल सर्वोच्च महाराज हैं। इन्होंने अपने बाहुबल से देश-देश के राजाओं-महाराजाओं को परास्त किया है। फिर उन्होंने गुरु अमरनाथ की आज्ञा मानकर अपना खाँड़ा समुद्र में सिरा दिया है।"

चौंड़ा ब्राह्मण ने कहा—"मलखे! मेरी बात सुनो। बनाफर जाति में छोटे हैं और परमाल राजा ने नीचों की सङ्गति की है। इससे उनके चन्द्रकुल में बट्टा लग गया है।" इस वचन को मलखे कैसे सहन कर सकते थे! वे क्रुद्ध होकर बोले—"ब्राह्मण देवता! सँभलकर मुख से वचन निकालो! क्या तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और मौत आ गई है, जिससे तुमने हमारे लिए ऐसी बात कही? आल्हा का विवाह हमने नैनागढ़ में नैपाली के यहाँ किया और मेरा विवाह पथरीगढ़ में हुआ है, जिसको पृथ्वीराज स्वयं जानते हैं। उरई के राजा माहिल मेरे मामा हैं। अब हमें उत्तर दो कि हम किस बात से छोटे हैं तथा क्षत्रियों के जो कर्म-धर्म हैं, उनमें हम किस तरह कम हैं? हमने पारथ को दङ्गल में जीतकर अपने बाप का सिरसा छुड़ाकर अपने क्षत्रियत्व का परिचय तुम्हें भली भाँति दिया था। फिर भी चौहान-राज बनाफरों का लोहा नहीं मानते। यह बड़े दुःख की बात है। हम लोगों ने बराबरी करनेवालों को जीवित नहीं छोड़ा जो सामने आकर उत्तर दे। हमने बड़े क्षत्रियों को तहस-नहस कर दिया है और सब पर विजय पाई है। इससे तुम मेरी बात मानकर महोबे में ही टीका चढ़ा दो। जिस प्रकार पृथ्वीराज राजा हैं उसी तरह राजा परमाल हैं। ब्रह्मानन्द सुन्दर राजकुमार हैं और ख़ासे योद्धा हैं। परमाल भी हर तरह से योग्य राजा हैं। इससे इनके घर ही टीका चढ़ा दो। जो मेरी बात न मानोगे तो सब काम बिगड़ जायँगे। शरीर में प्राण रहे या न रहे, मगर जीते जी टीका अब यहाँ से वापस नहीं जा सकता।"

यह देखकर ताहर ने चौंड़ा से कहा—"हम लोग देश-देश में घूम आये मगर टीका चढ़ाने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। इससे अच्छा यही है कि मलखे की बात मान लो और महोबे में टीका चढ़ा दो। चौंड़ा को ताहर की यह बात बड़ी अच्छी और उचित जान पड़ी। वह तुरन्त मलखे के साथ

जाने को राज़ी हो गया। मलखे के साथ वे लोग सिरसा पहुँचे। वहाँ मलखे ने सबका अच्छा सत्कार किया और उन्हें बँगले में टिका दिया। फिर मलखे महोवे की ओर रवाना हुए। एक पहर चलने पर वे दरबार में पहुँचे। मलखे ने हाथ जोड़कर राजा परमाल को प्रणाम किया। राजा ने बड़े स्नेह के साथ आशीर्वाद देकर मलखे से कुशल-क्षेम पूछी।

मलखे ने हाथ जोड़कर कहा—"दादा! आपकी कृपा से सब कुशल है। आपकी छत्रछाया में मैं सिरसा में बेखटके राज्य कर रहा हूँ और सब ज़गह शान्ति है। मैं इस समय आपके पास एक काम से आया हूँ। आशा है, आप मुझे निराश न करेंगे। दिल्ली से ब्रह्मा का टीका आया है। उसको आप मंज़ूर कर लीजिए। अब उन्होंने दिल्लीवाला पत्र राजा को दे दिया। राजा चन्देले ने पत्र को खोलकर पढ़ा और कहा—"मलखे! तुम दिल्ली का टीका लौटा दो। हमें विवाह की लालसा नहीं। इस तरह के टीके की हमें ज़रूरत नहीं है, जिसमें पुत्रों का बलिदान देना पड़े। चौहान वीरों की मार बड़ी बेंड़ी है। यदि मैंने अपनी तलवार गुरु अमरनाथ की आज्ञा से सागर में पखारकर न रख दी होती तो कोई चिन्ता न थी। ऐसी दशा में मेरा साहस दिल्लीवालों से युद्ध मोल लेने का नहीं होता।" मलखे ने उत्तर दिया—"श्रीमान् दादाजी! मेरी विनय पर ध्यान दीजिए और समझकर स्वीकार कीजिए। यदि आप घर आया हुआ टीका लौटा देंगे तो संसार में बड़ी हँसी होगी। चन्देलों को हीनकुल का कहकर संसार हँसी उड़ायेगा। देश-देशान्तर में छाये हुए आपके यश में कलङ्क लगेगा; इसे आप खूब सोच लें। मैंने अपने बल से सिरसा को जीता, घूरे पर गढ़ बनवा लिया और चौहानों को मोर्चे से हटाकर दिल्ली तक खदेड़ दिया है। ऐसा होते हुए भी आप घर आये हुए टीके को वापस कर देंगे तो बड़ा अनर्थ होगा। मेरी तो प्रतिज्ञा है कि चाहे शरीर से प्राण ही क्यों न चले जावें मगर मैं इस टीके को अब वापस न करूँगा। महाराज पृथ्वीराज की मुश्कें बाँधकर सातों भाँवरें डलवा लूँगा और दिल्ली से विवाह करके ही लौटूँगा।"

यह सुनकर राजा ने कहा—"तुम जाकर रानी से पूछ लो। जो कुछ तुम्हें अच्छा लगे वही करो।" आज्ञा पाकर मलखे मल्हना के पास पहुँचे। मलखे को आते देख रानी एकदम उठकर बैठ गई और मलखे को हृदय से लगाकर बोली—"बेटा! तुमने तो मेरी बिलकुल याद भुला दी। मैं नित्य उठकर तुम्हारा रास्ता देखा करती हूँ और किसी को आते देखती हूँ तो यही समझती हूँ कि वीर मलखान आये हैं। अब सिरसा का कुशल-समाचार बतलाओ और यह भी कहो कि किस काम के लिए आये हो। सब हाल कहकर चिन्ता दूर करो।"

मलखे ने नम्रता से कहा—"माता! हम पर आपकी बड़ी कृपा है। आपकी दया से सिरसा में चैन की वंशी बज रही है। मैं बेखटके राज्य कर रहा हूँ। मैं आपको और आपके किये हुए एहसानों को जन्म भर नहीं भूल सकता।" अब मलखे ने दिल्ली का पत्र मल्हना को दिया। रानी ने पत्र खोलकर पढ़ा और मलखे से कहा—"बेटा! इस टीके को तुम तुरन्त वापिस कर दो।" मलखे ने कहा—"माताजी! आप सोच समझकर बात कीजिए। यदि हम घर आया हुआ टीका लौटा देंगे तो क्षत्रियत्व में बट्टा लग जावेगा। चारों ओर बदनामी होगी। मैं चौहानों को मोर्चे से मारकर भगा दूँगा और सातों भाँवरें डलवा लूँगा। मैंने सिरसा में क़िला बनवा लिया है और पारथ को मारकर भगा दिया है। अब मैं ब्रह्मा का विवाह दिल्ली में ही करूँगा क्योंकि मुझे वीर मलखान कहते हैं। अब आपको किस बात का डर है? मेरे रहते आप किसी बात की चिन्ता न करें और टीका चढ़वाने का जल्दी प्रबन्ध करें।"

मछला रानी ने आकर मल्हना को समझाया और कहा कि मलखे किसी प्रकार नहीं मान सकते। आप आज्ञा दे दीजिए। इतने में ऊदल भी महल से आ गये और मल्हना तथा मलखे को प्रणाम करके पूछने लगे—'क्या बात है? दादा! मुझे भी बतला दीजिए।' मलखे ने दिल्लीवाला पत्र लेकर ऊदल को दे दिया। ऊदल ने जब पत्र खोलकर पढ़ा तब वे मन में बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने रानी मल्हना से सब सामान तैयार करने की प्रार्थना की और कहा कि मेरी विनय स्वीकार करके झटपट टीका चढ़ा लीजिए। मल्हना ने कहा—"यह टीका नहीं चढ़ सकता।"

ऐसी बात को ऊदल कैसे सह सकते थे ! उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा—"आज आपको हो क्या गया है ? आपको अपनी हँसी का डर नहीं है जो घर से टीका वापिस करती हैं ? कुछ भी क्यों न हो, अब महोबे से टीका वापिस न होगा। मैं प्रण करता हूँ कि "पृथ्वीराज की मुश्कें बाँधकर ब्रह्मा का विवाह करके ही महोबे को लौटूँगा, नहीं तो यहाँ आकर मुख न दिखाऊँगा।"

यह सुनकर तथा मछला रानी के समझाने पर मल्हना ने टीका चढ़वाने की आज्ञा दे दी। मल्हना ने कहा—"प्यारे बेटा ! तुम जैसा चाहो वैसा करो।" मलखे ने तुरन्त रुपना बारी को बुलवा लिया और सब हाल समझाकर उससे कहा—"झटपट ताहर को अपने साथ बुला लाओ जिससे टीका चढ़ जावे।" आज्ञा पाकर रुपना वहाँ से सिरसा को चल दिया। बँगले में सुलखे को देखकर रुपना ने उनको प्रणाम किया और उनसे कहा—"ताहर को तुरन्त भेज दीजिए। मलखे ने कहा है कि सब मामला ठीक है, ताहर शीघ्र चले आवें।"

ताहर के आने की ख़बर सुनकर महलों में तैयारियाँ होने लगीं। सखियाँ मङ्गलाचार करने लगीं। महोबे में सभी मकान सजाये गये। प्रत्येक घर में मङ्गलाचार होने लगे। सोने के कलश सजवाकर द्वारों पर रखवा दिये गये। चटपट सब गली-कूचे साफ़ किये गये और उनमें शतरंजियाँ बिछवा दी गईं। स्थान-स्थान पर बाजे बजने लगे। प्रत्येक घर में बन्दनवार बाँधे गये और गलियों में इत्र छिड़का दिया गया। मल्हना सखियों को सोने की पिचकारी देकर गुलाबजल और केवड़ाजल की वर्षा करने लगीं। महल में मोतियों का चौक पुरवाकर सोने का कलश रक्खा गया। पण्डित वेदपाठ करने लगे। उस समय की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। फिर पण्डितों ने ब्रह्मा को बुलवाया। वे आकर चन्दनचौकी पर बैठ गये। देवला, तिलका और मल्हना आदि चन्देले की बारहों रानियाँ मङ्गलगान करने लगीं। इसी समय आल्हा, ऊदल और ढेवा आ गये तथा वीर मलखान भी सजकर आ गये। राजा परमाल भी वहाँ आये। राजा के आते ही भाट और बन्दीजन उनके गुणों का वर्णन करने लगे। इसी समय ताहर और चौंड़ा भी चारों नेगियों

के साथ महोबे में आ पहुँचे। ताहर जब गलियों में आये तो वहाँ फूलों की वर्षा होने लगी। इत्र और गुलाब की झड़ी लगी थी जिससे गलियों में सुगन्ध की तरङ्गें उठ रही थीं। केशर की पिचकारियों की वर्षा से छज्जों पर लालिमा छा गई। वन्दीजन पृथ्वीराज और ताहर का यशगान करने लगे। यह अपूर्व स्वागत देख ताहर बड़े प्रसन्न हुए और मन ही मन राजा परमाल के यश एवं राज्य की बड़ाई करने लगे। ताहर दरवाज़े पर आकर घोड़े से उतर पड़े और चारों नेगियों तथा चौंड़ा के साथ महल में पहुँचे। ताहर को देखकर ऊदल ने क्रम से, एक के पीछे एक के हिसाब से, सात तवे टँगवा दिये। ताहर जैसे ही आँगन में पहुँचे, टीके की रस्म चुकाई जाने लगी। तीन लाख अशर्फ़ियाँ और सामान, जो टीके में था वह सब, ताहर ने वहाँ रख दिया। ब्रह्मानन्द का बढ़िया रूप देखकर ताहर मन में बहुत ख़ुश हुए। उन्होंने गणेशजी का पूजन कर इष्टदेव का ध्यान किया, फिर ब्रह्मानन्द के माथे पर रोरी का तिलक लगाया। उसी समय ताहर की दृष्टि उन सात तवों पर पड़ी, जिन्हें ऊदल ने रखवाया था। ताहर ने तुरन्त उन पर साँग चला दी जो सातों को पार कर पृथ्वी में धँस गई। तब उन्होंने आँगन में कहा—"हमारे कुल की रीति है कि यदि दूल्हा इस साँग को उखाड़ ले तो पान खिलाया जायगा।"

यह देखकर राजा मन में विचार करने लगे और रानी मल्हना घबरा गईं। अब रानी ने मलखे से बातचीत की। वे ऊदल से बोलीं—"बेटा, मेरे सामने तो यह दशा हुई, अब मेरे पीछे न मालूम भगवान् क्या करेंगे। न जाने उनकी क्या इच्छा है?" ऊदल ने मल्हना से विनय की कि धैर्य रखने से बड़े-बड़े काम पूरे हो जाते हैं। वे मल्हना को उत्तर देकर उठ खड़े हुए और ताहर से बोले—"मैं ब्रह्मा का छोटा भाई हूँ, मैं इस साँग को उखाड़ लूँगा।" बस, उन्होंने झपटकर वह साँग उखाड़ ली। ताहर ने चौंड़ा से कहा—"दादा, मेरी बात सुनिए और विचार कीजिए कि जिनके घर में ऐसे-ऐसे वीर योद्धा हों वे क्यों न शान्तिपूर्वक राज्य कर सकें अर्थात् ऐसे राजा ज़रूर बेखटके राज्य करेंगे।" अब ताहर ने ब्रह्मानंद को पान खिला दिया। जैसे ही ब्रह्मा ने पान लिया वैसे ही

सामने छींक हुई। मल्हना ने यह अपशकुन रोककर मलखे से कहा—"बेटा! इस टीके को तुरन्त लौटा दो। मेरा पुत्र क्वारा ही बना रहे। मुझे बहू की लालसा नहीं है।"

ऊदल ने मल्हना को समझाया—"माताजी, आप इस बात पर विचार कर लीजिए कि यदि घर का आया हुआ टीका वापिस कर देंगे तो संसार में बड़ी हँसी होगी। अब मैं टीका किसी प्रकार वापिस न करूँगा, चाहे हज़ारों अपशकुन क्यों न हों। आप इस बात पर ध्यान दीजिए और स्मरण रखिए कि जब हम माड़ौ लड़ने के लिए तैयार हुए थे और जब आपने मेरी भुजाओं को पूजा था तब भी सामने छींक हुई थी। उस समय भी आपने मुझे मना किया था लेकिन आपकी कृपा और भगवान् की इच्छा से वहाँ से बाप का बदला लेकर ही लौटे।" इतने पर भी मल्हना को यह बात अच्छी न लगी। वे ऊदल से बोलीं—"मेरा बेटा मारा जावेगा, इससे अच्छा यही है कि टीका लौटा दें।"

यह सुनकर मलखे ने झट अपनी कटार निकाली और उसे छाती पर रखकर मल्हना से कहा—"यदि किसी कारण यह टीका फिर गया तो मैं कटार मारकर प्राण दे दूँगा।" मल्हना ने कहा—"अच्छा मलखान! जो तुम्हारी इच्छा हो वही करो।" मल्हना ढोलक बजवाने लगीं और सखियाँ मंगल गाने लगीं। दिल्ली के जितने भी नेगी थे उन सबको मलखे ने गहने पहिना दिये और जितने गहने बाक़ी बचे वे सब चौंड़ा को सौंपते हुए कहा—"जितने भी नेगी दिल्ली में बच रहे हों उनको ये बाँट देना।" फिर ताहर ने महोबे के नेगियों को बुलाकर गहने बाँटे। जब नेग और नेवछावर हो चुकी तब ज्योनार हुई। फिर पण्डित को बुलवाकर विवाह का मुहूर्त्त पूछा गया। पण्डित ने अच्छी तरह शोधकर शुभ मुहूर्त्त माघ बदी तेरस बता दिया। अब ताहर ने राजा से हाथ जोड़कर प्रार्थना की "महाराज! अब जाने की आज्ञा दीजिए। हम लोग बहुत समय से घूमते फिर रहे हैं, अब दिल्ली को जावेंगे।" राजा परमाल ने उन्हें ख़ुशी से जाने की आज्ञा दी, तब ताहर ने उठकर राजा को प्रणाम

किया और सबसे मिल-भेंटकर तथा अपने नेगी और ब्राह्मणों को साथ लेकर दिल्ली का रास्ता लिया। मार्ग में वे पहले उरई भी गये।

ताहर को आते देखकर माहिल ने चौकी डलवा दी। चौकी पर ताहर के बैठ जाने पर माहिल ने पूछा—"तुमने किस राजा के यहाँ टीका चढ़ाया, सब समाचार मुझसे कहो।" ताहर ने माहिल से कहा—"मामा! मैं टीका लेकर कन्नौज गया, मगर जयचन्द ने टीका लेने से साफ़ इन्कार कर दिया। वहाँ से लौटकर मैं उरई आ रहा था कि तब तक मलखे आ गये और मुझे ज़बर्दस्ती अपने साथ लिवा गये तथा ब्रह्मा का टीका चढ़वा लिया।"

यह सुनकर माहिल मन में बहुत लज्जित हुआ। ताहर जब उरई से चलने लगे तब माहिल ने भी अपनी घोड़ी मँगवा ली और उस पर बैठकर वह दिल्ली को चल दिये। पाँच दिन में वह दिल्ली राज-दरबार में पहुँचा। वहाँ जाकर उसने पृथ्वीराज को प्रणाम किया। राजा पृथ्वीराज ने माहिल को चौकी पर बैठाया और उससे क्षेम-कुशल पूछी। माहिल ने उत्तर दिया—"मुझसे कुछ कहते नहीं बनता। ताहर ने महोबागढ़ में जाकर टीका चढ़ा दिया है जिससे मैं यही समझता हूँ कि बनाफरों के सम्पर्क से चौहान वंश भी कलंकित हो जावेगा। इसलिए आप टीका वापिस मँगवा लीजिए।"

इतने में ताहर और चौंड़ा भी वहाँ आ गये। पृथ्वीराज ने चौंड़ा से कहा—"चौंड़िया राय! क्या तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये थे? मैंने तुमको अच्छी तरह समझा दिया था कि महोबे में किसी प्रकार टीका न चढ़ाना, परन्तु तुमने टीका वहीं चढ़ा दिया। अब तुरन्त जाकर टीका वापस कर लाओ; नहीं तो सब काम बिगड़ जावेंगे।" ताहर बिना पूछे कहने लगे—"दादा! हम देश-देशान्तरों में भटके, मगर कोई भी राजा विवाह करने को राज़ी न हुआ। चार महीने तक हम लोग इधर-उधर भटके। चलते-चलते पैर पीले पड़ गये। अन्त में निराश होकर जब हम उरई जा रहे थे तब रास्ते में मलखान से भेंट हो गई। उन्होंने महोबे में चन्द्रवंशी राजा परमाल के यहाँ एक पुत्र बतलाया, जिनके यहाँ पारस पूजा जाता है जिससे लोहा छूते ही

सात्रा-स्त्रा जाता ह। वहाँ की बस्ती इन्द्रपुरी के समान है। वहाँ पर राजा परमाल राज्य करते हैं। उनका पुत्र ब्रह्मानन्द बड़ा रूपवान् और वीर है। उनके घर आल्हा और ऊदल दो वीर सरदार हैं। उनकी वीरता का लोहा बड़े-बड़े योद्धा मानते हैं। आल्हा नैपाली राजा के यहाँ वियाहे हैं और मलखान का व्याह गजराजा की पुत्री के साथ हुआ था तथा माहिल उनके भी मामा हैं। फिर क्या कारण है कि उन्हें आप कुलहीन समझते हैं? अब आप कुछ भी क्यों न करें, टीका किसी तरह लौट नहीं सकता। अब तो जब बारात दिल्ली आवेगी तभी उन सबको गिरफ़्तार करवाकर मरवा डाला जावेगा।" यह सुनकर माहिल चल दिया और उरई जा पहुँचा।

पाठको! अब महोवे के समाचारों पर ध्यान दीजिए, जहाँ भगवान् के भरोसे राजा परमाल बेखटके राज्य करते हैं। वास्तव में ईश्वर पर भरोसा रखने ही से सब कार्य सिद्ध होते हैं। जैसा एक कवि कहता है :—

रूठे क्यों न राजा यातें होत सब काजा,
प्रभु तोसों महाराजा और काके पास जाइए।
रूठे क्यों न भाई जो है बाँह को सहाई,
और रूठे क्यों न मित्र यातें सब दुख विसराइए॥
रूठे क्यों न माता जाने पाल्यो है जनम तें ही,
और रूठे क्यों न पुत्र यातें सब सुख पाइए।
सब जग है रूठा एक तू ही है अनूठा,
सब चूमेंगे अँगूठा एक तू न रूठा चाहिए॥

माघ लगते ही महोवे में बड़े उत्साह से तैयारियाँ होने लगीं। पहले जितने राजा व्यवहारी थे उन सबको निमन्त्रणपत्र भेज दिये गये। इससे वे लोग अपने-अपने लश्कर साथ ले लेकर महोवे में पहुँचने लगे। स्थान-स्थान पर तम्बू और डेरे लगा दिये गये, जिनके ऊपर लाल पताकाएँ फहराने लगीं। ब्याह का समाचार मिलते ही माहिल अपनी लिली घोड़ी पर चढ़कर महोवे जा पहुँचा।

घोड़ी से उतरकर वह पहले मल्हना के पास गया। उसने माहिल को ... बहुत प्रसन्नता प्रकट की। माहिल ने मल्हना से कहा—"बहन! मेरे योग्य जो सेवा हो वह बतलाओ। मैं तैयार हूँ। पृथ्वीराज ने यह कह दिया है कि 'केवल दूलह को लेकर तुम आ जाओ तो मैं सातों भाँवरें डाल दूँगा। यदि आल्हा-ऊदल साथ आवेंगे तो मैं दोनों के मुण्ड काट लूँगा और दूलह को भी जान से मार डालूँगा। बनाफरों की नीच जाति है, इसलिए यहाँ न आवें। लड़के को ही लिवा लाओगे तो मैं सातों भाँवरें डाल दूँगा तथा बेटी को भी विदा कर दूँगा'।" ऐसा कहकर माहिल ने मल्हना को एक पत्र दिया।

मल्हना को वह झूठा पत्र देकर माहिल ने विश्वास दिला दिया। इससे मल्हना ने एक पालकी मँगवा ली और उस पर ब्रह्मा को बुलाकर अकेला बैठा दिया। फिर माहिल को पालकी के साथ करके कहा—"भाई! मैं तुम्हारे हाथों में प्राणप्यारे पुत्र को सौंपती हूँ, तुम सावधान रहना।" ब्रह्मानन्द की पालकी वहाँ से चल दी और साथ में माहिल हो लिया।

ऊदल को जब यह पता चला कि माहिल ब्रह्मा को ले गया है तब वे बेंदुला घोड़ा पर चढ़कर सीधे रंगमहल में गये। ऊदल को आते देखकर मल्हना चौंककर उठ बैठी। ऊदल ने रानी के चरण छुए तथा हाथ जोड़कर कहा—"माता! आपकी बुद्धि को क्या हो गया है जो ब्रह्मा को माहिल के साथ भेज दिया! जान-बूझकर आपने अपना अगुआ माहिल परिहार को किया है। कटने-मरने के लिए बनाफर हैं और ब्याह-बारात के लिए चुगलखोर माहिल हैं! याद रखिए, माहिल धोखा देकर ब्रह्मा को लिवा ले गये हैं। अब पुत्र से आपकी भेंट न होगी। सब आये हुए व्योहारी महोबे में ही पड़े रह गये और ब्रह्मा अकेले विवाह के लिए चले गये। अब मैं महोबे में कभी न आऊँगा।" यह सब सुनकर मल्हना रानी भौचक्की सी रह गई और ऊदल वहाँ से चले गये।

वहाँ से चलकर ऊदल दशपुरवा पहुँचे। सुनवाँ ने ऊदल को क्रुद्ध और चिन्तित देखकर पूछा—'मेरे प्यारे देवर! तुम पर कौन सा दुःख आया है

जिसके कारण तुम्हारा शरीर और मुख मलिन हो गया है ?" ऊदल ने कहा—"भाभी ! कुछ कहा नहीं जाता। मामा माहिल जन्म के वैरी हैं। वे वंश-नाश करने का मौक़ा देखते रहते हैं। जितने व्यौहारी बारात के लिए आये थे वे सब महोबे में ही रह गये और मल्हना को फुसलाकर माहिल अकेले ब्रह्मा को लिवा ले गये। वहाँ जाकर वे उसे मरवा डालेंगे। अब मैं न तो बारात में जाऊँगा और न महोबे से ही मुझे कुछ मतलब है।"

यह सुनकर सुनवाँ ने ऊदल को तोख देकर कहा—"देवर! क्या तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है ? मल्हना रानी ने अपने स्तन का दूध पिला-पिलाकर तुम्हारा लालन-पालन किया है। अब यदि ब्रह्मानन्द मारे जावेंगे तो संसार में तुम्हारी बड़ी हँसी होगी और तुम्हारी बात में बट्टा लग जावेगा। इसमें मल्हना का कुछ दोष नहीं है। उन्होंने माहिल के कपट-व्यवहार में आकर ऐसा किया है। अब यदि मल्हना की कुछ भी बात बिगड़ी तो तुम्हारी वीरता को धिक्कार है। इसलिए तुम मेरी बात मानकर झटपट जाकर ब्रह्मा की मदद करो।"

ऊदल को सुनवाँ की यह शिक्षा बड़ी अच्छी जान पड़ी। वे सुनवाँ से बोले—"मैं आपकी शिक्षा को मानता हूँ और जाकर अभी ब्रह्मा की रक्षा करता हूँ।"

वहाँ से चलकर ऊदल अपनी फ़ौज में पहुँचे। उन्होंने तुरन्त ही कूच का डंका बजवा दिया। डंका बजते ही क्षत्रिय लोग होशियार हो गये। पहले डंके के बजते ही सैनिकों ने जीनबन्दी की, दूसरे डंके के बजते ही वे हथियार बाँधकर तैयार हो गये तथा तीसरे डंके के बजते ही क्षत्रिय बिलकुल सजकर तैयार हो गये। अब ऊदल ने कालपी का बढ़िया काग़ज़ लिया और क़लमदान लेकर मलखे को पत्र लिखा। उसमें लिखा 'माहिल मल्हना से बातें बनाकर; अकेले ब्रह्मा को लिवा ले गया है इसलिए तुम उसको तुरन्त गिरफ़्तार कर लो। आगे न बढ़ने देना'। पत्र लेकर दूत बात की बात में सिरसा पहुँचा। मलखे ने पत्र खोलकर पढ़ा और सुलखे को बुला भेजा। वीर मलखान ने सुलखे को सब समाचार कह सुनाया और यह भी कहा कि "माहिल को तुरन्त गिरफ़्तार कर लो, आगे बढ़ने से रोक दो।"

यह सुनकर सुलखे वहाँ से चल दिये और अपनी फ़ौज लेकर मार्ग रोककर खड़े हो गये। इतने ही में वहाँ ब्रह्मानन्द की पालकी पहुँची तथा लिल्ली घोड़ी पर सवार माहिल भी वहाँ आ पहुँचा। सुलखे ने आगे बढ़कर माहिल को प्रणाम किया और कहा—"मामा! आपको यह शोभा नहीं देता कि झूठा बहाना करके अकेले ब्रह्मा को साथ लेकर चल दिये।" अब उन्होंने माहिल के दण्ड बाँध लिये फिर उन्हें ले जाकर फाटक पर टाँग दिया। ब्रह्मा की पालकी सिरसा को भेज दी और ऊदल के पास यह समाचार भेज दिया। महोबे में बारात की तैयारियाँ होने लगीं और उधर सिरसा में सब नेग-जोग होने लगे। आल्हा अपने पचशावद हाथी को सजवाकर उस पर सवार हो गये। ऊदल ने बेंदुला घोड़ा सजवाकर उस पर सवारी की। ढेवा अपने मनुरथा घोड़े पर सवार हो गया तथा करेलिया घोड़ा को कोतल चलाया। फिर राजा परमाल की सवारी सजकर तैयार हुई और महोबे से बारात चली। आल्हा जब सिरसा में आये तब उनकी दृष्टि फाटक पर टँगे हुए माहिल की ओर गई। उन्होंने तुरन्त उसको छुड़वा दिया। छुटकारा होने पर माहिल ने रोकर कहा—"सुलखे ने हमारी बड़ी बेइज्ज़ती की, अब हम बारात किसी प्रकार न जावेंगे। तब ऊदल ने कहा—"माहिल मामा बारात में न जावेंगे तो मैं जाकर क्या करूँगा।" ढेवा वग़ैरह भी माहिल को समझाने लगे। अन्त में वह तैयार हो गया। उसको साथ लेकर बारात आगे बढ़ी।

ब्रह्मानन्द की पालकी बड़ी धूम के साथ सिरसा से उठी। मलखे और सुलखे दोनों भाई अपनी कबूतरी और हिरौजिन पर सवार होकर सेना समेत बारात के साथ हो लिये। सात दिन चलने के बाद जब दिल्ली पाँच कोस रह गई तब आल्हा की सलाह से सबने वहीं डेरे डाल दिये। राजपूतों की फेंटें छूट गईं, हाथियों के हौदे उतार दिये गये, घोड़ों पर से ज़ीनें उतार दी गईं और सब राजा, रईस व सरदार अपने-अपने ख़ेमे में विश्राम करने लगे। किसी-किसी तम्बू में सुन्दरी नर्तकियों का नाच-गाना होने लगा। थोड़ी देर बाद ऊदल ने आल्हा से पूछा—"दादा! विवाह के कार्य

का विचार करना चाहिए। आप जाकर दतुआ से पूछ आइए कि पहले कौन सा काम होगा।"

अब आल्हा वहाँ से चलकर राजा परमाल के पास पहुँचे। राजगद्दी के निकट जाकर आल्हा ने चन्देले को प्रणाम किया। राजा ने आल्हा से पूछा—"बेटा, तुम किस काम से आये हो? समझाकर कहो।" आल्हा ने परमाल से कहा—"दादा! अब पण्डित को बुलवाकर विवाह की साइत पूछ लीजिए।" तुरन्त वहाँ पण्डित बुलवाये गये। उन्होंने पत्रा खोलकर विवाह का मुहूर्त बतलाते हुए कहा—"मुहूर्त तो इसी समय अच्छा है। शीघ्र ऐपनवारी भिजवा दीजिए।"

यह सुनकर मलखे ने रूपना बारी को बुलाकर कहा—"रूपन! तुम ऐपनवारी लेकर दिल्ली जाओ और पृथ्वीराज को ब्याह का समाचार सुना दो।" रूपना ने कहा—"मैं दिल्ली जाकर अपना शरीर नहीं कटवाऊँगा। चौहानों की पैनी मार के आगे मैं अकेला जाकर क्या कर सकता हूँ?" यह सुनकर ऊदल ने कहा—"रूपन, क्या तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है? ब्रह्मा का विवाह तो हो ही जायेगा, लेकिन यह दिन कहने के लिए रह जायेगा। तुम अपने मुख से कायरों के से वचन क्यों बोलते हो? यह तुम्हें शोभा नहीं देता। याद रक्खो, मैं तुम्हें अपना नेगी नहीं समझता, मैं तो तुम्हें अपना भाई समझता हूँ।"

यह सुनकर रूपन के हृदय में जोश पैदा हुआ। उसने कहा—"मुझे ब्रह्मा की ढाल-तलवार मँगवा दीजिए तथा उन्हीं का घोड़ा और पैंजनी पगड़ी भी। मैं अभी दिल्ली जाकर ऐपनवारी पहुँचाता हूँ।" ऊदल ने यह सब सामान तुरंत मँगवा दिया। रूपना दिल्ली के लिए रवाना हो गया। जब वह फाटक पर पहुँचा तब दरबान ने उससे पूछा—"तुम कहाँ से आये हो और कहाँ जाओगे? तुम्हारा नाम क्या है?" रूपना ने दरबान से कहा—"ब्रह्मानन्द की बारात महोबे से आई है और मैं ऐपनवारी लाया हूँ। मेरा नाम रूपन बारी है। तुम जाकर अपने महाराज से कहो कि मेरा नेग भेज दें।"

दरबान ने रूपना से पूछा—"आपको नेग में क्या मिलता है?" रूपना ने दरबान को उत्तर दिया कि मेरा नेग यही है—"दरवाजे पर तलवार की

जमकर मारकाट हो।" दरवान वहाँ से राजदरबार में पहुँचा। राजा पृथ्वीराज का दरबार लगा हुआ था। सोने के रत्नजटित सिंहासन पर बैठे हुए महाराज पृथ्वीराज का वक्षःस्थल एक गज़ चौड़ा था। उनके तेजस्वी नेत्र लाल रंग के थे। उनके दोनों ओर दो हज़ार योद्धा बैठे हुए थे। देवी मरहठा, ग्वालियर का राजा अंगद, धाँधू, चौंड़ा, वीर गुमत्ता, रहमत सहमत पठान भाई व भूरा मुग़ल अपने ठिहुने पर नङ्गी तलवारें रक्खे हुए बैठे थे। राजसभा में पृथ्वीराज के निकट उनके सातों पुत्र* दरबार की शोभा बढ़ा रहे थे।

दरवान ने जाकर राजा को प्रणाम करके कहा—"महाराज! महोबे से बारात आ गई है। ऐपनवारी लिये हुए बारी फाटक पर खड़ा है। वह अपना नेग माँगता है। वह अपना नेग दरवाज़े पर कठिन तलवार चलना ही माँग रहा है।" दरवान की प्रार्थना सुनकर पृथ्वीराज उससे बहुत ही क्रुद्ध हुए और अपने पुत्र सूरज को बुलाकर आज्ञा दी "अभी उस बारी को बाँधकर मेरे सामने ले आओ।" महाराज की आज्ञा पाकर सूरज वहाँ से चल दिये।

रुपना बारी कुछ देर तक फाटक पर खड़ा-खड़ा बाट जोहता रहा, फिर देर होते देख वह स्वयं सामने जाकर प्रार्थना करने लगा। पृथ्वीराज को प्रणाम करके उसने ऐपनवारी सामने रख दी और हाथ जोड़कर विनय की—"महाराज! मैं परमाल राजा का बारी हूँ। कृपाकर मेरी नेग शीघ्र मँगवा दीजिए।" पृथ्वीराज ने उसकी विनय सुनकर ताहर को आज्ञा दी "महोबे का बारी भागकर न जाने पावे। इसका सिर कटवा लिया जाय।" आज्ञा पाने की देर थी कि क्षत्रियों ने तलवार खींच ली और ताहर ने धावा बोल दिया। रुपना ने भी जीवन का मोह छोड़कर तलवार सूंत ली और उन क्षत्रियों से भिड़ गया। चार घड़ी तक लगातार घमासान युद्ध हुआ और रक्त की धार बहने लगी। उस समय जितने क्षत्रियों ने रुपना बारी को घेर लिया था उन सब को उसने

* इनके नाम—ताहर, गोपी, सूरज, चन्दन कदंन, मर्दन और पारथ थे।

पृथ्वी पर सुला दिया। अब रुपना पृथ्वीराज के निकट जा पहुँचा। उसने अपना भाला निकालकर उसकी नोक से ऐपनवारी उठा ली और पृथ्वीराज से कहा—"मेरा जो नेग बाक़ी रह गया है वह मैं भाँवर के समय ले लूँगा।" यह कहकर वह चल दिया तथा फाटक के बाहर निकल गया। अब क्षत्रियों ने अपनी-अपनी तलवार निकालकर रुपना को गलियारों में जा घेरा। रुपना यह कब देखनेवाला था। उसने भी झट तलवार निकाल ली। रुपना जिस क्षत्रिय को मारता था वही पृथ्वी पर गिर पड़ता था।

उस स्थान पर तीन घड़ी तक कठिन सिरोही की मार हुई और गलियों में ख़ून-खच्चर हो गया। अब रुपना ने हरनागर की लगाम खींची और झट फाटक के बाहर निकल गया। रुपना जब अपने लश्कर में पहुँचा तब राजा परमाल ने उसको रक्त में रँगा हुआ देखा। ऊदल ने रुपना से पूछा—"रूपन, सब समाचार सुनाओ कि दरवाज़े पर कैसी कटी।" रुपना ने ऊदल से कहा—"दरवाज़े पर तलवार की विकट मार हुई। चारों ओर से दो हज़ार क्षत्रियों ने घेर लिया था। फिर वहाँ पर अच्छी तरह तलवार चली। मैंने राजपूतों को मोर्चे से हटा दिया तथा ऐपनवारी उठाकर यहाँ आ पहुँचा हूँ।"

माहिल को जब सब ख़बर मिली तब उसने ऊदल से कहा—"मैं अभी दिल्ली जाकर राजा से कहता हूँ कि दरवाज़े के सब नेग व्योहार पूरे कर सातों भाँवरें डाल दीजिए।" बस, वह अपनी लिल्ली घोड़ी पर सवार हो दिल्ली में राजा पृथ्वीराज के दरबार के निकट पहुँचा। वह घोड़ी से उतर पड़ा। घोड़ी को थनवार ने पकड़ा। माहिल ने पृथ्वीराज को प्रणाम किया। बैठने के लिए राजा साहब ने चौकी बिछवा दी और कहा—"आइए! उरईवाले विराजिए और अपने कुशल-समाचार सुनाइए।" अब माहिल ने पृथ्वीराज से विनय की—"महाराज! महोबेवाले भारी योद्धा हैं। उनसे आप लड़कर विजय प्राप्त करने में समर्थ न होंगे। इसलिए मेरी राय और विनय समझकर अभी शर्बत पहुँचा दीजिए। इस शर्बत में ज़हर घुलवा दीजिए जिसे पीते पीते सब महोबिया युवक ढेर हो जावें। इसमें आपकी बात रह जावेगी तथा बिना लाठी चलाये ही सर्प

मर जायेगा।" पृथ्वीराज ने माहिल की बात मान ली और सूरज को बुलवा लिया तथा नेगी और कहार को बुलवाकर शर्बत घुलवा दिया और उसमें ज़हर मिलवाकर गगरी भरवाकर महोवे के डेरों में पहुँचवा दिया। सूरज ने साथ में अगवानी करके दरवानी से परमाल का डेरा पूछा और राजा के निकट जाकर मलखान तथा राजा को प्रणाम किया और शर्बत भेंटकर राजा से प्रार्थना की—"महाराज! मुझे पृथ्वीराज ने शर्बत देकर भेजा है और आज्ञा दी है कि राजा परमाल से प्रार्थना करना कि इस शर्बत को क्षत्रियों में बँटवा दें तथा दरवाज़े के लिए तैयार हो जावें।" मलखे ने ऊदल को संकेत किया तो उन्होंने झट-पट कटोरा मँगवा लिया। जैसे ही ऊदल ने हाथ में कटोरा लिया वैसे ही सामने छींक हुई। छींक सुनते ही ऊदल का हृदय धड़कने लगा। वे समझ गये कि कुछ दाल में काला है। बस फिर क्या था, झट से ढेवा सगुनिया को बुलवाकर सगुन दिखलाया।

ढेवा ने सगुन लिया और ऊदल को विश्वास दिलवाया कि इस शर्बत में विष घुला हुआ है, जिसको पीते ही क्षत्रिय मृत्यु की भेंट होंगे। इसलिए तुम किसी को शर्बत न पिलाना। अब ऊदल ने तुरन्त एक कुत्ता मँगवाकर उसे शर्बत पिलाया। कुत्ते ने जैसे ही शर्बत पिया वैसे ही वह अचेत होकर पृथ्वी पर गिर गया। तब ऊदल ने क्रुद्ध होकर सब शर्बत फिंकवा दिया तथा जो नेगी दिल्ली से शर्बत लाये थे उनको पीटा। मार खाते ही नेगी तथा सूरज वहाँ से भागे और दिल्ली जा पहुँचे। उन्होंने दिल्लीश्वर को प्रणाम कर बारात का सब समाचार कह सुनाया और आश्चर्य प्रकट किया कि महोबेवाले बड़े विकट सगुनिया हैं। उनका सगुन निरर्थक नहीं जाता। आपने जो शर्बत भेजा था वह खन्दक़ में फेंकवा दिया। अब वे लोग दरवाज़े पर आवेंगे। इसका कोई उपाय कर लीजिए।

माहिल ने राजा से प्रार्थना की—"महाराज! दीनपालक!! मेरी विनय मानकर आप एक उपाय कीजिए। दरवाज़े पर बाँस गाड़कर उसके ऊपर कलश रखवा दीजिए तथा जौरा और भौंरा नाम के हाथियों को मद में मत्त करवाकर छोड़वा

दीजिए। महोबेवाले जब दरवाज़े पर आ जावें तब उनसे कह दीजिए कि मेरे कुल की यह रीति है कि द्वार का व्यवहार पीछे होता है, पहले इन हाथियों को पछाड़ना पड़ता और लग्गी से इन कलशों को उतारना पड़ता है। जब इतना काम कर लिया जाता है तब सातों भाँवरें डलवा दी जाती हैं।"

राजा पृथ्वीराज ने माहिल की बातें मान लीं। माहिल प्रसन्न होकर लिल्ली पर सवार हो महोबे की बारात में जा पहुँचा। पृथ्वीराज ने ड्योढ़ी पर जाकर महल में सूचना करवा दी कि बारात आ रही है। इससे झटपट महलों में तैयारी होने लगी। मलयागिरि के खम्भे आँगन में गड़वा दिये गये और पानों से मंडप छवा दिया गया। मंडप के ऊपर स्वर्णकलश रखवा दिये गये। दूलह-दुलहिन के बैठने को चन्दन की चौकी डलवा दी गई। द्वार पर लग्गी गाड़कर उसके ऊपर स्वर्णकलश रखवा दिये गये और दोनों हाथियों को मँगवाकर वहीं छोड़वा दिया गया।

उधर ऊदल की सलाह से मलखे ने बारात के तैयार होने का डंका बजवाया तो क्षत्रिय तैयार होने लगे। हाथियों पर सुनहरे हौदे और घोड़ों पर ज़ीनें कसी गईं। साथ ही ऊँट, पालकी और गजरथ भी सजाकर तैयार कर दिये गये। एक-एक हाथी के हौदे पर चार-चार सैनिक सवार हो गये और बाक़ी क्षत्रिय अपनी-अपनी सवारियों पर फाँदकर सवार हो गये। आगे-आगे तोपें चलीं और पीछे से लश्कर ने कूच किया। ब्रह्मानन्द पालकी पर बैठकर चले। सारे दल में झंडों की सुर्ख़ी ही दिखाई देती थी। ठोस कंडालें, तुरही, नफीरी आदि बाजे बजते हुए क़िले की ओर चले। ब्रह्मा के बाईं ओर बेंदुला पर सवार ऊदल और दाहिनी ओर वीर मलखान थे। पीछे की पालकी में राजा परमाल बैठे थे, जिनके साथ आल्हा जा रहे थे। हाथियों, घोड़ों, ऊँटों तथा दूसरी सवारियों और सैनिकों के चलने से पृथ्वी की उड़ी हुई धूल आसमान में छा गई थी, जिससे सूर्य देव भी छिप गये थे। पृथ्वीराज को जब मालूम हुआ कि महोबे की फ़ौज दरवाज़े को आ रही है तब उन्होंने अपने सातों पुत्रों और देवी मरहठा को भी बुलवा लिया। पूरन राजा, अंगद, चौंड़ा

और धाँधू भी बुला लिये गये। इन सबको आज्ञा दी गई कि लश्कर सजाकर शीघ्र ही तैयार हो जाओ। निमन्त्रण में आये हुए राजा भी युद्ध के लिए तैयार हो गये। पृथ्वीराज के सातों पुत्र घोड़ों पर सवार होकर तैयार हो गये। इसी समय दिल्ली के क़िले में नगाड़ा बजा जिसे सुनते ही सब लश्कर तैयार हो गया। राजा ने पण्डित को बुलवाकर द्वार पर चौक पुरवा दिया तथा गंगाजल से घट भरकर वहीं रख दिया। सब पूजन का सामान तुरन्त जुटा दिया गया। बारात के आने पर ताहर को अगवानी करने के लिए भेजा गया। उन्होंने बारात में पहुँचकर परमाल व आल्हा को प्रणाम किया। उन्हें साथ लेकर वे क़िले की ओर लौटे।

सब बारात जब द्वारे पर पहुँची तब ताहर ने हाथ उठाकर कहा—"हमारे कुल की रीति है कि जब विवाह के लिए बारात आती है तब पहले द्वारे पर हाथियों को पछाड़ना पड़ता है।" उस समय द्वार पर जौंरा और भौंरा नामक दो हाथी झूम रहे थे, जिनको देखकर अच्छे-अच्छे वीर डर जाते थे। उसी समय वे हाथी साँकल घुमाने लगे जिससे महोबे की सेना तितर-बितर होने लगी।

वीर मलखान यह न देख सके। वे ललकारकर एक हाथी पर झपटे और उसको पकड़कर उन्होंने पृथ्वी पर दे मारा। पृथ्वीराज खड़े-खड़े यह सब तमाशा देख रहे थे। इतने में ऊदल ने दूसरे हाथी को भी पछाड़ दिया। यह देखकर पृथ्वीराज का दिल दहल गया।

जौंरा भौंरा नामक दोनों हाथियों को जब मलखे और ऊदल ने पछाड़ दिया तब ताहर ने आगे बढ़कर कहा—"आप लोग जब लग्गी से कलश उतार लेंगे तब दरवाज़े का कृत्य किया जायगा।" मलखान ने जगनिक से कहा—"तुम झटपट कलशों उतार दो।" जगनिक तुरन्त आगे बढ़कर लग्गी के पास पहुँचे। उनको देखकर ताहर ने कमलापति से कहा—"ठाकुर! यह तुम्हारी बराबरी का है; इसे ज़ंजीरों से बाँध लो।" यह सुनकर कमलापति आगे बढ़ा। उसने तुरन्त अपना हाथी आगे बढ़ाकर जगनिक से कहा—"ठाकुर! सावधान! यदि कलशों की ओर दृष्टि की तो घोड़े से नीचे गिरा दूँगा।" जगनायक को और

भी जोश आ गया। उसने घोड़े को एड़ लगाई। घोड़े ने तुरन्त हाथी के मस्तक पर पैर अड़ा दिये। जगनिक ने शीघ्र ही कमलापति के फ़ीलवान को मारकर गिरा दिया। यह देख कमलापति ने तलवार खींच ली और जगनिक के मुँह पर वार किया। उसी समय जगनिक ने अपनी ढाल सामने करके उस चोट को बचा लिया। इसी तरह कमलापति ने लगातार कस-कसकर तीन सिरोही जगनायक के मारीं, परन्तु तीनों वार जगनिक ने बचा लिये।

अब जगनायक ने रामचन्द्र का स्मरण करके कमलापति पर तलवार का वार किया। कमलापति ने उस वार को ढाल से रोका सही, परन्तु फिर भी अभाग्य-वश वह ढाल फट गई और तलवार ने पेट को फाड़कर उसका काम तमाम कर दिया। कमलापति के मरते ही ताहर घबरा गया। उसने जिन्सीवाले रहमत-सहमत को इशारा किया कि जगनायक को मोर्चों से हटाकर द्वार से मार भगाओ।

यह देख ऊदल ने मन्ना गूजर को बुलाकर कहा—"भैया, चौकन्ने होकर इन दोनों का सामना करो और इनको पीछे हटा दो।" उसी समय दोनों ओर के क्षत्रियों ने अपनी-अपनी सिरोही खींच ली। साथ ही पृथ्वीराज के सातों पुत्र भी तलवारें खींचकर आगे बढ़े। अब क्या था, तलवारें छपक-छपक करती हुई मनुष्यों के शरीर में घुसने लगीं। युद्ध में जुनव्वी और गुजराती सिरोहियाँ काम में लाई जा रही थीं। बर्दवान के बने हुए तेगों की विकट मार हो रही थी। चारों ओर सुन्दर युवा सैनिक कट-कटकर गिर रहे थे।

दिल्ली और महोबे दोनों ओर की फ़ौजें आपस में गुथ सी गई थीं। पैदल के साथ पैदल और सवारों के साथ सवार अटके हुए थे। चारों ओर भयंकर मार हो रही थी। चार घड़ी के घनघोर युद्ध में रक्त की धार बहने लगी। इसी समय ऊदल ने लग्गी पर पहुँचकर स्वर्णकलश उतार लिये।

अब ऊदल ने ताहर से कटाक्ष किया—भाई, जो और रीति बाक़ी रह गई हो उसे भी बतलाने की कृपा कीजिए जिससे उसे पूरा करने की कोशिश करूँ।

अब पृथ्वीराज ने युद्ध बन्द करवा दिया और दरवाज़े के पूजन आदि का काम आरम्भ करवा दिया। द्वार के नेग-चारों के बाद विवाह का मुहूर्त भी बतला दिया गया। इसके बाद बारात लौट गई।

बारात के जाने पर माहिल फिर पृथ्वीराज के पास आया। उसने पृथ्वीराज से हाथ जोड़कर कहा—"यदि किसी प्रकार बेटी का विवाह महोबे में हो गया तो कोई भी राजा आपके घड़ों का पानी तक न पियेगा। मेरी सलाह से आप बारात में यह कहला दीजिए कि हमारे कुल की रीति के अनुसार पहले समधौरा का व्यवहार होगा फिर विवाह किया जायगा। इस बहाने से घरवालों सहित चन्देले को यहाँ बुलवा लीजिए। यों सब महोबेवाले आ जावें तब उन पर हमला करके सबके सिर कटवा लीजिए।" यह बात पृथ्वीराज के कण्ठ में उतर गई। उन्होंने तुरन्त बारात में कहला भेजा कि पहले समधौरा होगा, इसके बाद विवाह। महाराज पृथ्वीराज अपने समय का अद्वितीय वीर था। उसकी छाती एक गज़ चौड़ी थी और आँखों में इतना तेज था कि कोई भी उससे आँख मिलाने का साहस न करता था। सब सोच-विचारकर परमाल ने ऊदल से कहा—"मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और मैंने खाँड़ा भी समुद्र में पधार दिया है। इधर समधौरे में कुछ चाल मालूम पड़ती है; इससे इसका कुछ उपाय सोच निकालो।" ऊदल सब बात झट ताड़ गये और वहाँ से चल दिये। उन्होंने आल्हा के पास जाकर कहा—"दादा! परमाल बुढ़ापे में समधौरा नहीं करना चाहते, इसलिए आप तैयार हो जाइए।"

इतने में मलखे भी वहाँ आ गये। उन्होंने भी आल्हा से प्रार्थना कर कहा—"दादा! जेठा भाई पिता के बराबर होता है। इससे आप जाकर समधौरा करा लें। ऐसा न करने से अपनी हँसी होगी।"

आल्हा ने तुरन्त पचशावद हाथी मँगवा लिया और वे उस पर सवार होकर चल दिये। ऊदल बेंदुला पर तथा मलखे कबूतरी पर सवार होकर चले। पृथ्वीराज द्वार पर खड़े हुए इनकी बाट जोह रहे थे। इनके पहुँचने पर पृथ्वीराज ने स्वागत किया। आल्हा ने पण्डित के कहने पर तुरन्त पृथ्वीराज की छाती में

दही लगाकर ऊपर से पान चिपका दिया। इसी प्रकार पृथ्वीराज ने आल्हा की छाती में पान चिपका दिया। जितने वीर योद्धा दरवाज़े पर खड़े थे वे सब कौतुक देख रहे थे। पान लगाने के बाद जब दोनों ने छाती से छाती मिलाई तब पसीने की बूँदें पृथ्वी पर गिरीं। अधिक दबाव से उन दोनों को मूर्च्छा आ गई।

अब पृथ्वीराज ने आल्हा से कहा—"बनाफरराय! तुम झटपट चढ़ावे के लिए गहने भिजवा दो जिससे विवाह शीघ्र हो जावे।"

यहाँ से तीनों भाई सकुशल डेरों को लौट गये। डेरों में जाकर आल्हा ने रुपना को चढ़ावे के कपड़े और गहने देकर क़िले की ओर भेज दिया। रुपना गहने के डब्बे लेकर ड्योढ़ी में पहुँचा। उसने यह सब सामान वहाँ के बारी को सौंप दिया। नेगी गहना-कपड़ा लेकर रंग-महल में चला गया। गहने देखकर बेला ने रुपना को भीतर बुलवाया। वहाँ रुपना से बेला ने कहा—"ये तो कलियुग के गहने हैं, मुझे तो द्वापरयुग के आभूषण चाहिए। चूड़ियाँ और चूनरि भी मुझे उसी समय की चाहिए। यह सब सामान न ला सकोगे तो मैं विवाह न करूँगी।" यह सुनकर रुपना लौट गया। उसने जाकर आल्हा से कहा—"दादा! आपने जो गहने भेजे थे उनको बेला ने फेंक दिया। वह द्वापर युग के गहने चाहती है। चूड़ियाँ और चूनरि भी उसी युग की होनी चाहिए। इससे झटपट प्रबन्ध करके इन चीज़ों को मँगाइए।"

यह सुनकर ऊदल को चिन्ता हुई। उन्होंने आल्हा से कहा—"दादा! इसके लिए अब कौनसा उपाय कीजिएगा?" आल्हा ने ऊदल को ढाढ़स बँधाया। उन्होंने देवीजी के मठ में पहुँचकर हवन और पूजन किया। पूजन समाप्त करके आल्हा ने ज्योंही अपना सिर चढ़ाने के लिए खड्ग खींचा त्योंही देवीजी ने हाथ पकड़ लिया और कहा—"तुम किस काम के लिए शीश चढ़ाते हो? मुझसे कहो।" आल्हा ने हाथ जोड़कर कहा—"माता! अब लाज आप ही के हाथ है। पृथ्वी-राज की बेटी बेला, जिसके साथ ब्रह्मा का विवाह होने को है, द्वापर युग के

गहने, चूड़ियाँ तथा चूनरि माँग रही है। मैं इसी के लिए आया हूँ।" देवी ने आल्हा को धैर्य दिया और कहा—"तुम यहीं मन्दिर में बैठो। सब वस्तुएँ अभी आती हैं।" थोड़ी देर बाद देवीजी ने सब सामान आल्हा के सामने रख दिया। फिर आल्हा वह सामान लेकर बारात में लौटे। रुपना बारी को बुलाकर आल्हा ने कपड़े, चूड़ियाँ और सब गहने सौंप दिये। उसने चूड़ियाँ, चूनरि और सब गहने रंगमहल के द्वार पर ले जाकर बेला के पास भेजवा दिये। यह देखकर बेला बहुत प्रसन्न हुई। उसने गहने आदि पहन लिये और आल्हा की सराहना की। रुपना ने लौटकर सब हाल आल्हा से कह दिया।

माहिल यह सब कैसे देख सकता था? झट अपनी घोड़ी पर सवार होकर वह पृथ्वीराज के पास जा पहुँचा। बछेड़ी से उतरकर उसने पृथ्वीराज को प्रणाम किया। राजा ने माहिल के लिए चौकी बिछवा दी और बैठाकर समाचार पूछा।

माहिल ने कहा—"महाराज! बारात के समय सब घरातियों को बुला लो और अपने वीरों को कोठरियों में छिपा दो। जब वे लोग विवाह के कार्य में लग जायें तब उन शूरों को निकालकर आक्रमण करवा दीजिए। ऐसे समय वे लोग कुछ न कर सकेंगे और मारे जावेंगे।" पृथ्वीराज ने माहिल की बात मान ली और कहा—"माहिल ठाकुर! तुमने मुझे नेक सलाह दी।" अब उन्होंने तुरन्त दो हज़ार क्षत्रियों को बुलवाकर रङ्गमहल की कोठरियों में छिपा दिया।

इसके बाद चौहान राजा ने मोती नामक पुत्र को बुलवाकर कहा—"तुम बारात में जाकर आल्हा आदि के घर के ख़ास-ख़ास आदमियों को आदर के साथ लिवा लाओ।" पिता की आज्ञा से मोती नेगियों समेत लश्कर में जा पहुँचे। आल्हा के निकट पहुँचकर मोती ने प्रणाम किया और कहा—"जितने भी घर के आदमी हैं वे सब मेरे साथ तैयार होकर चलें। हम ख़ुशी से सातों भाँवरें डलवा देंगे।"

ऊदल ने जब आज्ञा दी कि फ़ौज में डङ्का बजवा दिया जाय, तब मोती ने गङ्गा की सौगन्द से कहा—"तुम्हारे साथ धोखा न होगा। केवल घरवाले ही

चलें। हमारे घर की रीति के अनुसार सभी घर के लोग मण्डप के नीचे जाते हैं। इसलिए जितने घर के मनुष्य हों, वे सभी तैयार होकर चलें।"

मोती की बात पर विश्वास कर ऊदल ने फ़ौज को अपने साथ न लिया। आल्हा, ऊदल, मलखे, ढेवा, जोगा, भोगा, मोहन, ताहन, सैयद, जगनिक और मन्ना गूजर ब्रह्मा की पालकी के साथ क़िले की ओर चले। जब सभी वीर पालकी के साथ क़िले में घुस गये, तब मोती ने फाटक बन्द करवा दिया। इधर ब्रह्मा को पालकी से उतारकर भीतर ले जाया गया। पंडितों ने गणेश-पूजन आदि के बाद कन्यादान करवाया। अब दूलह-दुलहिन का गठबन्धन किया गया और हवन करवाया गया। कोकिलबैनी सखियाँ मङ्गलगान करने लगीं तथा बन्दीजन और भाट यशगान करने लगे।

सब नेगचार होने के बाद ब्रह्मानन्द और बेला की भाँवरें पड़ने लगीं। जैसे ही पहली भाँवर पड़ी वैसे ही सूरज ने तलवार खींचकर ब्रह्मा के ऊपर वार किया, परन्तु जगनिक ने तुरन्त ढाल अड़ा दी। इससे वह वार ख़ाली गया। जब दूसरी भाँवर पड़ने का समय आया, तब चन्दन ने ब्रह्मानन्द पर अपनी तलवार की चोट की। उस समय ढेवा ने उस चोट को बचा लिया। तीसरी भाँवर पड़ने ही वाली थी कि सरदन ने तलवार खींचकर जड़ाका किया। मगर मन्ना ने इस वार को रोक लिया। चौथी भाँवर पड़ने के समय मर्दन ने ब्रह्मा पर तलवार छोड़ दी। उस समय जोगा ने मरदन के वार को रोककर चौथी भाँवर पड़वा दी। गोपी भी बाट देख रहा था। उसने पाँचवीं भाँवर के समय तलवार चला दी, परन्तु आल्हा के दूसरे साले भोगा ने ढाल अड़ाकर गोपी के वार को ख़ाली कर दिया। छठीं भाँवर के समय पारथ ने ब्रह्मानन्द पर तलवार का वार किया, परन्तु रणकुशल ऊदल के कारण उसको भी मुँह की खानी पड़ी। जैसे-तैसे ईश्वर की कृपा से छः भाँवरें पड़ गईं। जब सातवीं भाँवर का समय आया तब ताहर ने तलवार खींचकर ब्रह्मानन्द के शीश पर चला दी, परन्तु मलखे जो पहले से ही सावधान थे, झट खड़े हो गये। उन्होंने ताहर के भी वार को व्यर्थ कर दिया। इस प्रकार सातों भाँवरें पड़ गईं। इसी समय कोठरियों में छिपे हुए वीर शोर

मचाते हुए निकल पड़े। यह देखकर बनाफर और उनके साथी उन पर टूट पड़े। क्षत्रियों ने अपनी-अपनी सिरोहियाँ खींच लीं और घमासान युद्ध होने लगा। महोबेवालों की बैंड़ी मार प्रसिद्ध ही थी। शीघ्र ही उनकी बैंड़ी मार से सैनिक बिलबिलाने लगे।

यह देखकर पृथ्वीराज के सातों पुत्रों ने अपनी-अपनी तलवारें खींच लीं। चार घड़ी तक घोर युद्ध हुआ। आँगन में रक्त की धार बहने लगी। बेला के सब कपड़े रक्त से तर हो गये और वह ख़ून से नहा गई। इस प्रकार मण्डप के नीचे भयंकर लड़ाई हुई और महोबेवालों ने उन सातों पुत्रों को क़ैद कर लिया। पृथ्वीराज ने जब यह देखा, तब वे बहुत घबरा गये। उन्होंने शीघ्र चौंड़ा ब्राह्मण को बुलाकर कहा—"महोत्रियों ने आँगन में मेरे पुत्रों को क़ैद कर लिया है, तुम जाकर उन्हें छुड़ा लाओ।" यह सुनकर चौंड़ा आल्हा के पास गया। उसने आल्हा से जब बहुत अनुनय-विनय की तब आल्हा ने सातों राजपुत्रों को छोड़ दिया। इसके बाद पण्डितों ने बाक़ी रीति-रिवाज को भी पूर्ण किया। अब पृथ्वीराज की नाइन वहाँ आई और आल्हा से कहने लगी—"लड़के को अब कलेवा के लिए भीतर भिजवा दीजिए। महाराज पृथ्वीराज की यह आज्ञा है कि केवल दूलह ही कलेवा करने भीतर जावेगा।" उस समय ऊदल चुप न रह सके। कहने लगे—"हमारे कुल की यह रीति है कि दूल्हा के साथ सहबाला ज़रूर जाता है और तभी लड़का कलेवा करता है।"

यह सुनकर नाइन ऊदल और ब्रह्मा को साथ लेकर महलों में गई। वहाँ वे दोनों ग़लीचों पर बैठा दिये गये। सखियाँ मधुर स्वर में गाली गाने लगीं। चौंड़ा को जब पता चला कि ब्रह्मा, ऊदल भीतर आये हैं तब वह ज़नाने वेष में भीतर गया। वह इस ज़नाने वेष में ब्रह्मा और ऊदल के निकट स्त्रियों में मिलकर जा बैठा।

अगमा* ने थाल परोसकर दोनों के सामने रख दिया। जैसे ही ऊदल ने कौर उठाया वैसे ही चौंड़ा ने दाहिनी ओर से कटार निकालकर मार दी।

* अगमा = पृथ्वीराज की पटरानी।

ऊदल घायल होकर मूर्च्छा खाकर गिर पड़े। उनका यह हाल देखकर चौंड़ा घबरा गया। रङ्गमहल में अगमा रानी के साथ-साथ सारी रानियाँ विलाप करने लगीं। ब्रह्मानन्द भी मोह-वश फूट-फूटकर रोने लगे। ऊदल के रूप को बार-बार देखकर अगमा रानी रोने लगीं और कहने लगीं कि—"चौंड़ा ब्राह्मण, तेरा बुरा हो, तेरे ऊपर इन्द्र की गाज पड़े। तूने महल में आकर जो धोखा दिया है, इससे तेरा खोज मिट जावेगा।" वहाँ से रोती हुई अगमा रानी बेला के पास गईं। माता को रोते देखकर बेला ने पूछा—"माता! आप क्यों विलाप करती हैं? मुझसे सब समझाकर कहिए।"

रानी अगमा ने कहा—"बेटी! मुझसे दुःख का वर्णन करते नहीं बनता। चौंड़ा ने स्त्री-वेष धारण करके धोखे में कलेवा के समय ऊदल को मार दिया है। देवै को जब इस मृत्यु का समाचार मिलेगा तब वह भी प्राण त्याग देगी।" यह सुनकर बेला तुरंत वहाँ से चल दी और ऊदल के पास पहुँची। ऊदल की दशा देखकर उसने वह कटार निकाल ली और फिर अपनी उँगली चीरकर उस घाव में रक्त छोड़ दिया, जिससे ऊदल का घाव ठीक हो गया। घाव ठीक होने पर ऊदल होश में आये। अपने सामने बेला को पाकर ऊदल चरणों पर गिर पड़े। अब ऊदल और ब्रह्मा दोनों पालकी पर बैठकर वहाँ से लौट आये। डेरों में पहुँचकर ऊदल ने अपना घाव राजा परमाल को दिखाया और सब हाल कह सुनाया। तब परमाल ने बहुत सा द्रव्य दीनों और अपाहिजों को बाँटा और कहा—"भगवान् की कृपा ही से तुम्हें जीवन-दान मिला है।"

राजा परमाल ने पंडितों को बुलाकर महोबे जाने का मुहूर्त्त पूछा तथा रुपना बारी को पृथ्वीराज के निकट बेला की विदा करवा देने के लिए भेजा। रुपना ने जाकर राजा को प्रणाम किया और चन्देले का सन्देशा कह सुनाया। पृथ्वीराज ने उत्तर दिया—"राजा परमाल से जाकर प्रार्थना करना कि मेरे कुल की यही रीति है कि बेटी की विदाई गौने में की जाती है। इससे मैं साल के भीतर ही विदा कर दूँगा। राजा परमाल सब प्रकार से योग्य हैं और उनको कोटिशः धन्यवाद है कि उहोंने पुत्र का विवाह करके हमें कृतार्थ किया।" रुपना ने चलते

समय पृथ्वीराज को प्रणाम किया और लश्कर में आकर आल्हा को पृथ्वीराज का उत्तर सुना दिया। आल्हा ने आज्ञा दी कि तम्बुओं की मेखें उखाड़ दी जावें और लश्कर महोबे को रवाना हो जाय।

राजा की आज्ञा से लश्कर ने कूच कर दिया। बारात जब महोबे के घूरे पर आ गई तब रुपना ने आगे जाकर मल्हना को ख़बर दी। मल्हना ने बारात लौटने की ख़बर पाकर सखियों को बुलवाया। वहाँ तुरन्त मंगलगान होने लगे। इतने में बारात भी वहाँ आ गई। महोबे में ख़ुशी ज़ाहिर करने को तोपें चलने लगीं। ब्रह्मानन्द की पालकी जब मल्हना के निकट पहुँची तब मल्हना ने आरती उतारी; सब ब्राह्मणों, नेगियों और दीनों को दान-दक्षिणा दी तथा न्यौछावर की। बारात में जितने राजा आये थे, उन सबकी विदा बड़े आदर से की गई। आल्हा, ऊदल, मलखे और ब्रह्मा ने माताओं के चरण छूकर माथा झुकाया। दिल्ली का कुल हाल ऊदल ने मल्हना से कह सुनाया। इस प्रकार ब्रह्मा का विवाह हुआ।

ऊदल का विवाह अर्थात् नरवरगढ़ की लड़ाई

महोबे के महाराज परमाल का दरबार उस समय अद्वितीय समझा जाता था। उनके दरबार में बड़े-बड़े राज्यों के मालिक, सामन्त की हैसियत से रहते थे। महाराज परमाल ने बावन गढ़ों को जीतकर अपने राज्य के अन्तर्गत कर लिया था। उनके यहाँ पारस पत्थर होने के कारण उन्हें धन, जन और राज्य किसी बात की कमी नहीं थी। बुढ़ापे में जब आल्हा और ऊदल सरीखे वीर उनके सहकारी बनकर पास रहने लगे, तब तो महोबा राज्य की यशःपताका स्वच्छ, निर्मल वायुमण्डल में बेरोक-टोक फहराने लगी।

पाठकों को भली भाँति विदित है कि उरई के परिहार-नरेश, बनाफरों के कारण, चन्देल-नरेश परमाल से मन ही मन कुढ़ा करते थे और सदा उनके नाश का उपाय ढूँढ़ने में लगे रहते थे। एक दिन माहिल ने भरे दरबार महाराज परमाल से कहा—"जीजाजी! ईश्वर की कृपा से आपके यहाँ उड़न-बछेड़े से लेकर साधारण घोड़े तक हैं, परन्तु काबुल के अरबी घोड़े नहीं हैं। क्या ही अच्छा होता कि आप सरीखे महाराजाधिराज के यहाँ कुछ अरबी घोड़े भी होते जो आपको समय-समय पर अपना कौशल दिखाकर आपकी कीर्त्ति बढ़ाते। घोड़े मँगवाने के लिए आप डङ्का रखवा दें तथा सोने के कलश के ऊपर चीरा, कलँगी के साथ पाँच पानों का एक बीड़ा रखवा दें। देखें दरबार में कौन माई का लाल है जो डङ्का बजाकर चीरा, कलँगी पहने और पान चबाकर अरबी घोड़ों को लेने काबुल जावे।" माहिल की बात परमाल को भी जँच गई। उन्होंने तुरन्त डङ्का, कलश, चीरा, कलँगी तथा पाँच पानों का एक बीड़ा दरबार में रखवा दिया और घोषणा की कि "जो अपने को शूर समझता हो वह बीड़ा चबाकर घोड़े लेने जाय।"

इसी समय ऊदल दरबार में पहुँचे। उन्होंने बीड़ा देखकर माहिल से पूछा—"मामा! बीड़ा क्यों रक्खा गया है?" माहिल ने बीड़ा रखने का कारण बतलाया।

अभी तक दरबार के किसी भी सरदार ने बीड़ा चबाने का साहस नहीं किया था। परन्तु ऊदल ने बीड़ा रक्खे जाने का कारण सुनते ही वह डंका बजा दिया और चीरा, कलँगी उठाकर बीड़ा चबा लिया। अब वे परमाल से बोले—"दद्दुआ! हमें काबुल आने-जाने का और घोड़े के मूल्य का ख़र्च राज्य के ख़ज़ाने से दिलवा दीजिए।"

यह देखकर परमाल ने कहा—"बेटा, तुम काबुल न जाओ। तुम्हारे बिना हम नहीं रह सकेंगे। फिर तुमने रास्ते में किसी से लड़ाई ठान दी तो नाहक़ धन-जन की हानि होगी।" परमाल ने ऊदल को बहुतेरा रोका, परन्तु वे न माने तब परमाल ने ढेवा को भी उनके साथ जाने की आज्ञा दी। परमाल ने ऊदल को चौदह खच्चरों में अशर्फ़ियाँ भरवाकर ख़र्च के लिए दीं। इसके बाद ऊदल मल्हना से आज्ञा लेकर अपनी फ़ौज के साथ दशपुरवा चले आये। ऊदल के साथ ढेवा भी अपनी पोथी, गुदड़ी और हथियार ले मनुरथा घोड़े पर सवार होकर चला। जब आल्हा ने सुना कि ऊदल काबुल जाते हैं तब उन्होंने भी बहुतेरा रोका, परन्तु ऊदल ने उनका भी कहना न माना। चलते समय देवै और सुनवाँ ने भी उन्हें रोका, परन्तु वह वीर अपने निश्चय पर दृढ़ रहा और सबको यथोचित अभिवादन कर दशपुरवा से विदा हुआ।

चलते-चलते छः दिन हो गये। सातवें दिन उन्हें दूर ही से एक क़िले के कलश दिखाई पड़े। ऊदल ने ढेवा से उस गढ़ का नाम पूछा। ढेवा ने कहा—"तुम्हें किसी और नगर से क्या मतलब? अपने रास्ते चलो और अपना काम करके शान्ति से लौट आओ।" ढेवा की बात ऊदल ने सुनी अनसुनी कर दी। थोड़ी दूर आगे चलकर जब उस गढ़ की सीमा आ गई, तब ऊदल ने एक चरवाहे से पूछा—"यह कौन-सा नगर है और यहाँ का राजा कौन है?" उसने उत्तर दिया—"इसे नरवरगढ़ कहते हैं, यहाँ के राजा का नाम नरपति है।" यह सुनकर ऊदल ने अपना घोड़ा नगर की ओर बढ़ाया और बाग़ों में जाकर अपने डेरे डाल दिये।

इसके उपरान्त ऊदल बेंदुला पर चढ़कर अकेले ही नगर में गये। राजा के कुएँ के पास पहुँचकर ऊदल पनिहारिनों से बोले—"हमारे घोड़े को पानी पिला

दो।" एक पनिहारी ने उत्तर दिया—"हम कुमारी फुलवा की पनिहारी हैं, घोड़े को पानी पिलाना हमारा काम नहीं। परदेशी! तुम अपना रास्ता नापो। यदि राजा तुम्हारी ढिठाई सुनेंगे तो तुमसे यह टट्टुआ छीनकर तुम्हें भगा देंगे।" ऊदल ने कहा—"आज तक ऐसा कोई वीर मैंने नहीं देखा, जो हमारे घोड़े को छीने। तुम अपना पानी रहने दो। हम कहीं और पिलवा देंगे।" इसी समय एक पनिहारी ने अपनी सहेलियों से धीरे से कहा—"देखो यह ठाकुर कैसा सुन्दर और बाँका वीर है। यह कोई राजकुमार मालूम होता है। अगर इसका विवाह फुलवा से होता तो बड़ा अच्छा होता।" फुलवा का नाम सुनकर ऊदल ने पूछा—"फुलवा कौन है?" पनिहारी ने कहा—"हमारी राजकुमारी है। देखो! उस सामनेवाली बगीची के फूलों से वह नित्य तौली जाती है। उसके रूप का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाना है।" यह सुनकर ऊदल उस बगीची की ओर चले गये। भीतर जाकर और बेंदुला को एक वृक्ष से बाँधकर वे विश्राम करने लगे। इसी समय उन्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते ढेवा भी वहाँ आ पहुँचा। उसने ऊदल को देखकर कहा—"तुम्हें क्या हो गया है! दूसरे के राज्य में आकर बिना पूछे, उसके बग़ीचे में घुसकर वृक्षों को तहस-नहस करना अच्छा नहीं। याद रक्खो! नरपति ने सुन लिया तो वह लुटवाकर भगा देगा।" ऊदल ने कहा—"क्या चिन्ता है! प्रातः होते ही चल देंगे। तुम जाकर घोड़े के रातब का प्रबन्ध करो।" यह सुनकर ढेवा वहाँ से चल दिया। उसके जाने के बाद उस बग़ीचे का माली वहाँ आया। घोड़े के पैरों से छोटे-छोटे पौधों को नष्ट हुआ देखकर माली बहुत नाराज़ हुआ और बोला—"तुमने सारी केसर की क्यारियाँ खुदवा-कर चौपट कर दी हैं। मैं जाकर अभी महाराज़ को इसकी ख़बर देता हूँ।" यह सुनकर ऊदल ने माली को बुलाकर अशर्फ़ियों का एक तोड़ा दिया और कहा—"चिन्ता न करो, हम सवेरे ही चले जावेंगे।" तोड़ा लेकर माली अपने घर को लौटा और अपनी स्त्री से बोला—"देखो! यहाँ सारी ज़िन्दगी बीत गई, लेकिन कभी ऐसा इनाम न मिला जैसा आज एक यात्री ने दिया है।"

तोड़ा देखकर मालिन ने पूछा—"यह कैसे मिला ?" माली ने सब हाल कह सुनाया। अब तोड़े के लोभ में मालिन भी बग़ीचे की ओर चली। उसने वहाँ जाकर ऊदल से कहा—'तुम किस देश के हो ? तुमने किससे पूछकर यहाँ डेरा डाला है ? हमारी सभी केसर की क्यारियाँ घोड़े के पैरों से कुचलकर नष्ट हो गई हैं। दाख, छुहारे और केशर के सुन्दर बग़ीचों में कहीं घोड़े बाँधे जाते हैं ! महाराज सुनेंगे तो हमें जीता न छोड़ेंगे।" यह सुनकर ऊदल ने कहा—"अरी ! चिल्लाती क्यों है ? ले, ये अशर्फ़ियाँ ले जाकर अपने घर बैठ। हम सबेरा होते ही चले जावेंगे।" अशर्फ़ियाँ पाकर मालिन बड़ी प्रसन्न हुई और बोली—"अन्नदाता ! आप किस देश के हैं ?" ऊदल ने कहा—"हम महोबे के रहनेवाले हैं और आल्हा के छोटे भाई हैं।" यह सुनते ही मालिन ने चौंककर कहा—"वही आल्हा जो नैनागढ़ ब्याहे हैं ?" ऊदल ने कहा—"हाँ ! तुम उन्हें क्या जानो ?" उसने हँसकर कहा—"मैं भी नैना-गढ़ के राजमाली की बेटी हूँ। मेरा नाम हिरिया है। सुनवाँ से मेरा बड़ा प्रेम था। इसलिए तुम उनकी तरह मेरे भी देवर हुए। अब तुम यहाँ से चलकर हमारे घर में विश्राम करो।" यह सुनकर ऊदल बड़े प्रसन्न हुए और तुरन्त घोड़े को लेकर उसके घर जाने को तैयार हुए। इसी समय वहाँ ढेवा पहुँचा और बोला—"ऊदल ! तुम्हें क्या हो गया है ? तुम घोड़े ख़रीदने आये हो कि देश घूमने ? अब विलम्ब न करो और झटपट डेरों पर चलो।" ऊदल ने कहा—"दादा ! अब कुछ भी क्यों न कहो, हम फुलवा को देखे बिना यहाँ से हट नहीं सकते।" यह कहकर ऊदल मालिन के घर चले गये। मालिन के घर में रहते-रहते ऊदल को तीन महीने हो गये। उनके पास का लगभग सभी द्रव्य ख़र्च हो गया। तब उन्होंने एक दिन ढेवा से पूछा—"दादा ! इतना समय हो गया, लेकिन हम फुलवा को न देख सके। अब तुम्हीं कोई उपाय बताओ।" ढेवा ने कहा—"देखो, हिरिया नित्य एक दुलरिया हार गूँथकर फुलवा को देने जाती है, आज तुम उस हार को चौलरिया करके गूँथो। तुम्हारा काम सिद्ध हो जायगा।" यह सुनकर ऊदल मालिन के घर गये और

उससे बोले—"तुम बाज़ार जाओ और हमारे घोड़े को दाना ले आओ। तब तक हम तुम्हारा हार गूँथे देते हैं।" मालिन बाज़ार चली गई और ऊदल चौलरिया हार गूँथने लगे। उन्होंने प्रत्येक सुन्दर केतकी के फूल के बाद एक सुन्दर मोती और गूँथ दिया। मालिन ने आकर जब हार देखा तब वह बोली—"यह तुमने क्या किया! यह तो चौलरिया हार है। अब मैं नया हार गूँथती हूँ तो देर हुई जाती है। इस हार को देखकर आज फुलवा मुझे ज़रूर टोकेगी।" अब वह उस हार को लेकर महलों की ओर गई। महल में जाकर हिरिया ने वह हार फुलवा को दिया। हार को देखकर फुलवा ने कहा—"आज तो यह चौलरिया है और इसमें मोती भी हैं। तुम्हें मोती कहाँ मिले? और इसमें आज कड़ी गाँठें क्यों हैं? ठीक-ठीक बताओ। हार किसने गूँथा है? मालूम होता है, आज का हार किसी पुरुष का गूँथा है।" यह सुनकर हिरिया ने कहा—"आज का हार हमारी बहन की लड़की ने, जो महोबे से आई है, गूँथा है। हमारे यहाँ और किसी पुरुष ने हार नहीं गूँथा।" यह सुनकर फुलवा ने कहा—"अच्छा! तो क्या तुम मुझे वह लड़की न दिखाओगी? झटपट उसे यहाँ लिवा ला।" यह सुनकर हिरिया दङ्ग रह गई और चुपचाप घर को चल पड़ी। घर आकर उसने सब हाल ऊदल से कह सुनाया। ऊदल ने जाकर इस विषय में ढेवा से सलाह ली। ढेवा ने कहा—"तुम औरत बनकर फुलवा को देख आओ। तुम्हारे सभी काम सिद्ध होंगे।" ढेवा से सगुन पूछकर ऊदल ने हिरिया को पाँच अशर्फ़ियाँ दीं और कहा—"तुम जाकर बाज़ार से चूड़ियाँ, बिछिया, नथ, लहँगा, दुपट्टा और कंचुकी ले आओ। हम तुम्हारे साथ औरत बनकर अभी चलते हैं।" हिरिया बाज़ार से सब सामान ख़रीद लाई। ऊदल ने ज़नाना वेष धारण किया। अब हिरिया ने नख से सिख तक सोलह शृङ्गार कर गहने-कपड़े पहना दिये। फिर हिरिया ने एक पालकी मँगाई। उसमें ऊदल को बैठाकर वह उन्हें महलों की ओर ले चली।

महलों में जाकर हिरिया ने फुलवा के द्वार पर पालकी रखवा दी और ऊदल को उतारकर वह अपने साथ ले चली। हिरिया के साथ जाते समय ऊदल ने

घूँघट काढ़ लिया। उसके साथ वहू को देखकर फुलवा ने कहा—"यही तुम्हारी वहिनौतिन है? यह घूँघट क्यों किये हुए है?" हिरिया ने कहा—"महोवे में कुछ ऐसी ही रीति है और यह शरमीली भी वहुत है।" यह सुनकर फुलवा ने चन्दन का एक पीढ़ा डलवा दिया और ऊदल से कहा—"इस पर वैठ जा।" यह सुनकर ऊदल ने हिरिया से कहा—"देखो, हम राजपूत होकर औरतों से नीचे नहीं वैठ सकते।" इस पर हिरिया ने फुलवा से कहा—"वेटी, ढिठाई क्षमा करना। महोवे की राजकुमारी इसकी वड़ी प्यारी सहेली है, यह उसके साथ पलँग पर वैठकर पंसासारी खेला करती है। इसलिए इसकी वही आदत है। तुम इसे अपने ही पास विठा लो तो अच्छा हो।" यह सुनकर फुलवा ने पलँग के नीचे का हिस्सा ख़ाली कर दिया। ऊदल ने पैताने की ओर वैठना भी ठीक न समझा। वे तुरन्त सिरहाने की ओर जा वैठे। यह देखकर फुलवा का माथा ठनका। वह समझ गई कि अवश्य कुछ दाल में काला है। इसलिए उसने पूछा—"कुछ महोवे के समाचार सुनाओ। वहाँ के राजा और प्रजाजन कैसे हैं?" ऊदल ने दवी आवाज़ में कहा—"महोवे के राजा परमाल चन्देले हैं। उनके यहाँ पारस पत्थर है और आल्हा ऊदल सरीखे वीर हैं। वहाँ की प्रजा सुखी और वड़ी राजभक्त है।" फुलवा ने कहा—"आल्हा और ऊदल का विवाह कहाँ हुआ?" ऊदल ने कहा—"आल्हा का विवाह नैनागढ़ में नैपाली राजा के यहाँ राजकुमारी सुनवाँ से हुआ है और ऊदल अभी क्वारे हैं।" इसके वाद फुलवा ने ऊदल की ओर देखकर कहा—"तुम्हारी तिल्लियाँ कड़ी क्यों हैं और तुम्हारे पैर मर्दों के से क्यों मालूम होते हैं?" ऊदल ने कहा—"राजकुमारी! हमारे पिता के यहाँ गौएँ और भैंसें वहुत हैं, जिनके चराने के समय मुझे जंगलों में घूमना फिरना पड़ता था। इसी लिए मेरे पैर ऐसे मालूम होते हैं।" यह सुनकर फुलवा ने कहा—"अव तुम आज रात को हमारे साथ भी पंसासारी खेलो। देखें, तुम्हें चन्द्रावली ने कैसा सिखाया है?" यह कहकर फुलवा ने हिरिया से कहा—"तुम रात भर के लिए अपनी वहिनौतिन को यहीं छोड़ जाओ। सवेरे लिवा ले जाना।" यह सुनकर हिरिया घर को लौट गई।

अब फुलवा ने सतखण्डे के ऊपर सुन्दर बढ़िया रत्नजटित पलंग बिछवाया और उस पर सुन्दर क़ालीन और कमख़ाब के काम की ज़रदोज़ी की चादर बिछवाई। ख़वासिन ने गिलौरीदान, इत्रदान, इलायचीदान, पीकदान, पायदान, और बिजनिया लाकर रख दी। तब फुलवा ऊदल को साथ लेकर वहाँ पहुँची और चौपड़ बिछाकर पाँसे फेंकने लगी। जब ऊदल खेलने लगे, तब फुलवा अपने हाथों से पंखा झलने लगी। इसी समय पंखे से ऊदल का आँचल उड़ा और उनकी कमर में बँधी तलवार पर फुलवा की नज़र पड़ गई। तलवार देखकर फुलवा ने कहा—"अब तुम अपने को नहीं छिपा सकते। यह तलवार क्यों बँधी है? मैं जान गई कि औरत के वेष में महोबे के छलिया उदयसिंह हैं।" यह सुनकर पहले तो ऊदल के होश उड़ गये, परन्तु बाद को सँभलकर बोले—"तुमने हमें कैसे पहिचाना?" फुलवा ने कहा—"माड़ौ की याद भूल गये, जहाँ तुमने बिजैसिन से भेद पूछकर पिता का बदला चुकाया था और बिजैसिन के साथ विश्वासघात किया था।" ऊदल ने लज्जा से सिर नीचा कर लिया। तब फुलवा ने कहा—"अच्छा! अब तुम हमारे साथ यहाँ भाँवरें डलवा लो।" ऊदल ने कहा—"नहीं, हम चोरी-चोरी विवाह नहीं कर सकते। तुम अब विश्वास रक्खो, हम बारात लाकर तुम्हें अवश्य ही ब्याहेंगे।"

फुलवा ने हँसकर कहा—"यह माड़ौ नहीं है, जहाँ लड़कर विजयी बनोगे। यहाँ हमारे भाई मकरन्दसिंह का राज्य है। नरवरगढ़ में विचित्र कलापूर्ण काठ का घोड़ा है तथा अजीता बाण, शेल शनीचर हैं जिनके कारण तुम्हें विजय मिलना बहुत कठिन है।" ऊदल ने उत्तर दिया—"ऐसी चीज़ें हमने बहुत : देख ली हैं, हमें इनकी तनिक भी चिन्ता नहीं। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि तुम्हारे साथ ज़रूर विवाह करेंगे।" ऐसी बातें करते-करते आधी रात बीत गई। यह देखकर फुलवा ने कहा—"अच्छा, अब मैं रसोई तैयार करती हूँ, आप सुख से भोजन करें।" ऊदल ने भोजन के आग्रह को अस्वीकार कर कहा—"हम क्वाँरी कन्या के हाथ का बनाया भोजन नहीं करेंगे।" इसी तरह दोनों में प्रेम की बातें होती रहीं। सवेरा होने पर मालिन पालकी लेकर पहुँची। तब ऊदल

फुलवा से विदा हुए और पालकी में बैठकर लौट आये। ढेवा ने ऊदल को देखकर कहा—"अच्छा किया! महोवे में चलकर हम सबसे कहेंगे कि ऊदल ने राजकुमारी को देखने के लिए स्त्री का वेष बनाया था।" यह सुनकर ऊदल ने लज्जित होकर कहा—"जो तुम ऐसा करोगे तो हम कटारी मारकर मर जाँयगे।" अब ऊदल कटार निकालकर अपनी छाती में भोंकने को तैयार हुए। यह देखकर ढेवा ने तुरन्त ऊदल का हाथ पकड़ लिया और कहा—"तुम तो हँसी में ही इतना चिढ़ जाते हो। विश्वास रक्खो, हम महोवे में कुछ भी न कहेंगे। परन्तु फुलवा को हमें भी दिखा दो कि वह कैसी है।" इस पर ऊदल ने कहा—"यह कौन सी बड़ी बात है? चलो! हम तुम दोनों जोगी के वेष में चलकर उसे देख आवें।" ढेवा ने तुरन्त गुदड़ी निकाल ली। झटपट दोनों ने रामानन्दी तिलक लगाये और कण्ठी-माला बाँधकर गुदड़ी पहन ली। अब गुदड़ियों में पाँचों हथियार छिपा और अपने-अपने बाजे लेकर वे गाते-बजाते चल दिये। ऊदल की बाँसुरी और ढेवा की खंजरी के ताल-सुरों से सारा नगर गूँज उठा। उनके पीछे-पीछे बाज़ार के बड़े दुकानदार उठकर चलने लगे। वे गाते-बजाते राजकूप पर आकर रुक गये। वहाँ ऊदल बाँसुरी बजाने के साथ-साथ नाचने भी लगे। यह देखकर वहाँ सैकड़ों आदमियों और औरतों की भीड़ लग गई। महल की पनिहारियाँ अपना काम छोड़-छोड़कर वहाँ तमाशा देखने लगीं। लगभग एक पहर तक तमाशा देखने के बाद महारानी चम्पावती की पनिहारी को होश आया; वह तुरन्त घट और कलश उठाकर महलों में गई।

पनिहारी को इतना अबेर करके आते देख महारानी उसे डाँटकर बोली—"अरी नमकहराम! तू अभी तक कहाँ रही? मैं मकरन्दी को बुलाकर अभी तेरा पेट फड़वाती हूँ, नहीं तो सच-सच बतला कि तू महल छोड़कर कहाँ रही।" पनिहारी ने काँपते-काँपते कहा—"अन्नदाता! ढिठाई क्षमा हो। पनघट पर दो ऐसे सुन्दर जोगी आये हैं, जिनके रूप का वर्णन नहीं हो सकता। उनके मधुर गान और मनमोहक नाच को देखकर सारा नगर इकट्ठा हो गया है। वही देखने में मुझे देर हो गई।" यह सुनकर रानी को सन्तोष हुआ और कुछ देर

बाद बोली—"अच्छा, यदि ऐसा है तो तू उन्हे यहाँ लिवा ला।" आज्ञा पाकर पनिहारी पनघट से जोगियों को लिवा लाई। जोगी जब ड्योढ़ी से गाते-बजाते निकले तब उनकी आवाज़ सुनकर महाराज नरपति ने उन्हें बुला भेजा। जोगी पनिहारी का साथ छोड़कर कचहरी में चले गये। दरबार में पहुँचकर उन दोनों ने महाराज को बायें हाथ से अभिवादन किया। शत्रुवत् व्यवहार देखकर नरपति ने नाराज़ होकर दरबारी को आज्ञा दी कि इन्हें यहाँ से निकालकर बाहर कर दे। इसी समय ऊदल ने कहा—"महाराज! अभी तक आपको कभी किसी सच्चे जोगी से भेंट करने का अवसर नहीं मिला। हम लोग दाहिने हाथ से परब्रह्म परमात्मा के नाम की माला जपा करते हैं। इसलिए उस हाथ से, जो हम लोग परमात्मा को छोड़कर किसी दूसरे को अभिवादन करें तो हमारा योग भङ्ग हो जावे और यह सारा तेज नष्ट हो जावे।" यह सुनकर राजा बड़े प्रसन्न हुए और बोले—"योगिराज, आपका नियम सच्चा है। अब आप अपराध क्षमा करके हमें भी कुछ तमाशा दिखाने की दया करें।" यह सुनकर ऊदल बाँसुरी और देवा खंजरी बजाने लगे। कुछ देर बाद जब उनके ताल-स्वर से दरबार में सन्नाटा छा गया तब ऊदल नाचने लगे। यह विचित्रता देखकर दरबार के सरदार, रईस, उमराव बड़े प्रसन्न हुए। वे लोग अपने-अपने गहने उतार-उतारकर जोगियों को देने लगे।

तमाशा बन्द होने पर नरपति ने कहा—"महाराज, शुद्ध ब्राह्मण द्वारा रसोई बनवाई गई है, चलकर भोग लगाइए।" "राजन्! रसोई करते हुए कहीं ब्राह्मण जल गया होगा तो हमें ब्रह्महत्या का पाप लगेगा। अतः हम ब्राह्मण के हाथ का भोजन न करेंगे। हाँ! क्वाँरी कन्या के हाथ का बनाया भोजन हो और वही परोसकर खिलावे तो अवश्य प्रसाद पावेंगे।" यह सुनकर नरपति ने अपने पुत्र मकरन्दी से कहा—"महलों में जाकर फुलवा से रसोई तैयार करवाओ।" मकरन्दी ने जाकर भोजन तैयार करवाये और जोगियों को बुला भेजा। शीघ्र ही दोनों जोगी महलों में जाकर आसनों पर बैठे। फुलवा

ने जब थाल परोसकर उन दोनों के सामने रक्खे तब ढेवा उसका सौन्दर्य देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। इसी समय ऊदल ने सोचा कि यदि मैं क्वाँरी कन्या के हाथ का भोजन करूँगा तो हमारे क्षत्रियत्व में कलंक लगेगा। इससे वे चटपट आँख फेर, साँस साध और हाथ-पैर ढीले करके आसन पर गिर पड़े। ऊदल को अचेत देखकर महारानी चम्पावती बोली—"अरे! ये जोगी नहीं हैं, ये तो कहीं के छलिया प्रतीत होते हैं। तभी यह छोटा जोगी हमारी बेटी के सौन्दर्य को देखकर अचेत हो गया है। मैं अभी मकरन्दी को बुलवाकर इन दोनों की खाल खिंचवाती हूँ।" यह सुनकर ढेवा गरजकर बोला—"रानी! तू और किसी के धोखे में न रहना। तेरे महलों में प्रेतात्माएँ रहती हैं, तभी छोटा जोगी अचेत हो गया है। याद रखना, यदि छोटे जोगी को कुछ हो गया तो मैं शाप देकर तेरा सत्यानाश कर दूँगा।" यह सुनकर रानी हक्की-बक्की रह गई। ऊदल को होश में लाने के लिए उसने नावते और वैद्यों को बुला भेजा परन्तु किसी के किये कुछ न हुआ। ऊदल बहाना बनाये वहीं पड़े रहे। जब वैद्य और नावते चले गये तब फुलवा ने अपनी माता से कहा—"आपकी आज्ञा हो तो मैं इस जोगी को अच्छा कर दूँ।" चम्पावती ने कहा—"बेटी! इससे अच्छा और क्या हो सकता है।" अब फुलवा हाथ में काले उड़द लेकर ऊदल के पास आई और मन्त्र के बहाने कान के पास बड़बड़ाने लगी—"देखो! यह बहानेबाज़ी छोड़कर अपने घर जाओ और बारात लाकर वीरों की भाँति विवाह करो। यदि इस समय हमारे भाई आ गये तो सब बहानेबाज़ी हवा हो जायगी और जेल में ठूँस दिये जाओगे। इसलिए हमारा कहना मानकर अब यहाँ से महोबे चले जाओ।" यह सुनकर ऊदल रामनाम लेते हुए उठ खड़े हुए और ढेवा को साथ लेकर वहाँ से चल पड़े। यह देखकर रानी ने पूछा—"बेटी! इसे क्या हो गया था?" फुलवा ने कहा—"उसकी थाली पर किसी सौभाग्यवती की छाया पड़ गई थी, तभी वह अचेत हो गया था।"

इधर बाग़ों में पहुँचकर ऊदल ने ढेवा से कहा—"दादा! यह तो काम बन गया, परन्तु अब घोड़े कैसे आ सकते हैं? द्रव्य तो सब यहीं ख़र्च हो गया।"

करते हैं।" अब आल्हा बाहर आये और रुपना को बुलवाकर बोले—"तुम झटपट मलखे को सिरसा से लिवा लाओ।" आज्ञा पाकर रुपना अपने घोड़े पर सवार हो सिरसागढ़ को रवाना हो गया। मलखे ने आल्हा की आज्ञा सुनकर तुरन्त ही कबूतरी को सजवाया और चढ़कर दशपुरवा पहुँचे। मलखे ने आल्हा के चरण छूकर कहा—"दादा! सेवक को क्यों याद किया है?" आल्हा ने ऊदल का सारा वृत्तान्त कह सुनाया और कहा—"अब तुम तुरन्त विवाह की तैयारी करो और सब जगह नेवते भेज दो।"

मलखे ने लगे हाथ निमन्त्रणपत्र लिखकर उरई, बौरीगढ़, दिल्ली, कन्नौज, नैनागढ़ और झुन्नागढ़ को हरकारे भेज दिये। फिर एक हरकारे को बुलाकर कहा—"सिरसा जाकर तुम सुलखे को परिवार-सहित महोबे लिवा लाओ, क्योंकि ऊदल का विवाह है।" हरकारा तुरन्त साँड़िनी पर सवार हो सिरसा पहुँचा। उसने सुलखे से सारा हाल कहा। सुलखे ने मन्ना गूजर को बुलाकर लश्कर को तैयार होने की आज्ञा दी और ख़ुद भी परिवार समेत तैयार हो गये। जब सब फ़ौज तैयार हो गई तब सिरसा में कूच का डंका बजा और सब फ़ौज रनिवास के डोलों के साथ महोबे को रवाना हुई। महोबे में पहुँचकर सुलखे ने मदनताल पर डेरे डाल दिये और रनिवास को महोबे के महलों में भेज दिया। इसी के दो-चार दिन बाद सभी व्यौहारी अपनी-अपनी सेनाओं समेत आने लगे। जब सब हितू व् व्यौहारी आ गये तब मलखे ने पंडित चूड़ामणि को बुलवाकर मंडप आदि के शुभ मुहूर्त्त पूछे। पंडितजी ने कहा—"इसी समय से काम शुरू होना चाहिए।" झटपट मल्हना ने आँगन में गजमोतियों का चौक पुरवाकर मंडपाच्छादन करवाया और पंडित की आज्ञा से ऊदल का तैल, पूजन आदि करवाया।

दूसरे दिन महोबे के क़िले के बुर्जों से तोपें छोड़ी गईं और नगाड़े बजने लगे। शहनाई के मधुर आलाप से महोबा गूँज उठा। शुभ मुहूर्त्त में ऊदल को पालकी में बैठाकर मल्हना ने विदा किया। अब कूच के डंके के साथ बारात चल पड़ी।

ने जब थाल परोसकर उन दोनों के सामने रक्खे तब ढेवा उसका सौन्दर्य देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। इसी समय ऊदल ने सोचा कि यदि मैं क्वाँरी कन्या के हाथ का भोजन करूँगा तो हमारे क्षत्रियत्व में कलंक लगेगा। इससे वे चटपट आँख फेर, साँस साध और हाथ-पैर ढीले करके आसन पर गिर पड़े। ऊदल को अचेत देखकर महारानी चम्पावती बोली—"अरे! ये जोगी नहीं हैं, ये तो कहीं के छलिया प्रतीत होते हैं। तभी यह छोटा जोगी हमारी बेटी के सौन्दर्य को देखकर अचेत हो गया है। मैं अभी मकरन्दी को बुलवाकर इन दोनों की खाल खिंचवाती हूँ।" यह सुनकर ढेवा गरजकर बोला—"रानी! तू और किसी के धोखे में न रहना। तेरे महलों में प्रेतात्माएँ रहती हैं, तभी छोटा जोगी अचेत हो गया है। याद रखना, यदि छोटे जोगी को कुछ हो गया तो मैं शाप देकर तेरा सत्यानाश कर दूँगा।" यह सुनकर रानी हक्की-बक्की रह गई। ऊदल को होश में लाने के लिए उसने नावते और वैद्यों को बुला भेजा परन्तु किसी के किये कुछ न हुआ। ऊदल बहाना बनाये वहीं पड़े रहे। जब वैद्य और नावते चले गये तब फुलवा ने अपनी माता से कहा—"आपकी आज्ञा हो तो मैं इस जोगी को अच्छा कर दूँ।" चम्पावती ने कहा—"बेटी! इससे अच्छा और क्या हो सकता है।" अब फुलवा हाथ में काले उड़द लेकर ऊदल के पास आई और मन्त्र के बहाने कान के पास बड़बड़ाने लगी—"देखो! यह बहानेबाज़ी छोड़कर अपने घर जाओ और बारात लाकर वीरों की भाँति विवाह करो। यदि इस समय हमारे भाई आ गये तो सब बहानेबाज़ी हवा हो जायगी और जेल में ठूँस दिये जाओगे। इसलिए हमारा कहना मानकर अब यहाँ से महोवे चले जाओ।" यह सुनकर ऊदल रामनाम लेते हुए उठ खड़े हुए और ढेवा को साथ लेकर वहाँ से चल पड़े। यह देखकर रानी ने पूछा—"बेटी! इसे क्या हो गया था?" फुलवा ने कहा—"इसकी थाली पर किसी सौभाग्यवती की छाया पड़ गई थी, तभी यह अचेत हो गया था।"

इधर बाग़ों में पहुँचकर ऊदल ने ढेवा से कहा—"दादा! यह तो काम बन गया, परन्तु अब घोड़े कैसे आ सकते हैं? द्रव्य तो सब यहीं ख़र्च हो गया।"

करते हैं।" अब आल्हा बाहर आये और रुपना को बुलवाकर बोले—"तुम झटपट मलखे को सिरसा से लिवा लाओ।" आज्ञा पाकर रुपना अपने घोड़े पर सवार हो सिरसागढ़ को रवाना हो गया। मलखे ने आल्हा की आज्ञा सुनकर तुरन्त ही कबूतरी को सजवाया और चढ़कर दशपुरवा पहुँचे। मलखे ने आल्हा के चरण छूकर कहा—"दादा! सेवक को क्यों याद किया है?" आल्हा ने ऊदल का सारा वृत्तान्त कह सुनाया और कहा—"अब तुम तुरन्त विवाह की तैयारी करो और सब जगह नेवते भेज दो।"

मलखे ने लगे हाथ निमन्त्रणपत्र लिखकर उरई, बौरीगढ़, दिल्ली, कन्नौज, नैनागढ़ और मुन्नागढ़ को हरकारे भेज दिये। फिर एक हरकारे को बुलाकर कहा—"सिरसा जाकर तुम सुलखे को परिवार-सहित महोवे लिवा लाओ, क्योंकि ऊदल का विवाह है।" हरकारा तुरन्त साँड़िनी पर सवार हो सिरसा पहुँचा। उसने सुलखे से सारा हाल कहा। सुलखे ने मन्ना गूजर को बुलाकर लश्कर को तैयार होने की आज्ञा दी और ख़ुद भी परिवार समेत तैयार हो गये। जब सब फ़ौज तैयार हो गई तब सिरसा में कूच का डंका बजा और सब फ़ौज रनिवास के डोलों के साथ महोवे को रवाना हुई। महोवे में पहुँचकर सुलखे ने मदनताल पर डेरे डाल दिये और रनिवास को महोवे के महलों में भेज दिया। इसी के दो-चार दिन बाद सभी व्यौहारी अपनी-अपनी सेनाओं समेत आने लगे। जब सब हितू व व्यौहारी आ गये तब मलखे ने पंडित चूड़ामणि को बुलवाकर मंडप आदि के शुभ मुहूर्त्त पूछे। पंडितजी ने कहा—"इसी समय से काम शुरू होना चाहिए।" झटपट मल्हना ने आँगन में गजमोतियों का चौक पुरवाकर मंडपाच्छादन करवाया और पंडित की आज्ञा से ऊदल का तैल, पूजन आदि करवाया।

दूसरे दिन महोवे के क़िले के बुर्जों से तोपें छोड़ी गई और नगाड़े बजने लगे। शहनाई के मधुर आलाप से महोबा गूँज उठा। शुभ मुहूर्त्त में ऊदल को पालकी में बैठाकर मल्हना ने विदा किया। अब कूच के डंके के साथ बारात चल पड़ी।

आठ दिन चलने के बाद जब नरवरगढ़ आठ कोस रह गया, तब आल्हा की आज्ञा से उसी जगह डेरे पड़ गये। बढ़इयों ने मेखें गाड़कर तम्बू खड़े कर दिये और राजा लोग अपने-अपने दल के साथ विश्राम करने लगे। कहते हैं कि महोवे की फ़ौज जिस स्थान पर पड़ी थी उसका क्षेत्रफल बारह मील था।

सब लोग जब नहा-धोकर ध्यान और भोजन वग़ैरह से निवृत्त हुए तब आल्हा का दरबार लगा। दरबार में पंडित चूड़ामणि से मुहूर्त्त पूछकर यह निश्चित किया गया कि रुपना बारी को एपनवारी लेकर नरवरगढ़ जाना चाहिए। इससे रुपना को बुलाकर नरवरगढ़ जाने की आज्ञा दी गई। उसने वहाँ जाने के लिए ऊदल का घोड़ा और उन्हीं की ढाल-तलवार तथा शिरपेच माँगा। मलखे ने वह सब सामान उसके हवाले किया। रुपना तुरन्त वीर-वेष में सजकर और एपनवारी साथ लेकर नरवरगढ़ की ओर चला। महल की ड्योढ़ी पर रुपना के पहुँचने पर दरवानी ने उससे पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ से किसलिए आये हो?" रुपना ने कहा—"महोवे के आल्हा के छोटे भाई उदयसिंह की बारात तुम्हारी राजकुमारी फुलवा को व्याहने आई है और मैं एपनवारी लेकर आया हूँ। तुम जाकर महाराज से कहो कि वे झटपट हमारा नेग भेज दें।" यह सुनकर दरवानी भीतर जाने लगा तब रुपना ने उसे बुलाकर फिर कहा—"देखो, हमारा नेग यह है कि इस दरवाज़े पर ख़ूब खाँड़ा चले जिससे यहाँ घुटनों तक ख़ून की कीच हो जाय।" यह सब सन्देशा दरवानी ने जाकर महाराज नरपति को कचहरी में सुनाया। बारात का तथा खाँड़े का नाम सुनकर महाराज बहुत क्रुद्ध हुए और सिलहट के सामन्त विजयसिंह से बोले—"तुम जाकर अभी उस दुष्ट बारी का सिर काटकर फेंक दो।" महाराज यह कह ही रहे थे कि वे दुला पर चढ़ा हुआ रुपना वहीं जा पहुँचा। उसने एपनवारी को राजगद्दी के पास फेंक दिया। इसी समय दरबारियों ने उस पर हमला कर दिया। रुपना इसके लिए पहले से ही तैयार था। वह दोनों हाथों से दोनों तलवारें चलाने लगा। रुपना ने इस प्रकार पाँच सौ जवानों को तलवार के घाट उतारा, फिर भाले की नोक से एपनवारी को उठाकर वह दरबार से चलता

तब सुनवाँ पूजा की सामग्री लेकर भगवती के मन्दिर में गई। वहाँ उसने विधि से पूजन करके अपना माथा चढ़ाने के लिए जब कटार निकाली, तब तुरन्त भगवती ने प्रकट होकर उसके हाथ पकड़े और अमृत देकर कहा—"इसे ले जाकर सेना को सचेत कर लो और मैं नरवरगढ़ के शेल शनीचर को अपंग किये देती हूँ। तू शान्त हो, तेरे सब कार्य सिद्ध होंगे।" सुनवाँ ने अमृत लेकर जगदम्बा के चरणों में सिर रख दिया। आशीर्वाद पाकर वह महलों को लौट पड़ी। उसने वह अमृत ढेवा को दिया और कहा—"तुम तुरन्त जाओ। तुम्हारे सब काम भगवती पूरे करेंगी।"

तीन दिन-रात चलकर ढेवा नरवरगढ़ पहुँचा। उसने अमृत देकर सारा हाल आल्हा से कहा। आल्हा ने प्रसन्न होकर मलखे को बुला भेजा। उनके आने पर आल्हा पचशावद पर, मलखे पपीहा पर और ढेवा मनुरथा पर सवार होकर रणभूमि में पहुँचे। आल्हा ने अचेत पड़ी सेना पर वह अमृत छिड़ककर उसे सचेत कर लिया। जब सेना होश में आ गई, तब आल्हा उसे साथ लेकर गढ़ की ओर चले।

यह खबर मकरन्दी ने सुनी तो वह भी अपनी सेना तथा हिरिया को साथ* लेकर वहाँ आ पहुँचा। मोर्चे पर आकर मकरन्दी ने अपने सैनिकों को आक्रमण करने का हुक्म दिया। अब क्या था, खटाखट तलवारें चलने लगीं। कहते हैं कि केवल चार घड़ी के युद्ध में नरवरगढ़ की सेना आधी रह गई। अपनी यह हालत देखकर तथा महोबियों की बेंड़ी मार से डरकर नरवरगढ़ के सैनिक भागने लगे। यह देख मकरन्दी आगे बढ़कर मलखे के सामने आया। इसी समय हिरिया मालिन तन्त्र-विद्या से मलखे को अचेत करने का उपाय करने लगी; पर उनका बाल भी बाँका न हुआ। मलखे ने जब हिरिया को जादू फेंकने में लगा देखा, तब उन्होंने आगे बढ़कर हिरिया के

---

* काठ का घोड़ा बलहीन हो गया था और बाण तथा शेल शनीचर ग़ायब हो गये थे। इसलिए मकरन्दी साथ में इन चीज़ों को न ले जा सका।

आठ दिन चलने के बाद जब नरवरगढ़ आठ कोस रह गया, तब आल्हा की आज्ञा से उसी जगह डेरे पड़ गये। बढ़इयों ने मेखें गाड़कर तम्बू खड़े कर दिये और राजा लोग अपने-अपने दल के साथ विश्राम करने लगे। कहते हैं कि महोबे की फ़ौज जिस स्थान पर पड़ी थी उसका क्षेत्रफल बारह मील था।

सब लोग जब नहा-धोकर ध्यान और भोजन वग़ैरह से निवृत्त हुए तब आल्हा का दरबार लगा। दरबार में पंडित चूड़ामणि से मुहूर्त्त पूछकर यह निश्चित किया गया कि रुपना बारी को एपनवारी लेकर नरवरगढ़ जाना चाहिए। इससे रुपना को बुलाकर नरवरगढ़ जाने की आज्ञा दी गई। उसने वहाँ जाने के लिए ऊदल का घोड़ा और उन्हीं की ढाल-तलवार तथा शिरपेच माँगा। मलखे ने वह सब सामान उसके हवाले किया। रुपना तुरन्त वीर-वेष में सजकर और एपनवारी साथ लेकर नरवरगढ़ की ओर चला। महल की ड्योढ़ी पर रुपना के पहुँचने पर दरबानी ने उससे पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ से किसलिए आये हो?" रुपना ने कहा—"महोबे के आल्हा के छोटे भाई उदयसिंह की बारात तुम्हारी राजकुमारी फुलवा को व्याहने आई है और मैं एपनवारी लेकर आया हूँ। तुम जाकर महाराज से कहो कि वे झटपट हमारा नेग भेज दें।" यह सुनकर दरबानी भीतर जाने लगा तब रुपना ने उसे बुलाकर फिर कहा—"देखो, हमारा नेग यह है कि इस दरवाज़े पर ख़ूब खाँड़ा चले जिससे यहाँ घुटनों तक ख़ून की कीच हो जाय।" यह सब सन्देशा दरबानी ने जाकर महाराज नरपति को कचहरी में सुनाया। बारात का तथा खाँड़े का नाम सुनकर महाराज बहुत क्रुद्ध हुए और सिलहट के सामन्त विजयसिंह से बोले—"तुम जाकर अभी उस दुष्ट बारी का सिर काटकर फेंक दो।" महाराज यह कह ही रहे थे कि बेंदुला पर चढ़ा हुआ रुपना वहीं जा पहुँचा। उसने एपनवारी को राजगद्दी के पास फेंक दिया। इसी समय दरबारियों ने उस पर हमला कर दिया। रुपना इसके लिए पहले से ही तैयार था। वह दोनों हाथों से दोनों तलवारें चलाने लगा। रुपना ने इस प्रकार पाँच सौ जवानों को तलवार के घाट उतारा, फिर भाले की नोक से एपनवारी को उठाकर वह दरबार से चलता

तब सुनवाँ पूजा की सामग्री लेकर भगवती के मन्दिर में गई। वहाँ उसने विधि से पूजन करके अपना माथा चढ़ाने के लिए जब कटार निकाली, तब तुरन्त भगवती ने प्रकट होकर उसके हाथ पकड़े और अमृत देकर कहा—"इसे ले जाकर सेना को सचेत कर लो और मैं नरवरगढ़ के शेल शनीचर को अपंग किये देती हूँ। तू शान्त हो; तेरे सब कार्य सिद्ध होंगे।" सुनवाँ ने अमृत लेकर जगदम्बा के चरणों में सिर रख दिया। आशीर्वाद पाकर वह महलों को लौट पड़ी। उसने वह अमृत ढेवा को दिया और कहा—"तुम तुरन्त जाओ। तुम्हारे सब काम भगवती पूरे करेंगी।"

तीन दिन-रात चलकर ढेवा नरवरगढ़ पहुँचा। उसने अमृत देकर सारा हाल आल्हा से कहा। आल्हा ने प्रसन्न होकर मलखे को बुला भेजा। उनके आने पर आल्हा पचशावद पर, मलखे पपीहा पर और ढेवा मनुरथा पर सवार होकर रणभूमि में पहुँचे। आल्हा ने अचेत पड़ी सेना पर वह अमृत छिड़ककर उसे सचेत कर लिया। जब सेना होश में आ गई, तब आल्हा उसे साथ लेकर गढ़ की ओर चले।

यह खबर मकरन्दी ने सुनी तो वह भी अपनी सेना तथा हिरिया को साथ* लेकर वहाँ आ पहुँचा। मोर्चे पर आकर मकरन्दी ने अपने सैनिकों को आक्रमण करने का हुक्म दिया। अब क्या था, खटाखट तलवारें चलने लगीं। कहते हैं कि केवल चार घड़ी के युद्ध में नरवरगढ़ की सेना आधी रह गई। अपनी यह हालत देखकर तथा महोबियों की बेंड़ी मार से डरकर नरवरगढ़ के सैनिक भागने लगे। यह देख मकरन्दी आगे बढ़कर मलखे के सामने आया। इसी समय हिरिया मालिन तन्त्र-विद्या से मलखे को अचेत करने का उपाय करने लगी; पर उनका बाल भी बाँका न हुआ। मलखे ने जब हिरिया को जादू फेंकने में लगा देखा, तब उन्होंने आगे बढ़कर हिरिया के

---

* काठ का घोड़ा बलहीन हो गया था और बाण तथा शेल शनीचर गायब हो गये थे। इसलिए मकरन्दी साथ में इन चीज़ों को न ले जा सका।

बालों का जूड़ा काट दिया। जूड़ा कट जाने से उसकी तन्त्र-विद्या निष्फल हो गई। यह देखकर मकरन्दी हक्का-बक्का रह गया। इसी समय ढाल की औझड़ मारकर मकरन्दी को घोड़े से गिराकर बन्दी कर लिया। यह देखकर नरवरगढ़ की सब फ़ौज भाग गई और आल्हा जीतकर डेरों को लौटे।

पुत्र के क़ैद होने पर नरपति दीन वेष में आल्हा के पास पहुँचे और मकरन्दी को छोड़ देने के लिए विनय करने लगे। आल्हा ने उनसे कहा—"पहले आप हमारी ओर के सब आदमियों को छोड़ दें, तब हम मकरन्दी को छोड़ेंगे।" यह सुनकर नरपति ने ऊदल और अन्य सब राजाओं तथा सैनिकों को छुड़वा दिया। फिर नरपति ने विवाह करने की प्रतिज्ञा करके अपने पुत्र मकरन्दी को छुड़वाया। बेटे को साथ लेकर वे महलों को लौटे और विवाह की तैयारियाँ करने लगे। इसी समय वहाँ माहिल पहुँचा। नरपति ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। माहिल ने कुछ देर बाद राजा से कहा—"राजन्! आप बनाफरों के यहाँ जीते जी सम्बन्ध न करना। हाँ, यदि युद्ध में आप उनसे नहीं जीत सकते तो भाँवरों के समय केवल घर के ख़ास ख़ास आदमियों को बुलवा लीजिए। जब भाँवरें पड़ने लगें तब अपने यहाँ के वीरों से उन पर हमला करवाकर उन्हें मरवा डालिए।" माहिल की यह सूझ नरपति के मन में समा गई। उन्होंने तुरन्त मकरन्दी को समझाकर बारात में भेजा। उसने जाकर आल्हा से कहा—"भाँवरों का शुभ मुहूर्त है। इसलिए दूलह के साथ घर के ख़ास-ख़ास आदमी भी चलें, जिससे झटपट सब काम हो जाय।" यह सुनकर आल्हा ने अपने ख़ास-ख़ास हितू राजाओं और भाइयों को साथ लेकर नरवरगढ़ की ओर कूच किया। ऊदल की पालकी और आल्हा आदि जब ड्योढ़ी पर पहुँचे तब नरपति ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और बड़े सम्मान के साथ उन्हें भीतर लिवा ले गये।

शीघ्र ही कन्यादान और होम आदि से निबटकर पण्डितों ने भाँवरों के लिए ऊदल और फुलवा को उठाया। कहते हैं कि पहली भाँवर पड़ने ही को थी कि मकरन्दी ने तलवार के वार से ऊदल को मार डालना चाहा, परन्तु मलखे ने

सुलखान का विवाह अर्थात् कुमायूँ गढ़ का युद्ध

बनाफरों की वीरता की धाक चारों तरफ़ छाई हुई थी। उस समय कोई भी राजा उनसे लोहा लेने का साहस नहीं करता था। माहिल के उकसाने पर जब राजा लोग इनसे घृणा करते या नीच समझकर इनके साथ अपनी कन्या का विवाह नहीं करते थे, तब आल्हा, ऊदल-मलखे और सुलखे चारों भाई उनके राज्य पर चढ़कर उन्हें उचित दण्ड देते थे। यह बात हम अवश्य कहेंगे कि बनाफर भाई भी कभी-कभी किसी राजकुमारी पर आसक्त हो जाते थे तो उस राजकुमारी को ज़बरदस्ती ब्याह लेते थे।

जेठ के दिन थे। यात्री लोग बदरीनाथ, केदारनाथ की यात्रा को बराबर जा रहे थे। जो यात्री इतनी दूर नहीं जा सकते थे वे दशहरे पर गङ्गास्नान करने के लिए बिठूर, जाजमऊ, काशी और हरिद्वार आदि को जा रहे थे। यह देखकर मलखे के छोटे भाई सुलखे ने हरिद्वार से गङ्गाजल भरकर केदारनाथ महादेव पर जाकर चढ़ाने का विचार किया। इससे वे तुरन्त ही हिरौंजिन पर चढ़कर महोबे को चले। राजदरबार में जाकर सुलखे ने परमाल के चरण छुए। उन्होंने आशीर्वाद देकर पूछा—"बेटा, कहो कुशल तो है! तुम आज चिन्तित से कैसे हो?" सुलखे ने कहा—"ददुआ! ढिठाई क्षमा हो। सेवक बदरीनाथ की यात्रा को तैयार है और आपकी आज्ञा चाहता है।" परमाल ने कहा—"बेटा! तुम्हारी उम्र अभी थोड़ी है। वहाँ का पहाड़ी पानी तुम्हारे स्वास्थ्य को ख़राब कर देगा। इसलिए तुम चुपचाप जाकर घर बैठो।" सुलखे ने हाथ जोड़कर कहा—"ददुआ! मैं हरिद्वार से जल लेकर केदारेश्वर पर चढ़ाऊँगा और बदरीनाथजी के दर्शन करके जीवन को सफल करूँगा। यदि आप मुझे आज्ञा न देंगे तो मैं अन्न-जल त्याग दूँगा।" यह सुनकर परमाल ने ढेवा को बुलाकर उनके साथ कर दिया और कहा—"जाओ, रास्ते में किसी से झगड़ा न कर बैठना।" परमाल की आज्ञा मानकर वे दोनों सिरसा को

बालों का जूड़ा काट दिया। जूड़ा कट जाने से उसकी तन्त्र-विद्या निष्फल हो गई। यह देखकर मकरन्दी हक्का-बक्का रह गया। इसी समय ढाल की औभड़ मारकर मकरन्दी को घोड़े से गिराकर बन्दी कर लिया। यह देखकर नरवरगढ़ की सब फ़ौज भाग गई और आल्हा जीतकर डेरों को लौटे।

पुत्र के क़ैद होने पर नरपति दीन वेष में आल्हा के पास पहुँचे और मकरन्दी को छोड़ देने के लिए विनय करने लगे। आल्हा ने उनसे कहा—"पहले आप हमारी ओर के सब आदमियों को छोड़ दें, तब हम मकरन्दी को छोड़ेंगे।" यह सुनकर नरपति ने ऊदल और अन्य सब राजाओं तथा सैनिकों को छुड़वा दिया। फिर नरपति ने विवाह करने की प्रतिज्ञा करके अपने पुत्र मकरन्दी को छुड़वाया। बेटे को साथ लेकर वे महलों को लौटे और विवाह की तैयारियाँ करने लगे। इसी समय वहाँ माहिल पहुँचा। नरपति ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। माहिल ने कुछ देर बाद राजा से कहा—"राजन्! आप बनाफरों के यहाँ जीते जी सम्बन्ध न करना। हाँ, यदि युद्ध में आप उनसे नहीं जीत सकते तो भाँवरों के समय केवल घर के ख़ास ख़ास आदमियों को बुलवा लीजिए। जब भाँवरें पड़ने लगें तब अपने यहाँ के वीरों से उन पर हमला करवाकर उन्हें मरवा डालिए।" माहिल की यह सूझ नरपति के मन में समा गई। उन्होंने तुरन्त मकरन्दी को समझाकर बारात में भेजा। उसने जाकर आल्हा से कहा—"भाँवरों का शुभ मुहूर्त है। इसलिए दूलह के साथ घर के ख़ास-ख़ास आदमी भी चलें, जिससे झटपट सब काम हो जाय।" यह सुनकर आल्हा ने अपने ख़ास-ख़ास हितू राजाओं और भाइयों को साथ लेकर नरवरगढ़ की ओर कूच किया। ऊदल की पालकी और आल्हा आदि जब ड्योढ़ी पर पहुँचे तब नरपति ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और बड़े सम्मान के साथ उन्हें भीतर लिवा ले गये।

शीघ्र ही कन्यादान और होम आदि से निबटकर पण्डितों ने भाँवरों के लिए ऊदल और फुलवा को उठाया। कहते हैं कि पहली भाँवर पड़ने ही को थी कि मकरन्दी ने तलवार के वार से ऊदल को मार डालना चाहा, परन्तु मलखे ने

सुलखान का विवाह अर्थात् कुमायूँ गढ़ का युद्ध

वनाफरों की वीरता की धाक चारों तरफ़ छाई हुई थी। उस समय कोई भी राजा उनसे लोहा लेने का साहस नहीं करता था। माहिल के उकसाने पर जब राजा लोग इनसे घृणा करते या नीच समझकर इनके साथ अपनी कन्या का विवाह नहीं करते थे, तब आल्हा, ऊदल-मलखे और सुलखे चारों भाई उनके राज्य पर चढ़कर उन्हें उचित दण्ड देते थे। यह बात हम अवश्य कहेंगे कि वनाफर भाई भी कभी-कभी किसी राजकुमारी पर आसक्त हो जाते थे तो उस राजकुमारी को ज़बरदस्ती व्याह लेते थे।

जेठ के दिन थे। यात्री लोग बदरीनाथ, केदारनाथ की यात्रा को बराबर जा रहे थे। जो यात्री इतनी दूर नहीं जा सकते थे वे दशहरे पर गङ्गास्नान करने के लिए बिठूर, जाजमऊ, काशी और हरिद्वार आदि को जा रहे थे। यह देखकर मलखे के छोटे भाई सुलखे ने हरिद्वार से गङ्गाजल भरकर केदारनाथ महादेव पर जाकर चढ़ाने का विचार किया। इससे वे तुरन्त ही हिरौंजिन पर चढ़कर महोबे को चले। राजदरबार में जाकर सुलखे ने परमाल के चरण छुए। उन्होंने आशीर्वाद देकर पूछा—"बेटा, कहो कुशल तो है? तुम आज चिन्तित से कैसे हो?" सुलखे ने कहा—"ददुआ! ढिठाई क्षमा हो। सेवक बदरीनाथ की यात्रा को तैयार है और आपकी आज्ञा चाहता है।" परमाल ने कहा—"बेटा! तुम्हारी उम्र अभी थोड़ी है। वहाँ का पहाड़ी पानी तुम्हारे स्वास्थ्य को ख़राब कर देगा। इसलिए तुम चुपचाप जाकर घर बैठो।" सुलखे ने हाथ जोड़कर कहा—"ददुआ! मैं हरिद्वार से जल लेकर केदारेश्वर पर चढ़ाऊँगा और बदरीनाथजी के दर्शन करके जीवन को सफल करूँगा। यदि आप मुझे आज्ञा न देंगे तो मैं अन्न-जल त्याग दूँगा।" यह सुनकर परमाल ने ढेवा को बुलाकर उनके साथ कर दिया और कहा—"जाओ, रास्ते में किसी से झगड़ा न कर बैठना।" परमाल की आज्ञा मानकर वे दोनों सिरसा को

लौटे। ढेवा ने मलखे की कचहरी में जाकर कहा—"सुलखे बदरीनाथ-यात्रा के लिए महाराज की आज्ञा लेकर तैयार हो गये हैं। अब आप उनके ख़र्च का प्रबन्ध कर दें।"

सुलखे को अपने साथ ले जाकर मलखे माता के पास पहुँचे। वहाँ सुलखे को मलखे और तिलका दोनों ने बहुतेरा समझाया, परन्तु सुलखे ने यात्रा का विचार न छोड़ा। अन्त में लाचार होकर मलखे ने उन्हें साठ हज़ार सेना और बारह खच्चर अशर्फ़ियाँ देकर विदा किया। सुलखे ने फिर महोबे जाकर मल्हना से आज्ञा ली और आशीर्वाद पाकर चल पड़े।

कहते हैं कि एक पखवारे में वे लोग हरिद्वार पहुँचे। वहाँ सब लोगों ने हरि की पैड़ियों पर गंगा-स्नान किया। सुलखे ने गंगा-स्नान करके एक काँच की शीशी में गङ्गाजल भर लिया और उस शीशी को अपनी काँवर में रख लिया। चलते समय सुलखे ने वहाँ के ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। कहते हैं कि हरिद्वार से केदारनाथ तक सुलखे उस काँवर को अपने कन्धे पर रखकर बड़ी पवित्रता के साथ ले गये। वह काँवर चाँदी और सोने के पत्तरों से जड़ी हुई थी। उसमें रेशम के फुँदनों में सच्चे मोती बन्दनवार की भाँति लटक रहे थे। यात्री के वेष में सुलखे बड़े धर्मात्मा और साधु से जान पड़ते थे।

ठीक स्थान पर पहुँचकर डेरे डाल दिये गये। दूसरे दिन स्नान करके सुलखे गङ्गाजल लेकर मन्दिर में गये। उन्होंने केदारेश्वरजी को गङ्गाजल से स्नान कराया और सुगन्धित पुष्प तथा बिल्वपत्र चढ़ाकर स्वर्णमुद्रा भेंट की। धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर सुलखे ने स्तोत्र पढ़ा और प्रणाम करके लौट आये। पूजा कर चुकने पर सब लोगों ने अन्य मन्दिरों में जाकर दर्शन पूजन कर भेंट चढ़ाई।

इस प्रकार सब लोग जब पूजन आदि कर चुके, तब लश्कर में कूच का डंका बजा। तुरन्त सब लोग तैयार होकर वहाँ से चल पड़े। दैवयोग से सुलखे की सेना रास्ते में भटक गई और कुमायूँगढ़ में जा पहुँची। भटकते हुए सुलखे

यह देखकर रनिवास में कोलाहल मच गया। महारानी ने चीखकर कहा—"बाँदी! तू झटपट दरबार में जाकर इन छलियों की सूचना दे और इन्हें क़ैद करवा दे। ये दोनों जोगी के वेष में कहीं के राजकुमार हैं।" यह सुनकर ढेवा ने गरजकर उत्तर दिया—"रानी! तू अपनी बेटी के रूप और अपने वैभव के मद में चूर है। तेरी पुत्री ने छोटे जोगी को पान में तमाखू डालकर खिला दी है। इससे यदि जोगी मर गया तो मैं शाप देकर तेरे महल और वंश को भस्म कर दूँगा। तू राह चलते साधारण जोगियों के धोखे न रहना, हम लोग बाबा गोरखनाथ के शिष्य हैं। अलख! बाबा गोरखनाथ! अलख! अलख!"

इसी समय सुलखे की मूर्च्छा टूटी और डरी हुई रानी के प्राणों में प्राण आये। पद्मावती ने तुरन्त उन जोगियों को भिक्षा देकर विदा किया।

ढेवा और सुलखे ने डेरों में जाकर अपना स्वरूप बदला और असली वेष में आकर कूच का डङ्का बजवा दिया। एक महीने बाद कलावती के विरह में दीवाने सुलखे महोबे आ पहुँचे। मल्हना ने जब सुलखे को रोगी सा देखा, तब ढेवा से इसका कारण पूछा। ढेवा ने सारी कथा कह सुनाई और यह भी कहा कि अब यदि उस राजकुमारी से विवाह न हुआ तो सुलखे का जीवन अधिक नहीं। यह सुनकर मल्हना ने मलखे, आल्हा और ऊदल को बुला भेजा। उन तीनों पुत्रों के आने पर मल्हना ने कहा—"तुम लोग सुलखे के विवाह की तैयारियाँ करो और व्यौहारी राजाओं को पंडित से मुहूर्त पूछकर निमन्त्रणपत्र भेज दो।" इस पर मलखे ने कहा—'अम्माँ! पहले यह भी तो पता चले कि बारात कहाँ जायगी।" मल्हना ने कहा—"बारात कुमायूँ-गढ़ के राजा रतनसिंह के यहाँ जावेगी।" यह सुनकर मलखे ने कहा—"कुमायूँ में जाकर पर्वतियों से लड़ना हमारी शक्ति के बाहर है। हमें यह विवाह पसन्द नहीं।" इस पर ऊदल ने कहा—"आप बारात में न जावें, मैं अकेला जाकर सुलखे का विवाह कर लाऊँगा।" यह सुनकर आल्हा ने ढेवा से इस विवाह का कारण पूछा। ढेवा ने उनसे सारा वृत्तान्त कह सुनाया, तब आल्हा ने उस सम्बन्ध को मंजूर कर लिया। आल्हा की स्वीकृति पर मलखे चुप रह

लौटे। ढेवा ने मलखे की कचहरी में जाकर कहा—"सुलखे बदरीनाथ-यात्रा के लिए महाराज की आज्ञा लेकर तैयार हो गये हैं। अब आप उनके ख़र्च का प्रबन्ध कर दें।"

सुलखे को अपने साथ ले जाकर मलखे माता के पास पहुँचे। वहाँ सुलखे को मलखे और तिलका दोनों ने बहुतेरा समझाया, परन्तु सुलखे ने यात्रा का विचार न छोड़ा। अन्त में लाचार होकर मलखे ने उन्हें साठ हज़ार सेना और बारह खच्चर अशर्फ़ियाँ देकर विदा किया। सुलखे ने फिर महोबे जाकर मल्हना से आज्ञा ली और आशीर्वाद पाकर चल पड़े।

कहते हैं कि एक पखवारे में वे लोग हरिद्वार पहुँचे। वहाँ सब लोगों ने हरि की पैड़ियों पर गंगा-स्नान किया। सुलखे ने गंगा-स्नान करके एक काँच की शीशी में गङ्गाजल भर लिया और उस शीशी को अपनी काँवर में रख लिया। चलते समय सुलखे ने वहाँ के ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। कहते हैं कि हरिद्वार से केदारनाथ तक सुलखे उस काँवर को अपने कन्धे पर रखकर बड़ी पवित्रता के साथ ले गये। वह काँवर चाँदी और सोने के पत्तरों से जड़ी हुई थी। उसमें रेशम के फुँदनों में सच्चे मोती बन्दनवार की भाँति लटक रहे थे। यात्री के वेष में सुलखे बड़े धर्मात्मा और साधु से जान पड़ते थे।

ठीक स्थान पर पहुँचकर डेरे डाल दिये गये। दूसरे दिन स्नान करके सुलखे गङ्गाजल लेकर मन्दिर में गये। उन्होंने केदारेश्वरजी को गङ्गाजल से स्नान कराया और सुगन्धित पुष्प तथा बिल्वपत्र चढ़ाकर स्वर्णमुद्रा भेंट की। धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर सुलखे ने स्तोत्र पढ़ा और प्रणाम करके लौट आये। पूजा कर चुकने पर सब लोगों ने अन्य मन्दिरों में जाकर दर्शन पूजन कर भेंट चढ़ाई।

इस प्रकार सब लोग जब पूजन आदि कर चुके, तब लश्कर में कूच का डंका बजा। तुरन्त सब लोग तैयार होकर वहाँ से चल पड़े। दैवयोग से सुलखे की सेना रास्ते में भटक गई और कुमायूँ गढ़ में जा पहुँची। भटकते हुए सुलखे

यह देखकर रनिवास में कोलाहल मच गया। महारानी ने चीखकर कहा—"बाँदी! तू झटपट दरबार में जाकर इन छलियों की सूचना दे और इन्हें क़ैद करवा दे। ये दोनों जोगी के वेष में कहीं के राजकुमार हैं।" यह सुनकर ढेवा ने गरजकर उत्तर दिया—"रानी! तू अपनी बेटी के रूप और अपने वैभव के मद में चूर है। तेरी पुत्री ने छोटे जोगी को पान में तमाखू डालकर खिला दी है। इससे यदि जोगी मर गया तो मैं शाप देकर तेरे महल और वंश को भस्म कर दूँगा। तू राह चलते साधारण जोगियों के धोखे न रहना, हम लोग बाबा गोरखनाथ के शिष्य हैं। अलख! बाबा गोरखनाथ! अलख! अलख!"

इसी समय सुलखे की मूर्च्छा टूटी और डरी हुई रानी के प्राणों में प्राण आये। पद्मावती ने तुरन्त उन जोगियों को भिक्षा देकर विदा किया।

ढेवा और सुलखे ने डेरों में जाकर अपना स्वरूप बदला और असली वेष में आकर कूच का डङ्का बजवा दिया। एक महीने बाद क़लावती के विरह में दीवाने सुलखे महोबे आ पहुँचे। मल्हना ने जब सुलखे को रोगी सा देखा, तब ढेवा से इसका कारण पूछा। ढेवा ने सारी कथा कह सुनाई और यह भी कहा कि अब यदि उस राजकुमारी से विवाह न हुआ तो सुलखे का जीवन अधिक नहीं। यह सुनकर मल्हना ने मलखे, आल्हा और ऊदल को बुला भेजा। उन तीनों पुत्रों के आने पर मल्हना ने कहा—"तुम लोग सुलखे के विवाह की तैयारियाँ करो और व्यौहारी राजाओं को पंडित से मुहूर्त पूछकर निमन्त्रणपत्र भेज दो।" इस पर मलखे ने कहा—'अम्माँ! पहले यह भी तो पता चले कि बारात कहाँ जायगी।" मल्हना ने कहा—"बारात कुमायूँ-गढ़ के राजा रतनसिंह के यहाँ जावेगी।" यह सुनकर मलखे ने कहा—"कुमायूँ में जाकर पर्वतियों से लड़ना हमारी शक्ति के बाहर है। हमें यह विवाह पसन्द नहीं।" इस पर ऊदल ने कहा—"आप बारात में न जावें, मैं अकेला जाकर सुलखे का विवाह कर लाऊँगा।" यह सुनकर आल्हा ने ढेवा से इस विवाह का कारण पूछा। ढेवा ने उनसे सारा वृत्तान्त कह सुनाया, तब आल्हा ने उस सम्बन्ध को मंजूर कर लिया। आल्हा की स्वीकृति पर मलखे चुप रह

गये और विवाह की तैयारियाँ करने लगे। आल्हा ने सभी व्यौहारियों को निमन्त्रणपत्र भेजे। फिर एक हरकारे को बुलाकर उन्होंने एक पत्र उसे दिया और कहा—"यह पत्र ले जाकर तुम कुमायूँगढ़ के राजा रतनसिंह को देना और इसका जवाब लेकर शीघ्र लौटना।" आल्हा ने उस पत्र में अपना और सुलखे के विवाह का हाल लिखा था और यह भी लिखा था—"यदि तुम राज़ी से विवाह न करोगे तो हम तुम्हें क़ैद कर लेंगे और तुमसे ज़बरदस्ती कन्यादान करवा लेंगे।"

हरकारा पन्द्रह दिनों में कुमायूँ पहुँचा। उसने वहाँ के राजदरबार में जाकर महाराज रतनसिंह को प्रणाम किया फिर पत्र देकर वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। उस पत्र को पढ़ते ही रतनसिंह क्रोध से बौखला गये। उन्होंने कहा—"जाओ, तुम आल्हा से कहना कि हमें यह सम्बन्ध किसी प्रकार मंज़ूर नहीं। अभी किसी योद्धा से आल्हा का सामना नहीं हुआ है। जब वे हमारे यहाँ आवेंगे तब उन्हें लेने के देने पड़ जायेंगे और वे प्राणों से हाथ धो बैठेंगे।" यही बात उन्होंने पत्र के उत्तर में भी लिख दी और धावन को विदा किया। महोबे में धावन ने लौटकर सब बातें आल्हा को सुनाईं और पत्र भी दे दिया। पत्र पढ़कर आल्हा चुप रह गये। यह देखकर मलखे ने कहा—"दादा! ओखली में सिर रखकर चोट का विचार करना मूर्खता है। बेखटके बारात की तैयारी कीजिए।"

निश्चित समय पर सभी व्यौहारी अपनी-अपनी फ़ौजें लेकर महोबे में आ पहुँचे। सब लोग आकर जब एकत्र हो गये तब सुलखे का विधि से संस्कार करवाकर आल्हा ने कूच का डङ्का बजवाया। अपने-अपने हाथियों और घोड़ों पर सवार होकर सब लोग बारात में चले

एक महीने का कठिन मार्ग चलकर बारात कुमायूँ राज्य में पहुँची। कुमायूँ-गढ़ जब तीन कोस रह गया तब आल्हा ने वहीं डेरे लगवा दिये। सब क्षत्रिय अपने-अपने ख़ेमे में विश्राम तथा आवश्यक कार्य करने लगे। प्रत्येक राजा के ख़ेमे में रसोई बनने लगी और सब लोग दिशा-फ़रागत से निबटकर

स्नान, ध्यान से निवृत्त हो आल्हा के दरबार में पहुँचे। दरबार में नर्तकियों का नृत्य हुआ। क्षत्रिय लोग पान खाकर और इत्र लगाकर नाच देखने लगे।

इस प्रकार वह दिन बीता। दूसरे दिन दोपहर को जब फिर दरबार लगा तब ऊदल ने आल्हा से एपनवारी भेजवाने को कहा। शीघ्र ही पण्डित चूड़ामणि से पूछकर रुपना बारी बुलाया गया। उसने आकर कहा—"महाराज! मुझे पपीहा घोड़ा, ऊदल की ढाल-तलवार और ब्रह्मानन्द का भाला मिल जाय तो मैं एपनवारी लेकर जाऊँ।" आल्हा ने तुरन्त वे सब चीज़ें मँगवाकर रुपना को दे दीं। वह शीघ्र ही एपनवारी लेकर गढ़ की ओर गया।

नगर के द्वार को लाँघकर जब रुपना किले के द्वार पर पहुँचा तब दरबानी ने उसे रोककर पूछा—"तुम कहाँ से और क्यों आये हो?" रुपना ने कहा—"हम महोबे की बारात से एपनवारी लेकर आये हैं। अपने महाराज से कहो कि हमारा नेग झटपट भेज दें।" दरबानी ने पूछा—"तुम्हारा नेग क्या होता है?" रूपन ने कहा—

चार घड़ी भर चले सिरोहो, ड्योढ़ी बहै रक्त की धार।

दरबानी जाकर महाराज से यह सब हाल कह ही रहा था कि रुपना पपीहा पर चढ़ा हुआ ही दरबार में पहुँचा। उसने तुरन्त एपनवारी राजा के पास फेंक दी और कहा—"महाराज! मेरा नेग शीघ्र मँगवा दीजिए।" रुपना की यह बेअदबी देखकर रतनसिंह ने क्षत्रियों से कहा—"अभी इसका सिर उतार लो।" आज्ञा पाकर क्षत्रियों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। रुपना तुरन्त मार-काट करने लगा। जब वहाँ भीषण मारकाट हुई तब रुपना ने भाले की नोक से एपनवारी उठाकर पपीहा को एड़ लगाई। वह तुरन्त ही रुपना को लेकर वहाँ से छलाँग गया और फाटक पर आ पहुँचा। क्षत्रिय लोग रुपना के पीछे दौड़े और तोरण-द्वार तक उसे खदेड़ गये।

डेरों में आकर रुपना ने सारा हाल कह सुनाया; तब ऊदल ने आल्हा से पूछकर फ़ौज को तैयार किया।

इधर रुपना के जाने के बाद रतनसिंह ने कुँअरसिंह और लालसिंह नामक दोनों बेटों को युद्ध की तैयारी करने की आज्ञा दी। फिर उसने कुँअरसिंह से कहा— "एक लम्बी लग्गी गाड़कर उसके सिरे पर बाज़ बैठा दो। बरातियों को द्वारचार के लिए बुलावा भेज दो और उनसे कहला दो कि पहले वे लोग उस बाज़ को उतार लें तब व्याह होगा।" कुँअरसिंह ने तुरन्त वह सूचना बारात में आल्हा के पास भेज दी और एक लम्बी लग्गी गाड़कर उस पर बाज़ को बैठा दिया।

यह ख़बर पाकर आल्हा द्वारचार के लिए सभी बारातियों को लेकर चले। जब बारात लग्गी के पास आई तब आल्हा ने समरजीतसिंह को बाज़ उतारने के लिए आगे भेजा। समरजीत जैसे ही आगे बढ़े वैसे ही लालसिंह ने उन पर धावा बोल दिया। शीघ्र ही वहाँ बैंड़ी तलवार चलने लगी। एक घण्टे तक ख़ूब सिरोही चली। फिर लालसिंह से ऊदल ने परस्पर युद्ध करने को कहा। लालसिंह ने तुरन्त ऊदल पर गुर्ज चला करके उनकी बात की स्वीकृति दी। ऊदल उस वार को बचाकर उन पर भाला फेंकने को तैयार हुए, परन्तु इसी समय मलखे ने आगे बढ़कर लालसिंह को ढाल की औभड़ मारकर घोड़े से गिराया और बन्दी कर लिया। यह देखकर पहाड़ी फ़ौज में भर्रा पड़ गया। इधर ऊदल ने लग्गी के पास जाकर बेंदुला की पीठ ठोंकी और उसे बाज़ दिखाकर सब बातें समझा दीं। फिर उन्होंने बेंदुला को एड़ लगाई। सबके देखते ही देखते बेंदुला लग्गी के सिरे के पास जा पहुँचा। उसी समय ऊदल ने भाले से बाज़ को उठा लिया और उसको लाकर आल्हा के हवाले किया।

यह ख़बर रतनसिंह को मिली तो उसने कुँवरसिंह को युद्ध करने के लिए भेजा। कुँअरसिंह ने आकर सब सेना को एकत्र किया। अब वह तलवार लेकर मलखे के ऊपर दौड़ा। इसी समय समरजीत ने कुँअरसिंह पर तलवार का वार किया। कुँअरसिंह ने उस वार को ढाल से रोका, परन्तु ढाल फट गई और कुँअरसिंह के हाथ में चोट भी आ गई। अब कुँअरसिंह ने गुर्ज चलाकर समरजीत को नीचे गिरा दिया और क़ैद करके क़िले के भीतर भेज दिया। यह देखकर मलखे ने कबूतरी को एड़ लगाई। शीघ्र ही कबूतरी ने कुँअरसिंह के

हाथी के मस्तक पर दोनों सुम अड़ा दिये। इसी समय मलखे ने तलवार के वार से हौदा और कलशों को टूक-टूक कर दिया। यह देखकर कुँअरसिंह ने गुर्ज चलाया जिससे कबुतरी सात क़दम पीछे हट गई। अब कामजीतसिंह ने आगे बढ़कर अपना भाला चलाया परन्तु व्यर्थ गया। इस प्रकार कामजीतसिंह ने कुँअरसिंह पर तीन वार किये परन्तु वे सब ख़ाली ही गये, फिर कुँअरसिंह के गुर्ज के वार से कामजीत अपनी हथिनी पर से नीचे गिर पड़ा और मारा गया। इसी समय ऊदल ने अपनी तलवार का विकट वार किया, जिसे कुँअरसिंह न रोक सका और घायल होकर नीचे गिर पड़ा। ऊदल ने तुरन्त उसे क़ैद कर लिया।

यह ख़बर रतनसिंह ने सुनी तो वे आल्हा के पास आकर विनय करने लगे। रतनसिंह ने कहा—"आप मेरे पुत्र को छोड़ दें और वर को भेज दें। मैं अभी विवाह किये देता हूँ। मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि विश्वासघात न करूँगा।" यह सुनकर आल्हा ने उसके दोनों बेटों को छोड़ दिया और सुलखे को पालकी में बैठाकर रतनसिंह के साथ कर दिया।

रतनसिंह जब पालकी के साथ क़िले के भीतर चले गये तब कुँअरसिंह ने फाटक बन्द करवा लिया। अब उसने पिता की आज्ञा से पालकी पर वार किया। यह देखकर सुलखे पालकी पर से उतर पड़े और दहिंगल और दरौने* की मटकियाँ उठा उठाकर कुँअरसिंह को मारने लगे। मटकियों के लगने से कुँअरसिंह के हाथ से तलवार गिर पड़ी जिसे सुलखे ने झपटकर उठा लिया। तलवार लेकर सुलखे ने वहाँ मार काट मचा दी। यह देखकर रतनसिंह ने सुलखे से कहा—"बस बेटा! क्षमा करना। हमारे यहाँ यही रीति है। तुम बुरा न मानना। अब हमें तुम्हारी वीरता पर पूरा भरोसा है और आशा है कि समय पर तुम हमारे काम आओगे।" यह सुनकर सुलखे चुप हो गये। इस समय रतनसिंह ने सुलखे को दुचित्ता देकर क्षत्रियों को इशारे से आज्ञा दी कि

---

* दहिंगल व दरौने में विवाह के समय की ज़रूरी चीज़ें रक्खी रहती हैं। ये ऊपर से ढके होते हैं।

सुलखे को क़ैद कर लो। क्षत्रियों ने चारों ओर से झपटकर सुलखे को क़ैद कर लिया। सुलखे जब क़ैद हो गये तब उन्हें चुंगल दहक में डाल दिया गया। सुलखे उसी में पड़े-पड़े तड़पने लगे।

यह ख़बर जब कलावती को मिली तब उसने एक पत्र में सब वृत्तान्त लिखकर मालिन द्वारा आल्हा के पास भेजा। उस पत्र को ऊदल ने मालिन से लिया और जाकर आल्हा से सब हाल कह सुनाया। शीघ्र ही डेरों में कूच का डंका बजा और सेना तैयार होकर सिलसिले से खड़ी हो गई। इसी समय सभी बड़े-बड़े शूर अपने-अपने हाथियों, घोड़ों पर चढ़कर जमा हो गये और मारू बाजों के बजते ही फ़ौज को लेकर चल पड़े। तोरण-द्वार को पार करती हुई महोबे की फ़ौज किले के द्वार पर जा खड़ी हुई। इसी समय कुँअरसिंह अपनी सेना लेकर आगे बढ़ा। शीघ्र ही दोनों ओर मार-काट मच गई। ऊदल ने आगे बढ़कर कुँअरसिंह का सामना किया। कहते हैं कि उसने रोष में आकर ऊदल पर सात वार किये, परन्तु ऊदल का बाल भी बाँका न हुआ। फिर ऊदल ने बेंदुला के एड़ लगाई। उसने तुरन्त कुँअर-सिंह के हाथी के मस्तक पर दोनों सुम रख दिये। इसी समय ऊदल ने अपने भाले से धक्का देकर कुँअरसिंह का हौदा उलट दिया। इससे कुँअरसिंह तुरन्त नीचे आ गिरा और महोबेवालों द्वारा क़ैद कर लिया गया

उधर मलखे ने लालसिंह को क़ैद करने के लिए समरजीत को आदेश दिया। उसने आगे बढ़कर अपना तेगा चलाया, परन्तु वह ढाल से लगकर व्यर्थ गया। इसके बाद समरजीत तलवार लेकर लालसिंह पर दौड़ा। जिस समय लालसिंह उस वार को बचाने लगा उसी समय मलखे ने अपनी ढाल की ओझड़ से उसको नीचे गिरा दिया। समरजीत ने तुरन्त लालसिंह को क़ैद कर लिया। यह सुनकर रतनसिंह अपने हाथी पर चढ़कर समरभूमि में आये। उन्हें देखकर आल्हा ने अपना पचशावद बढ़ाया और कहा—"महाराज! व्यर्थ में लड़कर अपना नाश न करवाइए। आप शान्ति से ब्याह कर दीजिए। जब हमारा आपका सम्बन्ध हो जायगा तब आप पर हमारे डर के कारण कोई भी

गया आक्रमण नहीं कर सकता। यदि आप युद्ध करेंगे तो हम लोग आपके गढ़ को खुदवाकर फिंकवा देंगे।"

आल्हा ने उन्हें साम, दाम, दण्ड और भेद चारों प्रकार से समझाया। रत्नसिंह ने आल्हा की बात मान ली। तब आल्हा ने उनके दोनों बेटों को छोड़ दिया। रत्नसिंह ने दहक से दुलहे को निकालकर स्नान और भोजन करवाया। फिर दुलहे का विवाह शान्ति से हो गया। रत्नसिंह ने लाखों रुपये का दहेज दिया। आल्हा ने भी लाखों रुपये वहाँ के नेगियों को दिये और बहू की विदा करवा के वे महोबे लौट आये।

मल्हना ने बेटे और बहू को आदर से लिया और खूब द्रव्य लुटाया। परमाल ने सभी व्यौहारियों को आदर से विदा किया। महोबे में कुछ समय के लिए शान्ति हो गई। प्रजा सुख से महाराज परमाल का गुणगान करने लगी।

बुखारे का युद्ध या धाँधू का विवाह

महाराज दस्सराज के आल्हा, धाँधू और ऊदल नाम के तीन पुत्र थे। कहते हैं कि धाँधू का जन्म अभुक्त मूल में हुआ था। इससे दस्सराज ने धाँधू के पालन-पोषण का काम अपनी एक बाँदी को सौंप दिया था। वह बाँदी धाँधू को लेकर नगर के बाहर एक घर में रहती थी, क्योंकि दस्सराज उस पुत्र का मुँह तक नहीं देखते थे। उसी साल कार्तिक पूर्णिमा पर वह बाँदी राजा की आज्ञा लेकर गङ्गा नहाने को बिठूर गई।

प्राचीन काल में बड़े-बड़े पर्वों पर देश-देश के राजा-महाराजा गङ्गा नहाने आते थे। इसी से महाराज पृथ्वीराज भी दिल्ली से बिठूर गये। प्रतिपदा के दिन गङ्गा-स्नान करके बाँदी धाँधू को लेकर वहाँ के एक बड़े ज्योतिपी के पास गई। ज्योतिषी ने धाँधू का हाथ देखकर बताया कि 'यह बालक आगे चलकर बड़ा भारी योद्धा होगा, परन्तु अपने कुटुम्बियों से युद्ध करेगा।' इस समय पृथ्वीराज उस ज्योतिषी के पास बैठे थे। उन्होंने जब इस शिशु का भविष्य सुना तब उन्हें उसके वंश का परिचय जानने की इच्छा हुई। उन्होंने तुरन्त अपने दूत को उस बाँदी के पीछे भेजा। दूत ने बाँदी के शरीररक्षक से सब हाल जान लिया। उसने आकर पृथ्वीराज को सारी कथा कह सुनाई। जब पृथ्वीराज को ज्ञात हुआ कि वह पुत्र दस्सराज का है और उन्होंने उसे त्याग दिया है, तब पृथ्वीराज ने रात्रि को बाँदी के डेरे में से धाँधू का हरण करवा लिया। बाँदी रोती-कलपती महोवे लौट गई।

इधर धाँधू को लेकर पृथ्वीराज दिल्ली गये। उनके चाचा कान्हदेव के कोई पुत्र न था। इससे उन्होंने पृथ्वीराज की सलाह से धाँधू को गोद ले लिया। दिल्ली के पण्डितों ने धाँधू का नाम 'देवपाल' से बदलकर 'चन्द्रपुंडीर' रक्खा। यह अधिक मोटा था, इससे सब लोग इसे धाँधू कहने लगे थे। महाराज परमाल को जब यह खबर लगी तब उन्हें सन्तोष हो गया कि

वह त्यागा हुआ पुत्र अपने भाग्य से बड़े घर का बेटा बन गया। इस प्रकार धाँधू चौहान राजवंश में ताहर आदि राजकुमारों की भाँति पाले गये। बड़े होने पर धाँधू को उनके पिता कान्हदेव की जगह अस्सी हज़ार सेना का सेनापति बनाया गया। धाँधू के जन्म आदि का हाल सभी रजवाड़ों में फैल गया था, अतः बनाफर होने के कारण कोई भी राजा उसका विवाह नहीं करता था।

कुछ समय बीतने पर बुख़ारा नगरी के राजा रणधीरसिंह ने अपनी बेटी केशर के विवाह के लिए टीका देकर युवराज मोतीसिंह को भेजा। चलते समय रणधीरसिंह ने मोतीसिंह को बनाफरों के साथ सम्बन्ध करने से रोक दिया था। मोतीसिंह टीका लेकर पहले कन्नौज गये। वहाँ महाराज जयचन्द ने इस सम्बन्ध को स्वीकार करने में अनिच्छा प्रकट की। वहाँ से चलकर मोतीसिंह नैनागढ़ गये, परन्तु वहाँ भी युद्ध के कारण सम्बन्ध स्वीकृत न हुआ। यह देखकर मोतीसिंह को बड़ा क्षोभ हुआ। वहाँ से निराश हो वे लौटे चले आ रहे थे कि उन्हें रास्ते में ताहर मिले। उन्होंने मोतीसिंह का परिचय जानना चाहा। अन्त में पूछा—"राजकुमार, कहो कहाँ जा रहे हो?" मोतीसिंह ने कहा—"हम लोग गंगा-स्नान को जा रहे हैं।" यह सुनकर ताहर ने हँसते हुए कहा—"ठीक है। परन्तु ये चारों नेगी और टीके का सामान वहाँ ले जाकर क्या करोगे?" जब मोतीसिंह ने जाना कि ताहर को सब भेद मालूम है तब बोले—"क्या बतावें? बहन के विवाह के लिए टीका लिये घूम रहे हैं, परन्तु कोई स्वीकार ही नहीं करता। अब यहाँ के क्षत्रिय न जाने कैसे हो गये हैं जो युद्ध से मुख मोड़ते हैं।" ताहर ने कहा—"तुम दिल्ली चलकर हमारे चाचा धाँधू का टीका चढ़ा दो।" मोतीसिंह ने पूछा—"कौन? वही दस्सराज का बेटा जिसे कान्हदेव ने गोद लिया था? हम उसके साथ किसी तरह अपनी बहन का त्रिवाह न करेंगे।" यह सुनकर ताहर ने अपने सैनिकों द्वारा मोतीसिंह को मय रिसाले के क़ैद करवा लिया। फिर वे अपना शिकारी डेरा उखड़वाकर दिल्ली को चल पड़े।

दिल्ली आकर ताहर ने वह टीकेवाला पत्र मोतीसिंह से ले लिया। दूसरे दिन राजसभा में जाकर ताहर ने वह पत्र चौहानसिंह को दिया और कहा—दद्दुआ! बुख़ारे से धाँधू का टीका आया है।" पत्र में युद्ध आदि का विवरण देखकर पृथ्वीराज ने कहा—"वहाँ तान्त्रिक बहुत हैं, जिनके कारण हम युद्ध में विजयी नहीं हो सकते। इससे यह ब्याह करना ठीक नहीं।" यह सुनकर सलाह देनेवाले चामुण्डराय (यह ब्राह्मण था, इसका नाम चौंड़ा भी था) ने कहा—"महाराज! आपको क्या अपने उपहास का डर नहीं है? महाराजाधिराज होकर भी आप ऐसे-ऐसे छोटे राजाओं से डरते हैं? शीघ्र ही टीका को स्वीकार कीजिए।" चौंड़ा के कहने से वह सम्बन्ध मंज़ूर कर लिया गया। शीघ्र ही धाँधू का टीका चढ़ाया गया। महाराज पृथ्वीराज ने लाखों रुपये के गहने बुख़ारे के नेगियों को दिये। टीका चढ़ाकर मन में पछताते हुए मोतीसिंह बुख़ारे को लौटे। वहाँ जाकर उन्होंने सब वृत्तान्त अपने पिता से कहा। अपने पुत्र की मानहानि सुनकर रणधीरसिंह बड़े क्रुद्ध हुए।

इधर शुभ मुहूर्त सुधवाकर पृथ्वीराज ने ब्यौहारी राजाओं को निमन्त्रण भेज दिये और समय आने पर बारात बुख़ारे को चल पड़ी।

आठ दिन चलने के बाद चौहानराज ने बुख़ारे से पाँच कोस पूर्व डेरे डाल दिये और दूसरे दिन छेदा बारी को एपनवारी देकर बुख़ारे भेजा। उसने ड्योढ़ी पर जाकर द्वारपाल से कहा—"महाराज से जाकर कहो कि दिल्ली की बारात से एपनवारी लेकर बारी आया है।" द्वारपाल ने इसकी सूचना दरबार को दी। महाराज ने युवराज मोतीसिंह से कहा—"अब क्या होना चाहिए? बनाफर को कन्या देने से बदनामी होगी।" इस प्रकार राजा अपने पुत्र से उपस्थित समस्या पर विचार करने लगा।

छेदा को द्वार पर खड़े जब देर हुई और उसे कुछ उत्तर न मिला, तब क़िले में अपना घोड़ा बढ़ाकर वह दरबार में पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने एपनवारी को भाले की नोक पर रखकर रणधीरसिंह के सिंहासन पर फेंक दिया। बारी की यह ढिठाई देखकर राजा को बहुत क्रोध आया। उन्होंने तुरन्त

आज्ञा दी कि वारी का सिर काट लिया जाय। क्षत्रियों ने चटपट उसे घेर लिया। ढेवा भी डटकर सबका सामना करने लगा। सामना करते-करते वह गद्दी की ओर झपटा। उसने भाले की नोक से एफनवारी उठा ली और घोड़े को एड़ लगाकर सबको मारता-काटता हुआ बाहर निकल गया। इस प्रकार वह अपना उत्साह दिखलाकर डेरों में जा पहुँचा।

वारी की इस वीरता और कौशल को देखकर स्वर्णवीरसिंह चकित हो गये। अब उन्होंने छल से दिल्लीपति से बदला लेने की एक युक्ति सोची। उन्होंने अपने रनिवास की एक परम सुन्दरी चतुर बाँदी को बुलाकर कहा—"जो तू किसी प्रकार डेरों में से बाँधू को पकड़ लावे तो मैं तुझे दासीपन से छुटकारा देकर बहुत धन दूँगा।" दासी ने कहा—"मैं यह काम अभी किये लाती हूँ।" अब दासी ने अपने घर जाकर नख से शिख तक सोलहों शृंगार किये और क़ीमती गहने पहने। फिर वह सात सहेलियों के साथ पालकी में बैठकर डेरों के पास-वाले बग़ीचों में गई। कहते हैं कि वे आठों डोले वास्तव में ऐसे सजे थे जैसे किसी महारानी के डोले हों। इस बग़ीचे में एक बड़ा तालाब था। इस तालाब में बाँधू नहाने आते थे। वे दासियाँ उस बग़ीचे में इधर से उधर क्रीड़ा करती घूमने-फिरने लगीं। दैवयोग से बाँधू की दृष्टि उन पर पड़ी। उस मुख्य बाँदी के रूप और लावण्य को देख उस पर आसक्त हो बाँधू उसके पास गये। बाँधू ने कहा—"आप कौन हैं और यहाँ क्यों आई हैं?" दासी ने कहा—"मैं यहाँ की राजकुमारी हूँ। मेरे ब्याह के लिए बनाफर बारात लेकर यहाँ आये हैं। मैं उनकी कल्याण-कामना करने को इस मन्दिर की देवी के पास आई हूँ।" यह सुनकर उन्होंने कहा—"बाँधू बनाफर मैं ही हूँ। मेरी ही बारात यहाँ आई है।" बाँदी ने प्रसन्न होकर कहा—"प्राणनाथ! आपके दर्शन करके मैं कृतकृत्य हो गई। अब आप मेरे साथ चलकर रात भर महल में विश्राम करें। मेरा महल अन्य महलों से अलग है। मैं प्रातःकाल होते ही आपको यहाँ पहुँचा दूँगी।" यह सुनकर बाँधू प्रसन्न हुए और अपने नौकर से बोले—"तुम हाथी लौटा ले जाओ, कल सबेरे ले आना। हम यहीं मिलेंगे;

परन्तु हमारे जाने के बारे में किसी से कुछ चर्चा न करना।" अब धाँधू उस दासी के साथ पालकी में बैठ गये। दासियों की वे पालकियाँ चटपट राजमहलों की ओर चल पड़ीं। उस दासी ने एक सुन्दर राजमहल में ले जाकर धाँधू को उतार दिया। इसके थोड़ी देर बाद राजा ने आकर धाँधू को क़ैद कर लिया और एक खन्दक़ में डाल दिया।

यह ख़बर जब राजकुमारी केसर ने सुनी तब उसे बहुत बुरा लगा। उसने एक पत्र लिखकर बाँदी द्वारा पृथ्वीराज के पास भिजवाया। धाँधू के क़ैद होने की ख़बर जब पृथ्वीराज को मिली तब वे चकित रह गये। थोड़ी देर बाद उन्होंने ताहर को बुलवाकर युद्ध की तैयारी करने को कहा। शीघ्र ही नगाड़ा बज उठा जिससे सभी सैनिक हथियार बाँध-बाँधकर खड़े हो गये। थोड़ी देर में कूच का डङ्का बजते ही ताहर सेना लेकर युद्धक्षेत्र की ओर चले।

यह सुनकर रणधीरसिंह ने तुरन्त ही मोतीसिंह को सेना देकर भेजा। उसके आने पर वहाँ घनघोर युद्ध होने लगा। जब बुख़ारे के सैनिक चौहानों के आगे न ठहर सके, तब मोतीसिंह ने तन्त्रबल से चौहान सेना को लकड़ी की तरह अचल बनवा डाला। बेचारे सैनिक जीवित होते हुए भी हाथ-पैर न चला सकते थे। ताहर ने अपनी सेना की यह दुर्दशा देखी तो डेरों में आकर सब हाल अपने पिता से कहा। और यह भी कहा कि जादू के आगे हमारा लड़ना व्यर्थ है। इससे लौट चलिए। यह सुनकर पृथ्वीराज अपने डेरे उखड़वाकर दिल्ली को लौट गये।

यह हाल सुनकर केसर बड़े असमंजस में पड़ गई। कुछ देर तक सोचने के बाद उसने यह निश्चय किया कि एक पत्र महोबे भेजकर आल्हा-ऊदल को यहाँ बुलवाऊँ। बस, उसने सारा वृत्तान्त लिखकर पत्र को लिफ़ाफ़े में बन्द किया। फिर उसने अपने तोते के गले में पत्र बाँध दिया और यह कहकर उसे उड़ा दिया कि बेटा! महोबे में जाकर यह पत्र रानी मल्हना को देना।

तीसरे दिन वह तोता महोबे में पहुँचा। सब महलों में घूमकर वह मल्हना के महल में आया। उसे देखकर मल्हना ने कहा—"तोते! मल्हना का पत्र

हो तो आकर मुझे दे दे।" यह सुनते ही तोता नीचे आ गया। मल्हना ने पत्र खोलकर पढ़ा। थोड़ी देर तक सोच-विचारकर उसने एक हरकारे को बुलाकर कहा—"तुम जाकर दशपुरवा से ऊदल को बुला लाओ।" आज्ञा पाकर हरकारा दशपुरवा चला गया।

थोड़ी देर में ऊदल वहाँ आ पहुँचे। उनके आने पर मल्हना ने सब कथा कह सुनाई। ऊदल ने उसी समय माँधू को छुड़ाकर ब्याह करने की प्रतिज्ञा की और उस पत्र को लेकर वे दशपुरवा को लौट गये।

मल्हना ने तोते के गले में राजकुमारी के पत्र का उत्तर लिखकर बाँध दिया और उसे उड़ा दिया। पत्र में राजकुमारी को धैर्य बँधानेवाले वाक्य लिखे थे। ऊदल ने जाकर वह पत्र आल्हा को दिखाया और युद्ध की तैयारी करने को कहा; परन्तु आल्हा पहले राज़ी न हुए। अन्त में बहुत तर्क-वितर्क के बाद चलने को तैयार हुए। आल्हा के साथ देवा और माना गूजर भी चले। अपनी सेना को लेकर बनाफर पहले महोबे गये। वहाँ उन्होंने महाराज परमाल से आज्ञा तथा मल्हना से आशीर्वाद लेकर सिरसा की ओर कूच किया। महोबे से ब्रह्मा भी आल्हा के साथ अपना लश्कर लेकर चले। वहाँ से चलकर सिरसा में डेरे पड़े। दूसरे दिन वहाँ वनपेरी से कामिक भी सेना समेत आये और मलखे भी अपनी सेना लेकर आ मिले। सिरसा में चारों दल मिलकर दिल्ली की ओर चले। वहाँ पहुँचकर सेना के डेरे दूरे पर पड़े। सैनिक हथियार खोलकर विश्राम करने लगे। कुछ देर बाद मलखे और ऊदल मिलकर दिल्ली के राजदरबार की ओर चले। डेवढ़ी पर घोड़ों से उतरकर दोनों भाई दरबार में गये। वहाँ उन्होंने दिल्लीश्वर को सादर प्रणाम किया। पृथ्वीराज ने उन्हें आशीर्वाद देकर सोने की चौकियों पर बिठाया। कुशल-प्रश्न के बाद आने का कारण पूछा मलखे ने कहा—"महाराज! आपके प्रताप से सब कुशल-मंगल है। हम माँधू के हरण का वृत्तान्त जानने को आये हैं, कृपा करके विस्तार से कहिए।" यह सुनकर दिल्लीश्वर घबराते हुए से बोले—"हम लोग माँधू की बारात लेकर बुख़ारे के नरेश रणधीरसिंह के

यहाँ गये थे। वहाँ धाँधू को रणधीरसिंह ने छल से क़ैद कर लिया और ऊभे में गिरवा दिया। इस पर हमने युद्ध किया परन्तु उसने तन्त्रविद्या से हमारी सेना को ठूँठ की तरह बनाकर हमें नीचा दिखाया। इससे हम लौट आये।" यह सुनकर मलखे बोले—"महाराज! हमारे भाई के विवाह में भी आपने हमें न बुलाया। अब आप हमारे साथ चलें। हम चलकर अपने भाई को ब्याहेंगे।" पृथ्वीराज ने कहा—"वहाँ जाकर हम अपने प्राण नहीं गँवाना चाहते।" यह सुनते ही ऊदल ने कहा—"दिल्लीपति होकर भी आप कायरों जैसे वचन कहते हैं। आप वहाँ चलकर अपने डेरे में बैठे हुए केवल तमाशा देखा करना। हम रणधीरसिंह की मुश्कें बँधवाकर सातों भाँवरें डलवा लेंगे।" इस प्रकार ऊँच-नीच समझाकर ऊदल और मलखे ने पृथ्वीराज को चलने के लिए राज़ी कर लिया।

शीघ्र ही दिल्ली की फ़ौजें जब इकट्ठी हो गईं तब क़िले के बुर्ज पर से कूच का डङ्का बजा जिसको सुनते ही फ़ौज ने जयघोष के साथ दिल्ली से कूच किया और महाराज पृथ्वीराज हाथी पर चढ़कर चले। धूरे पर महोबे की फ़ौज भी इनसे मिली। अब दोनों फ़ौजें मिलकर बुख़ारे की ओर तेज़ी से चलने लगीं।

आठ दिन में उन्होंने बुख़ारे से पाँच कोस पूर्व डेरे डाले। तुरन्त वहाँ सैकड़ों तम्बू लग गये। प्रत्येक डेरे के ऊपर लाल रङ्ग की पताका फहराने लगी। जो भूमि कुछ समय पहले सूनसान पड़ी थी, वहाँ अब फ़ौज की छावनी पड़ जाने से चहल-पहल सी मच गई। क्षत्रिय लोग विश्राम करने लगे।

डेरों में विश्राम करके क्षत्रिय अपने-अपने कामों में लग गये। इधर मलखे ने ऊदल, ढेवा और गङ्गू भाट को अपने साथ जोगी का वेष बनाकर चलने के लिए तैयार किया। वे चारों तुरन्त जोगियों के वेष में सजकर अपने-अपने बाजों के साथ नगरी की ओर चले। ऊदल बाँसुरी, मलखे खँजरी, गंगू इकतारा और ढेवा डमरू बजाते हुए नगरी में गये। चारों जोगियों के अपूर्व ताल पर मुग्ध होकर इनके पीछे जनता की भीड़ चलने लगी। ये लोग गाते-बजाते क़िले के द्वार पर जाकर रुके और वहीं खड़े होकर गाने-बजाने लगे।

दरबार में बैठे हुए राजा रणधीरसिंह के कानों में जब उनके गाने-बजाने की आवाज़ पहुँची तब उन्होंने इन्हें दरबार में बुला भेजा। वहाँ पहुँचकर ये राजा की आज्ञा से फिर गाने-बजाने लगे। राजा ने प्रसन्न होकर कहा—"महाराज, आप लोगों को किस वस्तु की आवश्यकता है? मैं उसे मँगवाकर आपकी सेवा में हाज़िर करूँ। आप निःसंकोच मुझसे उसका नाम बताइए।" मलखे ने कहा—"राजन्! तेरे वैभव को देखकर हमें सन्तोष है। हम लोगों को तो केवल भोजन की इच्छा है।" यह सुनकर राजा ने रनिवास में रसोई बनाने की आज्ञा दी। रसोई तैयार हो जाने पर रानी ने जोगियों को बुला भेजा। जोगियों को आसन पर बैठाकर रानी पंखा झलने लगी। थोड़ी देर बाद रानी ने कहा—"महाराज! मेरी बेटी की तबियत ख़राब रहती है। यदि आप दया करके उसे देखकर ठीक कर दें तो मैं जन्म भर आपका गुन मानूँगी।" ऊदल ने कहा—"मैया! यहाँ तो बाबा गोरखनाथ की भभूति है, उसके आगे भूत-प्रेत तथा कोई भी रोग नहीं ठहरता। आप अपनी कन्या को ले आवें, मैं उसे अभी ठीक किये देता हूँ।" यह सुनकर महारानी ने केसर को बुला भेजा। उसको देखकर ऊदल ने कहा—"अलख! बाबा गोरखनाथ। अलख! इसके ऊपर तो कोई बड़ा भयंकर प्रेत है। अच्छा आप लोग यहाँ से हटकर अलग हो जावें। कन्या को ओढ़ाकर यहीं लिटा दो और परदा लगवा दो। मैं अभी इसे ठीक करता हूँ।" महारानी ने तुरन्त ऊदल की आज्ञा का पालन किया। जब परदा लग गया तब ऊदल ने केसर के पास जाकर धीरे से कहा—"भाभी! हम लोग महोबे से आ गये हैं। मलखे यहाँ हमारे साथ जोगी के वेश में हैं। मेरा नाम ऊदल है। अब बताओ कि धाँधू दादा कहाँ पर हैं।" केसर ने आँखें खोलकर कहा—"मलखे को भी बुला लो।" ऊदल ने आवाज़ देकर मलखे को भी परदे में बुला लिया। मलखे के आ जाने पर वह चुपचाप वहाँ से उठी और उन दोनों को साथ लेकर खिड़की की राह उस ख़न्दक़ के पास पहुँची। मलखे ने तुरन्त साखू के लट्ठे में रेशम की रस्सी बाँधकर उसे नीचे लटका दिया। उसी रस्सी को पकड़कर ऊदल नीचे उतर गये और धाँधू को

सब हाल बताकर ऊपर ले आये। मलखे ने तुरन्त धाँधू के शरीर में भभूत मली और उन्हें भी जोगी बनाकर अपने साथ मिला लिया। अब मलखे धाँधू को साथ लेकर बाहर चले गये। ऊदल और केसर दोनों फिर उसी रास्ते उस परदे के भीतर आ गये। ऊदल ने तुरन्त महारानी को बुला लिया। वे अपनी कन्या को प्रसन्न पाकर बड़ी प्रसन्न हुईं। इधर ऊदल ने अपनी झोली आदि उठाई और ढेवा तथा गंगू को साथ ले महारानी की आज्ञा से बाहर चले। बाहर आने पर उन्हें मलखे और धाँधू खड़े मिले। धाँधू ऊदल की बहुत प्रशंसा करते हुए चले। इस प्रकार आपस में बातें करते हुए जोगी अपने डेरे पर जा पहुँचे। सबने वहाँ जाकर वह वेष बदला। धाँधू को देखकर सब लोग चकित हो गये और ऊदल तथा मलखे की चातुरी पर अचम्भा करने लगे।

धाँधू ने जाकर आल्हा के पैर छुए। फिर वे पृथ्वीराज के दरबार में गये और प्रणाम करके बोले—"वाह महाराज! हमको यहाँ छोड़कर आप दिल्ली लौट गये। यदि हमारे भाई हमें न छुड़ाते तो हमारे प्राण उसी ख़न्दक़ में जाते। क्या आपको यही उचित था?" चौहान सिंह ने कहा—"भैया! मैंने तुम्हारे पीछे बेहद युद्ध किया, परन्तु हम तन्त्रविद्या के आगे कुछ न कर सके।"

अब धाँधू स्नान-ध्यान और भोजन से छुट्टी पाकर आल्हा के दरबार में गये। उनको देखकर ऊदल ने कहा—"दादा! रणधीरसिंह उस बग़ीचेवाली देवी की मठिया में नित्य शाम को दर्शन करने आता है। आज आप प्रेत का सा वेष बनाकर मठिया में जायँ, जब राजा आवे तब आप उसे डराकर क़ैद कर लें।" यह सुनकर धाँधू बड़े प्रसन्न हुए और काला मुँह तथा भयानक रूप बनाकर उस मठिया में जा छिपे।

सन्ध्या को जैसे ही राजा मठिया में गया वैसे ही धाँधू ने दाँत दिखाकर उसको डराया और गर्दन पकड़कर नीचे डाल दिया तथा कसकर बाँध लिया। राजा की यह दशा देखकर चाकर क़िले की ओर भाग गया। इधर धाँधू राजा को क़ैद करके डेरों में ले आये।

दूसरे दिन जब यह ख़बर मोतीसिंह ने सुनी तब उसने तुरन्त सेना को तैयार होने की आज्ञा दी। मोतीसिंह भूप हाथी पर चढ़कर आया और सेना को साथ लेकर रणभूमि की ओर चला। इधर ऊदल भी सेना को साथ ले रणक्षेत्र में आ डटे। मोतीसिंह ने आकर ऊदल से कहा—"तुमको छल से हमारे पिता को क़ैद करते लज्जा नहीं आई। अब मैंने जान लिया कि बनाफ़र छलिया होते हैं।" ऊदल ने कहा—"ठीक है; परन्तु धाँधू को पकड़ते समय तुम्हारे पिता ने कौन सी वीरता दिखाई थी? अब हमने जान लिया कि तुम एक कायर और छलिया के पुत्र हो।" यह सुनकर मोतीसिंह आग बबूला हो गया। उसने शीघ्र ही तोपों में पलीता लगाने की आज्ञा दी। सब के देखते ही देखते वहाँ धुआँधार हो गया। सैकड़ों पशु औरहज़ारों पुरुष तोपों की बलि हो गये। इसके बाद दोनों ओर के वीर तलवारें लेकर अपने कौशल दिखाने लगे। कहते हैं कि चार घण्टे के तलवारों के युद्ध में मोतीसिंह के तीन लाख सैनिक खेत रहे और महोबे के दस हज़ार क्षत्रिय वीर-गति को प्राप्त हुए। यह देखकर मोती ने अपने यहाँ की प्रखर तान्त्रिक मालिन जीवनदेई को बुला भेजा। उसने आकर युद्धक्षेत्र में जैसे ही तन्त्र-बल काम में लगाना चाहा वैसे ही मलखे ने झपटकर उसे ढाल की औझड़ मारकर गिरा दिया और तलवार से उसका जूड़ा काटकर फेंक दिया। जूड़े के कट जाने पर मालिन तन्त्रबल से हीन होकर भाग गई।

यह देखकर मोती ने ऊदल से परस्पर युद्ध का प्रस्ताव किया। ऊदल ने उसे मानकर कहा—"ठीक है, पहले तुम्हीं वार करके अपनी इच्छा पूरी कर लो।" यह सुनकर मोती ने सावधान कहकर गुर्ज का वार किया। गुर्ज को देखकर बेंदुला सामने से हटकर दाहिनी ओर हो गया। फिर मोती ने तीन वार तलवार के वार किये। परन्तु वे भी ढाल में लगकर ख़ाली ही गये। इसके बाद ऊदल ने सावधान कहकर बेंदुला के एड़ लगाई। उसने तुरन्त अपने आगे के सुम हाथी के मस्तक पर जाकर रख दिये। इधर ऊदल ने झटपट एक ही हाथ में हौदे की छतरी और कलश आदि तोड़कर गिरा दिये।

फिर उन्होंने अपनी तलवार से हौदे के रस्से को काट दिया। रस्से के कटते ही हाथी की पीठ से हौदा गिर पड़ा। इसी समय ऊदल ने घोड़े से उतरकर मोतीसिंह को क़ैद कर लिया। उसके क़ैद होते ही बुख़ारे की फ़ौज भाग गई।

रणधीरसिंह ने जब मोती को भी बन्दी हुआ देखा तब आल्हा से कहा—"अब आप हम दोनों को छोड़ दें। हम अब निस्सन्देह ब्याह कर देंगे।" राजा के वचनों को मानकर आल्हा ने उन दोनों को छोड़ दिया।

महलों में आकर रणधीरसिंह ने अपने भाई अभिनन्दन को बलखनगरी से बुला भेजा। अभिनन्दन ने अपने पुत्र और पुत्री चित्ररेखा को न्यौते में भेज दिया। इधर रणधीरसिंह ने विवाह की सभी सामग्रियाँ एकत्र कर लीं। अब पंडित ने एक नेगी को आल्हा के पास भेजकर चढ़ावे के लिए गहने मँगाये। यह ख़बर जब आल्हा को मिली तब वे पृथ्वीराज के पास जाकर बोले—"गहने माँगे गये हैं। जल्दी भेज दीजिए।" पृथ्वीराज ने उत्तर दिया—"हमें ब्याह होने की तनिक भी आशा न थी। इससे हम गहने नहीं लाये। अशर्फ़ियाँ ले जाकर बाज़ार से मोल ले आओ।" यह सुनकर आल्हा को बड़ा क्रोध आया, परन्तु वे चुपचाप लौट आये। डेरों में आकर उन्होंने अपने पास से गहने के डिब्बे निकालकर दिये।

चढ़ावा चढ़ जाने पर धाँधू बुलाये गये। उनके साथ आल्हा, ऊदल, मलखे, ढेवा, जगनिक, ब्रह्मा, पृथ्वीराज, ताहर, सूरज व इन्दल (आल्हा के पुत्र) आदि सभी वीर चले। रणधीरसिंह ने मोतीसिंह के साथ द्वार पर जाकर सबका स्वागत किया, फिर उनको आदर से भीतर लिवा ले गये। पण्डितों ने धाँधू को चौक पर बुलाकर कन्यादान करवाया। और और दस्तूर हो जाने पर ग्रन्थि-बन्धन हुआ। इसके बाद भाँवर डालने के लिए जैसे ही धाँधू उठे वैसे ही मोती ने तलवार खींचकर वार किया, परन्तु ऊदल पहले ही से चौकन्ने थे। तलवार देखकर उन्होंने तुरन्त अपनी ढाल अड़ा दी। इस प्रकार पहली भाँवर पड़ गई। दूसरी भाँवर के समय बुख़ारे के योद्धाओं ने रण-हुङ्कार मचा दी। ऊदल आल्हा से यह कहकर कि "दादा, तुम भाँवर डलवाओ, हम इन लोगों

को देखते हैं" शत्रुओं पर टूट पड़े। उधर मलखे फ़सल सी काटने लगे। यह देखकर जगनिक, ब्रह्मा और ढेवा भी उन क्षत्रियों का संहार करने लगे। कहते हैं कि पृथ्वीराज बैठे-बैठे तमाशा देखते रहे और मन ही मन बनाफरों की सराहना करते रहे। इधर महोबियों ने उन क्षत्रियों को मारकर भगा दिया।

सातों भाँवरें पड़ चुकने और सभी विधियाँ हो चुकने पर केसर अपनी माता आदि से मिल-भेंटकर पालकी में जा बैठी। रणधीरसिंह ने अपनी हैसियत के माफ़िक़ अच्छा दहेज़ दिया। आल्हा ने वहाँ लाखों अशर्फ़ियाँ नेगियों को बाँट दीं और पालकी को साथ लेकर वहाँ से बिदा हुए। डेरों में आकर पृथ्वीराज ने कूच का डङ्का बजवाया। शीघ्र ही सब लोग तैयार होकर चल पड़े।

दिल्ली पहुँचकर पृथ्वीराज ने बहुत ख़ुशियाँ मनाईं और कुछ दिनों तक महोबियों का ख़ूब आतिथ्य किया। ऊदल ने चलते समय पृथ्वीराज से कहा—"चार दिन के लिए धाँधू और बहू को हमारे साथ महोबे भेज दीजिए।" पृथ्वीराज ने कहा—"बहू का डोला महोबे नहीं जा सकता।" यह सुनते ही मलखे ने कहा—"बहू को ब्याहने का आपको साहस न हुआ था, परन्तु आज महोबे भेजने के लिए इन्कार करने का साहस आपको कैसे हुआ? जब आप धाँधू को वहीं ख़न्दक़ में गिरा हुआ छोड़ आये थे, तब तो बहू ने हमारे यहाँ मल्हना के पास पत्र भेजकर हमारा आश्रय लिया था। यदि आपको पत्रवाली बात पर विश्वास न हो तो आप बहू से पूछ सकते हैं।" यह सुनकर पृथ्वीराज लजा गये और महलों में चले गये। वहाँ जब उन्हें इस बात का पता चल गया कि बहू ने मल्हना को पत्र लिखा था तब उन्होंने धाँधू को महोबे जाने की आज्ञा दी।

शीघ्र ही आल्हा के लश्कर के साथ धाँधू अपने घोड़े पर चढ़कर चल दिये और ऊदल की संरक्षकता में केसर कुँअरि का डोला रवाना हुआ। सात दिन में सब लोग महोबे पहुँचे। मल्हना ने बहू के आने की ख़बर सुनी तो द्वार पर आकर धाँधू और केसर कुँअरि का परिछन किया, फिर आदर से उन दोनों को वे भीतर लिवा ले गईं। देवै अपनी पुत्रवधू तथा चिरकाल से बिछुड़े पुत्र

धाँधू को देखकर फूली न समाई। उसने धाँधू को हृदय से लगा लिया और प्रेमाश्रु भरकर बोली—"बेटा! तुमने यह जानकर भी कि तू मेरा पुत्र है, मेरी ख़बर तक न ली।" धाँधू ने कहा—"माता! मेरी ढिठाई को क्षमा कीजिए। मैं बड़ा अपराधी हूँ।" यह कहकर वह पैरों पर गिर पड़ा।

आठ दिन तक महोबे में नित्य नये-नये उत्सव होते रहे। मल्हना, देवै, तिलका आदि सभी रानियों ने लाखों रुपये ख़र्च किये। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा बाँटी गई। दीनों और अपाहिजों को अन्न, धन तथा वस्त्र दिये गये।

आठ दिन बाद धाँधू सभी माताओं के चरण छूकर तथा परमाल से आज्ञा लेकर दिल्ली चले गये। केसर ने चलते समय मल्हना से कहा था—"माताजी, आपकी ही दया से मुझे यह सुख-सौभाग्य का दिन देखने को मिला है।"

इन्दल-हरण तथा इन्दल का विवाह

बलखनगर का युद्ध

गङ्गाजी में कार्त्तिकी पूर्णिमा तथा जेठ के दशहरे पर स्नान करने से वड़ा फल होता है। इससे इन दोनों पर्वों पर लाखों हिन्दू गङ्गा-स्नान करते हैं। कहते हैं कि प्राचीन काल में राजा लोग अपनी सेना समेत स्नान करने को जाते थे। उन दिनों कार्त्तिकी पूर्णिमा पर जाजमऊ और दशहरे पर विठूर में स्नान करने का चलन था। इससे इन दोनों स्थानों पर लाखों स्नान करनेवालों की भीड़ हो जाती थी।

एक वार यात्रियों को जेठ के दशहरे पर स्नान करने को जाते देखकर ऊदल ने ढेवा से पूछा—"दादा! ये लोग कहाँ किस लिए जाते हैं?" ढेवा ने कहा—"ये लोग विठूर को जा रहे हैं। वहाँ दशहरे के दिन गङ्गा-स्नान का वड़ा माहात्म्य है।" यह सुनते ही ऊदल को भी गङ्गा-स्नान की उत्कण्ठा हुई। उन्होंने आल्हा के पास जाकर कहा—"दादा! दशहरे पर हम भी विठूर जाना चाहते हैं। आज्ञा हो तो चला जाऊँ।" आल्हा ने कहा—"नहीं बेटा, वहाँ वड़े-वड़े राजा लोग आवेंगे। यदि किसी से तुम्हारा झगड़ा हो गया तो लेने के देने पड़ जावेंगे।" इस समय दैवयोग से माहिल भी वहीं वैठा था। उसने तुरन्त आल्हा से कहा—"वेटा! यह पुण्य कार्य है। इसमें वाधक वनकर तुम पाप के भागी न वनो।" यह सुनकर आल्हा ने ऊदल को जाने की आज्ञा दे दी और ढेवा तथा माहिल से कहा—"आप दोनों भी इनके साथ चले जावें, जिससे ये झगड़ा-वखेड़ा न कर सकें।"

ऊदल के जाने की ख़वर सुनकर आल्हा के कुमार इन्दल ने भी साथ जाने का हठ किया। आल्हा, ऊदल आदि सभी ने इन्दल को जाने से मना

किया तो भी उसने अपना हठ न छोड़ा। लाचार होकर ऊदल इन्दल को अपने साथ लेकर चले।

उस समय समूचे कान्यकुब्ज प्रदेश पर कन्नौजिया राजा राठौर-नरेश जयचन्द का शासन था। इससे बिठूर और जाजमऊ दोनों जगह राठौर-सेना रहती थी। इस समय वहाँ कन्नौज के राजकुमार राणा लक्ष्मणसिंह (लाखन) भी आये थे। लाखन ने जब बिठूर में बनाफरों का डंका बजता देखा, तब उन्होंने इसे बन्द कर देने का हुक्म भेजा। यह हुक्म सुनकर ऊदल बिगड़े और अपने डंके को किसी भी प्रकार बन्द करने के लिए राज़ी न हुए। इससे लाखन ने इनके डेरों को चारों ओर से घिरवा लिया। तुरन्त ऊदल की सेना मोर्चे पर जा डटी। यह देख ढेवा को बड़ी चिन्ता हुई। उसने ऊदल से कहा—"देखो! दूसरे के राज्य में आकर इस प्रकार क्रोध नहीं दिखलाया जाता। महाराज रतिभानु का यहाँ राज्य है और उसी का पुत्र लाखन राना है। महाराज परमाल से इनकी मैत्री है। इसलिए इनसे नाहक़ रार न बढ़ाओ और अभी जाकर उनसे भेंट करो।" यह बात ऊदल की समझ में आ गई। उन्होंने पाँच दुशाले, एक सिरपेंच तथा पाँच हीरे ले जाकर लाखन को भेंट किये। यह देखकर लाखन* ने ऊदल को गले लगा लिया और वहीं पक्की मित्रता कर ली। अब लाखन की अनुमति से ऊदल के लश्कर में डंका बजा और ऊदल प्रसन्नता से अपने डेरों में लौट आये।

पाठको! आपको स्मरण होगा कि धाँधू के ब्याह में बलखनगरी के राजा अभिनन्दन की पुत्री चित्ररेखा भी बुलारे में आई थी। वह भाँवरों के समय विवाह-मंडप में इन्दल को देखकर उस पर आसक्त हो गई थी और उसने इन्दल के साथ ही अपना विवाह करने की दृढ़ प्रतिज्ञा की थी। 'दशहरे के पर्व पर सम्भव है कि इन्दल भी बिठूर आवें' इस आशा से वह अपने भाई के

* लाखन को भी उनके सेनापति ने समझाया था तथा यह भी कहा था कि "ऊदल से युद्ध करके तुम विजय नहीं प्राप्त कर सकते।" तब लाखन ने ऊदल से मित्रता की थी।

साथ बिठूर आई थी। चित्ररेखा अपने साथ तन्त्रविद्या में प्रवीण केसर नाम की नटिनी को भी लाई थी। इन्दल का पता लगाने के लिए चित्ररेखा ने नटिनी का स्वरूप बनाया। उसने अपनी सखियों का भी वैसा ही वेश्र बना दिया। वह केसर को साथ लेकर प्रत्येक राजा के डेरे में तमाशा करती फिरने लगी। वह राजकुमारी घूमती-घूमती महोबे के डेरों में पहुँची और तमाशा करने लगी। उस तमाशे को देखकर ऊदल आदि सभी चकित रह गये। इसी समय ढेवा ने केसर और चित्ररेखा के मुख की भावभंगी को देखकर ताड़ लिया कि वे नटिनी तान्त्रिक हैं। इससे ढेवा ने उन नटिनियों को इनाम दिलवाकर डेरे से निकलवा दिया।

दूसरे दिन ऊदल, ढेवा और इन्दल को साथ लेकर, गङ्गा-स्नान करने को चले। वहाँ जाकर ऊदल सबको साथ ले नाव में बैठे। इसी समय चित्ररेखा भी अपनी सहेलियों और केसर समेत नाव में बैठकर उनके साथ-साथ चली। दोनों नावें जब गङ्गा की धार में पहुँच गईं, तब केसर ने तन्त्रबल से ऊदल, ढेवा और मल्लाहों को कुछ क्षणों के लिए अचेत-सा कर दिया। इसी समय उसने इन्दल को तन्त्रबल से तोता बनाकर अपने पास बुला लिया। इन्दल को तोता बनाकर चित्ररेखा की नाव लौट पड़ी। किनारे पर आकर राजकुमारी ने अपनी नाव के मल्लाहों को बहुत इनाम दिया। फिर वह अपने डेरों को लौट गई। चित्ररेखा ने डेरों में जाते ही कूच का डङ्का बजवा दिया। तुरन्त बलखी सेना बलख़नगर की ओर चल पड़ी।

इधर जब ऊदल आदि को चेत हुआ, तब वे इन्दल को न देखकर घबरा गये। ऊदल ने तथा उनके दूतों ने सारा मेला ढूँढ़ डाला, पर इन्दल का कहीं पता न लगा। ऊदल ने गङ्गाजी में जाल भी डलवाया, फिर भी इन्दल न मिले। सब प्रकार असफल होकर ऊदल फूट-फूटकर रोने-कलपने लगे। यह देखकर माहिल ने कहा—"बेटा! चिन्ता न करो। सम्भव है, इन्दल को कोई तान्त्रिक ही ले गया हो। अतः तुम आल्हा से पाँच महीने की मुहलत लेकर सब ओर खोज लेना।" यह सुनकर ऊदल को ढाँढ़स बँधा। शीघ्र ही कूच

का डंका बजा और लश्कर दशपुरवा को चला। ऊदल ने जाकर मदनताल पर डेरे डाले। इसी समय माहिल ऊदल से विदा लेकर आगे बढ़ा। वहाँ से चलकर वह दशपुरवा पहुँचा। माहिल को देखकर आल्हा ने कहा—'मामा! ऊदल को कहाँ छोड़ा? कहो कुशल तो है"? माहिल ने मुँह बनाकर कहा—"बेटा! क्या कहें, ऊदल ने इन्दल को बुड़की लेते समय तलवार के घाट उतार दिया और गङ्गा में बहा दिया। यह देखकर हम वहाँ से भाग आये हैं।" आल्हा ने कहा—"मामा! अपनी इन झूठी बातों को अपने ही मुँह में रक्खो। ऊदल ऐसा कभी नहीं कर सकते। इन्दल ऊदल को हमसे भी अधिक चाहते हैं।" यह सुनकर माहिल ने कहा—"ऊदल ने तुम्हारा सर्वनाश कर डाला और तुम उन्हें अब भी भला कहते हो? मैं गङ्गाजी को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं झूठ बोलता होऊँ तो मेरा एकलौता अभयसिंह मर जावे और मेरा वंश-नाश हो जावे।" यह कहकर माहिल वहाँ से चला गया। इधर आल्हा को माहिल की सौगन्द सुनकर इन्दल की मृत्यु पर विश्वास हो गया। इसी समय वहाँ ढेवा पहुँचा। उसको देखकर आल्हा ने मुँह फेर लिया। यह देख ढेवा ने कहा—"महाराज! मुझे देखकर मुँह क्यों फेरा और मेरे अभिवादन का कुछ उत्तर क्यों नहीं मिला?" आल्हा ने उत्तर दिया—"पहले ऊदल को यहाँ लाओ तब सबका उत्तर दिया जायगा।"

ढेवा ने जाकर यह हाल ऊदल को सुनाया। ऊदल तुरन्त नंगे पाँवों, मुँह में दूब, सिर पर धोती का फेंट बाँधे हुए ढेवा के साथ दशपुरवा को चले। ऊदल ने जाकर आल्हा को प्रणाम किया, परन्तु आल्हा ने कुछ भी उत्तर न दिया। यह देखकर ऊदल ने कहा—"दादा! आप अप्रसन्न क्यों हैं?" आल्हा ने कहा—"यह पूछने में तुझे लज्जा नहीं आती? इन्दल को गङ्गा में बुड़की लेते समय तूने तलवार के घाट उतार दिया और हमसे अप्रसन्नता का कारण पूछता है!" ऊदल ने सौगन्द खाकर कहा—"दादा! हमने उस प्राणप्यारे को नहीं मारा है। उसे तो कोई तान्त्रिक तन्त्रबल से चुरा ले गया है। आप मुझे पाँच महीने की मुहलत दें, मैं उसे ढूँढ़ लाऊँगा।" यह

सुनकर आल्हा और भी चिढ़ गये। उन्होंने तुरन्त ऊदल को क़ैद करके खम्भे से बँधवा दिया और स्वयं हरे बाँस की छड़ी लेकर ऊदल के नग्न शरीर पर मारने लगे। उस छड़ी की मार से ऊदल बिलबिलाने लगे और जब मार न सही गई, तब चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगे। रोना सुनकर देवै आई और आल्हा से बोली—"अरे! यह क्या करते हो? मेरे बेटे को जल्दी छोड़ दो।" आल्हा ने उत्तर दिया—"इसने धोखे से इन्दल को मारा है, इसलिए इसे हम जीता हुआ नहीं छोड़ सकते।" बेचारे ऊदल के शरीर से रक्त बह रहा था। शरीर की चमड़ी उधड़ गई थी और मांस-पेशियों से रक्त निकल रहा था। इसी समय सुनवाँ ने आकर आल्हा से कहा—"प्राणनाथ! ऊदल को मारकर व्यर्थ अपयश न कमाइए। यदि हम और आप जीवित हैं तो इन्दल से पुत्र और हो जाँयगे, परन्तु भाई के मरने पर भाई न मिल सकेगा। ऊदल के बिना आपको संसार में रहना कठिन हो जायगा। यदि आप कहा न मानेंगे तो पीछे पछ-तावेंगे।" इसी समय ऊदल ने सुनवाँ से कहा—"भाभी, थोड़ा-सा पानी पिला दो।" सुनवाँ तुरन्त गडुआ भरकर ले आई, परन्तु आल्हा ने उस गडुवे को गिरा दिया और सुनवाँ को वहाँ से मारकर भगा दिया।

कहते हैं कि जब मारते-मारते आल्हा थक गये तब उन्होंने जल्लादों को बुलाकर कहा—"तुम ऊदल को जङ्गल में ले जाकर मार डालो और इनकी आँखें और कलेजा निकालकर मेरे सामने लाओ।" यह सुनकर जल्लाद ऊदल को ले चले। वे जब ड्योढ़ी पर पहुँचे तब सुनवाँ ने खिड़की पर से कहा—"जल्लादो! मेरी आज्ञा है, तुम इनको मारना मत। क्रोध में आकर आल्हा ने ऐसी आज्ञा दी है। वे पीछे से पछतायँगे। इससे तुम इन्हें छोड़ देना और इनकी जगह हिरन का कलेजा और आँखें निकालकर दरबार में दिखा देना।" अब सुनवाँ ने अपने गले का हार उन जल्लादों को दे दिया। आगे चलने पर जल्लादों से फुलवा ने अपनी खिड़की पर से कहा—"जल्लादो! तुम्हारे हाथों ही में मेरे सिन्दूर और कुसुमरङ्ग की चूनरी की लाज है। इस पर तुम हाथ न डालना।" उसने भी अशर्फ़ियों के तोड़े जल्लादों को दिये।

जल्लादों ने जङ्गल में पहुँचकर ऊदल के बन्धन तोड़ दिये और कहा—"महाराज! अपराध क्षमा करना।" अब वे लोग एक हिरन की आँखें और कलेजा निकालकर दशपुरवा की ओर गये।

महाराज परमाल ने जब यह सुना तब वे अचेत होकर गिर पड़े। सारे नगर में हाहाकार मच गया। सभी लोग आल्हा की मति पर आश्चर्य करने लगे। होश में आकर राजा परमाल ने बहुत फटकारा। सभी लोग आल्हा से घृणा करने लगे। यह देखकर आल्हा के मन में ग्लानि और दुःख उत्पन्न हुआ और वे चिन्तित हो एकान्त में रहने लगे।

इधर ऊदल को छोड़कर जब जल्लाद चले गये, तब वे मलखे की शरण लेने के लिए सिरसा की ओर चले। ऊदल के आने की खबर सुनकर मलखे ने सिरसानगर का फाटक बन्द करवा लिया और कहला दिया कि "ऊदल का मुख देखना पाप है।" यह सुनकर ऊदल वहाँ से लौट पड़े। इसी समय सुनवाँ के भेजे हुए वीरवर ढेवा भी ऊदल की तलाश में वहाँ पहुँचे। ढेवा ने ऊदल से सब हाल पूछकर कहा—"भैया! चिन्ता न करो। ईश्वर मदद करेगा। अब नरवरगढ़ में चलकर कुछ दिनों विश्राम करें।" यह सुनकर ऊदल ढेवा के साथ नरवरगढ़ की ओर चले। इसी समय उनका परम हितैषी तीरधार का वीर ठाकुर उदैया भी उनसे आ मिला। इस प्रकार ये तीनों वीर नरवरगढ़ पहुँचे। वहाँ वे तीनों एक कुआँ पर बैठ गये। थोड़ी देर बाद हिरिया मालिन उस कुएँ पर पानी भरने आई। उसने उन तीनों को देखकर कहा—"मुसाफ़िरो! तुम लोग कहाँ से आये हो और कहाँ जाओगे?" ऊदल ने कहा—"मालिन! तुम मुझे भूल गई। हम आल्हा के छोटे भाई ऊदल हैं।" मालिन ने चौंककर कहा—"यदि तुम्हीं ऊदल हो तो तुम्हारा लश्कर और बेंदुला कहाँ गया?" ऊदल ने उत्तर दिया—"दिल्लीश्वर पृथ्वीराज ने महोबे पर चढ़कर लूट करवा ली है, जिसमें हमारे हथियार और घोड़े भी लुट गये। चौहानों के साथ फुलवा और सुनवाँ के डोले भी गये हैं। हम प्राण बचाकर यहाँ भाग आये हैं।" यह सुनकर हिरिया भौंचक्की सी रह गई। वह तुरन्त महलों की ओर दौड़ी गई। कहा-

रानी के पास जाकर उसने सारी कथा कह सुनाई। तब महारानी ने अपने पुत्र मकरन्दी को बुलाया और सब हाल कहा। सुनते ही मकरंदी उस कुएँ पर पहुँचा। ऊदल को देखकर मकरन्दी ने हृदय से लगा लिया, फिर पूछा—"ठाकुर! तुम्हारी सेना और बेंदुला कहाँ है?" ऊदल ने कहा—"क्या कहें? पृथ्वीराज ने महोबे पर हमला करके हमें लूट लिया। उसी में सर्वस्व चला गया और तुम्हारी बहन तथा सुनवाँ के डोले भी दिल्ली को चले गये हैं। हमने यहाँ भागकर प्राण बचाये हैं।" यह सुनते ही मकरन्दी का शरीर क्रोध से काँपने लगा। वह बोला—"ठाकुर! तुम्हारे जीते जी ऐसा हो गया? तुम्हें राजपूत कहाने में शर्म नहीं आती? चलो हम दोनों साथ चलें। हम दिल्ली की ईंट से ईंट बजा देंगे और दोनों डोला लौटा लावेंगे।" अब मकरन्दी ने तीन घोड़े मँगवाये और उन तीनों को उन पर बैठाकर लिवा लाये।

महल में उन तीनों ने स्नान-ध्यान किया। फिर उदया और ढेवा को भोजन करवाकर ऊदल भोजन करने महलों में गये। सास ने सुन्दर चौकियों पर ऊदल और मकरन्दी को बैठाया। फिर थाल परोसकर वह पंखा हाँकने लगी। ऊदल ने बलिवैश्वदेव कर जैसे ही कौर उठाया कि उनके नेत्रों से आँसू बह निकले। यह देखकर मकरन्दी ने कहा—"ठाकुर! तुम दुःख न करो। मैं चलकर पृथ्वीराज से बदला लूँगा। दिल्लीगढ़ को खुदवाकर ताल करवा दूँगा।" इस पर ऊदल ने कहा—"भैया! यह तो हमने तुमसे बहाना किया था। महोबे में सब तरह से क्षेम-कुशल है।" अब ऊदल ने इन्दल-हरण से लगाकर अब तक का सब हाल बता दिया और अपनी पीठ खोलकर प्रमाण दिखा दिया। ऊदल के घायल शरीर को देखकर महारानी सहम गई और बोलीं—"बेटा, शान्त हो। ईश्वर तुम्हारी मदद करेगा।" इसके बाद दोनों ने भोजन किये और फिर विश्रामगृह में गये। वहाँ ऊदल ने ढेवा से कहा—"दादा! बताइए किस युक्ति से हमारा प्राणाधार इन्दल मिलेगा।" ढेवा ने कहा—"गुदड़ी सिलवा लो। काम बन जायगा।" ऊदल की आज्ञा से गुदड़ी सिलवाई गई, जिसमें बीस परत थे। परतों में उन्होंने सभी

हथियार लटकाकर छिपा दिये। गुदड़ियों के साथ रत्न-जड़ी चार टोपियाँ भी मँगवाई गईं।

अब मकरन्दी समेत उन चारों ने जोगियों का वेष धारण किया। चारों गाते-बजाते रनिवास की ड्योढ़ी पर पहुँचे। महारानी ने जोगियों को देखकर पूछा—"महाराज! आप कहाँ से आ रहे हैं?" यह सुनकर मकरन्दी हँस पड़े और बोले—"अम्माँ! तुमने माता होकर नहीं पहचाना? हम लोग इसी वेष में इन्दल की खोज करेंगे।" महारानी ने आशीर्वाद देकर कहा—'जाओ, तुम्हारा मनोरथ पूरा हो। रास्ते में तुम अपनी ससुराल झुन्नागढ़ को भी ढूँढ़ते जाना।" माता की आज्ञा लेकर मकरन्दी और ऊदल आदि चल दिये। झुन्नागढ़ पहुँचकर उन्होंने वहाँ भी गाना-बजाना शुरू किया। ख़बर पाकर इन जोगियों को महारानी ने अपने यहाँ बुला भेजा। वे लोग रङ्गमहल के द्वार पर पहुँचे। महारानी ने सुन्दर जोगियों को देखकर कहा—"महाराज! आप लोगों पर कौन-सी विपत्ति पड़ी, जिससे तुमने इस युवावस्था में गृहस्थाश्रम त्याग दिया?" इस पर मकरन्दी ने कहा—"अम्माँ! तुम जोगियों के धोखे में न रहना। हम मकरन्दी हैं और ये मलखे के छोटे भाई ऊदल हैं।" यह सुनकर रानी चकित हो गई और बोली—"बेटा! तुमने यह वेष क्यों बनाया?" तब मकरन्दी ने सब हाल कह सुनाया। शीघ्र ही वहाँ मकरन्दी के ससुर और साले कान्तामल आ गये। कान्तामल की सलाह से वे लोग देवी के मन्दिर में गये। देवी के आगे तुरन्त हवन किया गया, बलिदान किया गया। फिर सब लोग भगवती से इन्दल का पता पूछने लगे। उनकी भक्ति और श्रद्धा पर प्रसन्न होकर देवी ने आकाशवाणी द्वारा कहा—"तुम लोग बलख़नगर को जाओ। तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा।" यह सुनकर वे लोग वहाँ से चल पड़े। झुन्नागढ़ से कान्तामल भी जोगी का वेष बनाकर उनके साथ हो गये थे। ये पाँचों जोगी पन्द्रह दिन में महाराज अभिनन्दन की राजधानी में पहुँचे।

नगर-द्वार के द्वारपाल को नाच-गान से मोहित करके वे लोग नगर के भीतर गये। वे लोग सारे नगर में अपना सुन्दर नृत्य-गान दिखाते हुए फिरने लगे।

रनिवास की पनिहारी ने कुआँ पर उनका नाच देखा तो उसने जाकर रानी से कहा—"महारानी! पाँच जोगी ऐसे आये हैं कि उनका रूप और नाचना-गाना देखकर देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं। आप कहें तो उन्हें ड्योढ़ी पर लिवा लाऊँ।" आज्ञा पाकर वह जोगियों को बुला ले गई। जोगियों का नृत्य-गान देखकर रानी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने जोगियों का करतब देखने के लिए अपनी बेटी चित्ररेखा को भी बुला भेजा। चित्ररेखा एक पान लगाकर साथ लाई और जोगियों का करतब देखने लगी। तमाशा देखकर कुमारी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने तुरन्त उठकर वह पान ऊदल को खिला दिया। उसका लावण्य देखकर ऊदल चकित हुए और मूर्च्छा खाकर गिर पड़े। यह देखकर ढेवा ने रानी से कहा—"रानी, तेरी बेटी ने हमारे छोटे जोगी को, जो सवेरे से भूखा-प्यासा था, तमाखू-युक्त पान खिलाकर अच्छा नहीं किया। जोगी को कुछ हो गया तो मैं शाप देकर तेरा सर्व-नाश कर दूँगा।" यह सुनते ही रनिवास में त्राहि-त्राहि मच गई। ऊदल के मुख पर ठण्डे जल के छींटे दिये गये और पंखों से हवा की जाने लगी। थोड़ी देर बाद ऊदल को चेत हुआ, तब चित्ररेखा ने अपनी माता से कहा—"अम्माँ! यह जोगी सवेरे से भूखा-प्यासा है। मेरे महल में भोजन तैयार है। आप आज्ञा दें तो मैं इसको भोजन कराके पुण्य लूटूँ।" महारानी ने ख़ुशी से आज्ञा दे दी। चित्ररेखा तुरन्त ऊदल को साथ लेकर सतखण्डे पर पहुँची। वहाँ उसने उस तोते को तन्त्र के बल से मनुष्य बना लिया और उनसे कहा—"राजकुमार! तुम्हें अपने रूप पर बहुत गर्व था। देखो, यह जोगी कैसा सुन्दर है?" इन्दल ने ऊदल की ओर देखकर कहा—"तू जोगी के धोखे में न रहना। ये तो हमारे चाचा ऊदल हैं।" यह सुनकर चित्ररेखा दङ्ग रह गई। इसी समय ऊदल ने इन्दल से कहा—"बेटा! तुम्हारे लिए हमने बड़े दुःख सहे। महोबे में हाहाकार मचा हुआ है। अब तुम झटपट हमारे साथ चलकर सबको ढाढ़स बँधाओ।" इन्दल ने कहा—"चाचा! हम तो परवश हैं। यह राजकुमारी हमें आज्ञा दे तो हम चल सकते हैं। तब ऊदल ने कुमारी से कहा—"बेटी! हमारे बेटे को हमारे साथ जाने दो।" कुमारी ने उत्तर

दिया—"चाचा ! मैंने बड़े परिश्रम और युक्ति से अपने प्राणवल्लभ को ढूँढ़ा है। मैं विना व्याह किये इन्हें न जाने दूँगी।" इस पर ऊदल ने कहा—"बेटी, मैं सौगन्द खाकर कहता हूँ कि इसे ले जाकर महोबे से बारात लाऊँगा और तुझे अवश्य व्याहूँगा।"

चित्ररेखा ने ऊदल को जब सब प्रकार से वचन-बद्ध कर लिया तब इन्दल को फिर तोता बना उसी पिंजड़े में बैठाकर ऊदल को सौंप दिया। उसने ऊदल को मनुष्य बनाने का तन्त्र बताकर कहा—"चाचा ! इस मन्त्र से तुम इन्हें मनुष्य बना लेना और हमारा ध्यान रखना।" यह कहकर चित्ररेखा रोने लगी। ऊदल उसे ढाढ़स बँधा और पिंजड़े को साथ ले नीचे उतरे। वहाँ आकर उन्होंने महारानी से भिक्षा ली और आशीर्वाद देकर अपने साथियों समेत चल पड़े। नगर के बाहर जाकर उन्होंने इन्दल को तोते से मनुष्य बना लिया। अब वे सिरसा की ओर चले।

उदया ठाकुर ने आगे से जाकर सिरसा में मलखे से सब हाल कह दिया, तब उन्होंने आगे बढ़कर ऊदल का स्वागत किया। सिरसा आकर ऊदल ने मलखे से कहा—"दादा ! तुम इन्दल को ले जाकर आल्हा को सौंप देना, परन्तु मेरा पता न बताना। साथ ही उनसे यह भी कहना कि इन्दल का व्याह बलख-नगरी में कर लें।" अब ऊदल मकरन्दी के साथ नरवरगढ़ को चले गये। चलते समय ऊदल ने इन्दल को एक पत्र सुनवाँ और एक पत्र फुलवा के लिए दिया।

इन्दल को लेकर मलखे महोबे पहुँचे। परमाल के सामने इन्दल को खड़ा कर मलखे ने कहा—"दद्दुआ ! इन्दल को तो मैं खोजकर ले आया हूँ। अब आल्हा से कहो कि ऊदल को मँगवा दें। यदि वे ऐसा नहीं कर सकेंगे तो मैं दशपुरवा को खोदकर ताल करवा दूँगा।" यह सुनकर परमाल पालकी पर चढ़कर इन्दल और मलखे के साथ दशपुरवा पहुँचे। आल्हा के पास जाने से पहले इन्दल रनिवास में गये। उनको देखकर सभी रानियाँ विस्मित हो गईं। इन्दल ने अपना सब हाल बताकर दोनों चिट्ठियाँ सुनवाँ और फुलवा को

दे दीं। फिर बाहर आकर वे मलखे के साथ हो लिये। इन्दल को लेकर मलखे आल्हा के पास गये और बोले—"दादा!—मैं खोजकर इन्दल को ले आया हूँ। अब आप ऊदल को बुलवा दें, नहीं तो दशपुरवा में आग लगा दूँगा।" इससे आल्हा कायल हो गये और कटार निकालकर आत्महत्या करने को तैयार हुए। तब मलखे ने उन्हें रोककर कहा—"देखो! इन्दल को बलखनगरी की राजकुमारी तोता बनाकर ले गई थी। हमने जोगियों का वेष बनाकर उसका उद्धार किया है। चलते समय उस राजकुमारी ने हमसे इन्दल के साथ विवाह करा लेने की दृढ़ प्रतिज्ञा करवा ली है। इससे आप जाकर यह कार्य करवा लायें। हम लोग बिना ऊदल के इस विवाह में शरीक न होंगे। अब हम जानना चाहते हैं कि किसकी वीरता के भरोसे पर आपने ऊदल को मरवाया है?" यह कहकर मलखे और परमाल दोनों अपने-अपने घरों को लौट गये।

विवाह का नाम सुनकर आल्हा चौंक पड़े। उन्होंने सुनवाँ को बुलवाया और कहा—"देखो, हमसे यह विवाह नहीं हो सकता। हम वहाँ जाकर अपना सिर नहीं कटवायेंगे।" सुनवाँ ने कड़ककर कहा—"आपके शरीर में ऊदल को मारने के लिए कहाँ से वीरता आ गई थी? उसी वीरता के बल पर बेटे का विवाह कीजिए। हाँ, आपसे युद्ध न हो सके तो आप रनिवास में बैठें, मैं क्षत्राणी हूँ, मैं वीर-वेश में जाकर इन्दल का विवाह कर लाऊँगी।" यह सुनकर आल्हा के शरीर में उत्तेजना उत्पन्न हो गई। शीघ्र ही उन्होंने निमन्त्रण-पत्र लिखवाकर सभी व्योहारियों के यहाँ भिजवा दिये तथा मलखे को सकुटुम्ब बुला भेजा।

थोड़े ही दिनों में सभी व्योहारी राजा-महाराजाओं ने आकर महोबे के चारों ओर डेरे डाल दिये।

निश्चित दिन को महोबे से बारात चल पड़ी। सभी क्षत्रिय लोग अपने-अपने बछेड़ों को नचाते हुए क़दम-क़दम चलने लगे। आल्हा का पचशावद अपनी मस्त चाल से झूमता हुआ चला। बारात में मकरन्दी नहीं आये थे। इससे मलखे की सलाह से बारात नरवरगढ़ होकर चली। वहाँ पहुँचने पर मकरन्दी

अपने लश्कर को सजाकर साथ हो गये। ऊदल भी चुपचाप एक तामजाम में बैठकर चले।

वलख़नगरी जब तीन कोस रह गई, तब फ़ौजी पड़ाव पड़ गया। बढ़इयों ने मेखें गाड़कर ख़ेमे खड़े कर दिये। सभी लोग विश्राम करने लगे।

दूसरे दिन रुपना वारी एक उड़नबछेड़े पर बैठकर एपनवारी पहुँचाने वलख़-नगर की ओर चला। द्वारपाल रुपना का नाम, धाम, काम और नेग* आदि पूछकर महाराज के पास ख़बर देने गया। रुपना ने दरवानी के आने में कुछ देर देखी तो अपना घोड़ा बढ़ाया और दरबार में ही जा पहुँचा। वहाँ उसने एपनवारी महाराज के पास फेंक दी और कहा—"हमारा नेग झटपट दिलवा दीजिए।" रुपना की यह ढिठाई देखकर महाराज अभिनन्दन को बहुत क्रोध आया। उन्होंने तुरन्त अपने सिपा-हियों को उस वारी को मारने का हुक्म दिया। इससे शीघ्र ही वहाँ तलवार चलने लगी। रुपना ने घोड़े पर आगे बढ़कर भाले की नोक से वह एपनवारी उठा ली और हमला करनेवालों को चीरता हुआ वह वहाँ से निकल गया। कुछ दूर तक क्षत्रियों ने उसका पीछा किया, परन्तु जब वह चौकड़ी भरकर निकल गया तब वे लौट आये।

अब अभिनन्दन ने अपने सातों पुत्रों को बुलवाकर कहा—"तुम लोग तुरन्त जाकर महोबे के लश्कर पर छापा मारो और उनको मारकर भगा दो। आज्ञा पाकर वलख़नगर की फ़ौज चिल्लाती हुई महोबे के लश्कर की ओर चल पड़ी। युद्ध की चिल्लाहट सुनकर मलखे ने अपनी फ़ौज सजवा ली और जाकर शत्रु को बीच ही में रोक दिया। यह देखकर अभिनन्दन के पुत्र आल्हन ने तोपों में पलीता लगवा दिया। अब दोनों ओर से धुआँधार आग की वर्षा होने लगी। हज़ारों वीर, कौशल दिखाये बिना ही, काल के गाल में चले गये। फिर दोनों ओर के वीर तलवार चलाने लगे। तेगा, भाला, बर्छी, किरच, दुधारा, तलवार, बल्लम, फरसा तथा कटार आदि भाँति-भाँति के हथियार चल

---

* नेग यही था—"चारि घरी भरि चले सिरोही, द्वारे बहै रक्त की धार।"

के प्यासे बनकर रक्त पीने लगे। थोड़ी देर में दोनों ओर की फ़ौजें आपस में गुथ गईं। अभिनन्दन और उसके सातों पुत्रों ने आल्हा और मलखे की सेना को थोड़ी ही देर में मार भगाया। यह देखकर आल्हा घबरा गये। मलखे ने चुपचाप एक धावन को मकरन्दी के पास सब हाल कहने को भेजा। यह हाल सुनकर ऊदल पहले तो हँसे, परन्तु उन्होंने चटपट नरवर की फ़ौज को सजने की आज्ञा दी। जब फ़ौज तैयार हो गई तब ऊदल बेंदुला पर और मकरन्दी तथा कांतामल अपने-अपने घोड़े पर चढ़कर चले। ऊदल बलख़नगर की फ़ौज को चीरते हुए पचशावद के पीछे पहुँचे। उन्होंने बेंदुला के एड़ लगाई और पचशावद के हौदे के कलसों को गिरा दिया। यह देख आल्हा काँप उठे और मलखे से बोले—"भैया! यह क्षत्रिय तो बड़ा विकट है, चलो अब लौट चलें।" तब मलखे ने हँसकर कहा—"क्या आप भाँग खाये हुए हैं? ये तो रणदूल्हा उदयसिंह हैं।" यह सुनकर आल्हा रो पड़े और क्षमा माँगने लगे, तब ऊदल ने आल्हा के हौदे पर जाकर उनके पैर छुए और आल्हा उन्हें छाती से लगाकर ख़ूब रोये। उन्हें समझा-बुझाकर ऊदल बेंदुला पर आ गये। फिर ऊदल, ढेवा, कांतामल, मकरन्दी, मलखे और चौंड़ा, ये सभी चारों ओर से अभिनन्दन की फ़ौज पर बाज़ की भाँति टूट पड़े। महोबिया सैनिक ऊदल को देखकर दूने उत्साह से लड़ने लगे। महोबियों के इस वेग के कारण अभिनन्दन की फ़ौज में भर्रा पड़ गया। यह देखकर अभिनन्दन के सातों बेटे उक्त सातों वीरों से भिड़ गये। बड़ी देर तक युद्ध होता रहा। अन्त में सातों राजकुमारों को महोबियों ने बन्दी कर लिया। अपने पुत्रों को बन्दी हुआ देखकर अभिनन्दन ने अपना हाथी बढ़ाया। उनके सामने पहले चौंड़ा गया, परन्तु वह उनका सामना भली भाँति न कर सका; तब मलखे आगे बढ़े, किन्तु वे भी आल्हा को आगे करके पीछे हट गये। पहले तो आल्हा तलवार और भाले आदि से युद्ध करते रहे, पर जब अभिनन्दन ने गुर्ज का आश्रय लिया तब आल्हा ने उस वार को बचाकर पचशावद की सूँड़ में साँकल दी। साँकल पाकर पचशावद ने भयावना रूप धारण किया। अब शत्रु-सेना बलख़नगर को भागने लगी।

सामने से सेना के भाग जाने पर पचशावद ने अभिनन्दन के हौदे पर साँकल फेंकी। इससे वह हौदा अभिनन्दन समेत नीचे आ गिरा। अब क्या था, वे क़ैद कर लिये गये। अभिनन्दन के वन्दी होते ही महोबियों के सैन्य-दल में जीत का डङ्का बजा।

अब इन्दल को पालकी में बैठाकर आल्हा सेना समेत क़िले की ओर बढ़े। वहाँ जाकर उन्होंने रनिवास में कहला दिया कि झटपट विवाह की तैयारी करो। फिर साँगों का खम्भ गाड़ा गया और ढालों से मण्डप छाया गया। तुरन्त ही पण्डित चूड़ामणि गणेश-पूजन आदि करने लगे। जब चित्ररेखा आ गई तब अभिनन्दन की मुश्कें खोलकर उनसे कन्यादान कराया गया। फिर सातों भाँवरें पड़ीं। आल्हा ने लाखों रुपये का गहना वहाँ के नेगियों को बाँट दिया और सातों राजकुमारों को छोड़कर राजा से विदा के लिए कहा। चित्ररेखा को कपड़ों और गहनों से सजाकर उसकी विदा कर दी गई। सबसे मिल भेंटकर वह पालकी में बैठी। कहार पालकी लेकर चल दिये। रास्ते में ऊदल ने मोहरों के बारह तोड़े लुटाये। पालकी डेरों में आ गई तब कूच का डङ्का बजा। तुरन्त डेरे उखाड़े जाकर छकड़ों पर लाद दिये गये। सब लोग अपनी-अपनी सवारियों पर बैठकर चल दिये। रास्ते में बारात दो दिन भुन्नागढ़ में ठहरी और कान्तामल को धन्यवाद देकर फ़ौज आगे बढ़ी। नरवरगढ़ में मकरन्दी को छोड़कर बारात सात दिनों में महोबे पहुँची। मल्हना अपनी पौत्रवधू का परिछन करके आदर से भीतर लिवा ले गई। क़िले से तोपें छूटने लगीं। दोनों को परमाल लाखों रुपये बाँटने लगे और रनिवास में मङ्गलाचार होने लगे।

कुछ दिनों बाद अन्य व्यौहारी राजाओं को आदर से विदा करके आल्हा दशपुरवा और मलखे सिरसा को चले गये।

आल्हा का निर्वासन

माहिल सदा परमाल और बनाफरों का अनिष्ट सोचा करता था। वह हृदय से चाहता था कि उन सब का सर्वनाश हो जाय। इससे वह सदा महोबे को चौपट करने की युक्तियाँ सोचा करता था। एक वार वह एक युक्ति सोचकर दिल्ली गया। महाराज पृथ्वीराज ने अपने साले माहिल को आते देखकर बैठने को एक सुन्दर चौकी डलवा दी। माहिल पृथ्वीराज को प्रणाम कर उस चौकी पर जा बैठा। पृथ्वीराज ने कहा—"कहो, कुशल तो है?" माहिल ने मुँह बनाकर कहा—"हाँ महाराज! आपके प्रबल प्रताप से मैं सकुशल हूँ; परन्तु जब से मलखे ने सिरसा में गढ़ी बनवा ली है तब से मैं सदा शङ्कित सा रहता हूँ।" यह सुनकर चौहानराज हँसे और बोले—"अच्छा! महोबे के क्या हाल हैं?" माहिल ने कहा—"महाराज! आल्हा-ऊदल के भरोसे रहकर परमाल * सुख भोगते हैं।" थोड़ी ही देर बाद माहिल ने कहा—"महाराज! यदि महोबे से सब उड़नबछेड़ों को आप किसी तरह (धोखे से ही सही) मँगवा लें और फिर महोबे पर आक्रमण कर दें तो आप महोबे को विजय करके आल्हा, ऊदल और मलखे का संहार कर सकते हैं। आपके मँगनी माँगने पर भोले-भाले परमाल तुरन्त घोड़े और पचशावद हाथी भेज देंगे। इस प्रकार बनाफरों का नाश होते ही मार्ग का कण्टक दूर हो जायगा। बनाफरों से सम्पर्क रखने से हँसी होती है।"

यह सुनकर पृथ्वीराज बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरन्त परमाल को एक पत्र लिखा। उसमें बहाने से हरनागर, हंसामनि, बैंदुला, करिलिया, कबूतरी व पपीहा

---

* इनका असली नाम परमर्दिदेव था।

नामक घोड़ों और पचशावद हाथी को मँगनी में कुछ दिनों के लिए माँगा गया था। इस पत्र को लेकर धावन महोबे पहुँचा।

धावन ने आकर जिस समय यह पत्र परमाल को दिया उस समय दरबार में आल्हा भी बैठे थे। परमाल ने उस पत्र का सब हाल आल्हा को सुनाकर कहा—"शीघ्र ही ये घोड़े और पचशावद हाथी दिल्ली को भेज दो।" आल्हा ने कहा—"महाराज! इसमें कुछ चाल है। हम अपने घोड़ों और हाथी को नहीं भेज सकते।" परमाल ने उत्तर दिया—"बेटा! यदि चौहानराज का कोई काम हमसे बनता है तो हमें उसे पूर्ण करना चाहिए। आखिर वे हमारे निकट सम्बन्धी ही तो हैं। यदि हम ऐसा न करेंगे तो वे महोबे पर चढ़कर लूट करवा लेंगे। वे बलवान् राजा हैं।" यह सुनकर आल्हा-ऊदल आग-बबूला हो गये। ऊदल बोले—"पृथ्वीराज का वह बल ब्रह्मा के विवाह में कहाँ गया था जब उन्हें युद्ध में जीतकर हम उनकी कन्या को ब्याह लाये थे? हमारे जीते जी महोबे पर चढ़कर कोई विजय नहीं पा सकता। अपनी बराबरी करने का साहस हम लोगों ने किसी राजा में नहीं रहने दिया है। यह सब जानकर भी आप अनुचित बातें कहते हैं। पृथ्वीराज इस चाल से हाथी-घोड़ों को मँगवाकर महोबे पर आक्रमण कर देंगे। उस समय हम लोग, अपने घोड़ों के न रहने पर, युद्ध करने में समर्थ न होंगे।" परमाल ने घोड़े भेज देने के लिए बनाफरों को बहुतेरा समझाया परन्तु आल्हा-ऊदल ने उनकी एक न सुनी। इससे क्रुद्ध होकर परमाल बोले—"टुकड़खोर बनाफरो! तुम लोगों का यह साहस कि चन्देलराज की आज्ञा का उल्लंघन करो। जाओ, चौबीस घण्टे में दशपुरवा ख़ाली कर हमारे राज्य से चले जाओ। यदि तुम ऐसा न करके दशपुरवा में हमारे राज्य की सीमा में जल पियो तो गो-रक्त के समान, भोजन करो तो गोमांस के समान और यदि स्त्री के साथ शयन करो तो वह माता के साथ विषय के तुल्य होगा।" यह सुनते ही आल्हा-ऊदल वहाँ से उठकर चल दिये।

दशपुरवा पहुँचकर ऊदल ने आल्हा से कहा—"दादा! यहाँ से अब कहाँ चलोगे? चारों तरफ़ अपने शत्रु हैं और भादों का महीना है। समझ में नहीं

आता, ऐसे समय कहाँ चलें।" आल्हा ने कहा—"इसी सोच में तो हम भी पड़े हैं।" कुछ देर के बाद ऊदल ने कहा—"कन्नौज के राजा जयचन्द से अपना कुछ बिगाड़ नहीं है और लाखन राना से हमारा परिचय भी है। इससे वहीं चलो।" यह निश्चय करके आल्हा ने रूपना को बुलाया और उसे अपनी दस हज़ार सेना को एकत्र करके चलने को कहा। इसी समय ढेवा वहाँ आया। उसने आल्हा को तैयारी करते देखकर पूछा—"भैया! कहाँ जा रहे हो?" आल्हा ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया, जिसे सुनकर वह भी उन्हीं के साथ चलने को तैयार हो गया।

देवै ने यह हाल सुना तो वह भी क्रुद्ध होकर तैयारी करने लगी। तुरन्त छकड़ों पर सब सामान लदा दिया गया। आल्हा की कुल फ़ौज और सामान लदकर तैयार हो जाने पर रनिवास के डोले तैयार होकर बाहर आये। अब कूच का डंका बजा। आल्हा पचशावद पर, ऊदल बेंदुला पर, ढेवा मनुरथा पर और इन्दल करिलिया पर सवार होकर चले। हंसामनि तथा पपीहा घोड़े लश्कर के साथ कोतल चले।

आल्हा-ऊदल को जाते देखकर दशपुरवा की प्रजा रोने लगी। वहाँ से वह लश्कर महोबे पहुँचा। सब हाल सुनकर मल्हना ने आल्हा-ऊदल को बहुतेरा समझाया परन्तु उन्होंने एक न मानी और मल्हना को रोती छोड़कर वे चल दिये। मल्हना ने एक धावन मलखे के पास सिरसा को भेजा और कहला भेजा—"तुम्हीं आल्हा-ऊदल को समझा-बुझाकर लौटा लो।" मलखे ने मल्हना का सन्देशा सुनकर आल्हा को रास्ते में जाकर रोका और तरह-तरह से समझाया परन्तु उन्होंने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया।

भादों का महीना था। कभी घनघोर वर्षा होती तो कभी बदली की कड़ी धूप निकल पड़ती। नदी-नाले लबालब भरे चले जाते थे। रास्ते में कीचड़ था। इन सब बाधाओं को तय करते हुए बनाफ़रों ने बेतवा पार की। फिर वे लोग कालपी के घाट से जमुना पार हुए। जमुना पार करने के तीसरे दिन

वे लोग परहुल पहुँचे। वहाँ तीन दिन रहकर वे लोग आगे बढ़े। सियरमऊ में पहुँचकर आल्हा ने डेरे डलवा दिये। एक महीने तक आल्हा-ऊदल सियरमऊ के धूरे पर पड़े रहे। फिर ऊदल ने आल्हा से कहा—"दादा! इन डेरों में कब तक गुज़ारा होगा? चलो, राजधानी में चलकर राजा जयचन्द से कुछ भूवृत्ति माँगें।" इसपर आल्हा ने कहा—"अच्छा, तुम ठहरो मैं जाता हूँ।" अब आल्हा पचशावद पर सवार हो कन्नौज की ओर चल दिये। उनके साथ सौ योद्धा भी गये। थोड़ी देर में आल्हा तोरण-द्वार में पहुँचे। दरबानी ने आल्हा का परिचय लेकर महाराज को सूचना दी। जयचन्द ने तुरन्त उन्हें बुला भेजा। आल्हा ने जाकर जयचन्द गहरवार* को प्रणाम किया। जयचन्द ने उन्हें सुन्दर आसन पर बैठाकर पूछा—"कहो, महोबे में कुशल तो है?" आल्हा ने उत्तर दिया—"हाँ, वहाँ कुशल है परन्तु महाराज परमाल ने हमें देश-निकाला दे दिया है। इससे हम आपकी शरण में रहना चाहते हैं। कृपा करके कोई स्थान ऐसा बता दीजिए, जहाँ हमारा निर्वाह हो जाय।" जयचन्द ने उत्तर दिया—"महाराज परमाल हमारे मित्र हैं, इससे उनके अपराधी को हमारे यहाँ शरण नहीं।" यह सुनकर आल्हा लौट पड़े। डेरों में आकर उन्होंने सब वृत्तान्त ऊदल से कहा।

एक महीने बाद कार्तिक के अन्त में एक दिन ऊदल सौ योद्धाओं को लेकर कन्नौज नगर में घुस पड़े। वहाँ जाकर उन्होंने कन्नौज के बाज़ार को लूटने का हुक्म दे दिया। तुरन्त बाज़ार में त्राहि-त्राहि मच गई।

यह ख़बर पाकर जयचन्द बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने लाखन को बुलवाकर कहा—"जाओ! सियरमऊ के धूरे पर तोपें रखकर बनाफरों के डेरे उड़वा दो।" आज्ञा पाकर लाखन तोपें लेकर चल दिये। जयचन्द के सेनापति सैयद ने यह ख़बर सुनी तो वह उनके पास आकर बोला—"अन्नदाता! आप जान-बूझकर बर्र के छत्ते में क्यों हाथ डालते हैं? आपने लाखन को उन

* गहरवार राठौरों की शाखा है।

ऊदल के विरुद्ध भेजा है, जिसने बारह वर्ष की आयु ही में अपने बाप का बदला माड़ौ के राजा जम्बै से ले लिया था और माड़ौ के राजवंश का सर्वनाश कर डाला था। इन्हीं दोनों भाइयों ने दिल्ली के चौहानों और नैनागढ़, नरवरगढ़, बौरीगढ़, झुन्नागढ़, कमायूँगढ़ तथा बलख़-बुख़ारे के राजाओं को नीचा दिखाया है। इसलिए आप उनसे विरोध न करें।" यह सुनकर जयचन्द ने कहा—"तो हम अपने दोनों ख़ूनी हाथियों को मद पिलाकर छोड़े देते हैं। यदि बनाफर इन्हें पछाड़ दें तो मैं उन्हें आदर से रख लूँगा।" यह सुनकर सैयद ने एक पत्र लिखकर आल्हा को बुलाया। जयचन्द ने धावन भेजकर लाखन को लौटा लिया।

सैयद का पत्र पाकर आल्हा ने अपना पचशावद सजवाया तथा अन्य हथियारबन्दों को भी अपने साथ तैयार होकर चलने की आज्ञा दी। ऊदल भी बैंदुला पर चढ़कर सियरमऊ से चले।

फाटक पर आल्हा और ऊदल के पहुँचने पर जयचन्द ने आगे बढ़कर कहा—"बनाफर! तुमने जिस प्रकार दिल्ली में हाथी पछाड़े थे उसी प्रकार यदि तुम हमारे हाथियों को भी पछाड़ो तो हम तुम पर बहुत प्रसन्न हों।" यह सुनते ही ऊदल बैंदुला पर से उतरे और अपना भाला लेकर एक हाथी की ओर झपटे। उन्होंने तुरन्त ही भाले से उस हाथी की सूँड़ छेद दी। फिर उन्होंने भाले को जैसे ही सूँड़ की जड़ में नीचे की ओर घुमाया वैसे ही वह हाथी चिंघाड़ मारकर गिर पड़ा। इसी प्रकार आल्हा ने दूसरे हाथी को पछाड़ दिया। तब तो जयचन्द बड़े प्रसन्न हुए और बोले—"धन्य है। यही कारण था कि परमाल अभी तक बेखटके राज्य करते रहे। मालूम होता है, अब उनके बुरे दिन आनेवाले हैं, तभी उन्होंने तुम्हें निकाला है। अच्छा! हम तुम्हें रिजगिरि की गढ़ी और उसका इलाक़ा देते हैं। तुम वहीं जाकर आनन्द से रहो।"

यह सुनकर आल्हा ने जयचन्द को प्रणाम किया और रिजगिरि को चले गये। रिजगिरि को साफ़ करवाकर आल्हा ने अपनी सेना और कुटुम्ब को

सियरमऊ से बुलवा लिया। जो रिजगिरि अब तक छोटा सा क़स्बा था, अब धीरे-धीरे नगर बनने लगा। गढ़ी के बुर्जों पर तोपें चढ़ा दी गईं। कचहरी भली भाँति सजा दी गई। नगर में चौकीदारों आदि का ख़ासा प्रबन्ध करवा दिया गया। अधिक क्या कहें, रिजगिरि एक सुन्दर राजधानी सी लगने लगी। दीन प्रजा न्याय तथा वीरता की सौम्यमूर्त्ति आल्हा-ऊदल को अपना संरक्षक पाकर प्रफुल्लित हो उठी। आल्हा-ऊदल भी जयचन्द के सामन्त बनकर प्रसन्नता से रहने लगे।

लाखन का विवाह अर्थात् बूँदी (बङ्गाल) का युद्ध

उस समय प्रायः सभी लोग आल्हा-ऊदल का लोहा मानते थे। ये दोनों भाई अपने बाहुबल के भरोसे किसी भी राजा से युद्ध करने से न हिचकते थे। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि बनाफर सच्चे क्षत्रिय होने के कारण युद्ध की सूचना पाकर बहुत प्रसन्न होते थे।

एक दिन बूँदी के महाराज गङ्गाधर के पुत्र जवाहरसिंह अपनी बहन का टीका लेकर कन्नौज के राजदरबार में आये। महाराज जयचन्द बङ्गाल को बारात ले जाना उचित न समझकर टीका चढ़ाने में टाल-मटोल करने लगे। दैवयोग से ऊदल दरबार में मौजूद थे। उन्होंने राजा का उत्तर सुनकर कहा—"महाराज! आप राठौर सिंह होकर यह क्या कहते हैं! जो व्यक्ति शरण में आवे उस पर अभय हस्त रखना और उसकी यथाशक्ति सहायता करना क्षत्रियों का कर्त्तव्य है। यह राजकुमार अपनी बहन के विवाह के लिए आपकी ओर सतृष्ण नेत्रों से देख रहा है। उसे निश्चिन्त करके आप लाखन राना का टीका चढ़ा लें। जो आपत्तियाँ आवेंगी उनके सहने को हम दोनों भाई सदा तैयार रहेंगे।" यह सुनकर जयचन्द ने लज्जित हो उस विवाह को मञ्ज़ूर कर लिया और बड़ी धूम-धाम से लाखन का टीका चढ़वा दिया। विवाह की मिति शिव* तिथि निश्चित की गई। महाराज जयचन्द ने बूँदी के नेगियों को लाखों रुपये की लागत के गहने देकर बिदा किया।

कन्नौज में विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। सभी व्यौहारी राजाओं को निमन्त्रण भेज दिये गये। माघ के अन्त में व्यौहारी राजा लोग अपना-अपना लश्कर लेकर कन्नौज में आ गये। सब राजाओं के आ जाने पर कन्नौज से बड़ी धूम-धाम के साथ बारात चली। बारात में तीन लाख सवार और चार लाख पैदल थे। इनके अलावा नौकर-चाकर, पुरोहित, नेगी आदि भी हज़ारों की संख्या में थे।

---

* शिवरात्रि का दिन।

इस प्रकार ग्यारह दिनों तक चलकर बारहवें दिन बारात बूँदी के धूरे पर पहुँची। वहीं बारात का पड़ाव पड़ गया। चारों ओर केसरिया रङ्ग की पताकाएँ फहराने लगीं। डेरों पर रक्खे हुए स्वर्ण-कलश रात्रि में चन्द्रमा से होड़ बदने लगे। जो भूमि कुछ समय पहले सूनसान पड़ी थी वहाँ अब लाखों आदमी भाँति-भाँति की दूकानें और हज़ारों हाथी-घोड़े दिखाई देने लगे।

शुभ मुहूर्त में रुपना को एपनवारी देकर भेजा गया। वह बेंदुला पर चढ़कर तथा ऊदल के हथियार लेकर बूँदी के फाटक पर पहुँचा। परिचय पाकर राजा ने उसे बुला भेजा। रुपना एपनवारी देकर राजा को प्रणाम करके खड़ा हो गया। उसको देखकर महाराज गङ्गाधर ने पूछा—"कहो, बारात में कौन-कौन और कहाँ-कहाँ के राजा आये हैं?" रुपना ने उत्तर दिया—"बारात में कुड़हरि के महाराज गङ्गासिंह, परहुल के राजा परशुराम, सिरोंज के महारावल रूपसिंह और गाँजर के बारह राजा हैं।" महाराज ने कहा—"अच्छा! बारात में सेनापति कौन है?" रूपन ने उत्तर दिया—"महोबे के राजा परमाल ने बनाफरों को जब से अपने यहाँ से निकाल दिया है तब से वे रिजगिरि में जयचन्द के सामन्त होकर रहते हैं। इस बारात में वे ही आल्हा और ऊदल दोनों भाई सेनापति हैं।" आल्हा-ऊदल का नाम सुनकर महाराज चौंक पड़े और बोले—"जयचन्द ने बनाफरों को लाकर हमारा अपमान किया है।" यह सुनकर रूपन ने कहा—"महाराज! इससे मुझे क्या मतलब? मुझे तो मेरा नेग दे दीजिए। मैं लौट जाऊँ।" गङ्गाधर ने पूछा—"तुझे नेग में क्या चाहिए?" रूपन ने कहा—"विशेष कुछ नहीं। केवल चार घड़ी तक मेरे और आपके वीरों के बीच इसी जगह डटकर तलवार चले।" यह सुनते ही क्रोध से गङ्गाधर के ओठ काँपने लगे। उन्होंने तुरन्त वीरों को इशारा किया। इशारा पाते ही योद्धा लोग उस अकेले बारी पर टूट पड़े। देखते ही देखते न्याय के दरबार में रक्त की धार बहने लगी। अनेक वीरों को मारकर रूपना फाटक के बाहर आया और घोड़े पर चढ़कर नौ दो ग्यारह हो गया।

यह देखकर गङ्गाधर ने विवाह की तैयारियाँ रुकवा दीं और तुरन्त फ़ौज तैयार करवाकर वे जयचन्द को नीचा दिखाने की युक्तियाँ सोचने लगे। कुछ देर तक विचार-सागर में डूबने-उतराने के बाद गङ्गाधर के मुख पर आशा का सञ्चार हुआ। उन्होंने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा—"तुम लोग नेगियों के साथ बारात में जाकर जयचन्द से कहो कि अकेले वर को ही यहाँ भेज दीजिए। वर के साथ और कोई दूसरा आदमी न हो। हमारे यहाँ यही रीति है। इस समय लगन अच्छी है। इससे शीघ्रता करें।"

राजकुमारों ने जाकर जब यह सँदेशा राजा जयचन्द से कहा तब आल्हा ने कहा—"हमें तुम्हारी रीति मंजूर नहीं। हमारे यहाँ वर के साथ शहबाला ज़रूर जाता है। यदि तुम चाहो तो लिवा जाओ।" राजकुमारों ने बहुत कहा-सुना परन्तु आल्हा ने एक न सुनी। अन्त में लाचार होकर राजकुमारों ने आल्हा की बात मान ली और लाखन के साथ ऊदल को शहबाला बनाकर ले चले। लाखन की पालकी के साथ कन्नौज के नेगी भी थे। फाटक पर पहुँच-कर युवराज मोतीसिंह ने ऊदल से कहा—"आपके नेगी यहीं रुक जायँगे और आप दोनों भाइयों को हमारे कुल की रीति के अनुसार अपने हथियार यहीं पर रख देने होंगे। हथियार लेकर चलने में हमारे कुलदेव का अपमान है।" यह सुनकर ऊदल ने कहा—"हमें तुम्हारी बातों से जान पड़ता है कि तुम लोग हमारे साथ कपट करना चाहते हो।" इस पर मोतीसिंह ने उस समय के चलन के अनुसार झट गङ्गाजी को साक्षी देकर कहा—"मैं आप लोगों को धोखा न दूँगा।" इससे उन लोगों पर विश्वास करके लाखन और ऊदल अपने नेगियों तथा हथियारों को वहीं छोड़कर भीतर गये। इनकी पालकी जैसे ही क़िले के भीतर गई वैसे ही फाटक बन्द कर दिये गये। उधर वे दोनों जब महलों में पहुँचे तब जवाहरसिंह ने कहा—"हमारे कुल की रीति के अनुसार पहले आप लोग कलेवा कर लें। इसके बाद भाँवरें पड़ेंगी।" तुरन्त एक बढ़िया पलँग बिछा दिया गया जिस पर वर और सहिबाला बैठाये गये। उनके सामने भोजनों के थाल भी लाकर रख दिये गये। लाखन और ऊदल ने हाथ-पैर धोकर

जैसे ही कौरं उठाये, वैसे ही क्षत्रियों ने तलवार खींच ली। यह देखकर ऊदल ने मोती से कहा—"यह विश्वासघात! क्षत्रिय होकर झूठ बोलने में तुम्हें ज़रा भी लज्जा न आई।"

अब ऊदल ने पास ही रक्खी हुई एक पलँग की दोनों पाटियाँ खींच लीं और एक अपने पास रख ली और दूसरी लाखन को दे दी। क्षत्रिय लोग जब उन पर वार करने लगे तब उन दोनों ने पाटियों से तलवार का काम लेना आरम्भ किया। कुछ देर तक दोनों ने पाटियाँ चलाईं पर पाटियों ने अधिक देर तक साथ न दिया। तलवारों की मार से कटकर पाटियाँ टुकड़े-टुकड़े हो गईं। ऊदल और लाखन दोनों घायल होने पर बन्दी कर लिये गये। गङ्गाधर ने उन दोनों को बँधवाकर एक दहक में डलवा दिया।

यह ख़बर गङ्गाधर की पुत्री कुसुमा के पास पहुँची तो उसने एक पत्र में सब हाल लिखा और उसे अपनी मालिन द्वारा जयचन्द के पास भेजा।

ऊदल और लाखन के बन्दी होने की ख़बर सुनकर आल्हा ने युद्ध का डङ्का बजवा दिया। तुरन्त योद्धा हथियार बाँध-बाँधकर खड़े हो गये। आल्हा, मीरा सैयद, धनुआँ तेली, लला तम्बोली, ढेवा और रुपना बारी तैयार होकर बाहर आ खड़े हुए। अब कूच का डङ्का बजा और सेना चल पड़ी। यह सुनकर मोती और जवाहर भी सेना लेकर मोर्चे पर आ डटे।

दोनों ओर से मोर्चेबन्दी हो जाने पर मोती ने आगे बढ़कर कहा—"आल्हा, तुम अपना भला चाहो तो तुरन्त अपना काला मुँह कर यहाँ से जाओ।" आल्हा ने तड़पकर कहा—"रे नीच! जो तूने अधिक जीभ चलाई तो मुँह में तलवार ठूँस दी जायगी। तू तो चीज़ ही क्या है, मैं तेरे बाप को बन्दी करवाकर भाँवरें डलवा लूँगा।" यह सुनते ही मोती ने तोपों में पलीते लगवा दिये। अब दोनों ओर से तोपें चलने लगीं। तोपों का धुआँ सारे वायुमण्डल में छा गया। सूर्य की प्रखर किरणें भी उस धुँए को भेदने में समर्थ न हुईं। दोनों के इस युद्ध में हज़ारों वीर रणचण्डी की बलि हो गये।

फिर दोनों ओर के वीर अपने दुधारों से युद्ध करने लगे। बूँदी के सिपाही अपने यहाँ की बनी कटारों से कन्नौजियों का नाश करने लगे। यह युद्ध आठ घण्टे तक होता रहा। इसमें कन्नौजियों ने बूँदीवालों को ख़ूब छकाया। तीन लाख कन्नौजिये खेत रहे और बूँदी के केवल एक लाख सैनिक। सन्ध्या होते ही युद्ध बन्द कर दिया। दोनों ओर की शेष फ़ौजें अपने-अपने शिविरों को लौट गईं।

आल्हा ने जब यह देखा कि कन्नौजिये ठाकुर भली भाँति नहीं लड़ सकते तब वे बड़े असमंजस में पड़ गये। अन्त में सोच-विचारकर उन्होंने दो पत्र लिखे; एक मलखे को और दूसरा ब्रह्मा को। इन पत्रों में आल्हा ने युद्ध का सारा हाल लिखा और यह भी लिखा कि महाराज जयचन्द अब तुम्हारे ऊपर ही भरोसा करके यहाँ पड़े हैं। इससे तुम्हीं लोग आकर ऊदल और लाखन को क़ैद से छुड़ाओ और गङ्गाधर को उचित दण्ड भी दो।" दोनों पत्रों को लेकर धावन महोबे की ओर चल पड़ा। उसने महोबे पहुँचकर ब्रह्मा के पास उनका पत्र भिजवा दिया। पत्र पढ़कर ब्रह्मा ने धावन से कहला दिया "हमें इस युद्ध से कुछ भी मतलब नहीं। आल्हा जब हम लोगों से नाता छोड़कर चले गये तब हम उनसे फिर रिश्ता जोड़ना नहीं चाहते।" अब धावन सिरसा को गया। वहाँ पहुँचकर उसने मलखे को उनके नाम का पत्र दिया। मलखे ने उस पत्र को पढ़कर जेब में रख लिया, फिर वे रनिवास को चले गये। रानी गजमोतिन ने मलखे का मुख क्रोध और चिन्ता-युक्त देखा तो वह उन्हें पंखा हाँकने लगी। थोड़ी देर बाद बोली—"प्राणनाथ! आज आप चिन्तित-से क्यों हैं?" मलखे ने पत्र का सारा हाल रानी को सुना दिया और कहा—"चलते समय जब मैंने तथा मल्हना ने उन्हें रोका तब तो शान में आकर और हमारी विनय को ठुकराकर तथा मल्हना के स्नेह को भुलाकर चल दिये। इससे अब हम वहाँ प्राण देने न जा सकेंगे।" इस पर गजमा ने कहा—"हैं! आज मैं आपके मुख से यह क्या सुन रही हूँ? क्या आप वह दिन भूल गये जब पथरीगढ़ में आपको ऊदल ने चुङ्गलदहक से निकाला था? यदि आप भाई

के नाते बूँदी नहीं जाते तो उस एहसान का बदला चुकाने के लिए ही वहाँ जाइए। याद रखिए, यदि आप वहाँ न जायँगे तो यह समय ऐसा है कि मैं स्वयं वीर-वेष में जाकर अपने प्यारे देवर उदयसिंह को छुड़ाऊँगी। आज उसी की बदौलत मैं आपकी रानी कहलाती हूँ। यदि वह न होता तो आप मेरे नैहर के दहक में पड़े-पड़े कहीं के कहीं पहुँच गये होते और मैंने एक अभागिनी की तरह रो-रोकर अपने प्राण दे दिये होते।" यह सुनकर मलखे का रक्त खौल उठा। उन्होंने तुरन्त फ़ौजदार को बुलवाकर सेना तैयार करने की आज्ञा दी। मन्ना गूजर, खुनखुन कोरी और मदन गडरिया*, जो मलखे के मुँहलगे थे, युद्ध के लिए तैयार हो गये। जब सब सेना तैयार हो गई, तब कबूतरी घोड़ी नचाते हुए मलखे महलों से निकले। तुरन्त ही कूच का डंका बजा और वह सेना महोबे की ओर चली। वहाँ पहुँचकर मलखे ने ब्रह्मा को भी ऊँच-नीच समझा-बुझाकर साथ ले लिया। अब वे दोनों परमाल तथा मल्हना के पैर छूकर बूँदी की ओर चल पड़े।

बूँदी जब सात कोस रह गई, तब मलखे ने पड़ाव डाल दिया और आल्हा की ख़बर लेने के लिए एक हरकारे को बूँदी की ओर भेजा।

उधर मलखे के आने की आशा छोड़कर जयचन्द ने आल्हा की सलाह से कन्नौज को कूच करा दिया। वहाँ से थोड़ी ही दूर चलने पर उन्होंने दूर से मलखे का लश्कर दिखाई दिया, परन्तु वे लोग यह न जान सके कि यह लश्कर मलखे का है। जयचन्द ने यह समझकर कि बूँदीवालों ने ही आकर डेरा डाल दिया है, अपनी भी मोर्चाबन्दी करवा दी। मलखे ने जब इस फ़ौज की मोर्चाबन्दी करते देखा तब उन्होंने भी मोर्चाबन्दी करवा दी।

इसी समय मलखे का भेजा हुआ हरकारा आल्हा को खोजता उधर से निकला। उस फ़ौज में ढेवा को देखकर वह उनके पास गया। ढेवा ने उस

---

* जब ऐसे लोग मलखे के मुँहलगे थे, तभी तो अपनों की भी उद्बोधन से इनको कर्तव्य का ज्ञान होता था।

हरकारे से सब हाल जानकर आल्हा से कहा और तुरन्त अपना धावन मलखे के पास भेजकर उन्हें बुला भेजा। आल्हा का बुलावा पाकर ब्रह्मा और मलखे अपने-अपने घोड़ों पर चढ़कर आये। उन दोनों को छाती से लगाकर आल्हा बहुत देर तक रोते रहे।

फिर सब लोग जयचन्द के पास गये। उन्होंने मलखे से युद्ध के विषय में कहा—"बेटा! तुम सब तरह से योग्य हो। इस समय हम तुम्हीं को युद्ध की हिरौल* देते हैं। तुम जो चाहो सो करो।" यह सुनकर मलखे ने ढेवा को उत्तर की ओर से हमला करने की अनुमति दी और कहा कि "जब बूँदीवाले तुम पर हमला करें तब तुम बराबर पाँच-छः कोस तक युद्ध करते हुए हटते चले जाना, इसके बाद डटकर युद्ध करना।" अब मलखे ने कन्नौज की फ़ौज को पश्चिम की ओर और ब्रह्मा की फ़ौज को पूर्व की ओर जाकर मोर्चा लगाने की आज्ञा दी तथा स्वयं पाँच कोस के फेर से जाकर दक्षिण की ओर जा डटे।

ढेवा ने जाकर जैसे ही मोर्चाबन्दी करके मारू बाजे बजवाये और तोपें छोड़ीं वैसे ही गङ्गाधर ने अपने दोनों पुत्रों को युद्ध करने के लिए भेज दिया। मोती और जवाहर ने आकर बड़े वेग के साथ ढेवा पर आक्रमण किया। ढेवा उनका सामना करता हुआ बराबर सात कोस तक हटता गया। फिर डटकर सामना करने लगा।

मोती और जवाहर जब नगर से सात कोस दूर चले गये, तब मलखे दक्षिण के फाटक को गोलों से उड़ाकर महल में घुस पड़े। यह देखकर महारानी बाहर जाकर बोली—"क्षत्रियों का काम रनिवास में घुसना नहीं है। राजपूत होने का दावा रखते हो तो जाकर युद्ध करो। धोखे से रनिवास में घुसना अनुचित और महापातक है।" मलखे ने कहा—"अरी विश्वासघातक की सहचरी! तूने यह सलाह उस दिन गङ्गाधर को क्यों न दी, जिस दिन उसने धोखा देकर

---

* युद्ध में सेना के आगे जिसकी फ़ौज रहती है उसे हिरौल मिलना कहते हैं। राजा लोग हिरौल पाकर बड़े प्रसन्न होते हैं।

कायरों की भाँति निहत्थे बालकों को मारकर दहक में डलवाया था ! ऐसा होते हुए भी हम तुमको अपमानित करने तथा खिझाने नहीं आये हैं, बल्कि हम अपने उन दोनों भाइयों का उद्धार करने आये हैं ।" अब मलखे उस दहक के पास गये और रेशम का रस्सा लटकाकर बोले—"ऊदल ! आओ मैं सिरसा से तुम्हें निकालने आ पहुँचा हूँ ।" ऊदल ने कहा—"दादा ! सारा शरीर जकड़ा पड़ा है और घावों में असह्य पीड़ा हो रही है । कैसे निकलूँ ?" मलखे ने कहा—"जिस तरह पथरीगढ़ में तुम्हारे शब्द सुनकर मैं निकला था, उसी तरह तुम भी निकलो । क्या इसी बल पर लाखन को ब्याहने चले थे ?" यह सुनते ही ऊदल ने शरीर को फुलाकर अँगड़ाई ली । इससे सभी बन्धन टूट गये और ऊदल ऊपर आ गये । मलखे ने उन दोनों को पालकी में बिठाकर डेरों में भेज दिया और स्वयं युद्ध करने चले ।

इसी समय चारों ओर से चारों टुकड़ियों ने हुङ्कार के साथ धावा बोला । बूँदीवाले बीच में घिरकर वीरता दिखाने लगे । यद्यपि बूँदीवालों ने अदम्य और सराहनीय वीरता दिखाई, तो भी वे चारों ओर के वेग को न रोक सके । इससे तीन लाख बूँदी के वीर खेत रहे । मोतीसिंह को ब्रह्मा ने बन्दी किया और जवाहिरसिंह को मलखे ने ।

इसी समय गङ्गाधर अपने हाथी पर चढ़कर सामने आये । उनका सामना पहले तो मलखे ने किया, परन्तु थोड़ी देर बाद उनको हटाकर आल्हा सामने आये । दोनों राजाओं के हौदे परस्पर रगड़ खाने लगे और दोनों वीर अपना पराक्रम दिखाने लगे । इसी समय गङ्गाधर ने अपनी साँग से आल्हा के हौदे का कलश, छतरी और डण्डे इत्यादि तोड़ दिये । यह देखकर आल्हा ने पचशावद की सूँड़ में साँकल दे दी । उसने तुरन्त साँकल फेंककर गङ्गाधर को हौदे सहित नीचे गिरा दिया । आल्हा ने लगे हाथ उनको कैद करवा लिया ।

बन्दी होने पर गङ्गाधर गिड़गिड़ाने लगे और आल्हा से बोले—"राजकुमार ! तुम्हारी वीरता सराहनीय है । अब हमारी बात पर विश्वास करके तुम हम लोगों का छुटकारा कर दो । हम सौगन्ध खाकर कहते हैं कि अब तुम्हारे काम

कोई विश्वासघात न करेगा।" यह सुनकर आल्हा ने उन तीनों को छोड़ दिया।

महलों में आकर राजा ने विवाह की तैयारियाँ करवा दीं; परन्तु बदला लेने के लिए उसने दो हज़ार वीरों को कोठरियों में छिपा दिया।

बारात में लाखन का बुलौआ पहुँचा तब लाखन के साथ आल्हा, ऊदल, मलखे, ढ्हा और सैयद अपने-अपने हाथी लेकर चले। महलों में पहुँचकर लाखन के साथ सभी लोग मण्डप में बैठे। लाखन और कुसुमा चौक पर बैठाये गये। पण्डितों ने जैसे ही विवाह का कार्य आरम्भ किया, वैसे ही छिपे हुए क्षत्रिय निकल पड़े। यह देखकर महोबिया वीर तलवार लेकर उन पर टूट पड़े। कहते हैं कि केवल पौन घण्टे में उन सब वीरों में बहुत से तो मारे गये और कुछ भाग गये। मोती और जवाहर फिर बन्दी किये गये। आल्हा ने गङ्गाधर को बुलवाकर ज़बरन् कन्यादान करवाया। फिर भाँवर आदि सभी काम किये गये।

विवाह हो जाने पर आल्हा ने कहा—"राजन्, अब विदा कर दीजिए।" गङ्गाधर ने पहले तो कहा कि विदा गवने में की जायगी परन्तु जब उन्हें महारानी ने समझाया तब वे विदा करने को तैयार हो गये। उन्होंने प्रसन्न होकर कुसुमा की विदा की और बहुत सा दहेज दिया। कहते हैं कि गङ्गाधर ने जो अपने लहर-पटोरे दिये थे, उनमें से प्रत्येक की क़ीमत सवा लाख रुपये थी।

लाखन का सुन्दर स्वरूप देखकर रनिवास की स्त्रियाँ बहुत प्रसन्न हुईं। सभी ने लाखन को भाँति-भाँति के बहुमूल्य बढ़िया गहने भेंट में दिये। जयचन्द ने लाखों रुपये के गहने वहाँ के नेगियों को इनाम में दिये और लाखों रुपयों का दान दीन ब्राह्मणों को दिया। हज़ारों रुपये अपाहिजों और मुहताजों को बाँटे गये।

सब कार्य सकुशल हो जाने पर मलखे और ढ्हा आज्ञा लेकर महोबे को चले गये। राजा जयचन्द प्रसन्नता से कन्नौज लौट आये।

लाखन के विवाह में महोबियों ने जो वीरता दिखाई, उसके लिए जयचन्द उनके कृतज्ञ हो गये। तभी से आल्हा-ऊदल का सम्मान राज्य भर में सब जगह होने लगा।

इन्दल का दूसरा विवाह—पथरियाकोट का युद्ध

चारों ओर काले-काले बादल छाये हुए हैं और शीतल मन्द सुगन्ध बयार चल रही है। घने हरे-हरे बग़ीचों में, आम की दृढ़ डालियों में रेशम की रस्सियों के हिंडोले डालकर मधुर कोकिल-कण्ठों से पञ्चम स्वरों में मलारें गाती हुई युवतियाँ झूल रही हैं। क्यों नहीं ? आज तीज का त्यौहार है। सभी सौभाग्यवती कुलवधुएँ अपने कोमल करों तथा पैरों में मेंहदी रचा और सुन्दर नूपुर तथा सब प्रकार के नवीन गहने-कपड़े पहन बड़े उत्साह से इकट्ठी होकर त्यौहार मना रही हैं।

ऐसे समय जब प्रजा का यह हाल है, तब रानियों का क्या कहना ? कन्नौज के रनिवास से भी हज़ारों डोले निकलकर चम्पाबाग़ में गये हैं। वहाँ रानियाँ हिंडोले पर अठखेलियाँ करती मलार अलाप रही हैं।

इस दिन सुनवाँ ने भी अपनी सास देवै से कहा—"अम्माँजी ! आप आज्ञा दें तो मैं भी लाखाबाग़ में जाकर झूल आऊँ। लाखाबाग़ को देखने तथा उसमें झूलने को मेरा मन चाहता है।" देवै लाखाबाग़ का नाम सुनते ही चौंक पड़ी और बोली—"क्या कहा ? लाखाबाग़ ? क्या महलों के नज़र-बाग़ में झूलना तुम्हें नहीं भाता, जो तुम रिजगिरि की सीमा के पार लाखाबाग़ में जाना चाहती हो ?" इसके थोड़ी ही देर बाद देवै फिर बोली—"बेटी ! चारों ओर अपने शत्रु हैं। दैवयोग से वहाँ* कोई राजा आ पहुँचा और उसने तुम्हें देखकर कुछ कह दिया तो बनाफरों का ऊँचा मस्तक सदा को नीचा हो जायगा। इससे अपने कुल का विचार कर तुम अपने नज़रबाग़ ही में झूला झूलो।" सुनवाँ ने कहा—"मैं लाखाबाग़ में न झूल पाऊँगी तो विष खाकर आत्म-हत्या कर लूँगी।" तब तो देवै सुनवाँ के मुँह की ओर ताककर

---

* यह बाग़ उस राजमार्ग के किनारे पर था जो कन्नौज से दिल्ली होता हुआ मारवाड़ को जाता था। इसी का कुछ भाग अँगरेज़ी ट्रङ्क रोड में है।

अकचकाकर रह गई। फिर उसने ऊदल को बुला भेजा। उन्होंने आकर सुनवाँ का प्रस्ताव सुना तो कहा—"न मैं इस काम की सलाह देता हूँ और न मैं इनके साथ लाखावाग़ ही को जाऊँगा। मैं इन्दल को साथ ले जाकर फल पा चुका हूँ।" अब ऊदल चले गये। फिर देवै ने ताला सैयद को बुलाकर सुनवाँ का प्रस्ताव और ऊदल का उत्तर कह सुनाया। सैयद ने कहा—"क्या चिन्ता है? बहू को ले जाकर मैं लाखावाग़ में झुलवा दूँगा।" अब ताला सैयद ने अपनी सेना सजवा ली और सुनवाँ तथा उसकी सहेलियों के डोले लेकर वे लाखावाग़ को चले।

वहाँ पहुँचकर हिंडोले डाल दिये गये और चारों ओर क़नातें लगा दी गईं। क़नात के चारों ओर नङ्गी तलवारें लिये सैनिक घूमने लगे। ताला सैयद एक ओर अपना ख़ेमा लगाकर सैनिकों समेत विश्राम करने लगे। हिंडोले पड़ जाने पर सुनवाँ सहचरियों समेत झूलने लगी और अपने भाइयों तथा देवरों आदि के नाम ले-लेकर मलारें गाने लगी।

इसी समय वाग़ के वग़लवाले रास्ते से पथरियाकोट के राजा ज्वालासिंह ने, जो शिकार खेलता फिरता था, जब वाग़ से कोकिलकण्ठों का आलाप सुना तब वह ठिठक गया और वाग़ की ओर देखने लगा। इसी समय हिंडोले की डुमची चढ़ी और क़नात के ऊपर तक उठ गई। ज्वालासिंह तो इसी की वाट जोहता था। तुरन्त उसकी दृष्टि सुनवाँ के मुखड़े पर पड़ी। उसको देखकर ज्वालासिंह मोहित हो गया। अपनी तन्त्रविद्या* से उधर के सन्तरी को मूर्च्छित कर वह वात की वात में भीतर जा पहुँचा। पुरुष को भीतर आते देख सुनवाँ ललकारती हुई बोली—"रे नीच! तू यहाँ क्यों और किसकी आज्ञा से आया? क्या तेरे माँ, वहू और वेटी नहीं हैं जिससे तू स्त्रियों के सामने इस तरह चला आता है? वोल, तू कौन है और यहाँ क्यों आया है?" ज्वालासिंह का निर्बल कामाक्रान्त हृदय घबरा गया। वह बोला—"सुन्दरी! मैं केवल तुम्हारी रूप-सुधा

---

* प्राचीन काल में भारतवर्ष में घर-घर तन्त्र-विद्या का प्रचार था और प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी देवी-देवता का इष्ट था।

पान करने आया हूँ। मैं यहाँ याचक बनकर तुमसे प्रेम की भीख माँगता हूँ।" यह सुनते ही सुनवाँ ने बाँदी से कहा—"जाकर अभी इसकी सूचना सैयद चाचा को दे। तब तक मैं इससे निपटती हूँ।" अब सुनवाँ ने कटार निकाल ली और भूखी सिंहिनी की भाँति वह ज्वालासिंह की ओर लपकी। सुनवाँ सी सुन्दरी का वह रौद्र वेष देखकर ज्वालासिंह वहाँ से भाग निकला और साथियों समेत वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

तीर लगे तलवार लगे, पै लगैं नहिं काहू की काहू से आँखैं।

अथवा

ऐ री भटू! कल कैसे परैं, जब नैन में नैन परैं औ कढ़ै ना।

सुन्दरी सुनवाँ के नयन-शर से घायल होकर ज्वालासिंह ने अन्न-जल छोड़ दिया। सारे महल में कुहराम मच गया। राजा को पीड़ित देखकर रानियाँ घबरा गईं। तीसरे दिन ज्वालासिंह ने बहुत कुछ पूछने पर पटरानी से सब हाल कह सुनाया। अन्त में कहा—"जो सौभाग्यवती रहना चाहती हो तो सुनवाँ के हरण करने की कोई युक्ति बताओ; नहीं तो मैं आत्म-हत्या कर लूँगा।" यह सुनकर रानी ने कहा—"आप जाकर अपने कोट की बड़ी देवी को प्रसन्न करें। उनकी कृपा से सब कुछ हो सकता है।"

यह सुनते ही राजा ने पण्डितों को बुलाकर यज्ञ की सामग्री इकट्ठी कराई। फिर वह देवी के मन्दिर में जाकर यज्ञ की तैयारी करने लगा। सब ठीक हो जाने पर राजा नहा-धोकर आसन पर बैठा और यज्ञ करने लगा। यज्ञ करके उसने सैकड़ों बकरों, भैंसों और भेड़ों की बलि दी। फिर वह एक पैर से खड़ा होकर प्रार्थना करने लगा। कहते हैं कि खड़े-खड़े जब आधी रात हो गई, तब आकाशवाणी हुई कि 'क्या चाहता है?' राजा ने सारी कथा कह सुनाई। देवी ने कहा—"अच्छा जा, वह तेरे पास आ जायगी।" मन का वरदान पाकर राजा महलों को लौट गया।

कहते हैं कि उसी रात को देवी ने अपने गणों को भेजकर रिजगिरि के महल से सुनवाँ को पलँग समेत उठवा लिया और पथरियाकोट में रखवा दिया। उसी समय ज्वालासिंह को भी स्वप्न द्वारा सुनवाँ के आने की खबर करा दी।

सबेरा होने पर जब सुनवाँ की आँखें खुलीं तब तो वह अकचका गई। अपने चारों ओर नवीन दृश्य देखकर वह पगली सी हो उठी। कभी-कभी वह यही समझती कि मैं नींद में हूँ, परन्तु जब वह अपनी इन्द्रियों को काम करती देखती तो असमंजस में पड़ जाती और सोचने लगती कि मैं वास्तव में सोती हूँ या जागती; यदि जागती हूँ तो यहाँ कैसे आ पहुँची?" वह यह सोच रही थी कि वहाँ एक परम सुन्दरी कुमारी आ पहुँची। उसने कहा—"मौसी! आप चकित न हों। यह पथरियाकोट है। मेरे पिता ज्वालासिंह यहाँ के राजा हैं। मैं उनकी एकलौती बेटी 'सुआपंखिनी' हूँ। आप भी आज से मेरी माता हैं। आप विश्वास रक्खें, आपको बनाफरों के यहाँ से कहीं अधिक सुख मेरे पिता के रनिवास में मिलेगा।" इसके बाद उसने सुनवाँ को उसके हरण की सब कथा कह सुनाई और कहा—"मौसी, अब आप सब चिन्ता छोड़कर मेरे पिता को ही अपना पति समझिए।"

यह सुनते ही सुनवाँ आगबबूला हो गई और बोली—"हरामज़ादी! तुझे जिस दिन मैं अपने बेटे इन्दल से विवाहूँगी, उसी दिन मुझे प्रसन्नता होगी। यदि तूने अब मुझे मौसी कहा तो तेरी जीभ खींच लूँगी। नकटी कहीं की।" यह सुनकर राजकुमारी वहाँ से भाग गई। उसने पिता से जाकर सब वृत्तान्त कहा। उसे सुनकर ज्वालासिंह को लाखाबाग़वाली बात का भी स्मरण हो आया। इससे वह नङ्गी तलवार लेकर सुनवाँ के महल की ओर लपका। उसने सुनवाँ के पास जाकर कहा—"रूपगर्विता! बोल, मुझे अपना पति बनाकर मेरी इच्छा पूरी करेगी या नहीं। यदि नहीं तो मरने की तैयारी कर। तूने जो मेरा और मेरी बेटी का अपमान किया है, उसके बदले में मैं तेरा सतीत्व अवश्य नष्ट करूँगा।" अपने को काल के गाल में देखकर बुद्धिमती सुनवाँ बोली—"महाराज! मैं अब आपके वश में हूँ; आप जो कहेंगे वहीं करूँगी। पर आप

मेरी प्रार्थना मान लें, तो मैं ख़ुशी से आपके रनिवास में रहने लगूँगी।" "वह कौन-सी बात है?" ज्वालासिंह ने मुसकराकर कहा। सुनवाँ ने कूटदृष्टि फेंककर कहा—"विशेष कुछ नहीं, मैं यह चाहती हूँ कि सात महीने तक पवित्रता से रहकर कुछ पूजा-पाठ और दान कर लूँ, जिससे आपकी रानी बनकर मैं जो बुरा कर्म करूँगी, उसका प्रायश्चित्त हो जाय। तब तक मेरे और आपके बीच सगे भाई और बहन का सा व्यवहार रहे। फिर मैं किसी अच्छे मुहूर्त में आप पर अपना सर्वस्व निछावर कर दूँगी।" यह सुनकर कामान्ध ज्वालासिंह फूला न समाया और यह सोचकर कि अब यह हमारे चंगुल से छूटकर जा ही कहाँ सकती है, बोला—"अच्छी बात है। तब तक तुम्हें राजकोष से वेतन मिलता रहेगा। तुम सुख से यहाँ रहो। अब तुमको पथरियाकोट की महारानी कहकर पुकारा जायगा।" यह कहकर ज्वालासिंह चला गया।

इधर सवेरे जब सभी रानियाँ दिखाई पड़ीं और सुनवाँ न दिखाई पड़ी, तब उसकी खोज की गई; पर वह कहीं न मिली। यह सुनकर कि 'सुनवाँ लापता है' सारे क़िले में हलचल मच गई। आल्हा, ऊदल, इन्दल, ढाल्हा, देवा आदि सभी सिर पटककर रोने लगे। बनाफरों की आन-बान और शान का विचार कर देवै फूट-फूटकर रोने लगी।

इसी समय सुनवाँ की लौंड़ी* ने आकर ऊदल से कहा—"कुँअरजी! बेटी के साथ जो चार गिद्धिनी नैनागढ़ से आई हैं, उन्हें आप चिड़ियाख़ाने से मँगवा दें तो मैं बेटी का पता लगा दूँगी।" यह सुनते ही ऊदल ने चारों गिद्धिनियों को लाकर उसके सामने रख दिया। अब बाँदी ने उन गिद्धिनियों को सुनवाँ के गुप्त होने का सब हाल समझाकर उड़ा दिया और उनसे यह भी कहा कि जल्दी लौटना।

चारों गिद्धिनियाँ प्रत्येक रजवाड़े और उसके कोने-कोने को ढूँढ़ती हुई आकाश-मार्ग में फिरने लगीं। वे दिल्ली, माँड़ो, आँबेर, सिरौंज, [illegible], नरवर, झुन्नागढ़, नैनागढ़, महोबा, कन्नौज, बौरीगढ़ (यह बारह दुर्गों का हाल

---

* यह लौंड़ी (बाँदी) सुनवाँ के साथ नैनागढ़ से आई थी।

बड़ा इलाक़ा था), चँदेली, कालिंजर, अजमेर, अयोध्या, गोरखपुर, बलख़, बुख़ारा, लाहौर आदि सभी गढ़ ढूँढ़ फिरीं। पर कहीं भी सुनवाँ का पता न लगा। अन्त में थककर जब वे निराश लौट रही थीं तब रास्ते में पथरियाकोट पड़ा। 'कहीं इसी में न हो' ऐसा विचार कर वे चारों उस कोट में उतरीं और सारे नगर में ढूँढ़ने लगीं। नगर के बाद वे महलों में चक्कर काटने लगीं। अकस्मात् सुनवाँ की दृष्टि उन पर पड़ गई। उसने तुरन्त ही गिद्धिनियों को अपने पास बुला लिया और वह फूट-फूटकर रोने लगी। अब सुनवाँ ने उन गिद्धिनियों को भोजन और पानी दिया, फिर वह पत्र लिखने लगी। सुनवाँ ने ऊदल को पत्र लिखा। उसमें उसने आदि से अन्त तक पूरा वृत्तान्त लिख दिया और पत्र बड़ी गिद्धिनी के गले में बाँधकर उन्हें उड़ा दिया।

रिजगिरि में आकर गिद्धिनी ऊदल के पास गई। ऊदल तुरन्त पत्र को खोलकर पढ़ने लगे। पत्र पढ़ते ही उनका मुख क्रोध से तमतमा उठा। उन्होंने जाकर सब हाल आल्हा से कहा और यह भी कहा कि "चलकर पथरिया-कोट को तहस-नहस करवा दें और ज्वालासिंह की बेटी का डोला इन्दल के लिए ले लें।" आल्हा ने कहा—"जाओ, हमको व्यर्थ एक कुलटा स्त्री के पीछे अपनी फ़ौज नहीं कटानी है। जो स्त्री पति से अलग होकर इतने दिनों तक दूसरे के चंगुल में रहे उसका क्या विश्वास ?"

यह सुनते ही ऊदल ने कहा—"सावधान! दादा, आपने भाभी के प्रति मेरे सामने दुर्वचन कहे तो अच्छा न होगा। आप नहीं जाते हैं तो बेंदुला लेकर मैं ही अकेला जाऊँगा और दस्सराज के वंश को कलङ्कित होने से बचाऊँगा।" इसी समय ताला सैयद ने झिड़ककर आल्हा से कहा—"आल्हा, चेतो। व्यर्थ शङ्काएँ न करो। चुपचाप उठकर तैयारी करो।" सैयद के कहने से आल्हा तैयार हो गये।

आल्हा ने तुरन्त दिल्ली, कन्नौज, महोबा, भुन्नागढ़, नरवरगढ़, नैनागढ़, बलख़, बुख़ारा, कमायूँ, उरई, बौरीगढ़, जगनेरी, माड़ो, सिरौंज, परहुल, कुडहिल,

बाँदा, गाँजर आदि सभी व्यवहारी राजाओं को युद्ध का निमन्त्रण भेजा। इससे पन्द्रह दिनों में सभी अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर आ पहुँचे। सबके आ जाने पर कूच का डक्का बजा और सब लोग पथरियाकोट को चौपट करने के लिए चल पड़े।

कहते हैं कि चलते समय जयचन्द ने लाखन से कहा था—"बेटा, मैं लोकलज्जा के मारे तुम्हें युद्ध में भेज रहा हूँ। इससे तुम सबके दलों से चार-पाँच कोस पीछे रहना और युद्ध में भाग न लेना। ये लोग विजयी हो जायँ तो ख़ुशी मनाना और हार जायँ तो यहाँ चले आना। इनके हार जाने पर इनके रनिवास को लूट लिया जायगा। क्योंकि सात बरस से इन्होंने रिजगिरि की चौथ नहीं दी है।" इस आज्ञा के कारण लाखन अपनी सेना को सबके दलों से सात कोस पीछे रखते थे।

आल्हा को दूर ही से जब पथरियाकोट की राजपताका और स्वर्णकलश दिखाई देने लगे, तब वहीं पड़ाव डाल दिया गया। फिर ऊदल ने एक धावन को पत्र देकर पथरियाकोट को भेजा। उसमें लिखा था कि 'या तो सुनवाँ को लौटाकर सुआपंखिनी का इन्दल के साथ ब्याह करो या युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।'

ज्वालासिंह को जब धावन ने जाकर यह पत्र दिया तब उसने दोनों बेटों—हाथीमल और सूरा—को बुलाकर कहा—"जाओ, बनाफरों को मारकर भगा दो।"

यह सुनते ही दोनों राजकुमार अपनी सेना लेकर युद्ध के मैदान में आ पहुँचे। तुरन्त दोनों ओर से मोर्चाबन्दी होने लगी और दोनों ओर से तोपें छोड़ी जाने लगीं। तोपों के बाद तीर, बर्छी, कत्ता, भाला और साँगों की लड़ाइयाँ हुईं। बुन्देलों, पहाड़ियों, बक्सालियों आदि सभी ठाकुरों की तिरछी मार से पथरियाकोट के सैनिक तिलमिला गये और भागने लगे।

इधर ऊदल हाथीमल से और इन्दल सूरा से युद्ध कर रहे थे। उसी समय कुछ वीरों ने उन दोनों राजकुमारों के हाथियों को भालों से घायल कर दिया।

इससे वे हाथी बिलबिलाने लगे, जिससे हौदे भी डगमगाने लगे। इतने में ऊदल ने हाथीमल को दुचित्ता देखकर ढाल की औझड़ मारी और नीचे गिरा दिया। इसी प्रकार सूवा भी नीचे गिरा दिया गया और दोनों राजकुमार बन्दी कर लिये गये। यह देखकर बची हुई सेना कोट को भाग गई।

ज्वालासिंह ने जब अपनी पराजय और पुत्रों को बन्दी हुआ सुना तब वह धाड़ें मारकर रोने लगा। अब वह उसी देवी के मठ में गया। वहाँ उसने यज्ञ और बलिदान करके प्रार्थना करते हुए कहा—"माता! यदि इन शत्रुओं पर विजय प्राप्त न हो तो मैं अपने छोटे पुत्र सूवा की बलि दूँगा। आप मुझे तथा मेरे पुत्रों को तुरन्त निश्चिन्त कीजिए।" यह सुनकर देवी प्रसन्न हुई और आकाशवाणी हुई कि "राजन्, तुम चिन्ता न करो, तुम्हारे काम सिद्ध होंगे; पर अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना।"

यह सुनकर राजा क़िले को लौट पड़ा। उधर देवी ने तन्त्रबल से आल्हा के साथ की सारी सेना को पत्थर बना दिया और हाथी तथा सूवा को मुक्त कर दिया। कहते हैं कि इन्दल पर इस तन्त्र का प्रभाव न पड़ सका; क्योंकि सुनवाँ ने उसके गले में तन्त्रों से बचने के लिए देवी अष्टभुजा से प्राप्त एक यन्त्र बाँध दिया था। इन्दल के साथ-साथ लाखन और उनकी सेना भी बच गई; क्योंकि वे युद्ध में शामिल न हुए थे और वहाँ से सात कोस पीछे थे। लाखन ने जब यह सुना तब वह लौट पड़ा। उसने जाकर जयचन्द से सब वृत्तान्त कह सुनाया।

इधर बेचारा इन्दल रोता-कलपता रिजगिरि पहुँचा। इन्दल को देखकर देवै ने कुशल-प्रश्न पूछा तब उसने बिलख-बिलखकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनते ही रनिवास में कुहराम मच गया।

इसी समय एक हरकारे ने आकर इन्दल से कहा—"महाराज! लाखन राना ने चारों तरफ़ से गढ़ी घेर ली है और तोपें लगवा दी हैं।" यह सुनते ही इन्दल अकचकाकर रह गये और फाटक के ऊपर जाकर लाखन से बोले—"युवराज! हम लोगों का क्या अपराध है? क्या हमारे संकट में आपका

यही कर्तव्य है ?" लाखन ने आँखें चढ़ाकर कहा—"टुकड़खोर ! सात बरस से तेरे बाप ने पोत का पैसा नहीं दिया है। अब आज मैं उसके बदले सब रनिवास लुटवा लूँगा और अपना पैसा-पैसा चुकवा लूँगा।" अब लाखन ने राजकूप पर भी पहरा लगवा दिया और महलों में पानी जाना बन्द करवा दिया। यह सुनकर इन्दल काठ सा हो गया। रनिवास में त्राहि-त्राहि मच गई। देवै ने इन्दल को बुलाकर कहा—"बेटा ! तुम सिरसा जाकर मलखे को तुरन्त इसकी सूचना दो और कहना कि बनाफरों की इज्ज़त बचाना चाहो तो झटपट आओ और अपनी माता तथा भौजाइयों का उद्धार करो।"

इन्दल तुरन्त अपने घोड़े पर बैठकर, पच्छद्वार से निकलकर, सिरसा की ओर चले। सारे दिन और सारी रात चलकर वे दूसरे दिन सवेरे सिरसा पहुँचे। इन्दल का मलिन मुख देखकर मलखे ने घबराकर पूछा—"बेटा, कुशल तो है ?" इन्दल ने रो-रोकर पथरियाकोट का सब हाल ब्यौरेवार कहा। फिर बिलख-बिलखकर लाखन के दुर्व्यवहार का वर्णन किया। लाखन के व्यवहार को सुनकर मलखे के अधर क्रोध से फड़कने लगे और नेत्र लाल हो गये। वे तुरन्त अपनी सेना को तैयार करके कन्नौज की ओर चल खड़े हुए। एक दिन और एक रात चलकर वे लोग कन्नौज पहुँचे। मलखे ने जाकर चटपट लाखन की फ़ौज पर छापा मारा। अपने ऊपर आक्रमण होते देख लाखन की सेना घबरा गई। मलखे और इन्दल दोनों लाखन की सेना का संहार करने लगे। सेना को काई की तरह चीरते-फाड़ते हुए मलखे लाखन के पास जा पहुँचे। उन्होंने कबूतरी को एड़ लगाकर लाखन की हथिनी के हौदे को चूर-चूर कर डाला। फिर मलखे ने कहा—"लो ! मैं तुम्हें सात बरस का बदला चुकाता हूँ और दण्ड-स्वरूप इन्दल को भी तुम्हारी चाकरी* के लिए दूँगा।" अब मलखे ने लाखन के ऊपर अपना तेगा चला दिया। यह देखकर वह भाग निकला।

---

* लाखन ने देवै से यह भी कहा था कि सात बरस तक पोत न देने के अपराध में इन्दल को जन्म भर हमारी खिदमतगारी करनी पड़ेगी।

मलखे और इन्दल ने उसका पीछा किया। सेना भी नगर को लूटती हुई चली। बस्ती में हाहाकार मच गया।

उस समय जयचन्द अपने दरबार में बैठे राजकाज कर रहे थे कि लाखन हाँफता हुआ वहाँ पहुँचा और उनसे बोला—"जल्दी बचाइए।" जयचन्द कुछ कह भी न पाये थे कि नङ्गी तलवारें लिये हुए मलखे और इन्दल पहुँचे। मलखे ने जाकर राजसिंहासन के स्वर्णमण्डित छत्र को हाथ से ही टुकड़े-टुकड़े कर दिया और जैसे ही जयचन्द को मारने के लिए तलवार उठाई वैसे ही वे गिड़गिड़ाकर बोले—"क्षमा करें, क्षमा करें। मैं और मेरी दीन प्रजा आपकी शरण है। अब आप जो कहेंगे वही करूँगा। लाखन को आप अपने साथ ले जाकर हिरौल में खड़ा कर दें, मुझे तनिक भी उज्र न होगा।" यह सुनकर मलखे ने कहा—"मैं तुम्हारा ऋण पाई-पाई चुकाना चाहता हूँ और इन्दल को भी तुम्हारे ख़िदमतगारों में भर्ती कर देना चाहता हूँ। नीच! नृशंस! याद रखना, अब यदि तूने बनाफरों के साथ ऐसा व्यवहार करने की कभी कल्पना की तो कन्नौज में आग लगवाकर गधों से यहाँ की भूमि जुतवा दूँगा। क्या तूने माड़ौ का हाल नहीं सुना?" यह सुनकर जयचन्द घबरा गया और बोला—"अपने अपराधों के लिए मैं क्षमा की भीख माँगता हूँ।" तब मलखे ने लाखन से कहा—"क्यों कायरों की तरह मुँह छिपाये बैठे हो? चलो। पथरियाकोट में तुम्हारी वीरता देखें।" अब मलखे ने कन्नौज की फ़ौज को तैयार होने की आज्ञा दी।

शीघ्र ही कन्नौज की फ़ौज तैयार हो गई और लाखन उसको अपने साथ लेकर मलखे के पास आकर बोले—"अब हम क्या करें?" मलखे ने इन्दल से कहा—"तुम हमारी और लाखन की फ़ौज को लेकर पथरियाकोट को चलो। हम गुरुदेव महाराज अमरनाथजी के पास होकर वहीं आ मिलेंगे।" बस, मलखे अपनी बछेड़ी पर चढ़कर कजरीवन की ओर चले। इधर लाखन और इन्दल दोनों वीर पथरियाकोट की ओर रवाना हुए।

मलखे जब अपने गुरुदेव* के पास पहुँचे तब वे समाधि में थे। इससे मलखे हाथ जोड़कर एक पैर से खड़े हो गये। गुरुदेव ने आँखें खोलीं तो मलखे को इस तरह खड़ा देखकर कहा—"बेटा! कैसे आये?" मलखे ने पथरियाकोट का सब हाल उनको सुनाकर कहा—"महाराज! अब हमारे कुटुम्ब का उद्धार कीजिए।" यह कहकर मलखे रोने लगे और उनके पैरों पर गिर पड़े। गुरुदेव ने एक तन्त्र बताकर मलखे से कहा कि इससे तुम अपनी सेना और अपने कुटुम्बियों आदि को चेतन अवस्था में कर लेना। फिर गुरुदेव ने नेत्र बन्दकर ध्यान लगा लिया। थोड़ी देर बाद आँख खोलकर उन्होंने कहा—"देखो, पथरियाकोट में एक सिद्ध देवी है। ज्वालासिंह ने इसी देवी से अपने छोटे पुत्र की बलि देने का प्रण करके विजय प्राप्त की है, परन्तु उसने विजयी होने पर पुत्र की बलि नहीं दी है और न देने की आशा ही है। इससे यदि तुम जाकर इन्दल की बलि दो तो तुम्हारा कल्याण होगा।" यह सुनकर मलखे गुरुदेव को प्रणाम कर वहाँ से चल दिये।

मलखे पथरियाकोट पहुँचकर सबसे पहले सब सामग्री लेकर देवी के मन्दिर में पहुँचे। उन्होंने विधि से यज्ञ किया और बकरे तथा भैंसे की बलि देकर हाथ जोड़कर कहा—"मातेश्वरी! मेरी रक्षा कीजिए। बनाफरों की जाती हुई आन-बान, मान और शान को बचाइए। यदि आप कृपा कर मुझे विजयी बनावेंगी तो मैं अपने वंशदीपक एकमात्र पुत्र इन्दल की बलि चढ़ा दूँगा।" यह कहकर मलखे पैरों पर गिर पड़े। इसी समय आकाशवाणी हुई—"राजकुमार, मैं ज्वालासिंह से धोखा खा चुकी हूँ। इससे जो तू पहले बलि देगा तो तेरे सब काम सिद्ध होंगे।" यह सुनकर मलखे डेरों पर लौटे। उन्होंने इन्दल को सब वृत्तान्त सुनाया। इन्दल ने प्रसन्न होकर कहा—"चाचाजी! यदि इस तुच्छ

---

* ये गुरुदेव एक सिद्ध योगिराज थे। इनका नाम अमरनाथ था। इन्हीं ने शिशु-अवस्था में बनाफरों और ब्रह्मा तथा ढेवा को भाँति-भाँति के आशीर्वाद दिये थे। परमाल ने इन्हीं की आज्ञा से सब राज्यों को जीता था और बाद में कीरतसागर में अपने खाँड़े को पखारकर रख दिया था।

जीव के बदले बनाफर-वंश की आन-बान बचती है तो आप मेरी तनिक भी चिन्ता न करें। मैं आप ही के साथ चलता हूँ।" यह कहकर इन्दल मलखे को लेकर मन्दिर में जा पहुँचे। कहते हैं कि जब इन्दल देवी के आगे नेत्र बन्द करके तथा हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और मलखे तलवार मारने को तैयार हुए तब मलखे का हाथ काँपने लगा और नेत्रों से आँसू बहने लगे।

इन्दल ने मलखे को रोते देखकर तुरन्त अपनी तलवार निकाली और अपने ही हाथ से गर्दन काटकर देवी के चरणों पर डाल दी। मलखे हाथ जोड़कर देवी का ध्यान करने लगे। इसी समय देवी प्रकट हुईं। उन्होंने इन्दल के सिर को उठाकर धड़ पर रक्खा और इन्दल को जीवित कर दिया। यह देख मलखे देवी के पैरों पर गिर पड़े। देवी ने उन्हें उठाकर कहा—"जाओ! तुम्हारा कल्याण होगा।" अब देवी ने इन्दल के शिर पर अभय हस्त रखकर कहा—"बेटा! आज से तू अमर हुआ। तू जिस पर हमला करेगा, उसे जीतकर ही छोड़ेगा।" बस, देवी अन्तर्धान हो गईं। मलखे इन्दल को साथ लेकर प्रसन्नता से लौट आये।

मलखे ने रणभूमि में जाकर अपनी पत्थर बनी सेना को तथा अन्य स्वजनों आदि को उसी तन्त्रबल से जीवित बना लिया। सब लोग मलखे को देखकर चकित और प्रसन्न हुए।

अब युद्ध का डङ्का बजा। बनाफरों की सेना युद्धभूमि में जा पहुँची। यह सुनकर ज्वालासिंह और उसके पुत्र भी युद्धभूमि में आ डटे। चटपट दोनों ओर से घनघोर युद्ध होने लगा। आल्हा, ऊदल, मलखे, ढेवा, लाखन, ताहर, इन्दल, ताला सैयद, मन्ना गूजर, धनुआ तेली, लला तँबोली और उदया ठाकुर ये सभी वीर शत्रु-सेना को गाजर-मूली की तरह काटने लगे। इन लोगों की बेढ़ी मार से विकल हो पथरियाकोट के सैनिक भाग निकले तब ज्वालासिंह और उसके दोनों बेटे सामने आये। ज्वालासिंह से ताला सैयद, हाथीमल से मलखे और सूरा से ऊदल युद्ध करने लगे। कुछ देर के विकट युद्ध के बाद ज्वालासिंह अपने पुत्रों समेत बन्दी हो गया। इसी समय

आल्हा ने पथरियाकोट को लूटने का हुक्म देकर अपने सैनिकों से कहा—"सवा पहर तक तुम लोग जो कुछ लूटो वह माल तुम्हारा ही होगा।" यह सुनते ही सैनिक गढ़ में घुसकर बाज़ारों को लूटने लगे। उधर तोपों से गढ़ गिराया जाने लगा। चारों ओर भयानक दृश्य देख पड़ने लगा। हाय-हाय और त्राहि-त्राहि की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी। दीन प्रजा राजा को गालियाँ देने लगी।

यह दशा देखकर राजा ने कातर स्वर से कहा—"बनाफर कुमार, क्षमा करो। मैं बहन सुनवाँ का डोला अभी भेजता हूँ और सुआपंखिनी का इन्दल के साथ विवाह करके उसका भी डोला दूँगा। अब आप मुझे छोड़ दें। मैं आपकी शरण में हूँ। मैं सदा आपको कर दिया करूँगा और समय पर सेना के साथ स्वयं हाज़िर हुआ करूँगा।" यह सुनकर दयालु आल्हा ने उन्हें छोड़ दिया। अब इन्दल का ब्याह राजकुमारी के साथ हो गया। फिर राजा ने सुनवाँ के पैर छूकर क्षमा माँगी और उसके डोले के साथ सुआपंखिनी का डोला भी आल्हा के डेरों में पहुँचाया। ज्वालासिंह ने अपनी हैसियत के लायक़ अच्छा दहेज़ दिया। आल्हा सबको साथ लेकर रिजगिरि लौट आये। फिर बावनगढ़ के सब राजा अपने-अपने देशों को लौट गये। मलखे भी सिरसा को लौटे।

सुनवाँ के साथ सुआपंखिनी का डोला देखकर सब लोग प्रसन्न हुए। देवै पौत्र-वधू का परिछन कर बड़ी प्रसन्न हुई।

———

इन्दल का तीसरा विवाह

उस समय बनाफरों की वीरता और सुन्दरता चारों ओर मशहूर थी। यद्यपि सभी रजवाड़े उनको कुलहीन समझते थे, फिर भी जब सामना होता था तब उन्हें सबसे श्रेष्ठ मानकर अपनी जान बचाते थे।

बनाफरों में इन्दल और ऊदल दोनों ही बड़े सुन्दर और आदर्श युवक थे। इन्हें देखकर अच्छी-अच्छी स्त्रियों के सत्य डिग जाते थे। इनकी सुन्दरता की चर्चा दूर-दूर तक प्रायः सभी रजवाड़ों में फैल रही थी।

एक बार सिंहल द्वीप के राजा सरहनाग की बेटी लेखावती से उसकी दासी ने इन्दल के सौन्दर्य और गुणों की बड़ाई की, तब से वह इन्दल के साथ विवाह करने के लिए लालायित रहने लगी। वह दिन-रात इसी चिन्ता में रहती थी कि "किस युक्ति से इन्दल को देखूँ।" अभाग्य से उसे कोई युक्ति ही न सूझती थी। अन्त में लाचार होकर उसने स्वयं इन्दल के पास जाने का निश्चय किया। उसने एक बार बातों ही बातों में अपने भाई योगजीत (जोगाजीत) से बनाफरों का कुल हाल पूछ लिया था। फिर एक दिन सायंकाल होते ही वह अपने विमान पर सवार होकर रिजगिरि की ओर चली। कहते हैं कि वह केवल तीन घण्टे में इन्दल के शयनागार के चौक में जा पहुँची। वह जिस समय वहाँ पहुँची उस समय इन्दल अपनी साफ़, सफ़ेद, कोमल हाथीदाँत की शय्या पर शयन कर रहे थे। लेखावती तुरन्त ही इन्दल के ऊपर गुलाबजल से भीगा हुआ पंखा हाँकने लगी। उन सुगन्धित बूँदों तथा शीतल सुगन्धित वायु के झोंकों से इन्दल की नींद उचट गई। वे अपने सामने एक अलौकिक सुन्दरी को देखकर उससे कहने लगे—"आप इन्द्रलोक को छोड़कर यहाँ क्यों आईं ?" राजकुमारी ने हाथ जोड़कर कहा—"प्राणनाथ ! मैं इन्द्रलोक की नहीं, बल्कि इसी मर्त्यलोक की एक साधारण युवती हूँ। मैं सिंहलद्वीप के राजा सरहनाग की पुत्री लेखावती हूँ। मैंने जब से आपके सौन्दर्य और गुणों

की चर्चा सुनी तब से मैं आपके दर्शनों के लिए बहुत लालायित थी। आज आपके दर्शन पाकर बहुत कृतकृत्य हुई हूँ।

यह सुनकर इन्दल बहुत प्रसन्न हुए और उसे पलँग पर बैठाकर बातचीत करने लगे। थोड़ी देर बाद लेखावती ने कहा—"आओ, हम और आप चौपड़ खेलें। मैं हारूँ तो आपके साथ विवाह कर जीवन भर यहीं रहूँ, और आप हारें तो मेरे साथ चलें और वहीं ब्याह करके रहें।" बस, लेखा ने चौपड़ बिछा दी। शीघ्र ही इन्दल पासे उठाकर खेलने लगे। कहते हैं कि तीन बाज़ियाँ हुईं और तीनों में इन्दल को विजय प्राप्त हुई। तब तुरन्त वहाँ एक साँग गाड़ी गई और इन्दल ने लेखा के साथ ग्रन्थि-बन्धन करके उसके चारों ओर फिरकर भाँवरें डालना शुरू किया। जब चार भाँवरें पड़ गईं तब लेखा बैठ गई और बोली—"बस, रहने दीजिए। बाक़ी भाँवरें तब पड़ेंगी जब आप हमारे यहाँ बारात लेकर ब्याहने आवेंगे।" यह कहकर लेखा कुँअरि ने इन्दल के उस दुपट्टे को, जिससे गाँठ बँधी थी, खींचकर अपनी कमर से बाँध लिया। फिर अपने विमान पर बैठकर वह इन्दल के देखते-देखते आसमान में उड़ गई। यह देखकर इन्दल दङ्ग रह गये और उसके विरह में दुखी और अचेत होकर गिर पड़े।

सवेरा होने पर जब इन्दल न उठे तब सुनवाँ को चिन्ता हुई। उसने एक चाकर को इन्दल के शयनागार में भेजा। चाकर ने इन्दल को पृथ्वी पर चिन्तित दशा में पड़ा हुआ देखा तो वह घबराकर लौटा और सुनवाँ से सब हाल कहकर रोने लगा। सुनवाँ ने तुरन्त ऊदल को बुलाकर इन्दल के पास भेजा। ऊदल ने जाकर इन्दल को उठाया और उनकी चिन्ता का कारण पूछा। इन्दल ने रात का समस्त वृत्तान्त कहा। उसे सुनकर ऊदल चकित हो गये। उन्होंने आकर आल्हा से सब हाल कहा। उसे सुनकर आल्हा भी चकित हुए और इन्दल के निकट जाकर उन्हें समझाने लगे। आल्हा, ऊदल, ताला और ढेवा आदि सभी ने समझा-कर कहा कि अपने इस उद्देश्य को छोड़ दो, परन्तु इन्दल ने हठ न छोड़ा।

तब आल्हा ने इन्दल को क़ैद करके नज़रबन्द करवा दिया और गढ़ी के चारों ओर पहरा बैठा दिया और घोषणा कर दी कि जिसके पहरे से इन्दल निकल जायँगे उस पहरेदार का सिर कटवा लिया जायगा।

इन्दल ने बन्दी होकर अन्न-जल त्याग दिया। महोबे की मनिया देवी का ध्यान कर और एक पैर से खड़े रहकर वे उसी कोठरी में तपस्या करने लगे। कहते हैं कि तीन दिनों तक इन्दल खड़े रहे। अन्त में देवी ने इन्दल की सुधि ली। रात को इन्दल की कोठरी के किवाड़ अपने आप खुल गये। उसी समय इन्दल सबको सोता छोड़कर निकल भागे। बग़ीचे में आकर उन्होंने मालिन से अपनी व्यथा कही और कातर होकर कहा—"मालिन! जो तू मुझे किसी बहाने पहरेदारों की आँख बचाकर गढ़ के बाहर निकाल देगी तो मैं तुझे बहुत सा इनाम दूँगा।" मालिन ने तुरन्त इन्दल को ज़नाने वेष में सजाया, फिर वह उन्हें एक डोली में बैठाकर ले चली। रास्ते में पहरेदारों के टोकने पर उसने कह दिया कि डोली में मेरी बहू है जो अपने नैहर जा रही है। इससे पहरेदार चुप हो गये। इस प्रकार मालिन इन्दल को बेरोक-टोक सीमा के बाहर पहुँचाकर लौट आई।

डोली से उतरकर इन्दल कजरीवन की ओर गुरु अमरनाथ के पास चले। वहाँ पहुँचकर इन्दल उनके चरणों पर गिर पड़े। योगिराज ने आशीर्वाद देकर इन्दल से आने का कारण पूछा। उन्होंने आदि से अन्त तक ब्यौरेवार सब वृत्तान्त कहा। कहते हैं कि योगिराज अमरनाथ ने इन्दल को बहुत रोका, परन्तु जब वे न माने तब योगिराज ने उनको जोगी बनाया और खड़ाऊँ पहनाकर कहा—"तुम जहाँ चाहोगे वहाँ इन खड़ाउँओं को पहनकर जा सकते हो।" फिर उन्होंने एक डंडा, एक खजड़ी गुदड़ी और एक बीन देकर कहा—"डंडे से तुम सबको पराजित करोगे और बीन बजाकर सबको मुग्ध कर सकोगे।" अलभ्य वस्तुएँ पाकर इन्दल जब वहाँ से चलने लगे तब योगिराज ने कुछ तन्त्र भी बताये, जिनके सहारे इन्दल अनेक अद्भुत कार्य कर सकते थे। इन्दल ने योगिराज के चरणों में सिर नवाया और आशीर्वाद लेकर वहाँ से चले।

कहते हैं कि जोगी बनकर इन्दल ने खड़ाउँओं के प्रताप से एक ही दिन में सिरसा जाकर गजमोतिन से, महोवे जाकर मल्हना से और रिजगिरि जाकर देवै और सुनवाँ से भिक्षा ली; परन्तु कोई भी उन्हें न पहचान सका। फिर वे सिंहलद्वीप जा पहुँचे।

इन्दल जब राजधानी में पहुँचे तब उन्हें सीमा पर एक उजड़ा हुआ बाग़ मिला। इन्दल ने अपने तन्त्रबल से उस बाग़ को हरा-भरा बना दिया। अब वहाँ नाना प्रकार के पक्षी क्रीड़ा करने लगे। इन्दल उसी बाग़ में कुटी बनाकर रहने लगे। सूखे उजड़े बाग़ को हरा-भरा देखकर राजा का माली विस्मित हुआ। उसने आकर इन्दल को प्रणाम किया। इन्दल ने आशीर्वाद देकर उसे अपने दो-एक करतब दिखाये तब तो माली उनके चरणों पर गिर पड़ा। बाबाजी का यश गाता हुआ माली राजदरबार में गया। उसने सब हाल राजा से कहा। ऐसे अद्भुत शक्तिवाले महात्मा के दर्शन करने को राजा और प्रजा सभी दौड़ पड़े। हज़ारों पुरुषों ने आकर इन्दल की भेंट-पूजा की, पर वे सभी वस्तुएँ लौटाकर कह देते—"इस माया को यहाँ से ले जा। हमारे यहाँ इसका क्या काम ? हमें तो संसार में केवल राम-नाम ही से मतलब है।" यह देख-सुनकर सभी लोग केवल उनकी सराहना ही न करते, बल्कि उनमें अपनी अधिकाधिक श्रद्धा और भक्ति भी दिखाने लगे। जब राजा आये तब इन्दल ने उनकी भी भेंट-पूजा लौटा दी और कहा—"बच्चे ! हम लँगोटीवालों से इस ठगिनी माया को दूर ही रक्खो। हम तो प्रेम के भूखे हैं।"

राजा के जाने के बाद रनिवास की रानियाँ भी दर्शन करने आईं। सन्ध्या के समय लेखावती ने भी पिता से योगिराज के दर्शन के लिए आज्ञा माँगी। राजा ने अपने पुत्र योगजीत को सेना समेत राजकुमारी के साथ जाने की आज्ञा दी। कहते हैं कि राजकुमारी ने पहले एक सुन्दर बाँदी को अपने कपड़े पहनाकर इन्दल के पास भिक्षा देने को भेजा; परन्तु इन्दल ने उसके हाथ की भिक्षा न ली और कहा—"तू दासी है, तेरे हाथ की भिक्षा ठीक नहीं।" इससे लोगों को महात्मा में और भी अधिक श्रद्धा बढ़ गई। जब सब सखियाँ और दासियाँ

दर्शन कर गईं तब सबके पीछे लेखावती दर्शन करने गईं। उसने इन्दल को पहचानकर कहा—"प्राणनाथ! आप जोगी क्यों हो गये?" उत्तर में इन्दल ने लेखावती को सब हाल सुनाया तब उसने कहा—"क्या चिन्ता है! आप दिन भर यहाँ रहा करें और रात को हमारे महल में आकर विश्राम किया करें।" इस प्रकार बातचीत कर राजकुमारी लौट गईं।

रात के समय इन्दल महलों में पहुँचे और वहीं रहे। सबेरे आश्रम को लौटकर फिर उसी वेष में रहते और सारे नगर में दिन भर घूमते।

राजकुमारी लेखा नित्य चमेली के फूलों से तौली जाती थी। वह नियमानुसार उस दिन भी तौली गई। जो मालिन राजकुमारी को तौला करती थी वह यह देखकर चकित रह गई कि उस दिन राजकुमारी और दिनों से बहुत भारी हो गई थी। उसने जाकर महाराज से सब हाल बताकर कहा—"महाराज! ढिठाई क्षमा हो। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि राजकुमारी के महल में कोई पुरुष रहता है।" यह सुनते ही राजा क्रोध से बावला हो उठा। उसने तुरन्त अपनी भेदिनियों को राजकुमारी के महल में भेद लेने को भेजा। दैवयोग से एक भेदिनी ने सब पता लगा लिया और राजा के पास जाकर कह दिया। शीघ्र ही राजा ने इन्दल क़ैद करने के लिए कुछ सिपाही भेजे, पर उन्होंने अपने डण्डे से सभी को मार भगाया। यह सुनकर राजा ने सौ वीरों को महल में भेजा; पर गुरु अमरनाथ के तान्त्रिक डण्डे ने सभी को अस्त-व्यस्त करके पछाड़ दिया।

यह सुनकर राजा ने इन्दल को ब्रह्मफाँस से बन्दी कर लिया। पहले तो राजा ने इन्दल को मरवा डालना चाहा, परन्तु मन्त्री के कहने पर उनको एक ख़न्दक़ में डलवा दिया। कहते हैं कि बन्दी होते समय इन्दल ने राजा से कह दिया था कि "तुम्हारी कन्या से मेरा आधा ब्याह तो हो ही चुका है; अब यदि तुम उसे पूरा न करा दोगे तो तुम्हारा कल्याण न होगा।" फिर उन्होंने आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कहा। उसे सुनकर राजा को बड़ी चिन्ता हुई। उसने कहा—"कुछ भी हो, हम जोगी के साथ तो विवाह न होने देंगे।" अब राजा ने इन्दल को ख़न्दक़ में डलवा दिया और अपने बेटे से कहा कि "तुम शीघ्र टीका

लेकर पथरीगढ़ के राजा गजसिंह के यहाँ जाओ और उसके पुत्र को टीका चढ़ा दो।" अब राजा ने टीके का सब सामान मँगवाकर जोगजीत को सौंप दिया। वह भी चारों नेगियों के साथ वहाँ से रवाना हो गया।

जोगजीत जब गजसिंह के यहाँ टीका लेकर पहुँचे, तब उन्होंने आदर से उनका स्वागत किया और अपने लड़के को बुलवाकर टीका चढ़वा लिया। दोनों ओर से ख़ूब आनन्द मनाया गया। नेगियों को मुँहमाँगा इनाम मिला। टीका चढ़ाकर जोगजीत लौट आये।

इसके बाद गजसिंह ने अपने व्यौहारियों को न्यौते भेजे। उन्होंने अपने दामाद वीर मलखान को भी न्यौता भेजकर बुलवाया। मलखे सेना लेकर समय पर वहाँ जा पहुँचे। जब सभी निमन्त्रित व्यौहारी लोग आ गये तब बारात रवाना हुई।

इधर लेखावती नित्य गुप्त रीति से इन्दल से मिलने जाती थी। उन्हें भोजन आदि कराकर और रात भर वहीं रहकर वह सबेरे लौट आती थी। बारात आने की सूचना इन्दल को उसी ख़न्दक़ में मिली।

राजा सरहनाग ने जब सुना कि बारात आ गई और उसमें सिरसा से बनाफर मलखे आये हैं, तब तो वह बहुत झुँझलाया। उसने तुरन्त सेना भेजकर युद्ध का डंका बजवाया। ख़बर पाकर गजसिंह की सेना भी मोर्चे पर आ डटी। दोनों ओर से घमासान युद्ध होने लगा। मलखे की सेना चारों ओर खेती की फ़सल की तरह योद्धाओं को काटने लगी। उधर पथरीगढ़ के योद्धा भी डटकर शत्रु को पीछे हटाने लगे। युद्ध होते जब बहुत देर हो गई और हार-जीत के कुछ भी लक्षण न मालूम पड़े, तब मलखे अपनी सेना को बढ़ावा देकर प्रचण्ड वेग के साथ युद्ध करने लगे। इससे दूसरे दल का सेनापति भागा। उसकी बहुत सी सेना मारी गई। जो बची वह भाग गई। यह सुनकर सरहनाग ने जोगजीत और गणपति नाम के अपने दोनों बेटों को बुला लिया और एक बड़ी सेना साथ देकर उन्हें युद्ध के लिए भेजा।

दोनों राजकुमार अपने-अपने हाथियों पर चढ़कर रणभूमि की ओर चले। शीघ्र ही दोनों ओर से मोर्चा लग गये। दोनों ओर के सैनिक माया-मोह छोड़-

कर एक दूसरे से गुथ गये। बहुत देर तक भीषण युद्ध होता रहा। अन्त में सिरसावालों और पथरीगढ़वालों ने मिलकर जोगा और गणपति की सेना को अस्त-व्यस्त करके भगा दिया। यह देखकर दोनों राजकुमार युद्ध करने के लिए आगे बढ़े, तब मलखे गणपति से और उनके साले जोगजीत से युद्ध करने लगे। दोनों ओर से विकट युद्ध होने लगा। गजसिंह के राजकुमार ने थोड़ी ही देर बाद जोगा को घायल करके क़ैद कर लिया। मलखे ने भी हौदे की रस्सी काटकर गणपति को नीचे गिरा दिया और क़ैद कर लिया।

यह ख़बर राजा को मिली तो वह बड़े असमंजस में पड़ा। उसने कुछ देर तक सोच-विचारकर इन्दल को ख़न्दक़ से निकाला और कहा—"जोगी! यदि तू अपने तन्त्रबल से हमारे शत्रुओं को मारकर भगा देगा तो हम तेरे साथ अपनी कन्या का विवाह कर देंगे।"

यह सुनकर इन्दल बड़े प्रसन्न हुए। झटपट पाँचों हथियार लेकर और घोड़े पर चढ़कर वे समरभूमि में आ पहुँचे। उनको आया देखकर पथरीगढ़ का राजकुमार* आगे बढ़ा और बोला—"अरे जोगी, तू जोग छोड़कर सांसारिक प्रपंचों में क्यों फँसने आया है?" फिर उसने इन्दल पर वार कर दिया। शीघ्र ही दोनों वीर प्रचण्ड वेग के साथ युद्ध करने लगे। कहते हैं कि लोहे का जिरहबख़्तर पहने रहने के कारण राजकुमार के शरीर पर इन्दल के वारों का कुछ भी असर न होता था। यह देखकर इन्दल ने गुरुदेव की विद्या का स्मरण किया। उन्होंने राजकुमार को तन्त्रबल से हौदे में अचेत करके गिरा दिया और बन्दी करवा लिया। जब मलखे† ने अपने साले को बन्दी हुआ देखा तब वे शीघ्र इन्दल के सामने आ डटे। तुरन्त दोनों ओर से

---

* यही राजकुमार व्याहने आया था।

† इन्दल मलखे को इसलिए न पहचान सके कि उन्हें स्वप्न में भी इसका विश्वास न था कि मलखे वहाँ पहुँचेंगे और दूसरी बात यह थी कि इन्दल इस समय अपने विवाह की ख़ुशी में थे।

युद्ध होने लगा। मलखे के सभी वार इन्दल पर व्यर्थ सिद्ध होने लगे और इन्दल के वारों से कबूतरी बीस-बीस क़दम पीछे हटने लगी। इसी समय इन्दल ने तलवार चलाई तो वह मलखे की ढाल को चीरती हुई हथेली में जा लगी। यह देखकर मलखे दङ्ग रह गये और अपने मन में इस जोगी (इन्दल) की सराहना करने लगे। इस समय मलखे क्रोध में आ आगे बढ़े तो इन्दल ने ललकारकर कहा—"अरे ठाकुर! मेरे सामने से हटकर अब भी अपने प्राण बचा ले, नहीं तो बनाफरों के क्रोध का शिकार होकर व्यर्थ ही मारा जायगा। मैं अकेला हूँ, तभी तुझे इस ढिठाई पर क्षमा दे रहा हूँ। यदि कहीं मेरे साथ मलखे चाचा या ऊदल चाचा होते तो अभी तक तेरी सारी फ़ौज का नाश कर डाला होता। इसलिए अब भी तू सँभल..........।" बनाफर और अपना तथा ऊदल का नाम सुनकर मलखे चौंक पड़े और बोले—"जोगी! क्या तू मेरी हँसी कर रहा है? मैं ही तो ऊदल का भाई बनाफरवंशी मलखान हूँ।" यह सुनते ही इन्दल ने मलखे को ध्यान से देखा और फिर पहचानकर उनके चरणों पर जा गिरा और बोला—"चाचा! मैं ही आपका कुपुत्र इन्दल हूँ।" इन्दल का नाम सुनकर मलखे को और भी अचम्भा हुआ। उन्होंने इन्दल को उठाकर उनसे जोगी का वेष धारण करने का कारण पूछा। इन्दल ने आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर मलखे ने इन्दल को छाती से लगा लिया और जाकर अपने ससुर को सब हाल कह सुनाया।

गजसिंह ने कहा—"कोई चिन्ता नहीं। सरहनाग की कन्या अपने घर में आ जानी चाहिए। यदि वह हमारी पुत्रवधू न होगी तो दौहित्र-वधू तो होगी। हमें इसमें और भी प्रसन्नता है। सरहनाग ने जिस प्रश्न को लेकर विवाह उठाया है, उसे अब उसी प्रश्न पर झुकना पड़ेगा। अभी तो वह बनाफरों को बारात में देखकर चौंका था, परन्तु अब उसे बनाफरों के यहाँ अपनी कन्या का विवाह करना पड़ेगा।" अब यह समाचार सरहनाग के पास पहुँचा तो सुनकर वह चकित हो गया। अन्त में उसने व्यर्थ फ़ौज कटवाना उचित न समझकर इन्दल के साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया। सरहनाग सदा के लिए

मलखे का सामन्त बन गया। उसने कर देकर मलखे से क्षमा माँगी। मलखे ने प्रसन्न होकर वहाँ ख़ूब धन लुटाया, फिर बहू को विदा कराकर वे लौट आये।

पाठको! आइए अब हम आपको रिजगिरि की ओर ले चलें, जहाँ इन्दल के गुम हो जाने से त्राहि-त्राहि मची हुई है। इन्दल का कहीं भी पता न लगने पर चारों ओर के राज्यों में धावन और गुप्तचर भेजे गये। कहते हैं कि कुछ गुप्तचर सिंहलद्वीप भी हो आये थे; परन्तु उस समय तक इन्दल वहाँ नहीं पहुँचे थे। उस समय वे गुरुदेव अमरनाथ के आश्रम में ही थे। अतः जब वे सिंहलद्वीप में भी न मिले, तब सभी रजवाड़ों में खोज की जाने लगी। सभी रजवाड़ों में खोज हो चुकने और इन्दल का पता न लगने पर आल्हा, ऊदल, देवै, सुनवाँ, फुलवा, चित्ररेखा और सुआपङ्खिनी आदि सभी के दुःख का ठिकाना न रहा। इस प्रकार छः महीने बीत गये तब ऊदल कजलीबन की ओर गये। उनके पहुँचने के चौथे दिन गुरुदेव की समाधि टूटी। उन्होंने नेत्र खोले और अपने सामने चिन्ताकुल ऊदल को खड़ा पाया तो योगिराज ने कहा—"कहो बेटा! कैसे आये? कुशल तो है?" ऊदल उनके पैर पकड़कर रोने लगे और बोले—"महाराज! इन्दल का पता नहीं है।" यह सुनते ही उन्होंने कहा—"आज सात महीने हुए, वह हमसे तन्त्रविद्या लेकर सिंहलद्वीप गया है। वह अपने विवाह के लिए वहाँ गया हुआ है। तुम जाकर लिवा लाओ।" यह सुन ऊदल गुरुदेव को प्रणाम कर वहाँ से कन्नौज को लौट आये।

वहाँ आकर ऊदल ने सब हाल आल्हा से कहा। शीघ्र ही आल्हा की फ़ौजें सज गईं। आल्हा, ऊदल, ताला सैयद और ढेवा तैयार होकर फ़ौज के साथ सिंहलद्वीप की ओर रवाना हुए। आठवें दिन उन्होंने दूर से देखा कि किसी राजा के डेरे पड़े हुए हैं और उन डेरों पर सिरसा की राजपताका फहरा रही है। यह देखकर आल्हा ने एक हरकारे को वहाँ की ख़बर लाने के लिए भेजा।

आल्हा को जब मालूम हुआ कि वे मलखे के ही डेरे हैं, तब सब लोग वहाँ पहुँचे। मलखे ने आल्हा आदि को आते देख सिंहासन छोड़ दिया और आगे बढ़कर कहा—"दादा! हम तो आ ही रहे थे, आपने क्यों कष्ट किया?" फिर

वे दूसरे तम्बू से इन्दल को लिवा लाये और उसे आल्हा के चरणों पर डाल-कर बोले—"हमारे कहने से इसका अपराध क्षमा करो। यह भविष्य में ऐसी भूल न करेगा।" इसी समय लेखावती ने भी आकर अपने ससुरों के चरणों में सिर नवाया। सुन्दर बहू को देखकर सभी लोग प्रसन्न हो गये। ऊदल इन्दल को छाती से लगाकर रोने लगे तब ढेवा ने समझा-बुझाकर दोनों को अलग किया।

दूसरे दिन वहाँ से सब लोग लौट पड़े। देवै आदि रानियों ने जब नई बहू के आने का समाचार सुना और यह भी सुना कि वह अनुपम सुन्दरी है, तब तो सभी उसको देखने के लिए लालायित हो उठीं। इसी समय इन्दल और लेखा की पालकियाँ सिंहपौरि पर पहुँचीं। देवै ने जाकर परिछन किया। सुनवाँ और फुलवा ने लाखों रुपये का द्रव्य और गहने ब्राह्मणों तथा नेगियों को बाँट दिये।

रिजगिरि में घर-घर मंगलाचार होने लगे। सभी लोग मुदित होकर आनन्द मनाने लगे। इन्दल ने उस मालिन को भी बहुत-सा द्रव्य देकर सन्तुष्ट किया। द्रव्य पाकर मालिन जय-जय मनाने लगी।

कहते हैं कि जब मलखे ने आल्हा से इन्दल की वीरता के विषय में कहा, तब सब लोग बड़े चकित हुए। ऊदल ने इसकी खुशी में तोपें छुटवाईं, ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दी तथा दीन-हीन अपाहिजों को बहुत-सा धन दिया।

---

*गाँजर का युद्ध

कन्नौज के राजदरबार में सन्नाटा छाया हुआ था। महाराज जयचन्द अपने सामन्त राजाओं और सरदारों की ओर देख रहे थे। राजसिंहासन के आगे एक चौकी पर एक स्वर्ण का कलश रक्खा हुआ था। उसी पर एक जड़ाऊ सिरपेच और पान का बीड़ा रक्खा था। सभी दरबारी उस कलश की ओर रह-रह कर देखने और फिर नीचे ताकने लगते थे। इस समय दरबार में इतना सन्नाटा था कि एक सुई भी गिरती तो उसकी आवाज़ से सब चौकन्ने हो जाते। इसी समय महाराज जयचन्द ने सन्नाटे को तोड़ते हुए कहा—"क्या कन्नौज में सभी कायर हैं ? क्या कोई भी माई का लाल इस बीड़े को चबाकर गाँजर के सामन्त राज्यों से सात बरस की बाक़ी 'चौथ' वसूल करने का साहस नहीं रखता ? मैंने सबको समझ लिया। अब आज से कोई अपने को वीर न कहे।" यह सुनते ही ऊदल उठ खड़े हुए और बोले—"राठौर-राज ! मैं अभी तक आपके उन वीरों को यह देखता रहा, जिन पर आप इस समय तक गर्व किया करते थे। आज आपने उनको समझ लिया यह अच्छा हुआ। अच्छा, मैं गाँजर-विजय की घोषणा करता हूँ।" अब उन्होंने वह बीड़ा चबा लिया और सिरपेच उठाकर लाखन से कहा—"युवराज ! झटपट चलने की तैयारी करो।" इसके बाद वे रिजगिरि चले गये। वहाँ से ऊदल अपनी फ़ौज लेकर कन्नौज आये; फिर लाखन को और उनकी फ़ौज को साथ ले गाँजर की ओर रवाना हुए। ऊदल के साथ आल्हा, इन्दल, ढेवा, सैयद और आल्हा के साले जोगा-भोगा भी चले। जोगा-भोगा अपने बहन-बहनोई से मिलने दैवयोग से आ गये थे। कहते हैं कि कुल फ़ौज में दस हज़ार हाथी, तीन लाख सवार और चार लाख पैदल थे।

---

* उस समय बिहार और उत्तरी बङ्गाल के कुछ भाग को गाँजर कहते थे। इसमें सब मिलाकर छोटे-बड़े बारह राज्य थे। ये सब जयचन्द के सामन्त थे और कर देते थे।

सबसे पहले इन्होंने बिरियागढ़ के धूरे पर जाकर डेरे डाले। दूसरे दिन आल्हा ने वहाँ के राजा हरीसिंह के पास एक पत्र भेजा। उसमें लिखा—"हरीसिंह अब कन्नौज के राजा जयचन्द का सम्मान फिर पहले की तरह करने लगे। साल में तीन महीने कन्नौज के राजदरबार में रहा करे और चौथ दिया करे और सात साल से चौथ के जो बक़ाये रुपये हैं, वे तुरन्त डेरों में आकर लाखन को दे जावे। ऐसा न करे तो आकर सामना करे।" यह पत्र पाते ही हरीसिंह आगबबूला हो गया। उसने अपने भाई वीरसिंह को बुलवाकर सेना तैयार करने की आज्ञा दी। सेना के तैयार हो जाने पर दोनों भाई युद्ध के मैदान की ओर चले।

यह ख़बर पाकर ऊदल ने भी अपनी फ़ौज को तैयार होने की आज्ञा दी। फ़ौज लेकर वे मैदान में जा डटे। हरीसिंह ने शत्रु को देखकर अपना हाथी आगे बढ़वाया और ऊदल के पास जाकर कहा—"क्या संसार में ऐसा भी कोई माई का लाल है, जो हमारा सामना करने की हिम्मत रखता हो?" ऊदल ने कहा—"हाँ! ऐसे वीर एक क्या अनेक हैं, जो तुम्हारा सामना ही नहीं कर सकते, बल्कि तुम्हें क़ैद करके बिरियागढ़ को लुटवा भी सकते हैं।" यह सुनकर हरीसिंह क्रुद्ध हो गया। उसने तुरन्त सेना को सामने से हट जाने का इशारा किया और तोपों में जलते हुए पलीते लगवा दिये। अब क्या था, दोनों ओर की तोपें आग उगलने लगीं। इसमें हज़ारों वीर खेत रहे। इसके बाद दोनों ओर से तलवारें चलने लगीं। कन्नौजिये वीर डटकर शत्रु के धुर्रे उड़ाने लगे। ऊदल सैनिकों को उत्साह देते हुए चारों ओर घूमने लगे। अब गढ़ के सैनिक बेंड़ी मार से घबराकर भागने लगे। यह देखकर हरीसिंह ने अपने हाथी को बढ़वाकर ऊदल से कहा—"ठाकुर! तुम क्यों नाहक़ मरना चाहते हो? जो नहीं मानते हो तो सावधान।" अब उसने ऊदल के ऊपर तलवार का वार किया, परन्तु वह ख़ाली गया। फिर उसने गुर्ज चलाया। इसी समय ऊदल पैंतरा बदलकर हाथी के पास पहुँचे और उन्होंने रस्सा काटकर हौदे को गिरा दिया। इतने में कन्नौजियों ने आगे बढ़कर हरीसिंह को क़ैद कर लिया।

भाई को क़ैद हुआ देखकर भारी-भरकम वीरसिंह ने अपना हाथी आगे बढ़ाया। अब वह ऊदल पर हाथ साफ़ करने लगा तो ऊदल ने अपनी पूर्वोक्त चाल से वीरसिंह को भी गिरा दिया। परन्तु वीरसिंह गिरते ही सँभलकर उठ खड़ा हुआ। पहलवान वीरसिंह का गठा हुआ बलिष्ठ शरीर देखकर ऊदल ने कुश्ती लड़ने का प्रस्ताव किया। वीरसिंह ने इसे ख़ुशी से मान लिया। अब दोनों वीर लाँग चढ़ाकर कुश्ती लड़ने लगे। दोनों ओर की सेना चुपचाप खड़ी खड़ी तमाशा देखने लगी। इतने में वीरसिंह ने ऊदल को दोनों हाथों से पकड़कर उठा लिया और कहा—"अरे बच्चे! तू क्या लड़ेगा? अभी कुछ दिन और खेल खा ले। अच्छा! तो बता, मैं तुझे लेकर कितने कोस दौड़ूँ और तुझे कहाँ पर पटक दूँ।"

इसी समय ऊदल ने ऊपर से उछलकर वीरसिंह की छाती में कसकर दोनों लातें मारीं। इससे वह धड़ाम से भूमि पर अचेत होकर गिर पड़ा। कन्नौजियों ने झपटकर उसे क़ैद कर लिया, फिर बिरियागढ़ का सब माल-ख़ज़ाना लूट लिया गया।

ऊदल ने यहाँ से चलकर पट्टी नगर के धूरे पर डेरे डाले और वहाँ के राजा साँतनि से सात बरसों की बाक़ी चौथ के रुपयों का तक़ाज़ा भेजा। रुपयों का तक़ाज़ा होने से पट्टी नरेश बड़ा नाराज़ हुआ। उसने भी तुरन्त लड़ाई का डंका बजवा दिया। वह झटपट अपनी सेना लेकर लड़ाई के मैदान में आ पहुँचा। ऊदल की सेना वहाँ पर पहले ही से खड़ी थी। शीघ्र ही दोनों ओर से ज़बर्दस्त मार-काट होने लगी। कहते हैं कि ऊदल, इन्दल और ढेवा तीनों ने ही एक के बाद एक साँतनि से युद्ध किया, पर उस वीर ने सबको हटा दिया। फिर आल्हा ने अपना पचशावद आगे बढ़ाया। बड़ी देर तक दोनों जमकर युद्ध करते रहे। अन्त में जीतने का दूसरा उपाय न देखकर आल्हा ने हाथी को साँकल दे दी। साँकल की मार से साँतनि घोड़े पर से गिर पड़ा, पर चटपट उठकर दूसरे घोड़े पर जा बैठा और युद्ध करने लगा। कन्नौजिये वीर उसे क़ैद करने का रास्ता ही देखते रहे। इसी समय जोगा ने बढ़कर राजा का

सामना किया। राजा ने डटकर उससे भी युद्ध किया और थोड़ी ही देर में उसे तलवार के घाट उतारा। जेगा के मारे जाने पर भोगा आगे बढ़ा, परन्तु उसने भी वीर-गति पाई। यह देखकर इन्दल आगे बढ़ा। कहते हैं कि थोड़ी ही देर के युद्ध में इन्दल ने ढाल की औझड़ से साँतनि को गिराकर क़ैद कर लिया।

अब पट्टी नगर का सभी माल और ख़ज़ाना लूटा गया। विजय पाकर ऊदल यहाँ से कामरूप देश में पहुँचे। वहाँ की राजधानी के धूरे पर डेरे डालकर उन्होंने बक़ाया चौथ के रुपयों का राजा के पास तक़ाज़ा भेजा। सात बरस के बाद यह नई आपत्ति देखकर राजा कमलापति पहले तो घबरा गया, परन्तु पीछे साहस करके उसने अपने सेनापति को सेना तैयार करने की आज्ञा दी। फिर वह सेना के साथ रणभूमि की ओर आया। वहाँ ऊदल की सेना पहले ही से उसकी बाट जोह रही थी।

अब दोनों ओर से घमासान लड़ाई होने लगी। कहते हैं कि जब कमलापति ने अपनी सेना को चौपट होते देखा, तब तन्त्रबल का प्रयोग किया। किन्तु इन्दल के तन्त्रबल के आगे उसकी एक न चली। अन्त में निराश होकर वह फिर युद्ध करने लगा। युद्ध करते-करते ऊदल ने अपने बेंदुला के एड़ लगाई और हौदे के पास पहुँचकर कमलापति के हौदे के कलश तथा छतरी आदि को तोड़कर फेंक दिया। फिर उन्होंने हौदे का रस्सा काटकर कमलापति को नीचे गिराकर क़ैद कर लिया। इसके बाद नगर और क़िले का माल-ख़ज़ाना लूट लिया गया। विजय का डङ्का बजाते हुए ऊदल ने यहाँ से कूच कर बङ्गाल की राजधानी के धूरे पर जाकर डेरे डाल दिये। वहाँ के राजा गोरखसिंह के पास भी तक़ाज़ा भेजा गया। इससे वह अपनी फ़ौज लेकर मैदान में आ डटा। ऊदल ने भयानक युद्ध के बाद उसे भी क़ैद कर लिया और उसके नगर का सब माल-ख़ज़ाना लुटवा लिया।

बङ्गाल को जीतकर ऊदल लौट पड़े। रास्ते में उन्होंने कटक के राजा मुरलीधर और उसके भाई मनोहर को क़ैद कर लिया और उनके नगर तथा गढ़ी को लूटकर वे जिंसीगढ़ में आ पहुँचे। जिंसी के राजा जगमणि ने भी

उनका सामना किया परन्तु वह भी वन्दी हो गया। उसका माल-ख़ज़ाना लूट लिया गया। यहाँ से चलकर रूवनीगढ़ पर धावा बोला गया। वहाँ के राजा को क़ैद करके तथा उसके माल और ख़ज़ाने को लूटकर ऊदल पटना में पहुँचे। वहाँ के राजा पूरन ने डटकर युद्ध किया; पर वह भी हारने पर वन्दी किया गया। पटना शहर लूट लिया गया। वहाँ से चलकर वे गोरखपुर आये। वहाँ का राजा सूरजमल क़ैद कर लिया गया और उसका माल-ख़ज़ाना लूटा गया। अब वे लोग गङ्गाजी के तट पर मुक्तिदायिनी काशी नगरी में आये। यहाँ के राजा ने भी चौथ देने से इन्कार किया। वह युद्ध करने को मैदान में आया। ऊदल ने भयङ्कर युद्ध के बाद काशी-नरेश हंसामणि को क़ैद कर लिया। यहाँ पर ऊदल ने नगर नहीं लुटवाया परन्तु क़िले का माल-ख़ज़ाना लुटवा लिया।

इस प्रकार गाँजर के बारहों * राजाओं को क़ैद करके और वहाँ की लूट के धन को छकड़ों पर लदवाकर ऊदल कन्नौज को लौटे। महाराज जयचन्द ने धूरे पर जाकर उनका स्वागत किया।

दूसरे दिन दरबार में जाकर ऊदल ने उन बारहों राजाओं तथा लूट के माल को राजा के सामने पेश किया। राजा जयचन्द ने ऊदल की बहुत-बहुत प्रशंसा की और उन्हें बहुत इनाम दिया। ऊदल कन्नौज के सब सैनिकों, सरदारों और सामन्तों में सिरमौर गिने जाने लगे।

महाराज जयचन्द ने लूट का माल अपने ख़ज़ाने में रखवा दिया और उन राजाओं को क्षमा करके उन्हें जीवन भर के लिए उनके राज्यों की सनदें† फिर

---

* यहाँ केवल दस राज्यों के नाम हैं परन्तु त्रिरियागढ़ में हरीसिंह और वीरसिंह दोनों भाइयों के दो गढ़ थे और कटक में भी मुरलीधर तथा मनोहर के अलग-अलग गढ़ थे। इस प्रकार इन बारहों गढ़ों के इलाक़ों को गाँजर देश कहते थे।

† सामन्त राजाओं के लिए भारतवर्ष में चिरकाल से यही नियम चला आता है। उन्हें साल में नियमित समय के लिए राज-दरबार में हाज़िर होना

दे दी। उन राजाओं ने कर देने और साल में तीन महीने कन्नौज के दरबार में रहने के लिए एक प्रतिज्ञा-पत्र लिख दिया। इस प्रकार वे लोग ख़ुशी से अपने-अपने राज्यों को लौट गये। कहते हैं कि तीन महीने और तेरह दिनों तक ऊदल ने कठिन तलवार चलाकर गाँजर को विजय किया था।

महोबे के राजकवि जगनिक भट्ट कहते हैं कि काशी में ऊदल के साथ लाखन जब गङ्गास्नान करने लगे थे तब उन्होंने गङ्गाजी में खड़े होकर यह प्रतिज्ञा की थी कि "ऊदल, मैं आज से तुम्हारा सच्चा मित्र हूँ। आज से तुम जहाँ भी युद्ध करने जाओगे, मैं तुम्हारे साथ चला करूँगा।" इस प्रतिज्ञा का लाखन ने सदैव पालन किया और अन्त में ऊदल के साथ ही एक युद्ध में वीर-गति पाई। पाठक इसका हाल आगे पढ़ेंगे।



पड़ता था, कर भी देना पड़ता था तथा समय पर सेना के साथ युद्ध में भी जाना पड़ता था। जब सामन्त राज्यों के राजा मर जाते थे तब महाराज नवीन युवराज को ख़िलत भेजकर उसे उस राज्य का नये सिरे से पट्टा और सनद देते थे। यह पट्टा और सनद प्रत्येक राजा के जीवन भर के लिए होती थी।

सिरसागढ़ का दूसरा युद्ध

आल्हा और ऊदल के निकल जाने से महोवा वीरशून्य सा हो गया था। इस समय कोई भी राजा महोवे पर हमला करके वहाँ लूट करवा सकता था। ऐसा अच्छा अवसर आया हुआ देखकर दुष्ट माहिल ने पृथ्वीराज द्वारा महोवे को मटियामेट कराने का विचार किया। वह तुरन्त अपनी लिल्ली घोड़ी पर चढ़कर दिल्ली पहुँचा।

चौहानसिंह पृथ्वीराज ने अपने साले को आते देखकर एक सुन्दर रत्न-जड़ी चौकी डलवा दी और स्वागत करके उसे उस चौकी पर बिठाया। माहिल ने अपने बहनोई पृथ्वीराज के चरण छूकर पूछा—"महाराज! कुशल तो है?"

पृथ्वीराज ने कहा—"हाँ! तुम्हारे जैसे व्यक्ति जिसके शुभचिन्तक हों, उसका हमेशा कुशल ही है।" पृथ्वीराज मुसकुराकर थोड़ी देर बाद फिर बोले—"कहो! महोवे के क्या समाचार हैं?" यह सुनते ही माहिल ने कहा—"महोवे से आल्हा-ऊदल निकाल दिये गये हैं। इससे आपके लिए यह स्वर्ण अवसर है। आप चलकर परमाल से अपने अपमान* का बदला चुका लें। महोवे में युद्ध के लिए बारह रानियों में एकलौते ब्रह्मा ही रह गये हैं। मेरे विचार से सबसे पहले आप चलकर सिरसा को लुटवा लें; क्योंकि मलखे ने आपके पुत्र पारथ को अपमानित करके वहाँ से भगा दिया था। सिरसा में भी केवल मलखे और सुलखे ही हैं। आल्हा और ऊदल वहाँ किसी प्रकार भी न आ सकेंगे। यदि आप क्षत्रियों की रीति से राजा कहाने का गर्व रखते हैं तो अपने शत्रुओं से इस समय अवश्य ही बदला लें। यदि आप यह सोचते

---

* ब्रह्मा का विवाह पृथ्वीराज की पुत्री बेला से बलपूर्वक करवा लिया गया था।

हों कि इसमें कुछ मेरा स्वार्थ है तो रहने दीजिए; क्योंकि हमारे लिए मलखे और पारथ दोनों एक से हैं। दोनों ही हमारे भाञ्जे हैं। परन्तु हम पारथ का पक्ष इसलिए करते हैं कि मलखे ने अन्याय करके पारथ को वहाँ से निकाल दिया है। यदि मुझमें तनिक भी सामर्थ्य होती तो मैं यह अन्याय न होने देता। अब आप अपना भला-बुरा और यश-अपयश सोचकर जैसा चाहें करें।"

माहिल की चाल काम कर गई। पृथ्वीराज ने तुरन्त ताहर को बुलाकर युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दी। बात की बात में सेना तैयार होने लगी।

महाराज पृथ्वीराज अपने आदि-भयङ्कर नामक हाथी पर चढ़कर मैदान में आये। सातों राजकुमार, धाँधू और चौंड़ा भी अपने-अपने हाथी-घोड़ों पर चढ़-कर बाहर निकले। शीघ्र ही कूच का डङ्का बजा। सेना सिरसा की ओर रवाना हुई।

सिरसा के धूरे पर पहुँचकर पृथ्वीराज ने डेरे डाल दिये और चौंड़ा को उसकी सेना देकर कहा कि तुम अपनी सेना के साथ जाकर सिरसागढ़ को घेर लो। चौंड़ा ने तुरन्त जाकर सिरसा को घेर लिया।

यह ख़बर सुनते ही मलखे अपनी सेना समेत बाहर आये। उनको देख चौंड़ा आगे बढ़कर बोला—"ठाकुर! पृथ्वीराज का हुक्म है कि तुम्हारा क़िला गिरवा दिया जाय और महोबे के दुर्ग को विध्वंस करके चन्द्रावल का डोला ले लिया जाय।" मलखे ने हँसकर कहा—"ब्राह्मण देवता! तुम्हारा काम युद्ध करने का नहीं। जाकर कहीं कथा की चर्चा करो। पृथ्वीराज से हम स्वयं सुलझ लेंगे। जब हमने दिल्ली पर चढ़कर उनकी बेटी ब्याह ली, तब अपने यहाँ तो उन्हें हम भली भाँति समझेंगे।" यह सुनते ही चामुण्ड-देव (चौंड़ा) ने तोपों में पलीते लगवा दिये। दोनों ओर से तोपों की मार होने लगी। इसके बाद दोनों ओर के वीर तलवारें ले-लेकर आपस में गुथ गये। देखते ही देखते सिरसावालों की बैंड़ी मार से घबराकर चौंड़ा के सैनिक भागने लगे तब चौंड़ा ने अपना हाथी आगे बढ़ाया। मलखे और चौंड़ा अपना-अपना युद्ध-कौशल दिखाने लगे। युद्ध करते हुए मलखे ने हौदे के

कलश और छतरी आदि तोड़कर फेंक दिये। थोड़ी देर में मलखे ने कबूतरी के एड़ लगाकर चौंड़ा को हौदे से नीचे गिरा दिया और सिरसा के वीरों ने उसको क़ैद कर लिया।

कहते हैं कि मलखे ने चौंड़ा को क़ैद करके लहँगा और दुपट्टा पहनाया। उसके भाल में बेंदी, नाक में नथ और सिर में माँग काढ़कर सेंदुर लगाया। फिर उसे पैरों में नूपुर, हाथों में चूड़ियाँ पहनाई गईं। इसके बाद मुश्कें बाँधकर उसे एक म्याने में बैठाकर पृथ्वीराज के पास भेजा गया।

कहारों ने जाकर पृथ्वीराज के यहाँ वह म्याना उतारकर रक्खा और एक पत्र दिया। उस पत्र में लिखा था—

"महाराज पृथ्वीराज योग्य चामुण्डदेव के अनेक आशीर्वाद। सिरसा उजाड़ दिया गया। चन्द्रावल आजकल यहीं थी। अतः उसका डोला लेकर सेवा में भेजा जाता है।"

कहते हैं कि यह पत्र पढ़कर पृथ्वीराज बहुत प्रसन्न हुए, लेकिन परदा हटवाकर उन्होंने वहाँ ज़नाने वेष में चौंड़ा को देखा तो दाँत पीसने लगे। चौंड़ा की मुश्कें खोली गईं। सारे सैनिकों में चौंड़ा का उपहास होने लगा।

दूसरे दिन पारथ अपनी सेना लेकर युद्धभूमि में पहुँचा। ख़बर पाकर मलखे सेना समेत मोर्चे पर आ डटे। छपक छपक शब्द करती हुई तलवारें दोनों ओर से चलने लगीं। दिन भर युद्ध होता रहा। दोनों ओर के हज़ारों योद्धा काम आये। चौथे पहर युद्ध बन्द कर दोनों दल अपने-अपने स्थानों को लौट गये। कहते हैं कि इस प्रकार सात दिन तक पारथ युद्ध करता रहा, पर किसी की हार-जीत न हुई। इससे मलखे बड़े चिन्तित हुए। उन्होंने जाकर सब हाल गजमा से कहा। उसने कहा—"महाराज! पारथ को वरदान है कि वह सूर्य अस्त होने के बाद ही मर सकता है, दिन में नहीं। इससे आप आज सन्ध्याकाल तक युद्ध करते रहें।"

दूसरे दिन भी और दिनों की भाँति भयानक युद्ध होता रहा। छः बजने को हुए तो पारथ ने युद्ध बन्द होने का डङ्का बजवाया। यह देख मलखे ने

पारथ के पास जाकर कहा—"क्षत्रिय लोग युद्ध में कभी पीठ नहीं दिखाते। आप विना हमारी इच्छा के लौट जायँगे तो पराजित समझे जायँगे। अभी चौथा पहर समाप्त नहीं हुआ। कुछ देर तक और युद्ध होगा।" यह सुनकर पारथ लौट पड़ा। उसने तुरन्त मलखे पर आक्रमण कर दिया। उस चोट से मलखे घबरा गये, परन्तु दाँव खेलकर बच गये। इसी समय उन्होंने कबूतरी के एड़ लगाकर पारथ पर सेल चला दी। इससे पारथ अचेत होकर गिर पड़ा। मलखे ने उसका सिर काटकर विजय का डङ्का बजवा दिया। पारथ की फ़ौज भाग गई। पृथ्वीराज ने पारथ की मृत्यु पर बहुत शोक किया।

दूसरे दिन पृथ्वीराज ने धीरसिंह को बुलाकर कहा—"ठाकुर! तुम आल्हा के मित्र हो। यदि तुम इसी बहाने मलखे के पास जाकर उसे यहाँ धोखे से लिवा लाओ तो तुम्हें स्वतन्त्र राजा समझा जायगा और तुम्हें दिल्ली से समय समय पर सहायता मिलती रहेगी।" यह सुनकर धीरसिंह बड़ा प्रसन्न हुआ। वह तुरन्त ही चौबीस सरदारों को साथ ले हाथी पर चढ़कर सिरसा की ओर चला। फाटक पर पहुँचकर धीरसिंह ने द्वारपाल से फाटक खोलने को कहा। उसने उत्तर दिया—"महाराज! हाथी पर चढ़कर कोई भीतर नहीं जाने पाता। आप हाथी को यहीं छोड़ दें।" विवश होकर धीरसिंह हाथी से उतरकर घोड़े पर सवार हुआ और भीतर चला। दूसरे फाटक को बन्द देखकर उन्होंने दरबानी से उसे खोलने को कहा। उसने उत्तर दिया—"महाराज! घोड़े पर चढ़कर आप अन्दर नहीं जा सकेंगे। घोड़े को यहीं छोड़ दीजिए।" लाचार होकर धीरसिंह घोड़े से उतर पड़ा। अब वह सरदारों समेत पैदल गया। सातों फाटकों को पार करके धीरसिंह दरबार में पहुँचा। मलखे ने धीरसिंह को देखकर उसका स्वागत किया। अब धीरसिंह ने मलखे को बहुतेरा समझाया और अनेक प्रकार की बातों में फाँसकर अपने साथ ले जाना चाहा, पर वीर मलखान ने यही उत्तर दिया—"पृथ्वीराज सात लाख के अलावा सत्तासी लाख सेना क्यों न ले आवें, हम उनसे नहीं डरेंगे। हम तो उनसे रणभूमि में ही मिलेंगे।" यह सुनकर धीरसिंह ने अपनी साँग को उठाकर दरबार में गाड़ दिया और

कहा—"यदि तुम इसे उखाड़ लो तो हम लौट जाँयगे, नहीं तो तुम्हें वीरों की रीति के अनुसार हमारे साथ चलना होगा।" वीरवर मलखे ने तुरन्त उस साँग को उखाड़कर फेंक दिया। धीरसिंह अपना सा मुँह लेकर लौट आया।

प्रातःकाल होते ही महाराज पृथ्वीराज स्वयं युद्ध के लिए सेना लेकर चले। उनके साथ सभी सरदार और उनके पुत्र भी थे।

यह ख़बर पाकर मलखे और सुलखे दोनों भाई युद्धभूमि में आ डटे। रणगर्जना के बाद दोनों ओर से तोपों का युद्ध होने लगा। फिर दोनों ओर के वीर तलवारें लेकर एक दूसरे पर टूट पड़े। राजकुमार चन्दन सुलखे से युद्ध करने लगे। पहले चन्दन ने सुलखे के ऊपर अपने वार किये, परन्तु सभी वार ख़ाली ही गये। फिर सुलखे ने हिरौंजिन के एड़ लगाई। उसने अपने दोनों सुम चन्दन के घोड़े के मस्तक पर अड़ा दिये। इसी समय सुलखे ने चन्दन का सिर भुट्टा सा उड़ा दिया। यह ख़बर सुनकर ताहर दाँत पीसता हुआ आगे बढ़ा। शीघ्र ही ताहर और सुलखे में भयावना युद्ध होने लगा। देर तक युद्ध करके क्रुद्ध ताहर ने तलवार चलाई। वह तलवार सुलखे की ढाल को फाड़ती हुई उनके हृदय में जा घुसी। हृदय-गति के बन्द हो जाने से सुलखे वीरगति को प्राप्त हुए। भाई की मृत्यु की सूचना पाकर मलखे मत्त गजेन्द्र की भाँति बिचल पड़े। देखते ही देखते उन्होंने हज़ारों शत्रुओं को तलवार के घाट उतार दिया। कहते हैं कि मलखे की घोड़ी जिधर मुड़ जाती थी, उधर साफ़ मैदान दिखाई पड़ता था। इसके विषय में जगनिक ने कहा है—

एक को मारें तो दुइ मर जायँ तिसरो खौफ खाय मर जाय।
जैसे भिड़हा भेड़िन पैठे, जैसे गैयन छूटे बाघ॥
पान तमोली जैसे कतरे, जैसे खेती लुने किसान।
तैसे मलखे रण में पैठे, सैनिक त्राहि-त्राहि चिल्लायँ॥

कहते हैं कि मलखे ने अनेक सामन्तों और राजाओं को मारकर पृथ्वीराज की ओर घोड़ी बढ़ाई। यह देखकर चौहानराज का आदि-भयङ्कर निकल भागा। साथ ही बची हुई सेना भी निकल भागी। मलखे विजय का डङ्का

बजाते हुए सिरसा को लौटे। पृथ्वीराज दिल्ली को चले गये। उसी दिन सन्ध्या को सुलखे के मृतक शरीर के साथ उसकी रानी सती हो गई। सिरसा में हाहाकार मच गया।

पृथ्वीराज के दिल्ली पहुँचने पर पारथ और चन्दन की स्त्रियाँ भी सती हो गईं।

युद्ध के बहुत दिनों बाद एक दिन माहिल सिरसा में आया। महलों में जाकर वह अपनी बहन तिलका (ब्रह्मा) से बोला—"आज मैं तुम्हें युद्ध की जीत के उपलक्ष्य में बधाई देने आया हूँ। परन्तु जब मुझे बेटा सुलखे की याद आ जाती है, तब शोक से छाती फटने लगती है। कैसा होनहार और सुन्दर वीर था!" यह कहकर माहिल ने आँखों में आँसू भर लिये। तिलका ने अपने भाई को जलपान कराकर उरई का कुशल-क्षेम पूछा। माहिल ने कहा—"तुम्हारे चरणों की दया से वहाँ सभी कुशल है; परन्तु सुलखे की मृत्यु से तुम्हारी भाभी बहुत दुखी हैं। उन्होंने हमसे कहा है कि तिलका से कहना कि 'तुम अब मलखे को युद्ध से बचाये रहना।' दिल्लीपति आख़िर अपने ही रिश्तेदार हैं और मलखे के मौसा भी हैं। परमाल की भाँति उन्हें भी मलखे बड़ा और पूज्य समझें।" यह सुनकर भोली-भाली तिलका ने स्वाभिमान में आकर कहा—"जीजा (पृथ्वीराज) शान्ति से सब काम करते तो मैं मलखे को समझा देती; परन्तु जब उन्होंने ही युद्ध छेड़ दिया है तब तो मेरा पुत्र उनसे क्षत्रिय होने के नाते युद्ध करने में कभी पीछे पैर न हटावेगा। बाबा अमरनाथ की कृपा से मलखे के पैर में जब तक पद्म बना हुआ है, तब तक मलखे का कोई बाल बाँका नहीं कर सकता।" यह सुनकर माहिल मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला—"अच्छा, तो अब मैं जाता हूँ फिर कभी आऊँगा।"

अब माहिल बाहर आया और लिल्ली पर सवार होकर दिल्ली की ओर वेग के साथ चल पड़ा। दिल्ली पहुँचकर उसने पृथ्वीराज से कहा—"महाराज! यदि किसी भाँति मलखे के तलुए का पद्म फट जाय तो उसकी मृत्यु हो सकती है। यह बात मैंने ब्रह्मा (मलखे की माता) से बातों ही बातों में पूछ ली है। अब आप चलकर उससे अपने पुत्रों का बदला लें।"

यह सुनकर पृथ्वीराज ने फिर सिरसा की ओर कूच किया। धूरे पर आकर उन्होंने सौ ख़न्दक़ खुदवाये। उन ख़न्दक़ों के ठीक पीछे सौ ख़न्दक़ और खुदवाये गये। पीछेवाले ख़न्दक़ों में बल्लम, भाले, साँगें और बरछियाँ गाड़ दी गईं। ख़न्दक़ों को सरकण्डों से पाट दिया गया और उन पर हलकी सी मिट्टी डलवा दी गई।

जब ख़न्दक़ तैयार हो गये तब पृथ्वीराज ने मलखे से कहला भेजा कि या तो अपना गढ़ खुदवाकर फेंकवा दें, नहीं तो आकर युद्ध करें। यह सुनते ही मलखे ने डङ्का बजवा दिया और सेना लेकर वे धूरे की ओर रवाना हुए।

पृथ्वीराज ने पहले तो ख़न्दक़ों के इस पार आकर युद्ध किया, परन्तु जब मलखे के आगे उनकी एक भी न चली तब वे चतुराई से ख़न्दक़ों के उस पार चले गये। वहाँ से जाकर पृथ्वीराज ने मलखे से कहा—"अब तुम ताहर से युद्ध करो। वही तुम्हारे योग्य है।" ताहर की सेना और स्वयं ताहर ख़न्दक़ों के उस पार थे। अतः उनके पास जाने के लिए मलखे ने उन खुले हुए ख़न्दक़ों को पार करने को कबूतरी के एड़ लगाई। बेचारे को यह कब मालूम था कि दुष्ट और अन्यायी पृथ्वीराज ने इन खुले हुए ख़न्दक़ों के बाद भी ख़न्दक़ खुदवा दिये हैं और उन्हें सरकण्डों से पटवा दिया है। इससे खुले हुए ख़न्दक़ों के उस पार ठोस पृथ्वी जानकर मलखे जैसे ही फाँदकर वहाँ गिरे, वैसे ही वह सरकण्डों से पटी हुई छत फट गई। कबूतरी भड़भड़ाकर उस ख़न्दक़ में समा गई। कबूतरी का सारा शरीर बल्लमों और बर्छियों आदि से छिदकर चलनी हो गया। मलखे के भी दोनों पैर उन्हीं भालों आदि से फट गये। सामने अपने काल को खड़ा देखकर मलखे ने उस दशा में भी कबूतरी के एड़ लगाई। वह स्वामिभक्त घोड़ी एड़ को समझकर झपट पड़ी और ऊपर आ गिरी।

मलखे और कबूतरी का यह अन्तिम प्रयास था। उन दोनों ने उन आततायियों के प्रति घृणा दिखाकर इस कपटमय संसार से सदा के लिए आँखें फेर लीं। कपटी पृथ्वीराज ने विजय का डङ्का बजवा दिया।

पति की मृत्यु का दुःसंवाद पाकर गजमोतिन अपनी सास ब्रह्मा के साथ डोले पर सवार हो युद्धभूमि में आई। वहाँ आकर उसने पृथ्वीराज से मलखे की लाश माँगी। पृथ्वीराज ने जब लाश देने से इनकार किया, तब गजमोतिन ने चण्डी का रूप धारण करके कहा—"पृथ्वीराज, इस कपट-व्यवहार का फल तुम्हें ईश्वर देगा; परन्तु यदि तुम मेरे पति की लाश मुझे न दोगे तो याद रक्खो, मैं तुम्हें दिल्ली तक जीता न छोड़ूँगी।" अब वह वीर नारी जैसे ही पृथ्वीराज की ओर लपकी, वैसे ही उसने हाथ जोड़कर 'सती! क्षमा करो' कहकर मलखे की लाश मँगवाकर उसके हवाले की। चलते समय गजमोतिन ने पृथ्वीराज को यह शाप दिया—"तेरे कपट करने का नतीजा यह होगा कि इसी वर्ष के भीतर महोवे* और दिल्ली में सभी सौभाग्यवती रानियाँ विधवा हो जायँगी। चौहान राजवंश में कोई पानीदेवा † तक न रह जायगा।" यह सुनकर पृथ्वीराज काँप उठा। उसने तुरन्त दिल्ली की ओर कूच किया।

इधर रानी ब्रह्मा ने शोकाकुल होकर प्राण छोड़ दिये। गजमा ने अपनी सास की अन्त्येष्टि क्रिया करवा दी। फिर वह मलखे के शव के साथ चन्दन की चिता पर चढ़कर आल्हा-ऊदल का नाम लेती हुई सती हो गई।

पाखण्डी चुग़लखोर माहिल इतने पर भी सन्तुष्ट न हुआ। उसने महोवे के सर्वनाश के साथ ही साथ अपना भी सर्वनाश कर डाला। इसे पाठक आगे पढ़ेंगे।

---

* महोवे को इस लिए शाप दिया कि परमाल ने मलखे की सहायता नहीं की थी, और परमाल ही ने आल्हा-ऊदल को निकाला था। यदि आल्हा-ऊदल होते तो यह दिन उसे देखने को न मिलता।

† पानीदेवा = तर्पण करनेवाला।

कीरतसागर पर भुँजरियों का युद्ध

मलखे की मृत्यु से महोवे की प्रतिष्ठा नष्ट हो गई। सिरसागढ़ में गीदड़ रहने लगे। धनी नागरिक सिरसा छोड़कर दूसरी जगह जा बसे। सिरसा की यह दशा देखकर माहिल बहुत प्रसन्न हुआ। अब उसकी आँखों में परमाल का रहा-सहा वैभव खटकता था। इससे वह फिर दिल्ली को चला। अब की बार उसने पृथ्वीराज को महोबा लूटने के लिए भड़काया। पृथ्वीराज सेना लेकर तुरन्त ही तैयार हो गये। अन्यायी पृथ्वीराज ने यह भी न सोचा कि हमें इस समय युद्ध करना चाहिए अथवा नहीं; क्योंकि उस समय वर्षा ऋतु थी। पृथ्वीराज ने बिना सोच-विचार किये महोवे को जाकर घेर लिया।

श्रावण का महीना था। घर-घर हिंडोले पड़े थे। सभी के घर सफ़ेद और हरे रङ्ग की भुँजरियाँ (= दोने में बोये हुए जौ या गेहूँ के पौदे, 'जरई') लहलहा रही थीं। ऐसे ही समय जब यह सुना कि महोवे का गढ़ चारों ओर से घिर गया है तब तो सभी की ख़ुशी हवा हो गई। रानी मल्हना घबरा गई। वह सोचने लगी कि यदि पृथ्वीराज गढ़ को घेरे रहेंगे, तो श्रावणी के दिन नगर की और महलों की भुँजरियाँ न सिर पावेंगी, इससे नगर का व्यवहार सदा के लिए खोटा हो जायगा। इन सोच-विचारों में उसे रह-रहकर आल्हा, ऊदल और मलखे-सुलखे की याद आने लगी। अन्त में रक्षा का कोई उपाय न देखकर मल्हना देवी के मन्दिर में गई। वहाँ जाकर उसने अनेक प्रकार से देवी की पूजा की और 'रक्षा करो, रक्षा करो' कहती हुई वह देवी के चरणों में गिर पड़ी।

सच्चे हृदय की प्रार्थना निष्फल नहीं जाती। देवी ने उसी रात्रि में रिज-गिरि में जाकर ऊदल को महोवे का सारा हाल कह सुनाया और यह भी कहा कि "प्रातःकाल होते ही महोवे जाकर परमाल की इज़्ज़त बचाओ, नहीं तो तुम्हारा कल्याण नहीं।" सवेरा होते ही ऊदल ने स्वप्न का सब हाल ढेवा से कहा। ढेवा ने विचार कर कहा—"हाँ! बात तो बिलकुल सच है।"

अब ऊदल ने ढेवा से महोबे चलने को कहा तो वह तुरन्त तैयार हो गया। ढेवा के साथ ऊदल लाखन के पास गये और बोले—"युवराज, महोबे में सलूनो (श्रावणी) का त्यौहार सब जगह से अच्छा होता है। जी चाहे तो चलो।" लाखन ने कहा—"यह बात सुनी तो मैंने भी है और देखने की बड़ी इच्छा भी है; परन्तु पिताजी न जाने देंगे।" ढेवा ने तुरन्त कहा—"तो इसमें क्या है! उनसे कह देंगे कि हम लोग गाँजर में शिकार खेलने जाते हैं।" इस पर लाखन भी तैयार हो गये। जयचन्द और आल्हा ने शिकार के लिए ख़ुशी से आज्ञा दे दी।

अब लाखन के साथ ऊदल, ढेवा, सैयद, गाँजर के चार राजा, पत्थींज, सिरौंज और दतिया के राजा अपने-अपने लश्कर लेकर चले। बेतवा के पार जाकर ढेवा की सलाह से सारी सेना के वस्त्र गेरुआ रङ्ग में रँगे गये और झण्डे भी गेरुआ रङ्ग के कर दिये गये। ऊदल, ढेवा, लाखन और सैयद जोगी बनकर तैयार हो गये। फिर अपनी सेना को वहीं छोड़कर वे चारों जोगी महोबे का हाल जानने को चले। गाते-बजाते हुए वे गढ़* के चारों ओर फिरे परन्तु उन्हें सभी द्वार बन्द मिले और इधर-उधर पृथ्वीराज के सैनिक टहलते हुए मिले। यह देखकर अपने नाच-गान से एक दरबारी को प्रसन्न करके वे अन्दर गये। नगर में घुसकर वे फिर नाचते और गाते घूमने लगे। मल्हना को यह ख़बर मिली तो उसने जोगियों को बुला भेजा। ऊदल, सबके साथ जाकर, महलों में नाचने और गाने लगे। यह देखकर समस्त रनिवास प्रसन्न हो उठा। इसी समय राजकुमारी चन्द्रावलि ने मल्हना से कहा—"अम्मा, छोटे जोगी की सूरत तो लहुरे† भाई से मिलती है।" मल्हना ने आँखों में आँसू भरकर कहा—"बेटा! जो आज लहुरवा (ऊदल) यहाँ होता तो पृथ्वीराज को महोबे को घेरकर

* महोबा जाने के पहले ये चारों सिरसा भी गये थे; क्योंकि इन्हें मलखे के जूझने का हाल नहीं ज्ञात था। जब ऊदल और ढेवा ने सिरसागढ़ के चौपट होने और धोखे से मलखे के मरने की बातें वहाँ सुनीं तब ये दोनों ख़ूब रोये।

† ऊदल को सब लोग लहुरे भाई भी कहते थे। लहुरे का अर्थ 'छोटा' है।

हमारा त्यौहार रोकने का साहस न होता। कल सलूनो है। यदि कल भुँजरियाँ कीरतसागर में न सिराई गईं तो त्योहार हमेशा के लिए खोटा हो जायगा।"

यह सुनकर ऊदल ने कहा—"हम तुम्हारा त्यौहार खोटा न होने देंगे। हम पृथ्वीराज को मार भगावेंगे।" चन्द्रावलि ने कहा—"यदि आप सौगन्द खाकर प्रण करें तो हम सब अपनी भुँजरियाँ लेकर कल गढ़ से निकलें, नहीं तो नहीं।" ऊदल ने तुरन्त सौगन्द खाकर प्रतिज्ञा की; फिर भिक्षा लेकर वे लौट आये। कहते हैं कि इस समय दुष्ट माहिल वहाँ भेद लेने आया हुआ था। वह जेगियों की बातें सुनकर दङ्ग रह गया। जेगियों के चले जाने पर उसने मल्हना से कहा—"बहन! नाहक़ रार बढ़ाकर त्यौहार खोटा न करो। पृथ्वीराज को दण्ड-स्वरूप उनकी माँगी हुई चीज़ें दे दो तो दोनों ओर का धर्म रह जाय।" मल्हना ने कातर होकर कहा—"भैया! वे क्या चाहते हैं?" माहिल ने उत्तर दिया—"नौलखा हार, ग्वालियर और खजुहागढ़ का इलाक़ा, पारस पत्थर, पाँच उड़नबछेड़े (घेड़े) और चन्द्रावलि का डोला।" मल्हना ने जोश में आकर कहा—"एक क्या, यदि ऐसे सत्तर पृथ्वीराज आक्रमण कर दें तो भी मैं चन्द्रावलि का डोला नहीं दे सकती।"

माहिल ने जाकर पृथ्वीराज से सब हाल कहा और यह भी कहा कि जोगियों को पहले ही मारकर भगा दो, नहीं तो कल्याण नहीं। यह सुनकर पृथ्वीराज ने जेगियों को भगा देने के लिए चौंड़ा और धाँधू को भेजा। चौंड़ा ने जाकर ऊदल से कहा—"ऐ जोगी! तुम लोग आज शाम तक यहाँ से खिसक जाओ, नहीं तो मार-मारकर उत्तू बना दिये जाओगे।" ऊदल ने कहा—"ब्राह्मण! चुपचाप चले जाओ, नहीं तो ऐसी मार लगाऊँगा कि छठी की याद आ जायगी। तू क्या, तेरा मालिक भी मुझसे नहीं भिड़ सकता। देख, यहाँ से आठ कोस तक मेरा फ़ौजी पड़ाव है। हम लोग यहाँ रहकर महोबे का सलूनो त्यौहार देखेंगे। यदि त्यौहार न होगा तो लौटकर चले जायँगे। हाँ, यदि तू हमें छेड़ेगा तो अच्छा न होगा। इसलिए तू यहाँ से चुपचाप चला जा।"

फ़ौजी पड़ाव देखकर चौंड़ा सहम गया। वह तुरन्त लौटकर पृथ्वीराज से बोला—"महाराज! उन जोगियों को पड़े रहने दीजिए। यदि उन्हें छेड़िएगा तो दिल्ली तक प्राण न बचेंगे। आठ कोस तक उनके गेरुए झण्डे फहरा रहे हैं।"

सलूनो के दिन माहिल फिर महलों में हाल-चाल जानने को गया। मल्हना आदि सभी रानियाँ उन जोगियों की बाट देख रही थीं। जब जोगी न पहुँचे तब मल्हना ने चन्द्रावलि से कहा—"बेटी! वहाँ जाकर पूर्वपुरुषों के नाम पर कलङ्क लगवाना अच्छा नहीं। इससे तू कीरतसागर पर न जाकर राज-कूप में ही अपनी भुँजरियाँ सिरा ले।" यह सुनकर राजकुमारी ने कहा—"अम्माँ! यदि महोवे में वीर न होते या हमारे भाई वीर न होते, तो हम ऐसा करतीं; परन्तु जब हमारे ब्रह्मा, रणजीत और अभई* सरीखे भाई यहाँ मौजूद हैं तब हम अपनी भुँजरियाँ कुएँ में नहीं सिरा सकतीं।" यह सुनकर ब्रह्मा ने कीरतसागर पर जाने की सलाह न दी और कहा—"हम वहाँ जाकर अपने प्राण न देंगे।" यह सुनकर अभई को जोश आ गया। उसने कहा—"बहन, चलो! तुम्हारा त्यौहार हम पूरा करावेंगे। देखें, पृथ्वीराज में कितना बल है।" तब ब्रह्मा के छोटे भाई रणजीत भी तैयार हो गये। यह देख माहिल ने अभई से कहा—"बेटा, तुम वहाँ जाकर अपने प्राण क्यों गँवाना चाहते हो?" अभई ने कहा—"हमारे लिए पृथ्वीराज और परमाल दोनों समान हैं; परन्तु जब पृथ्वीराज अन्याय करते हैं तब हमें क्षत्रिय होने के नाते परमाल का पक्ष लेना पड़ेगा।" यह सुनकर माहिल क्रुद्ध होकर वहाँ से चला गया।

इधर गढ़ में डङ्का बजते ही सेना तैयार हो गई। सेना के तैयार हो जाने पर मल्हना ने सब रानियों और महलों की स्त्रियों को एक-एक छुरी, बारूद का घड़ा और चकमक पत्थर तथा विष की पुड़िया देकर डोलों में बिठाया। सभी स्त्रियाँ अपनी-अपनी भुँजरियाँ लेकर डोलों में बैठ गईं। मल्हना और चन्द्रावलि

---

* माहिल के साथ अभई भी वहाँ पर मौजूद थे। वे माहिल के इकलौते पुत्र थे। रणजीत परमाल के दूसरे पुत्र थे।

भी डोलों में बैठीं। मल्हना और अन्य बारह पटरानियों के डोले आगे थे और बीच में चन्द्रावलि का डोला था। इस प्रकार सब मिलाकर चौदह सौ डोले सेना की संरक्षकता में क़िले से बाहर निकले। अभई और रणजीत अपने-अपने घोड़ों सवार होकर आगे-आगे चलने लगे।

डोलों को आते देख पृथ्वीराज ने चौंड़ा को उन्हें लूटने और चन्द्रावलि के डोले को छीनने के लिए आगे भेजा। कहते हैं कि चौंड़ा ने डोलों को लूटने और चन्द्रावलि के डोले को छीनने के लिए बहुत यत्न किये परन्तु उसकी एक न चली। महोबेवालों ने उसकी सेना को मारकर भगा दिया। अभयसिंह के आगे से चौंड़ा भाग गया।

यह देखकर पृथ्वीराज ने अपने पुत्र सूरजसिंह को भेजा। उसने जाकर तुरन्त रणजीत पर आक्रमण कर दिया। कहते हैं कि सूरज ने कई बार रणजीत पर हमला किया, मगर उसका बाल भी बाँका न हुआ। अन्त में क्रुद्ध होकर जब रणजीत ने वार किया, तब सूरजमल का सिर भुट्टा सा अलग जा गिरा। यह देखकर टंकराज आगे बढ़े। थोड़ी देर तक अपनी वीरता दिखाकर वे भी खेत रहे।

यह ख़बर पाकर पृथ्वीराज ने अपने बचे हुए तीनों पुत्रों—सरदन, मरदन और ताहर—को मोर्चे पर भेजा। तुरन्त तलवारें चलने लगीं। दोनों ओर के वीर आपस में गुथ गये। ताहर और रणजीत में घोर युद्ध होने लगा। अपने भाइयों की मृत्यु से ताहर के हृदय में बदला लेने की आग भड़क रही थी। उसने फुर्ती से पैंतरा बदलकर रणजीत को भुलावा दिया और उसका सिर काट लिया। रणजीत के मरने पर अभई आगे बढ़े। कहते हैं कि ताहर ने थोड़ी देर के युद्ध के बाद ही अभई को भी मार गिराया।

जब दोनों वीर खेत रहे तब महोबे की फ़ौज में हलचल मच गई; परन्तु वीर सैनिक डटकर युद्ध करते रहे। मल्हना ने एक हरकारे को बुलाकर ब्रह्मा के पास इसकी सूचना भेजी। कहते हैं कि जब तक ब्रह्मा अपनी सेना लेकर

नहीं आ गये, तब तक अभई और रणजीत के रुण्डों ने तलवार चलाकर असंख्य शत्रुओं का नाश किया।

ब्रह्मा ने समरभूमि में आकर उन दोनों रुण्डों* और मुण्डों को महोवे में पहुँचा दिया। इसी समय ताहर ने आकर रण-गर्जना की। ताहर को देखकर ब्रह्मा भूखे सिंह की भाँति उस पर टूट पड़े। ब्रह्मा को देखकर महोबिया वीर भी विकट रूप धारण कर शत्रु को मारने लगे। ब्रह्मा के युद्ध को देखकर ताहर के छक्के छूट गये। इसी समय चौंड़ा ने आगे बढ़कर ब्रह्मा के वेग को रोकना चाहा। ब्रह्मा ने चौंड़ा को अपने मार्ग का कंटक जानकर पहले तो मार डालना चाहा; परन्तु ब्रह्म-हत्या के पाप से डरकर उन्होंने मोहनबाण छोड़कर उसको अचेत कर दिया। उसको हौदे में अचेत गिरा हुआ देखकर ताहर घबरा गया। अब उसने तुरन्त अपने पिता को युद्धक्षेत्र में बुला भेजा।

ख़बर पाकर पृथ्वीराज अपना सारा लश्कर लेकर मैदान में आये। उनको देखकर ब्रह्मा का उत्साह और भी बढ़ गया और वे दूने उत्साह से शत्रु-सेना को गाजर-मूली की तरह काटने लगे। इसी समय धाँधू ने आकर ब्रह्मा का सामना किया; परन्तु ब्रह्मा ने इन्हें बनाफर समझकर मोहनबाण से मूर्च्छित करके छोड़ दिया। अब सरदन ने मोर्चा लिया तो वह ब्रह्मा के क्रोध का शिकार होकर मारा गया। फिर मरदन को भी ब्रह्मा ने तलवार के घाट उतारा।

यह देखकर ताहर आगे बढ़ा, परन्तु कुछ देर तक युद्ध करने के बाद वह भाग निकला। तब पृथ्वीराज ने धीरसिंह को आगे बढ़ाया। कहते हैं कि धीरसिंह और ब्रह्मा का आपस में बड़ी देर तक भयंकर युद्ध होता रहा। अन्त में धीरसिंह ब्रह्मा का लोहा मानकर पीछे हट गया।

जब कोई चारा न रहा, तब पृथ्वीराज अपने दामाद से युद्ध करने को आगे बढ़े। पृथ्वीराज ने ब्रह्मा को घेर लिया और ताहर तथा चौंड़ा से कहा— "तुम जाकर मल्हना और चन्द्रावलि के डोलों पर धावा बोलो।" यह सुनकर

---

* रुण्ड सिर कटे हुए धड़ को कहते हैं और मुण्ड धड़ से अलग हुए सिर को कहते हैं।

ताहर चन्द्रावलि के डोले को छीनकर पञ्चपेड़ों में ले गया; परन्तु महोबियों ने उनका वहाँ तक पीछा न छोड़ा। पञ्चपेड़ों में भयङ्कर युद्ध होने लगा। इधर चौंड़ा मल्हना से सब ज़ेवर उतारकर देने के लिए हठ करने लगा। उसने मल्हना से कहा—"रानी, आप अपनी इज़्ज़त बचाना चाहें तो चुपचाप अपना ज़ेवर और नौलखा हार उतारकर दे दें।" बेचारी मल्हना डोले के भीतर रो-रोकर आल्हा-ऊदल के गुणों का स्मरण करने लगी।

कहते हैं कि जिस समय ताहर चन्द्रावलि के डोले को रानियों के डोले से निकालकर पञ्चपेड़ों की ओर ले चला था, उसी समय बाजों की आवाज़ सुनकर लाखन ने ऊदल को युद्ध के लिए तैयार होने को कहा था। अब ऊदल और लाखन जोगियों के वेष में अपनी सब सेना लेकर युद्धक्षेत्र की ओर चल पड़े। भयंकर युद्ध होते देखकर लाखन ने पृथ्वीराज की सेना पर आक्रमण कर दिया। उधर ऊदल धाँधू का मुहरा मारते हुए चौंड़ा के पास पहुँचे, जहाँ वह मल्हना को घेरे खड़ा था। उन जोगियों को देखकर चौंड़ा के छक्के छूट गये। चौंड़ा को डोलों के पास देखकर ऊदल के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने तुरन्त उस पर आक्रमण कर दिया। ऊदल के आक्रमण को वह न रोक सका। उसकी फ़ौज भाग खड़ी हुई। चौंड़ा भी सामने से भाग गया। जोगियों को देखकर मल्हना ने कहा—"महाराज, चन्द्रावलि के डोले को ताहर पञ्चपेड़ों पर घेरे हुए है और ब्रह्मा को पृथ्वीराज ने घेर लिया है। इस समय आप हमारी रक्षा कीजिए।" यह सुनकर ऊदल ने देवा को वहीं छोड़कर लाखन के साथ पञ्चपेड़ों की ओर कूच किया। ऊदल और लाखन ने वहाँ जाकर ताहर को मार भगाया और डोला छीनकर लौट आये। फिर वे लोग पृथ्वीराज के दल पर जा टूटे। उन लोगों के साथ उनके सभी दलों ने चौहानों पर आक्रमण किया। लाखन की भुरुही नाम की हथिनी ने बड़े वेग से आगे बढ़कर पृथ्वीराज के आदि-भयङ्कर नामक हाथी को ऐसा धक्का दिया कि वह बीस क़दम पीछे हट गया। यह देखकर पृथ्वीराज दङ्ग रह गये और कुछ सोच-विचार कर सेना समेत सागर के दक्षिण तट पर जा पहुँचे।

पृथ्वीराज के हट जाने पर वे सब डोले सागर पर पहुँचे। तुरन्त चन्द्रावलि और रानियों आदि ने उतरकर अपनी-अपनी भुँजरियों के दोने* सिराये। कहते हैं कि जिस समय चन्द्रावलि ने दोना सिराया उसी समय, पृथ्वीराज के कहने से चौंड़ा उस दोने को उठाने के लिए आया। इसी समय लाखन का संकेत पाकर ऊदल आगे बढ़े। उन्होंने चौंड़ा पर तुरन्त तेगे का वार किया। इससे चौंड़ा हट गया और ऊदल ने वह दोना उठाकर चन्द्रावलि को दे दिया।

इस सिराये हुए दोने को प्रायः भाई ही उठाते हैं और बहन भुँजरियों को उखाड़कर भाई की पगड़ी में मङ्गलकामना से खोंस देती है। इसके उपलक्ष्य में भाई बहन को यथाशक्ति द्रव्य देता है। इसी रीति के अनुसार चन्द्रावलि हर साल ऊदल प्रभृति भाइयों से बहुत सा धन और गहने आदि पा जाती थी। इस समय उस दोने के पाकर चन्द्रावलि ने मल्हना से कहा—"अम्माँ! हर साल तो मैं इन भुँजरियों को ऊदल की पगड़ी में खोंसकर मनचाही भेंट पाती थी; परन्तु अब क्या करूँ?" मल्हना ने कहा—"बेटी! यही जोगी तेरे धर्म के भाई हैं। इन्हीं के खोंस दे।" तब भुँजरियाँ खोंसने के लिए चन्द्रावलि आगे बढ़ी। इसी समय ऊदल ने लाखन की ओर संकेत करके कहा—"पहले बड़े जोगी के खोंसो।" लाखन ने इसके उपलक्ष्य में चन्द्रावलि को चालीस हथिनियाँ और असंख्य धन दिया। प्रसन्न होकर चन्द्रावलि ने जब ऊदल के भुँजरियाँ खोंसीं तब उन्होंने अपना जूझ का कंकण उतारकर दे दिया। उस कंकण को देखकर चन्द्रावलि और मल्हना ऊदल को पहचान गईं। ऊदल मल्हना के पैरों पर गिर पड़े।

इसी समय पृथ्वीराज ने सागर में उतराते हुए अगणित दोनों को देखकर अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि कम से कम एक दोना तो उठा लाओ।

कहते हैं कि दोना उठाने के लिए धाँधू आया था, इसलिए ऊदल ने तुरन्त लाखन के साथ उस पर आक्रमण कर दिया। ऊदल के आक्रमण को

* ये दोने सलूनो के दूसरे दिन भादों बदी परवा को सिराये गये थे।

धाँधू न रोक सका और भाग गया। ऊदल ने सागर में से सभी दोने उठवा लिये।

पृथ्वीराज ने जब किसी प्रकार अपनी विजय होती न देखी और जब यह भी सुना कि ऊदल और लाखन आ गये हैं, तब वे लौट गये।

इस युद्ध में पृथ्वीराज के तीन पुत्र, चार सामन्त, दस हज़ार सवार और डेढ़ लाख पैदल खेत रहे। महोबे के तीस हज़ार सैनिकों और अभई तथा राजकुमार रणजीत को वीर-गति प्राप्त हुई। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि अभई के मर जाने से माहिल के वंश का दीपक ही बुझ गया।

ऊदल के आने की ख़बर पाकर परमाल वहाँ आये। उन्होंने ऊदल और लाखन की बहुत सराहना की। फिर परमाल और मल्हना आदि ने ऊदल से वहीं रहने का बहुत हठ किया; परन्तु ऊदल राज़ी न हुए। उन्होंने कहा कि आपने हमें भादों में बिना अपराध निकाला तथा हमारे भाई मलखे के मरने के समय न तो आपने उनकी कुछ मदद ही की और न हमीं को इसकी सूचना दी। इससे हम आपके यहाँ नहीं रह सकते। इसके अलावा हम लोग यहाँ चोरी से आये हैं, किसी से कहकर नहीं आये। इसलिए हमें इस समय जाने दीजिए। फिर जब कभी कोई आपत्ति हो तब हमें बुलाइएगा।

यह सुनकर परमाल चुप रह गये। ऊदल और लाखन सबको यथायोग्य जुहार करके कन्नौज को लौट गये।

———

आल्हा-मनौआ

पुत्र अभयसिंह के जूझ जाने से माहिल का क्रोध और भी बढ़ गया। उसने परमाल का सत्यानाश करा देने की मन में ठान ली। इससे ऊदल के कनौज को लौट जाने के कुछ समय बाद उसने दिल्ली जाकर महाराज पृथ्वीराज को महोबा लूटने के लिए फिर उकसाया। फिर क्या था, अपने सामन्तों और सरदारों को लेकर पृथ्वीराज सात लाख सेना के साथ महोवे को चले।

उस समय बेतवा नदी महोवे के राज्य के भीतर होकर बहती थी। इस नदी पर उतारे के बयालीस घाट थे, जिनसे होकर मुसाफ़िर और तिजारती सामान आते-जाते थे। इन घाटों से राज्य को ख़ासी आमदनी थी। इससे पृथ्वीराज ने चौंड़ा और धाँधू को भेजकर इन सब घाटों पर अपना अधिकार जमा लिया। उन्होंने स्वयं जाकर महोवे को चारों ओर से घेर लिया। कहते हैं कि घाटों के रुकवाने का मुख्य कारण यह था कि आल्हा-ऊदल सैन्य समेत महोवे न आ सकें।

पृथ्वीराज ने जब महोवे के गढ़ को घेर लिया, तब माहिल मल्हना के पास गया। भाई को देखकर मल्हना अपनी आपत्ति का स्मरण करके रोने लगी। माहिल ने कहा—"जीजी! क्यों रोती हो? पृथ्वीराज अपने जीजा हैं। यदि तुम उनके पास दण्ड का सामान भेज दोगी तो मैं उन्हें समझा-बुझाकर लौटा दूँगा।" मल्हना ने रोते-रोते पूछा—"भैया! वे दण्ड में क्या चाहते हैं?" माहिल ने कहा—"ग्वालियर और खजुहा गढ़ के इलाक़े, बेतवा के सभी घाट, नौलखा हार, सभी उड़नबछेड़े, पारस पत्थर और चन्द्रावलि का डोला।" इस समय तक परमाल भी वहाँ आ गये थे। उन्होंने कहा—"अच्छा! तो आप हमें पन्द्रह दिन की मुहलत दिलवा दें। सोलहवें दिन हम सभी चीज़ों को उनके हवाले कर देंगे।" यह सुनकर माहिल लौट गया।

इसी दिन आधी रात को मल्हना चुपचाप एक साधारण पालकी में बैठकर जगनेरी को गई। इस समय जगनेरी में माहिल का भाई जगनिक नहीं था।

उसकी मृत्यु हो चुकी थी। इससे परमाल ने अपने धेवते (चन्द्रावलि के पुत्र) जगनायक सिंह* (जगनिक) को वहाँ का सरदार बना दिया था। जगनिक ने नानी को देखकर उनके चरण छुए और आने का कारण पूछा। मल्हना के कहने से जगनिक उसी समय कुछ शरीररक्षकों को साथ ले राजमहलों में आये।

महलों में आकर मल्हना ने उन्हें सब हाल समझा दिया और कहा—"ऐसे समय तुम कन्नौज जाकर वहाँ से आल्हा-ऊदल को मना लाओ।" इस पर जगनिक ने बहुत तर्क-वितर्क किये पर मल्हना ने एक भी न सुनी और कहा कि "जैसे भी हो, उनको यहाँ लिवा लाओ।" यह सुनकर जगनिक ने कहा—"हम हरनागर घोड़े पर चढ़कर कन्नौज जा सकते हैं।" मल्हना ने तुरन्त ब्रह्मा को बुलाकर घोड़ा मँगवा देने की आज्ञा दी। कहते हैं कि पहले तो माहिल† के बहकावे में आकर ब्रह्मा ने घोड़ा देने से इनकार कर दिया; परन्तु बाद में सोच-समझकर घोड़ा दे दिया। जब माहिल ने जगनिक को कन्नौज जाते देखा तब तुरन्त ही चन्दन बगिया में आकर पृथ्वीराज को सब हाल बतला दिया। पृथ्वीराज ने झटपट चौंड़ा और धाँधू के पास आज्ञा भेज दी कि हरनागर को छीन लो।

मल्हना ने एक पत्र लिखाकर जगनिक को देते हुए कहा—"लहुरवा से कहना कि मैंने इसी दिन के लिए तुझे अपने स्तनों का दूध पिलाया था और ब्रह्मा की ही भाँति लालन-पालन करके इस योग्य किया था। यदि तू इस समय भी न आया तो जब तेरी अम्माँ (मल्हना) पृथ्वीराज के रनिवास में ले जाई जायगी, तब संसार में अपना मुँह दिखाने योग्य न रह जायगा।"

---

* जब से चन्द्रावलि की चौथी आई थी तब से उसके पति ने माहिल के बहकावे में आकर, बनाफरों का संपर्क घृणित कार्य समझकर, चन्द्रावलि को छोड़ सा दिया था। यह देखकर परमाल ने जगनिक को बड़े होने पर जगनेरी का इलाक़ा दे दिया था।

† यह सबेरा होते ही फिर महलों में आ गया था।

अब जगनिक वहाँ से चल पड़ा। घाट पर पहुँचने पर चौंड़ा ने रोका; परन्तु वह हरनागर के वेग को न रोक सका और भौंचक्का सा खड़ा रहा। थोड़ी ही दूर आगे चलने पर धाँधू मिला तो जगनिक झपटकर, उसका सिरपेच उतार-कर, हवा हो गया। धाँधू अपने सिर पर हाथ फेरता रह गया।

अब जगनिक ने कुड़हिर के बग़ीचे में पहुँचकर विश्राम करने का विचार किया। वह हरनागर को बरगद के तने में बाँधकर और ज़ीन बिछाकर लेट गया। थोड़ी देर में ठण्डी हवा के झोंकों ने थपथपाकर जगनिक को सुला दिया। हरनागर को देखकर माली चकित रह गया। उसने वहाँ के सरदार—ठाकुर गङ्गाधर पँवार—से जाकर उस घोड़े की प्रशंसा की और कहा—"महाराज! यदि यह घोड़ा अपने यहाँ आ जायगा तो आप सचमुच बड़े भाग्यशाली होंगे।" यह सुनते ही गङ्गाधर बग़ीचे को चल पड़े। वहाँ पहुँचकर और घोड़े को खुलवाकर वे लौट गये।

आँख खुलने पर हरनागर को न देख जगनिक बड़े असमञ्जस में पड़े। वे तुरन्त घोड़े के खुरों के चिह्नों को पहचानते हुए चलते-चलते गढ़ी के द्वार पर आ खड़े हुए; फिर गढ़ी में घुसकर दरबार में पहुँचे। ठाकुर जगनिक को देखकर पहचान गया, परन्तु बात बनाकर बोला—"राजकुमार! आप कहाँ से आये हैं और क्या काम है?" जगनिक ने कहा—"महाराज! हम महोवे के धनी महा-राजाधिराज परमाल के धेवते; ब्रह्मा, आल्हा एवं ऊदल के भाञ्जे और बौरीगढ़ के वीरशाह के पौत्र हैं और कन्नौज को जा रहे हैं। कृपा करके आप हमारा घोड़ा, जो बग़ीचे से ले आये हैं, हमें लौटा दें।"

यह सुनते ही गङ्गाधर ने जगनिक को बन्दी करके खम्भे से बँधवा दिया। कहते हैं, आल्हा-ऊदल का नाम सुनकर गङ्गाधर की स्त्री ने पति को समझा-बुझाकर दूसरे दिन जगनिक को छुड़वा दिया और उसका घोड़ा भी उसे दिलवा दिया; परन्तु गङ्गाधर ने उनका बहुमूल्य चाबुक न दिया। चलते समय जगनिक ने कहा—"ठाकुर! सावधान रहना। लौटते समय चाबुक के बदले में कुड़हिर को लुटवा लूँगा।"

कन्नौज में पहुँचकर जगनिक ने हलवाइयों से आल्हा-ऊदल का ठिकाना पूछा; परन्तु उन्होंने उपहास करके जगनिक के प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर न दिया। यह देखकर जगनिक ने उनकी दूकानों को लूटना शुरू कर दिया। यह बात लाखन ने सुनी तो वे हथिनी पर चढ़कर जगनिक को मज़ा चखाने आये। जगनिक के पास आकर उन्होंने कहा—"ठाकुर! अच्छा हो कि तुम चुपचाप अपना घोड़ा हमें दे दो और हमारी अधीनता स्वीकार करो; नहीं तो तुम्हारी भलाई नहीं।" जगनिक ने उत्तर दिया—"जब तक हमारे मामा आल्हा और ऊदल जीवित हैं, तब तक तुम्हारी यह शेख़ी छोटे मुँह बड़ी बात है।" बनाफरों का नाम सुनते ही लाखन क्षमा माँगकर लौट गये।

जगनिक रिजगिरि के फाटक पर पहुँचे तो हरकारे ने जाकर उनके आने की सूचना आल्हा को दी। तुरन्त इन्दल ने आकर उनका स्वागत किया और उन्हें भीतर लिवा ले गये। आल्हा-ऊदल ने जगनिक को देखकर छाती से लगा लिया तब जगनिक ने अभिवादन करके उन्हें मल्हना का पत्र दे दिया।

इसी समय इन्दल ने आकर जगनिक से कहा—"चलो, रसोई तैयार है।" जगनिक ने कहा—"पहले कूच के लिए तैयारी कर लो तब भोजन करेंगे।" आल्हा ने तुरन्त सेना को तैयार होने की आज्ञा दी और फ़ौजदार तथा क़िलेदार को बुलवाकर कूच की तैयारी करने को कहा।

अब वे सब रसोईघर में गये। सुनवाँ ने थाल परोसे और देवै पंखा झलने लगी। इस समय आल्हा-ऊदल को साथ बैठा हुआ देखकर जगनिक को मलखे-सुलखे की याद आ गई और वे रोने लगे। आल्हा ने कहा—"बेटा! धैर्य रक्खो। हम चलकर महोबे का उद्धार करेंगे। जब तक हम न पहुँचेंगे तब तक हमारे भाई मलखे-सुलखे तो वहाँ हैं ही; वही पृथ्वीराज को मारकर भगा सकते हैं।" यह सुनकर जगनिक ज़ोर से रो-रोकर सिरसा का सब हाल कहने लगे।

यह सुनकर आल्हा बाहर आये। उन्होंने तुरन्त कूच की तैयारी रुकवा दी। वे एकान्त में जाकर चुपचाप बैठ गये। जगनिक ने तैयारी रुकी हुई देखकर आल्हा से इसका कारण पूछा तो आल्हा ने उत्तर दिया—"हम महोबे को नहीं जायँगे। महाराज परमाल बड़े कुचक्री हैं। उन्होंने भादों के महीने में हमें निकालकर इतना बुरा नहीं किया, जितना उन्होंने मलखे की मदद न करके किया है। यही नहीं, उन्होंने हमारे भाइयों के मरने तक की ख़बर हमको नहीं पहुँचाई। यह बात हमें जीवन भर तक नहीं भूल सकती।"

यह ख़बर पाकर देवै ने आल्हा-ऊदल को बहुतेरा समझाया; परन्तु वे दोनों यही कहते रहे—

जियत महोबे हम ना जैहैं, कागा मरे हाड़ लै जाय।

अन्त में क्रुद्ध होकर देवै ने ऊदल से कहा—"नृशंस! कृतघ्न! जो तेरे स्थान पर मेरे कन्या होती तो मैं उसके पति के पास जाकर इस समय उसको तथा उसकी सेना को लिवा लाती और उन मल्हना की सहायता करती जिन्होंने तेरे बाप को और तुझे अपने टुकड़ों से पालकर इस योग्य किया है। अब क्या करूँ? याद रक्खो, यदि तुम महोबे न जाओगे तो मैं और जगनिक दोनों तुम्हारे ऊपर प्राण दे देंगे और तुम्हारे सिर माता की तथा भानजे की हत्या का दोष चढ़ेगा।"

यह सुनते ही ऊदल काँप उठे और तुरन्त ही आल्हा के पास जाकर बोले—"दादा! अब विवाद न बढ़ाओ। झटपट महोबे के लिए तैयार हो जाओ।" परन्तु आल्हा इस पर भी राज़ी न हुए। उनको राज़ी न देखकर ऊदल क्रुद्ध होकर गरजते हुए बोले—"दादा! बस हो चुकी। आप अपना एक तिहाई हिस्सा लेकर अलग हो जाइए। इन्दल और मैं दोनों अपनी फ़ौज लेकर अभी महोबे को जाते हैं। देखें पृथ्वीराज कितने बड़े योद्धा हैं!" अब देवा ने आल्हा को ऊँच-नीच समझाकर राज़ी कर लिया। इसके बाद आल्हा पचशावद पर चढ़कर रूपना के साथ जयचन्द के दरबार में, जाने की आज्ञा लेने गये। जयचन्द ने आल्हा के लिए ऊँची चौकी डलवा दी। आल्हा प्रणाम करके उस पर बैठ गये

और बोले—"महाराज! पृथ्वीराज ने आकर महोबे को घेर लिया है, इससे मल्हना ने जगनिक को भेजकर हमें बुला भेजा है। अब आप आज्ञा दें तो हम वहाँ जायँ।" यह सुनकर जयचन्द ने कहा—"तुम्हें महोबे जाने में शर्म नहीं आती? गाँजर की लूट का माल खाकर और सुख से रिजगिरि में रहकर तुम पर मुटाई सवार हुई है। इससे गाँजर की लूट का कुल माल देकर तुम यहाँ से जा सकते हो। साथ ही अब तक का कुल कर और रिजगिरि का किराया भी चुकाना होगा।" अब जयचन्द ने आल्हा को कैद करवा लिया। यह देखकर रूपना रिजगिरि को लौट आया। उससे सब हाल सुनते ही ऊदल क्रोध से फड़कने लगे। वे तुरन्त ही जगनिक को साथ लेकर दरबार की ओर चले। इनके आने की खबर पाकर जयचन्द ने दो पागल हाथी राजद्वार पर छुड़वा दिये। ऊदल की आज्ञा से जगनिक ने उन दोनों हाथियों को बात की बात में मार गिराया। फिर दरबार में पहुँचकर ऊदल ने भी राजा से महोबे जाने की आज्ञा माँगी। तब जयचन्द ने जो-जो बातें उनसे कहीं, उनको कवि के शब्दों में सुनिए—

सुनतै जैचन्द बोलन लागे, ऊदल अब तुम गये मुटाय।
इक इक गिहुआँ के दुइ दुइ लीहौं, घी के लिहौं चौगुने दाम॥
पानी पीन्हो है रिजगिर को, ताके लिहौं दूध के दाम।
लेखो दे देउ तुम गाँजर को, सीधे चले महोबे जाउ॥

यह सुनते ही ऊदल गरजकर बोले—"आपको यह कहने में लज्जा नहीं आती? आप बारह बरस तक युद्ध करके जहाँ से एक पाई भी वसूल न कर पाये थे, वहाँ से हमने साढ़े तीन महीने लगातार युद्ध करके आपका पैसा-पैसा वसूल करवा दिया और लूट का सब माल आपके खज़ाने में दाखिल करवा दिया। यदि हम लोग न होते तो गाँजर की आमदनी और समस्त राज्य आपके हाथ से निकल जाता। गाँज़र-विजय करके हमने आपकी कीर्ति देश-देशान्तर में फैला दी है। इस युद्ध में हमारे साले जोगा-भोगा दोनों भाई खेत रहे थे और पपीहा लँगड़ा हो गया है। याद रक्खो, इस अनुचित व्यवहार के बदले हम अब आप से तनिक भी न दबेंगे। पपीहा के बदले में हम भुरुही नाम की हथिनी

और जोगा-भोगा के बदले में लाखन को सेना-समेत अपने साथ युद्ध में ले जावेंगे। यदि आप न देंगे तो हम कन्नौज की ईंट से ईंट बजवा देंगे और आपका यह गर्व चूर कर देंगे।"

यह सुनते ही जयचन्द काँप उठे। उन्होंने तुरन्त आल्हा को छुटकारा देकर कहा—"बेटा! सावधान! तुम जो कहोगे हम वही करेंगे; परन्तु लाखन पर हमारा वश नहीं। तुम जाकर उन्हें उनकी माता तिलका से माँग लो।" यह सुनते ही ऊदल लाखन के साथ तिलका के पास गये और बोले—'महारानी! हम लोग महोबे को पृथ्वीराज के चङ्गल से छुड़ाने के लिए जा रहे हैं। लाखन गङ्गाजी में खड़े होकर हमारे साथ प्रत्येक युद्ध में जाने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं। इससे आप इन्हें जाने की आज्ञा दे दीजिए।" तिलका ने कहा—"बेटा! ब्याह हो जाने पर माता के स्थान पर उसकी स्त्री का अधिकार हो जाता है। सो तुम जाकर इसकी रानी से पूछ लो।" तब वे लाखन की रानी के महलों में गये। ऊदल को बाहरवाले चौक में छोड़ लाखन ने भीतर जाकर सभी हाल अपनी रानी से कह सुनाया और जाने की अनुमति चाही। कहते हैं कि रानी कुसुमा ने लाखन को बहुत रोका* परन्तु उसने एक न सुनी।

चलते समय कुसुमा ने कहा—"प्राणनाथ! आप प्रसन्न चित्त से युद्ध में जाइए। मैं आँचल पसारकर ईश्वर से आपकी विजय-कामना करती हूँ। परन्तु ध्यान रहे, युद्ध से पीठ दिखाकर मेरे पास न आना। यदि आप शत्रु को पराजित करके जयनाद करते हुए आवेंगे तो मैं स्वर्णथाल से आपकी आरती उतारूँगी और आपको विजयमाल पहनाऊँगी और यदि आप वीर-गति को प्राप्त होंगे तो मैं सती होकर स्वर्ग में आपसे मिलूँगी। आप मेरी ओर से निश्चिन्त होकर जाइए।" अब कुसुमा ने लाखन को जूझ का कंगन पहनाया और तिलक करके विदा किया। कहते हैं कि चलते समय कुसुमा ने लाखन से यह भी कहा था कि जब मैं विरहिन बनकर सतखण्डे पर सोया करूँगी

---

* लाखन और कुसुमा का संवाद आल्हखण्ड काव्य में बड़ा ही रोचक है।

तब परहुल के राजा के सतखण्डे का दीपक* मुझे और भी आपका स्मरण करावेगा। इससे आप जाते समय परहुल के राजा से कहते जावें कि न तो वह सतखंडे पर लेटे और न उस दीपक को ही कोई जलावे।"

वहाँ से आकर लाखन ने अपनी माता तिलका से आज्ञा ली। ऊदल से चलते समय तिलका ने कहा था कि लाखन की भली भाँति रक्षा करना।

दरबार में आकर लाखन ने युद्ध का डङ्का बजवाया। तुरन्त गाँजर के चारों राजा†, बनौधे के बारह राजकुमार, धनुआँ तेली और लला तमोली अपनी-अपनी सेना सजाकर तैयार हो गये। फिर लाखन भुरुही हथिनी पर चढ़कर तैयार हुए। चलते समय रानी तिलका ने सिंहपौरि पर आकर भुरुही के मस्तक की पूजा की और लाखन को भाल में तिलक लगाकर बिदा किया। इसी समय कन्नौज के दुर्ग से तोपों ने गड़गड़ाहट के साथ विकट अट्टहास किया।

तोपों की आवाज़ें सुनकर आल्हा ने रिजगिरि को ख़ाली करके रानियों के डोले बाहर मँगवाये और सेना के साथ लाखन से आ मिले। मार्ग में लाखन ने अपनी रानी का आदेश आल्हा से कह सुनाया। आल्हा ने कहा—"अच्छी बात है; अपने भाग्य की परीक्षा परहुल ही में कर लेनी चाहिए।" अब दूसरे दिन परहुल पहुँचने पर लाखन ने वहाँ के सिंहा नामक ठाकुर को पत्र द्वारा सूचना दी कि अपने सतखण्डे का दीपक बुझवा दो और सेना लेकर मेरे साथ युद्ध करने महोबे चलो। यह पढ़ते ही ठाकुर आपे से बाहर हो गया। उसने तुरन्त सेना सजाकर लाखन पर आक्रमण कर दिया। परन्तु कन्नौज की विशाल सेना के आगे परहुल जैसे क्षुद्र राज्य की सेना क्या कर सकती थी! क्षत्रिय लोग स्वाभिमान के लिए मर मिटे। सिंहा ठाकुर

---

* कन्नौज के राजमहलों से परहुल के महल दिखाई पड़ते थे और वह टिमटिमाता हुआ दीपक भी रात्रि के समय दिखाई पड़ता था।

† गाँजर में बारह राजा थे, अतः सभी राजा साल में चार महीने कन्नौज में रहते थे। इस तरह कन्नौज के दरबार में गाँजर के चार राजा सदा बने रहते थे।

बन्दी होने पर लाचार होकर लाखन के साथ फ़ौज में शामिल हुआ। लाखन ने अपने तीर के अचूक निशाने से उस दीपक को नीचे गिरा दिया*।

सिंहा और उसकी सेना को साथ लेकर वे लोग आगे बढ़े। कुड़हिर में आल्हा के आने पर जगनिक ने अपना घोड़ेवाला सब वृत्तान्त उनको सुनाया तथा यह भी कहा कि मेरा चाबुक अभी गङ्गाधर ठाकुर ही के पास है। चाबुक ब्रह्मा को न लौटाया जावेगा तो बड़ी हँसी होगी।

यह सुनकर लाखन ने वहाँ के गङ्गाधर ठाकुर को, जो लाखन का मामा था, एक पत्र लिखकर चाबुक माँगा। गङ्गाधर ठाकुर ने चाबुक देना तो दूर रहा, वह पत्र ही फाड़कर फेंक दिया। अब वह सेना लेकर युद्धक्षेत्र में आ डटा। गङ्गाधर का रण धौंसा सुनकर आल्हा उसके ऊपर बाज़ की नाईं टूट पड़े और पचशावद को साँकल देकर आल्हा ने सेना का नाश करवाकर गङ्गाधर को क़ैद कर लिया। फिर कुंड़हिर के बाज़ार लूटे जाने लगे। यह देखकर वहाँ की रानी ने वह चाबुक भेज दिया।

आल्हा ने दण्ड के तौर पर गङ्गाधर ठाकुर को उसकी सेना-समेत अपने साथ ले लिया और महोबे को चल पड़े।

कहते हैं कि जमुना पार करके जब वे लोग कालपी में आये, तब लाखन ने कालपी को लुटवा लिया। आल्हा ने इसका कारण पूछा तो लाखन ने कहा कि "हमारे मामा का नगर आपने लुटवाया था इससे हमने उसके बदले में कालपी को लुटवाया।" कहते हैं कि इससे उन्हें बड़ा क्रोध आया परन्तु समय देखकर वे चुप रहे।

कालपी की सीमा पार करते ही आल्हा के डेरे पड़ गये। कहते हैं कि कालपी की अन्तिम सीमा से लेकर वेतवा नदी के तट तक उनके डेरे पड़े थे।

---

* लाखन ने समझ लिया था कि जब सिंहा हमारे साथ युद्ध में जायगा तब उसकी स्त्री भी विरहिन होकर रहेगी और न तो दीपक आदि जलावेगी और न अकेली सतखण्डे पर ही लेटेगी।

अब आल्हा ने अपने आने के विषय का एक पत्र लिखा और उसे जगनिक को देकर बिदा किया।

महलों में मल्हना के पास जगनिक पहुँचे थे कि माहिल भी आ पहुँचा। उसको देखकर जगनिक ने कहा—"आल्हा के मिज़ाज का ठीक नहीं। उन्होंने तुम्हारे पत्र को फाड़कर फेंक दिया और हमें अपमानित करके वहाँ से मार भगाया है।" यह सुनते ही मल्हना रोने लगी। तब माहिल ने कहा—"आप अब नाहक़ रोती हैं। चुपचाप पृथ्वीराज के पास उनकी माँगी हुई चीज़ें भेज दो तो सब काम सुलझ जाय।" जगनिक ने पूछा—"नानाजी! वे क्या माँगते हैं?" माहिल ने कहा—"ग्वालियर और खजुहागढ़ के इलाक़े, नौलखा हार, सब उड़न-बछेड़े, तुम्हारी माँ का डोला और पारस पत्थर वे माँगते हैं।" यह सुनकर जगनिक ने कहा—"क्या हानि है? यदि राज्य के लिए ये चीज़ें चली जायँ तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।" थोड़ी देर बाद जगनिक ने माहिल से कहा—"अच्छा, आप उस गहनोंवाले कोठे से नौलखा हारवाली सन्दूक़ची तो निकाल लावें, तब तक मैं पारस मँगवाता हूँ।"

यह सुनते ही माहिल उस कोठरी की ओर लपका। उस कोठरी में माहिल के घुसते ही जगनिक ने किवाड़ बन्द कर दिये। फिर उन्होंने मल्हना से ब्यौरेवार सब हाल कह सुनाया और आल्हा का पत्र भी पढ़कर सुना दिया। मल्हना ने ब्रह्मा और परमाल को भी बुलाकर वह पत्र सुनाया। अब महलों में ख़ुशियाँ मनाई जाने लगीं।

बन्दी माहिल ने कोठरी के भीतर से जब बहुत ख़ुशामद की और भविष्य में चुग़ली न करने की प्रतिज्ञा की तब मल्हना को अपने भाई पर तरस आ गया और उसे कोठरी के बाहर निकाला। वहाँ से निकलकर माहिल सीधा चन्दन-बगिया में पृथ्वीराज के पास पहुँचा। उसने सब समाचार पृथ्वीराज से कह सुनाये। पृथ्वीराज ने तुरन्त सेना की टुकड़ियाँ भेजकर बेतवा के सब घाटों पर पहरा बैठा दिया।

———

बेतवा नदी के तट का युद्ध

आल्हा ने बेतवा के घाटों पर दिल्ली की सेना का पहरा लगने का हाल सुनकर अपने दरबार में बीड़ा रखकर कहा—"देखें हमारे यहाँ ऐसा कौन सा वीर है जो यह बीड़ा चबाकर नदी के घाटों पर से पृथ्वीराज का मोर्चा हटा दे।" कहते हैं कि उस बीड़े को चबाने का साहस किसी को न हुआ। अन्त में लाचार होकर ऊदल बीड़ा चबाने के लिए उठे; परन्तु आल्हा ने उन्हें रोककर कहा—"गाँजर के लिए बीड़ा तुमने उठाया था, अब बेतवा के लिए लाखन की बारी है।" यह सुनकर लाखन उठ बैठे। उन्होंने बड़े उत्साह के साथ उस बीड़े को उठाकर चबा लिया। फिर उन्होंने धनुआँ तेली, लला तमोली और मीरा सैयद को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दी।

इसी समय लाखन की हथिसार के अध्यक्ष सुपना ने आकर लाखन से कहा—"अन्नदाता! मैं अपनी सभी हथिनियों को नदी में पानी पिलाने ले गया था। पानी पीते-पीते जब वे उस पार निकल गईं, तब उधर के सेनापति ने उन सबको अपने यहाँ बँधवा लिया और मुझे वहाँ से मार भगाया।"

यह सुनते ही लाखन अपने सरदारों के साथ चल पड़े। उन्होंने घोड़ों पर चढ़कर नदी पार की। उस पार जाकर उन्होंने देखा कि उनकी नौ सौ हथिनियाँ दिल्ली की सात सौ हथिनियों के साथ बँधी हुई हैं। उन्होंने वहाँ के अध्यक्ष को मारकर सब हथिनियाँ खुलवा लीं और इस पार हँकवा दीं। यों कुल सोलह सौ हथिनियाँ लाखन के हाथ लगीं।

लाखन जब वहाँ से चलने लगे तो चौंड़ा ने आकर उन्हें ललकारा और पूछा—"तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो?" लाखन ने कहा—"हम कन्नौज के युवराज लक्ष्मणसिंह हैं और ऊदल के साथ महोबा देखने आये हैं।" चौंड़ा ने हँसकर कहा—"ठीक है। आपके बहनोई पृथ्वीराज यहाँ पर चढ़कर आये हैं। इससे मैं उनकी ओर से आपको युद्ध का निमन्त्रण देता हूँ।"

"निमन्त्रण तो उस दिन देना जिस दिन हम रानी अगमा (पृथ्वीराज की पटरानी) का डोला ले आवें। दासी-पुत्री* को भगाकर ले जाने से वह भगोड़ा हमारा बहनोई कभी नहीं हो सकता।"—लाखन ने हँसकर कहा। यह सुनते ही चौंड़ा ने तोपों में पलीता देने को कहा।

इस समय तक लाखन की सभी फ़ौज आ चुकी थी। तुरन्त दोनों ओर से भयङ्कर तोपें गरजने लगीं। फिर लाखन अपनी भुरुही पर चढ़कर तलवार चलाने लगे। कन्नौज के राठौर वीरों ने छाँट-छाँटकर दिल्ली के चौहान वीरों को मारना शुरू किया। इधर लाखन ने चौंड़ा पर प्रबल वेग के साथ आक्रमण किया। इससे वह नीचे गिर पड़ा तब लाखन ने कहा—"भू-देव! जाओ; अस्त्र तथा घोड़ा या हाथी लेकर मेरे सामने आना। तुमको बन्दी करके या मारकर हम पापी नहीं बनना चाहते।" यह सुनते ही चौंड़ा खिसियाकर वहाँ से भाग गया।

अब पृथ्वीराज अपनी फ़ौज लेकर मैदान में आये। शीघ्र ही ताहर से लाखन, राजा कालनेमि से गङ्गाधर पँवार, पटना के राजा पूरनसिंह से सिंहा ठाकुर, भूरा मुग़ल से मीरा सैयद, धाँधू से धनुआँ, रहमत व सहमत से हिरसिंह व बिरसिंह, देवी ठाकुर से बंगाल के गोरखसिंह और राजा वंशगोपाल से अङ्गद ठाकुर का युद्ध होने लगा। कहते हैं कि ऐसे भयङ्कर युद्ध देखने में बहुत कम आये हैं। चौहान और राठौर वीर आपस में गुथ गये। बड़ी देर तक घमासान युद्ध होता रहा। चौहानों ने प्राणों की बाज़ी लगाकर राठौरों का मोर्चा लिया। इससे उनके पैर उखड़ने लगे। लाखन को पृथ्वीराज ने अपने नौ सौ हथिसवारों समेत चारों ओर से जा घेरा।

अपने को चारों ओर से घिरा हुआ देखकर और अपना कोई भी साथी वहाँ न पाकर लाखन घबरा गये। अन्त में और कोई चारा न देख उन्होंने भुरुही की सूँड़ में साँकल दे दी। साँकल की विकट मार से सभी हथिसवार भागने लगे।

---

* इसके लिए संयुक्ता-स्वयंवर (पृष्ठ १५) देखिए।

कहते हैं कि नदी के तीर पर ऐसा भीषण युद्ध हुआ कि ख़ून के पनाले बह-बहकर नदी में जा गिरे। इससे नदी का पानी लाल हो गया।

इसी समय उस पार रुपना उड़नबछेड़ों को पानी पिलाने नदी पर आया। नदी में पानी के बदले ख़ून देखकर तथा गङ्गा ठाकुर और सैयद आदि को उस पार से इस पार आते देखकर उसका माथा ठनका। उसने जाकर महारानी देवै से यह सब हाल कहा और यह भी कहा कि ऐसा जान पड़ता है कि कन्नौज के युवराज मारे गये। यह सुनकर देवै घबरा गई। उसने आल्हा-ऊदल के पास जाकर उनसे कहा—"युद्धक्षेत्र में जाकर लाखन का समाचार ले आओ।" इस पर आल्हा ने कहा—"गाँजर के युद्ध में अकेले ऊदल ने वीरता दिखाई थी, अब यहाँ पर अकेले लाखन की बारी है।" यह सुनकर देवै सुनवाँ के पास गई। सब हाल जानकर उसने ऊदल को बुलाया और ऊँच-नीच समझाकर युद्ध में जाने के लिए राज़ी किया। ऊदल को तैयार देखकर आल्हा भी तैयार हो गये। शीघ्र ही वे अपनी फ़ौज लेकर चले। मार्ग में उन्हें सैयद और धनुआँ आदि भी मिले। उनको लौटते देखकर ऊदल ने उन्हें ख़ूब फटकारा, इससे वे लोग भी साथ हो लिये।

इधर लाखन साँकल घुमाते हुए पृथ्वीराज के आदि-भयङ्कर हाथी के पास जा पहुँचे। उसको भुरुही ने बड़े वेग से टक्कर मारी। इससे आदि-भयङ्कर भड़भड़ाकर बीस क़दम पीछे हट गया।

यह देख पृथ्वीराज ने लाखन को बहुतेरा समझाया कि बनाफरों का साथ छोड़कर हमारी तरफ़ हो जा; क्योंकि बनाफर नीच जाति के सामन्त सरदार हैं और कन्नौज तथा दिल्ली दोनों ही बराबरी के राज्य हैं। कहते हैं कि लाखन जब पृथ्वीराज की बातों में न आये तब पृथ्वीराज ने कहा—"यदि तुम इस तरह हमारा पक्ष नहीं लेते तो अपना बहनोई समझकर ही हमारा पक्ष लो। इतने पर भी यदि तुम राज़ी नहीं होते तो अब से नीचों के साथ रहने के कारण नीच ही समझे जाओगे।" पृथ्वीराज ने यह भी कहा—"तुम्हारी यह वीरता उस दिन कहाँ गई थी जिस दिन हम तुम्हारी बहन का डोला ज़बरदस्ती

ले आये थे !" इस पर लाखन ने गरजकर कहा—"हमारी तलवार के कौशल को अभी आप क्या जानें ! आपको हमारे जौहर का परिचय उस दिन मिलेगा जब हम आपकी पटरानी अगमा का डोला ले जाकर अपने पिता के रनिवास में रक्खेंगे।" इस समय वहाँ माहिल मौजूद था। अगमा का नाम सुनकर वह बहुत बिगड़ा। उसने पृथ्वीराज से कहा—"जीजा ! हम यह बात नहीं सुन सकते। तनिक सा बच्चा बढ़-बढ़कर ऐसी बात कहे और आप सुनते रहें ! मुझे इसका बड़ा दुःख है।" यह सुनते ही पृथ्वीराज ने अपनी लाल कमान को सँभाला। कहते हैं कि इसी समय वहाँ पर ऊदल जा पहुँचे। उन्होंने यह सोचकर कि शब्द-बेधी महाराज पृथ्वीराज का चलाया हुआ बाण ख़ाली न जायगा, पृथ्वीराज से कहा—"महाराज ! आपको कमान उठाते लज्जा नहीं आती ? हाँ, आपके सामने इस समय महाराज जयचन्द या परमाल होते तो आपके हाथों में यह कमान शोभा दे सकती थी; परन्तु लड़कों के ऊपर आपका क्रोध शोभा नहीं पाता।" अब ऊदल ने अपने घोड़े को एड़ लगाकर आदि-भयङ्कर के हौदे पर के कलश आदि गिरा दिये। इसी समय आल्हा ने सेना समेत रण में घुसकर मार-काट मचा दी। पृथ्वीराज लज्जित होकर लौट गये और उनके स्थान पर ताहर युद्ध करने लगा। आल्हा-ऊदल के आ जाने से रण का रङ्ग बदल गया। चौहानों में खलबली मच गई। रहमत, सहमत और वंशगोपाल खेत रहे। यह देख ताहर आगे बढ़ा; पर लाखन की भुरुही की टक्कर से उसका घोड़ा बिलबिलाकर भाग निकला। ताहर के भागते ही दिल्ली की फ़ौजें भी भाग गईं। लाखन पीछा करते हुए बगिया में जा पहुँचे। उन्होंने पृथ्वीराज के डेरों के रस्से कटवाकर लूट-मार मचवा दी। दिल्ली की फ़ौजें पृथ्वीराज के साथ भाग गईं। माहिल निराश होकर उरई चला गया।

दिल्ली के तीन लाख पैदल और एक लाख सवार खेत रहे और कन्नौज के दस हज़ार सवार और पैंसठ हज़ार पैदल वीर-गति को प्राप्त हुए।

यह ख़बर पाकर परमाल बड़े प्रसन्न हुए। पालकी में बैठकर वे चन्दन-बगिया में आये और लाखन से मिले। आल्हा-ऊदल उनके पैरों पर गिर पड़े। परमाल ने रोकर उन्हें छाती से लगा लिया।

अब महोबे की गलियाँ और सड़कें सजाई गईं। उनमें पांवड़ों के स्थान पर रेशमी और कलाबत्तू के काम के ग़लीचे बिछाये गये। सभी घरों के द्वारों पर स्वर्णकलश भरकर रक्खे गये और उन पर सुन्दर मोतियों के वन्दनवार टाँगे गये। जब अपनी हथिनी पर चढ़कर आल्हा-ऊदल के साथ लाखन नगर में आये तब स्त्रियों ने उनके ऊपर इत्र का छिड़काव किया तथा फूलों की वर्षा करते हुए मङ्गलगान गाये। राजद्वार पर पहुँचते ही मल्हना ने अन्य रानियों समेत बाहर आकर लाखन और बनाफरों के तिलक किया और बढ़िया मालाएँ पहनाईं।

फिर मल्हना ने देवै और बहुओं को आदर से ग्रहण किया। महोबे के क़िले के बुर्जों पर से तोपें छोड़ी गईं। कुछ दिनों बाद आल्हा अपने परिवार समेत फिर दशपुरवा को बसाकर वहीं रहने लगे।

लाखन भी महोबे में अतिथि बनकर कुछ दिनों रहे। परमाल ने उनको बड़े सत्कार के साथ अपने यहाँ रक्खा। बहुत दिनों बाद महोबे में फिर चैन की बंसी बजने लगी।

ऊदल-हरण

आल्हा-ऊदल के दशपुरवा लौट आने पर चारों ओर फिर महोबा राज्य की धाक जम गई। महोबे की प्रजा शान्ति और सुख से रहने लगी।

उसी वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल दशमी पर गङ्गा-स्नान करने के लिए महोबे की प्रजा बिठूर जाने लगी। सुनवाँ ने दशहरे पर गङ्गा-स्नान का माहात्म्य सुना तो वह भी बिठूर जाने के लिए उत्सुक हुई। उसने ऊदल को बुलाकर बिठूर चलने के लिए कहा। आल्हा से आज्ञा लेकर ऊदल ने तुरन्त बिठूर की तैयारी कर दी। उन्होंने जगनेरी से जगनिक को भी बुला भेजा। शीघ्र ही सवा लाख सैनिकों के साथ सुनवाँ और फुलवा के डोले लेकर ऊदल बिठूर को रवाना हुए।

वहाँ पहुँचने पर ऊदल ने अपने डेरे एक रेतीले मैदान में खड़े करवाये। वहाँ महोबे की दूकानें लग जाने से मेला सा लग गया।

ऐसे मेलों में आजकल उठाईगीर और लफङ्गे बहुत आते हैं, परन्तु पहले उठाईगीरों वग़ैरह का नाम तक कोई न जानता था; क्योंकि उस समय भारत-वर्ष धन धान्य से परिपूर्ण था। पेट भरने के लिए किसी को ठगी या चोरी करने की आवश्यकता ही न होती थी। उस समय ऐसे अवसरों पर बड़े-बड़े तान्त्रिक अवश्य जमा होते थे। इस मेले में भी बड़े-बड़े तान्त्रिक आये। शुभिया नाम की एक यवन-जाति की विकट तान्त्रिक भी अपने अनुचरों के साथ वहाँ आई। वह नटिनी थी। इसके साथ नौ हज़ार नट और सैकड़ों बेड़िनियाँ थीं। मेला लग जाने पर वह नटिनी अपने डेरे से बेड़िनियों के साथ निकली और प्रत्येक राज्य के डेरे में तमाशा दिखाती फिरने लगी। महोबे के डेरे में आने पर वह ऊदल के रूप और यौवन को देखकर मुग्ध हो गई। अब वह तन्त्रबल से ऊदल को हरण करने की युक्तियाँ सोचने लगी; परन्तु जब उसने यह सुना कि वहाँ पर सुनवाँ भी आई है तब वह चुप रह गई। कहते

हैं कि इसी समय सुनवाँ गङ्गा-स्नान करके आई और उसने अपना समस्त ज़ेवर उतारकर डब्बों में रख दिया। वे डब्बे एक सन्दूक़ में बन्द कर दिये गये। यह देखकर शुमिया ने तन्त्रबल से उन डब्बों को वहाँ से ग़ायब कर दिया। सुनवाँ यह न जान सकी। अन्त में वह नटिनी इनाम लेकर लौट गई।

उसी दिन ऊदल ने बिठूर से कूच करवा दिया। महोवे के लश्कर ने जब यमुनातट पर पड़ाव डाला, तब सुनवाँ ने किसी आवश्यकता से सन्दूक़ खोला। ज़ेवर के डब्बों को सन्दूक़ में न देखकर वह चकित रह गई। उसने तुरन्त ही ऊदल को बुलाकर कहा कि "अपने ज़ेवर के डब्बों को मैं बिठूर ही में भूल आई हूँ, इससे लश्कर को लौटाकर उनका पता लगाना चाहिए।" ऊदल ने जगनिक को बुलाकर कहा—"तुम लश्कर और डोलों को लेकर महोवे जाओ। हम बिठूर जाकर और वहाँ डब्बों का पता लगाकर पीछे आवेंगे।" यह कहकर ऊदल बिठूर को चले गये।

ऊदल ने बिठूर में जाकर देखा कि वहाँ का मेला उठ चुका है। केवल दस-पाँच दुकानें और दो-चार यात्री रह गये हैं। राजाओं के डेरों के स्थान पर ऊदल ने केवल एक ही डेरा लगा पाया। इससे वे उस डेरे की ओर गये। वहाँ ऊदल को देखकर शुमिया ने पूछा—"आप कहाँ से आये हैं और यहाँ क्या काम है?" ऊदल ने अपना परिचय बताकर कहा—"मेरी भौजाई के ज़ेवर के डब्बे खो गये हैं। मैं उन्हीं की खोज में यहाँ आया हूँ।" शुमिया ने कहा—"आइए! आप और हम दोनों चौपड़ खेलें। यदि आप जीत जायँ तो मैं अपने तन्त्रबल से गहनों का पता लगवा दूँगी।" यह सुनकर ऊदल चौपड़ खेलने को बैठ गये। उनको खेल में मस्त जानकर शुमिया ने तन्त्रबल से उन्हें तोता बना दिया और एक पिंजड़े में बन्द कर दिया। अब शुमिया ने तुरन्त वहाँ से कूच कर दिया। बिठूर से चलकर उसने दिल्ली में डेरे डाले। उसने पृथ्वीराज के पास जाकर सब वृत्तान्त कहा तो उन्होंने क्रुद्ध होकर तुरन्त उसे वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी।

इस प्रकार वह नटिनी सभी रजवाड़ों में फिरी, परन्तु उसे कहीं शरण न मिली। अन्त में उसने एक जङ्गल में झावर* के पास डेरे डाले।

इधर जब ऊदल लौटकर न आये, तब आल्हा को चिन्ता हुई। उन्होंने ऊदल के न लौटने का कारण सुनवाँ से पूछा। उसने कहा—"मालूम होता है, ऊदल को कोई हर ले गया है। अब आप निश्चिन्त रहें। मैं जाकर उनका पता लगाती हूँ।" यह कहकर सुनवाँ ने चील का रूप धारण किया और आकाश-मार्ग से जाकर प्रत्येक रियासत में ऊदल की खोज की। उसे जब ऊदल का कहीं पता न मिला, तब वह निराश होकर लौटने लगी। लौटते समय उसी झावर पर डेरों को देखकर वह नीचे उतरी और उसी पेड़ पर जा बैठी जिस पर तोता बने हुए ऊदल का पिंजड़ा लटक रहा था। कहते हैं कि इसी समय उस नटिनी ने ऊदल के पिंजड़े को उतारा। वह उन्हें तन्त्रबल से मनुष्य बनाकर चौपड़ खेलने लगी। फिर उसने ऊदल से कहा—"यदि आप इस्लाम धर्म मानकर मुझसे विवाह कर लेंगे तो आपको छोड़ूँगी, नहीं तो नहीं।" इस पर ऊदल ने उसको बुरी तरह झिड़क दिया। यह देख उसने नटों को बुलाकर ऊदल को पेड़ से बँधवा दिया और बुरी तरह से पिटवाया। इससे सुनवाँ को बड़ा क्रोध आया, परन्तु वह चुप रही। रात्रि को ऊदल फिर तोता बनाकर टाँग दिये गये। सब के सो जाने पर सुनवाँ तन्त्रबल से सबको अचेत कर ऊदल के पिंजड़े को लेकर चली। वहाँ से दूर जाकर उसने ऊदल को मनुष्य बनाया और अपने साथ चलने को कहा। इस पर ऊदल ने उत्तर दिया—"हम इस प्रकार वहाँ न जायँगे। दादा से कहो कि सेना लाकर नटों को यहाँ से मारकर भगा दें। तब हम उनके साथ महोबे जायँगे।" तब सुनवाँ ने उन्हें तोता बनाकर उसी वृक्ष में फिर टाँग दिया और आप महोबे को लौट पड़ी। महोबे में आकर उसने आल्हा से सब वृत्तान्त कह सुनाया। उन्होंने तुरन्त जगनिक को बुलाकर अपना लश्कर सजवाया और उस झावर की ओर कूच कर दिया।

---

* जङ्गली जलाशय।

आल्हा ने जब झावर से थोड़ी दूरपर डेरे डाल दिये, तब सुनवाँ ने उसी प्रकार ऊदल के पिंजड़े को उतार लिया और आल्हा के पास उन्हें मनुष्य के रूप में उपस्थित किया। ऊदल आल्हा के चरणों पर गिर पड़े। आल्हा ने उन्हें छाती से लगा लिया।

सवेरा होते ही नट लोग मोर्चे पर आ डटे। दोनों ओर से भयङ्कर युद्ध होने लगा। महोबियों ने मार-मारकर नटों की लाशों का ढेर लगा दिया। आल्हा, ऊदल, इन्दल और जगनिक आदि के सामने नटों की एक न चली। यह दशा देखकर शुमिया ने तन्त्रबल से काम लिया, परन्तु सुनवाँ के तन्त्र के आगे उसकी एक न चली। अन्त में विवश होकर शुमिया सुनवाँ के ऊपर टूट पड़ी। बड़ी देर तक मल्लयुद्ध करने के बाद सुनवाँ ने शुमिया को पटक दिया और इन्दल से उसको मार डालने का संकेत किया; परन्तु इन्दल ने स्त्री को मारना ठीक न समझकर उसके सिर का जूड़ा काट लिया। जूड़ा कट जाने से नटिनी का तन्त्रबल नष्ट हो गया और वह भाग निकली। तब उसके साथी नट और बेड़िनियाँ भी भाग गईं।

विजय का डङ्का बजाकर आल्हा वहाँ से लौट पड़े। झुन्नागढ़ में आकर उन्होंने डेरा डाला। वहाँ के सरदार सेनापति* ने जब किसी राजा का लश्कर पड़ा हुआ देखा तब उसने एक हरकारा भेजकर उस सेना का परिचय मँगवाया। जब उसने आल्हा का आगमन सुना तब वह पालकी में बैठकर आल्हा के पास आया। आल्हा ने राजा सेनापति का स्वागत किया। सेनापति ने उन्हें नौ हीरे और मोहरों के पाँच तोड़े भेंट देकर कुशल-प्रश्न पूछा तब आल्हा ने सब

---

* झुन्नागढ़ का दुर्ग पथरीगढ़ के राजा गजसिंह के राज्य में था। पहले इस राज्य का नाम झुन्नागढ़ ही था, परन्तु जब से गजसिंह ने अपने पथरीगढ़ में राजधानी बनाई थी तब से यहाँ पर उन्होंने अपने सामन्त राजा सेनापति को बसाकर उन्हीं को यहाँ का इलाक़ा दे दिया था। सेनापति की पुत्री के साथ ऊदल के साले मकरन्दी का विवाह हुआ था।

वृत्तान्त कह सुनाया। ऊदल का उद्धार और शुमिया का दमन सुनकर सेनापति बहुत प्रसन्न हुआ।

सेनापति से विदा माँगकर आल्हा ने महोवे को कूच किया। महोवे में ऊदल के पहुँचने पर परमाल ने बहुत ख़ुशियाँ मनाईं। दीनों, ब्राह्मणों और अपाहिजों को दान-दक्षिणा और अन्न-धन दिया गया। क़िले के बुर्जों पर से तोपें दागी गईं। महलों में मङ्गलाचार किये गये और महोवे की मनियाँ देवी का अभिषेक करके हवन और बलिदान किया गया। ऊदल सबको यथा-योग्य अभिवादन कर दशपुरवा को चले गये। फुलवा अपने पति को पाकर बहुत प्रसन्न हुई। देवै ने भी बहुत ख़ुशियाँ मनाईं।

लाखन का दूसरा विवाह या अमरगढ़ का युद्ध

महाराज़ पृथ्वीराज जब युद्ध में पीठ दिखाकर चले गये तब परमाल ने लाखन को चार महीने तक अपने यहाँ अतिथि बनाकर रक्खा। क्वार के नव-रात्र में एक दिन कन्नौज से उनको बुलाने के लिए एक हरकारा आया। तब लाखन और ऊदल महाराज परमाल से आज्ञा लेकर कन्नौज को चल पड़े।

लाखन और ऊदल के कन्नौज पहुँचने पर महाराज जयचन्द ने लाखन से कहा—"बेटा! अमरगढ़ के राजा धीरसिंह ने अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ करने का निश्चय किया है और टीका भी भेजा है। वहाँ जाकर युद्ध कर सको तो इस टीके की स्वीकृति दे दो।" ऊदल का इशारा पाकर लाखन ने उसे स्वीकार कर लिया। अब टीका चढ़ाया गया और महलों में मङ्गलाचार होने लगे।

अगहन में महाराज जयचन्द बारात लेकर अमरगढ़ की ओर चले। अमरगढ़ के धूरे पर पहुँचकर बारात के डेरे पड़ गये। फिर मङ्गल बारी एपनबारी लेकर गया। उसने उस समय की प्रचलित रीति के अनुसार गढ़ में क्षत्रियों से ख़ूब युद्ध किया और सकुशल अपने शिविर में लौट आया। एपन-बारी के आ जाने पर धीरसिंह ने शर्बत के नौ हज़ार घड़े बारात में भेजे। शर्बत पीकर सब लोग द्वारचार करने चले। द्वार पर पहुँचते ही धीरसिंह ने एक हाथी और एक शेर को मँगवाकर कहा—"यदि कोई वीर इन दोनों पशुओं को पछाड़ दे, तो विवाह का कार्य शुरू किया जाय। हमारे यहाँ यही दस्तूर है।" यह सुनकर ऊदल ने हाथी और आल्हा ने उस शेर को मारकर गिरा दिया।

अब धीरसिंह ने युद्ध का डङ्का बजवा दिया। उसको सुनकर कन्नौजिये वीर भी तैयार हो गये। शीघ्र ही दोनों ओर से घमासान युद्ध शुरू हो गया। कहते हैं कि यदि इस युद्ध में आल्हा, ऊदल और उनके महोबिया वीर न होते

तो कन्नौजिये हारकर भाग आते। यद्यपि अमरगढ़ के वीरों ने भी अपूर्व वीरता दिखाई, तो भी महोबियों के आगे उनकी एक न चली।

विजय का डङ्का बजाकर आल्हा, ऊदल, ढेवा, जगनिक और लाखन आदि, अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर, अमरगढ़ के महलों में गये। वहाँ मण्डप ख़ूब सजाया गया था। धीरसिंह और उनके व्यौहारियों ने बनाफरों तथा लाखन आदि का उठकर स्वागत किया और उन्हें आदर से सुन्दर चौकियों पर बिठाया। फिर विवाहकार्य आरम्भ हुआ। कहते हैं कि केवल पहली भाँवर के समय रणधीर ने लाखन पर तलवार का वार किया था, परन्तु जब ऊदल ने ढाल की औझड़ मारकर रणधीर को गिरा दिया तब धीरसिंह ने उनको चुप रहने का इशारा कर दिया।

विवाह के दस्तूर हो जाने के बाद ज्यौनार की गई। फिर धीरसिंह ने बेटी की विदा कर दी। उन्होंने दहेज में नौ सौ बाँदियाँ और पाँच सौ योद्धा दिये। कहते हैं कि धीरसिंह ने पाँच अरब रुपये की लागत का माल-असबाब दहेज में दिया था। महाराज जयचन्द ने भी करोड़ों रुपये वहाँ के दीनों, ब्राह्मणों, अनाथों और अपाहिजों को बाँटे और करोड़ों रुपयों के गहने नेगियों को पुरस्कार में दिये। फिर अपनी पुत्रवधू की विदा कराकर महाराज जयचन्द कन्नौज को लौटे। आल्हा-ऊदल कन्नौज में कुछ दिनों रहकर दशपुरवा को लौट गये। महाराज जयचन्द ने आल्हा और ऊदल की वीरता की ख़ूब प्रशंसा की।

जलशूर का विवाह

मलखे के पुत्र का नाम जलशूर था। गजमोतिन ने सती होते समय जलशूर को रानी मल्हना के पास महोवे में भेज दिया था। कहते हैं कि महाराज पृथ्वीराज ने अपनी मन्दाकिनी नाम की एक पौत्री का विवाह जलशूर के साथ कर देने के विषय में मलखे से कुछ बातचीत की थी; परन्तु माहिल के भड़काने से बात वहीं रुक गई थी।

जलशूर जब बड़ा हुआ तब एक रात्रि को स्वर्गीया सती रानी गजमा ने मल्हना से स्वप्न में कहा कि 'जलशूर का विवाह पृथ्वीराज की पौत्री के साथ करवा दो तो मेरी आत्मा को शान्ति मिले।' मल्हना ने सबेरे उठकर स्वप्न का वृत्तान्त परमाल से कहा और उन्होंने ऊदल को बुलाकर वह हाल सुनाया। इससे तुरन्त जलशूर के विवाह के निमन्त्रणपत्र भेज दिये गये।

नियत समय पर सब व्यौहारी राजा आ गये। जलशूर के नाना महाराज गजसिंह भी आये। सबके आ जाने पर शुभ मुहूर्त में जलशूर की बारात दिल्ली को चली। दिल्ली के धूरे पर पहुँचकर बारात के डेरे पड़ गये। बारात का धौंसा सुनकर पृथ्वीराज ने एक हरकारे को धूरे का समाचार लाने के लिए भेजा। हरकारे ने जाकर वहाँ के छड़ीदारों से पूछा कि "यह पड़ाव किस राजा का है?" छड़ीदारों ने कहा—"मलखे के पुत्र जलशूर की बारात आई है। उनका विवाह पृथ्वीराज की पौत्री मन्दाकिनी के साथ होगा।" हरकारे ने जाकर सब हाल पृथ्वीराज से कहा। तब उन्होंने युद्ध की तैयारियाँ करवाना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने क़िले के बाहर सुरङ्गें खुदवाकर उनमें बारूद भरवा दी।

कहते हैं कि रात को बनाफरों के तोपख़ाने ने क़िले के पास जाकर ज्योंही तोपें छुड़ाना शुरू किया, त्योंही पृथ्वीराज ने सुरङ्ग में भरी हुई उस बारूद में आग लगवा दी। इससे महोबे की बहुत सी तोपें बरबाद हो गईं।

प्रातःकाल होते ही दोनों ओर के वीर एक दूसरे पर टूट पड़े। इस युद्ध में वीर इन्दल ने अपूर्व वीरता दिखाई। महोबेवालों ने चौहानों को मारकर भगा दिया और इन्दल ने पृथ्वीराज के पुत्र को क़ैद करवा लिया। यह सुनकर पृथ्वीराज ने चौंड़ा को युद्धभूमि में भेजा।

कहते हैं कि इन्दल की वीरता देखकर जलशूर ने भी आल्हा से युद्धभूमि में जाने की आज्ञा माँगी। उन्होंने तुरन्त आज्ञा दे दी। अब जलशूर ने रणभूमि में पहुँचकर भयङ्कर मार-काट मचा दी। उसकी वीरता देखकर चौंड़ा दङ्ग रह गया। जलशूर ने अपनी वीरता से चौंड़ा को बन्दी करके हाथों में हथकड़ियाँ और पैरों में बेड़ियाँ डाल दीं।

दूसरे दिन आल्हा ने युद्धभूमि में सुरङ्गें खुदवाकर उनमें बारूद भरवा दी और ज्योंही पृथ्वीराज की फ़ौज आई, सुरङ्गों में आग लगवा दी गई। इससे दिल्ली की फ़ौज वहीं जल-भुनकर रह गई।

यह देखकर पृथ्वीराज ने दूसरे दिन व्याह के लिए बुलावा भेज दिया। आल्हा, ऊदल, ब्रह्मा, इन्दल, ढेवा, लाखन, गजसिंह, मकरन्दी और जगनिक आदि तुरन्त तैयार हो, जलशूर को पालकी में बिठाकर, गढ़ की ओर चले।

महलों में पहुँचकर सब लोग अपने-अपने स्थान पर बैठे। विवाह की तैयारी हुई। मन्दाकिनी को लाकर मण्डप के नीचे बिठाया और विवाह-कार्य प्रारम्भ किया गया। कहते हैं कि दो भाँवरों के समय तो जलशूर के ऊपर आक्रमण किये गये, परन्तु तीसरी भाँवर के समय ऊदल के ललकारने पर किसी को तलवार चलाने का साहस न हुआ।

यह देखकर चौंड़ा ने पृथ्वीराज से कहा—"महोबियों के ऊपर छिपे हुए वीरों द्वारा आक्रमण करवा दिया जाय।" कहते हैं कि पृथ्वीराज ने चौंड़ा को ऐसा करने से रोकते हुए कहा—"रहने दो। इनके आगे कुछ न चलेगी। नाहक़ वीरों के सिर न कटवाओ।" पर चौंड़ा ने छिपे हुए वीरों को निकालकर उनसे धावा बुलवा दिया।

तुरन्त आल्हा-ऊदल आदि सभी उठ बैठे। ऊदल, इन्दल और लाखन ने सैकड़ों वीरों को काटकर फेंक दिया। कहते हैं कि ये आक्रमणकारी केवल सात सौ थे, जिनमें पाँच सौ खेत रहे और दो सौ भाग गये। चौंड़ा को आल्हा ने फिर क़ैद करवा लिया। बाक़ी काम निर्विघ्न समाप्त हुआ।

सब कृत्य समाप्त हो जाने पर आल्हा ने विदा के लिए पालकी मँगवाई। कहते हैं कि पृथ्वीराज ने पहले तो उस समय विदा करने से इनकार कर दिया और गौने में विदा करने को कहा, पर आल्हा के हठ करने और रानी अगमा के समझाने पर उन्होंने मन्दाकिनी की विदा कर दी। राजकुमारी मन्दाकिनी प्रसन्नता से महोबे को आई।

रानी मल्हना बहू को देख मलखे की याद करके पहले तो ख़ूब रोईं, परन्तु बाद में धैर्य रखकर चुप रहीं। महोबे आने के तीसरे दिन जलशूर ने अपनी स्त्री समेत सिरसा में जाकर सती-चौरा* पर पूजा की और फिर महोबे लौट आये। रानी देवै ने भी प्रसन्न होकर बहुत सा धन लुटाया। बहुत दिनों बाद महोबे में फिर ब्याह के समय के मङ्गलगीत सुनाई पड़े। महोबे की प्रजा सुखी और शान्त होने के कारण आनन्द मनाने लगी।

---

* इस चौरे को ऊदल ने बनवाया था। यहीं पर गजमा मलखे के साथ सती हुई थी।

भयंकर का विवाह

आल्हा के दो पुत्र थे। बड़े का नाम था इन्दलसिंह और छोटे का भयङ्करसिंह। सागर के महाराज मदनसिंह ने अपनी कन्या के विवाह का टीका महोबे में भयङ्करसिंह के लिए भेजा। टीके को देखकर परमाल और आल्हा ने सलाह नहीं दी; क्योंकि सागर बहुत दूर था। इसके सिवा वहाँ के राजा बड़े तान्त्रिक थे। टीके को फिरता हुआ देख ऊदल ने उसे स्वीकार कर लिया। इससे भयङ्कर को टीका चढ़ा दिया गया।

कहते हैं कि व्यौहारी राजाओं के पास इसकी सूचना भेजी गई, तो उन्होंने बारात में जाने से इनकार कर दिया। यह देखकर ऊदल असमञ्जस में पड़ गये। अब कोई चारा न देख वे अपने गुरुदेव अमरनाथजी* को लिवा लाये। गुरुदेव के आ जाने पर ऊदल केवल साठ वीरों को साथ लेकर बारात में गये।

रुपना बारी जब एपनवारी लेकर गया और उसने अपना वही नेग माँगा तब राजा मदन ने उसे बन्दर बनाकर भगा दिया। रुपना को बन्दर की शकल में देखकर योगीश्वर अमरनाथ हँस पड़े और बोले—"तूने अन्य राजाओं की भाँति यहाँ भी वही नेग माँगा होगा। अभी तक तुझे उचित दण्ड नहीं मिला था। एपनवारी ले जाने में तुझे गर्व भी होने लगा था। इसी से तुझे उचित दण्ड मिल गया है।" ऊदल के बहुत अनुनय-विनय करने पर गुरुदेव ने रुपना को फिर मनुष्य बना दिया।

इस घटना से ऊदल को बहुत क्रोध आया। उन्होंने तुरन्त मदनसिंह की गढ़ी पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में मदनसिंह की फ़ौज हार गई। इस पर मदनसिंह ने दूसरे दिन ऊदल के पास एक हरकारा उन्हें बुलाने के लिए भेजा। शीघ्र ही आल्हा-ऊदल आदि सभी लोग गढ़ी की ओर चले। कहते हैं कि राजा मदनसिंह ने पहले तो इनका ख़ूब सत्कार किया, परन्तु जब ये

---

* ये गोरखनाथ के शिष्यों में से थे।

निश्चिन्त होकर बैठ गये तब उसने तन्त्रबल से इन सबको मुर्ग़ा बना दिया। बनाफरों को मुर्ग़ा बना देख योगीश्वर अमरनाथ ने उन सबको फिर आदमी के रूप में बदल दिया। तब गुरु अमरनाथ को पहचानकर मदनसिंह उनके पैरों पर गिर पड़ा। फिर उसने शान्ति से अपनी कन्या चम्पाकली का व्याह भयङ्कर के साथ कर दिया।

व्याह हो जाने पर गुरुदेव अपने स्थान को चले गये और आल्हा-ऊदल महोबे को लौटे।

माहिल ने जब सुना कि बनाफर केवल साठ वीरों को लेकर बारात में गये हैं, तब उसने राजा हीरासिंह से आकर कहा—"महाराज! आल्हा-ऊदल केवल साठ वीरों के साथ लौट रहे हैं। उनके साथ एक बहुत ही सुन्दरी है और बेहद धन भी है। उन्हें लूटने से तुम्हें बहुत फ़ायदा होगा।" यह सुनते ही हीरासिंह के मुँह में पानी भर आया। उसने चटपट सेना लेकर आल्हा-ऊदल को जा घेरा।

फिर क्या था, घमासान युद्ध छिड़ गया। कहते हैं कि चार घंटे के लगातार युद्ध में बनाफरों के साथी सभी योद्धा मारे गये। फिर हीरासिंह पालकी छीनने के लिए ज्योंही आगे बढ़ा, त्योंही राजकुमारी चम्पाकली ने अपने तन्त्रबल से उसे तथा उसकी सेना को कुछ समय के लिए अचेत सा कर दिया। इसी समय आल्हा-ऊदल अपनी पुत्र-वधू की पालकी को लेकर आगे बढ़ गये।

महोबे में चम्पाकली की पालकी पहुँचने पर जब मल्हना आदि ने बहू का मुखड़ा देखा तो, वे उसके लावण्य और सौन्दर्य को देखकर चकित रह गईं। यद्यपि महोबे में सभी रानियाँ अत्यन्त सुन्दरी थीं तो भी वे चम्पाकली के सौन्दर्य के आगे न जँचती थीं।

कहते हैं कि बारात के लौटने पर इन्दल की स्त्री प्रेमा ने पति से कहा— "जब आप बारात में गये थे, तब राजा देवपाल ने एक दासी भेजकर मेरे पास यह ख़बर भेजी थी कि बनाफर लोग तो उस तन्त्र-प्रधान राज्य से लौटकर आ नहीं सकते। इससे तुम हमारे रनिवास में आकर सुख से रहो।"

यह सुनते ही इन्दल के होठ क्रोध से फड़कने लगे। उन्होंने जाकर सब हाल ऊदल से कहा। फिर क्या था, तुरन्त सेना सजाई गई और देवगढ़ी की ओर कूच किया गया।

देवपाल ने लड़ाई का धौंसा सुनकर मोर्चाबन्दी करवा दी। बस घमासान युद्ध शुरू हो गया। कहते हैं कि चार घण्टे तक खूब युद्ध हुआ। फिर इन्दल और देवपाल का द्वन्द्व-युद्ध हुआ। इसमें देवपाल मारा गया और देवगढ़ी महोबे के राज्य में मिला ली गई।

देवपाल के मारे जाने से इन्दल की रानी प्रेमावती बहुत प्रसन्न हुई।

महोबे का सर्वनाश—बेला के गौने की लड़ाइयाँ

संसार में किसी के भी दिन सदा एक से नहीं बीतते। संसार में जो फूला-फला है वह एक न एक दिन ज़रूर मुरझा जायगा और जो नामी-गरामी है, एक दिन उसको भी नीचा देखना पड़ेगा। विधाता का यही विधान है। भूखों मरता हुआ आदमी राजा होता है और राजा भूखों मरने लगता है। यदि ऐसा न हो तो संसार में अशान्ति फैल जाय—विधि का कार्यक्रम भली भाँति न चल सके। यद्यपि किसी बने हुए काम को बिगाड़ने स्वयं ब्रह्मा नहीं आते तो भी बिगाड़ने के साधन प्रस्तुत हो जाते हैं।

आल्हा और ऊदल के साथ-साथ महोबे की यशःपताका भी निर्मल आकाश में फहरा रही थी। यह बात माहिल के हृदय में सदा काँटे की तरह कसका करती थी। इससे वह आल्हा और ऊदल के नाश के लिए युक्तियाँ सोचा करता था। चुग़ली करने तथा बनाफरों और परमाल का बुरा चेतने की उसकी बान सी पड़ गई थी। इससे जब उसने देखा कि आल्हा-ऊदल आजकल शान्ति और सुख से हैं, तब उनके सुख में बाधा डालने की एक युक्ति सोचकर वह महोबे पहुँचा।

दरबार में बैठने के थोड़ी देर बाद माहिल ने परमाल से कहा—"जीजा! ईश्वर की दया से आल्हा-ऊदल आ गये हैं और कन्नौज के युवराज लाखन* भी आजकल यहीं हैं। इससे अब आप दिल्ली से अपनी बहू का गौना करवा लीजिए और बीड़ा रखवाकर देख लीजिए कि इस काम को पूर्ण करने का किसमें साहस है। परमाल ने तुरन्त दरबार में बीड़ा रखवा दिया। उस बीड़े को देखकर सबके होश उड़ गये। तब ऊदल ने उस बीड़े को उठा लिया और कहा—

---

* अमरगढ़ के विवाह के कुछ दिनों बाद आल्हा ने लाखन को अपने यहाँ बुला लिया था। लाखन और ऊदल में घनिष्ठता हो गई थी। अतः वे दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे।

"हमीं ने दिल्ली में जाकर व्याह करवाया था और हमीं गौना करा लावेंगे।" यह देखकर माहिल ने ब्रह्मा से कहा—"बेटा, पृथ्वीराज बनाफरों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यदि ये लोग वहाँ जायँगे तो कुशल नहीं। इसलिए तुम ऊदल से यह बीड़ा छीन लो और तुम्हीं जाकर विदा करवा लाओ। यदि तुम्हारे साथ बनाफर न होंगे तो पृथ्वीराज चुपचाप विदा कर देंगे।" ब्रह्मा उसकी बातों में आ गये। उन्होंने तुरन्त झपटकर ऊदल के हाथ से बीड़ा छीन लिया और कहा—"आप दिल्ली न जाने पावेंगे। हम स्वयं विदा करा लावेंगे।" आल्हा और ऊदल ने इस व्यवहार में अपना अपमान समझा और वे वहाँ से उठकर चले गये।

ब्रह्मा ने जब अपना लश्कर सजवाकर चलने की सोची तब मल्हना ने लाखन को बुलाकर रोकर कहा—"बेटा! आल्हा-ऊदल तो ब्रह्मा के इस दुर्व्यवहार के कारण दिल्ली न जायँगे। अब तुम चले जाओ तो अच्छा हो; क्योंकि मुझे पृथ्वीराज तथा माहिल का विश्वास नहीं।" मल्हना की बातें सुनकर लाखन पिघल गये। उन्होंने तुरन्त अपनी सेना सजवाई।

यह खबर पाकर ऊदल ने लाखन को दिल्ली जाने से रोक दिया। मीरा सैयद ने भी यही ठीक समझा। अन्त में अकेले ब्रह्मा माहिल को साथ लेकर दिल्ली को चले। उन्होंने दिल्ली के धूरे पर पहुँचकर डेरे डाल दिये और सूचना देने के लिए माहिल को पृथ्वीराज के पास भेजा। कुछ देर बाद माहिल ने लौटकर कहा—"पृथ्वीराज कहते हैं कि युद्ध के बिना हम बेटी की विदा न करेंगे।" यह सुनकर ब्रह्मा ने एक पत्र (विदा कर देने के लिए) पृथ्वीराज के पास भेजा। उस पत्र के जबाब में पृथ्वीराज ने अपने पुत्र ताहर को युद्ध के लिए भेज दिया। ब्रह्मा ने दिल्ली की सेना को आते देखा तो अपनी सेना सजवाकर मोर्चाबन्दी करवा ली। दोनों सेनाओं में जब थोड़ा ही अन्तर रह गया, तब घमासान युद्ध होने लगा। महोबिया वीर डटकर मार-काट करने लगे। इधर वीर ब्रह्मजीत ने अपने छोटे साले गोपी को युद्धभूमि में गिरा दिया। इसके बाद वीर टोडरमल भी ब्रह्मा के हाथों मारा गया। ताहर ने अपने भाई के तथा टोडर के मरने की

ख़बर सुनी तो वह अपने मोर्चे पर से हटकर ब्रह्मा के मोर्चे पर आ गया। कहते हैं कि ताहर से ब्रह्मा का बड़ा विकट युद्ध हुआ। अन्त में ताहर वहाँ से हट गया। इसके बाद चौंड़ा और धाँधू दोनों ने ब्रह्मा का सामना किया, परन्तु वे दोनों भी भाग निकले। इस प्रकार ब्रह्मा की जीत हुई और उसने विजय का डङ्का बजवाया।

ताहर के मुँह से अपनी सेना की हार और गोपी* के मारे जाने की बुरी ख़बर सुनकर पृथ्वीराज बहुत दुःखी हुए। इस पर माहिल ने कहा—"महाराज! आप ताहर को स्त्री के वेश में एक डोले में बिठा दीजिए और उस डोले को ब्रह्मा के पास यह कहकर भेज दीजिए कि यह बेला का डोला है। ब्रह्मा जब ताहर को स्त्री समझकर छुएँ, तब ताहर ब्रह्मा को मार दें अथवा क़ैद कर लें।" यह सुनकर ताहर ने कहा—"मैं क्षत्रिय हूँ। यह काम क्षत्रियों को शोभा नहीं देता।" इस पर चौंड़ा ने कहा—"आप न जायँगे तो मैं जाऊँगा।" यह कह वह तुरन्त स्त्री का वेष बनाकर पालकी में जा बैठा। फिर पृथ्वीराज ने डोले के साथ सेना तथा ताहर को भेजा।

ब्रह्मा ने जब सुना कि पृथ्वीराज ने आगे युद्ध करना ठीक न समझकर विदा कर दी है तब वे बहुत प्रसन्न हुए और ताहर आदि का स्वागत करने के लिए आगे बढ़े। डोले को देखकर ब्रह्मा हरनागर से उतर पड़े और ज्योंही ताहर से मिलने को बढ़े त्योंही चौंड़ा ने बाहर निकलकर ब्रह्मा की छाती में कटार भोंक दी, साथ ही ताहर ने ब्रह्मा को एक बाण मारा और साँग भी फेंकी। इस प्रकार तीन वार लगने से ब्रह्मा मूर्च्छित होकर गिर पड़े। महोबे की फ़ौज में हाहाकार मच गया। कहते हैं कि इसी समय धाँधू ने आकर ताहर से कहा—"नरपिशाच! तूने यह क्या किया? तूने अपनी बहन को विधवा बनाकर कौन सा पद पाया? क्या तुझे विश्वासघात करने में लज्जा नहीं आई? जो तुझे वीरता ही दिखानी थी तो उस दिन क्या मर गया था, जिस दिन ब्रह्मा ज़बर्दस्ती

* पृथ्वीराज के सात पुत्र थे, जिनमें से पाँच तो सिरसा के युद्ध तथा कीरतसागर के युद्ध में मर चुके थे और छठा गोपी यहाँ मारा गया। अब केवल ताहर बचा।

बेला को व्याहकर ले गये थे ? अब याद रख, इस पाप से तेरे वंश का नाश हो जायगा।"

कहते हैं कि जब यह ख़बर दिल्ली के रनिवास में पहुँची तब वहाँ भी हाहाकार मच गया। नई-नवेली बेला को विधवा देखकर दिल्ली में कुहराम मच गया। जगनिक ने ब्रह्मा के घावों की मरहमपट्टी की और एक हरकारे को महोवे भेजा।

यह ख़बर जब महोवे में पहुँची होगी, तब रानी मल्हना और बूढ़े राजा की क्या दशा हुई होगी ? वहाँ भी हाहाकार मच गया। राज-पताका नीचे गिरा दी गई। महोवे में जगह-जगह शोक-सूचक काले झण्डे लटकते दिखाई पड़ने लगे। रनिवास में हृदय-विदारी रुदन होने लगा।

इसके दूसरे दिन दिल्ली के एक धावन ने आकर आल्हा को एक पत्र दिया। वह पत्र बेला ने भेजा था। उसमें लिखा था—"आपने महाराज परमाल का नमक खाया है। इससे आप दिल्ली आकर ब्रह्मा का बदला लें और मेरी विदा करवा लें।" यह पत्र पाकर ऊदल और लाखन ने युद्ध के लिए तैयारियाँ कीं। चटपट सैनिक लोग तैयार होकर खड़े हो गये। फिर आल्हा, ऊदल, लाखन, इन्दल, ढेवा, धनुआँ, लला और सैयद सभी तैयार होकर आये। कूच का डङ्का बजा और सब फ़ौज दिल्ली की ओर चली।

दिल्ली से दो कोस इधर ही आल्हा के डेरे पड़ गये। फिर ऊदल, लाखन, सैयद और धनुआ वेष बदलकर कन्नौज की फ़ौज समेत आगे बढ़े। जब ये लोग दिल्ली के सरकारी बाग़ में पहुँचे तब इन्हें चौंड़ा मिला। उसने ऊदल से पूछा—"आप कौन हैं और यहाँ क्यों आये हैं ?" ऊदल ने कहा—"हमारा नाम हरीसिंह और इनका (लाखन का) नाम वीरसिंह है। हम गाँजर छोड़कर यहाँ नौकरी की तलाश में आये हैं।" यह सुनकर चौंड़ा उन्हें दरबार में ले गया। उसके कहने से पृथ्वीराज ने उन दोनों को सेना-समेत नौकर रख लिया और उन्हें राजकुमारी बेला के महल की रक्षा करने पर तैनात किया। ऊदल और लाखन बेला के महल की ओरवाले फाटक* पर पहुँच गये। वहाँ जाकर ये लोग चौपड़ खेलने लगे।

* पृथ्वीराज के क़िले में ६४ फाटक थे।

पासा फेकते समय वे कहते थे कि "यदि बेला रानी सती हों तो हमारा ही दाँव पड़े।" यह सुनकर बेला बहुत नाराज़ हुई। उसने उन दोनों को बुला भेजा। जब वह इन लोगों को डाँटने लगी तब ऊदल ने उसे अपना असली परिचय दिया। इस पर वह बहुत प्रसन्न हुई और बोली—"अच्छा! तो तुम पहले अपने आने की सूचना पृथ्वीराज को दो; तब तुम्हारे साथ चलकर मैं अपने पति के दर्शन करूँगी।" इस पर ऊदल अपना बनावटी वेष छोड़ बैंदुला पर चढ़कर दरबार में पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने अशर्फ़ियों की थैलियाँ पृथ्वीराज के सामने फेंक दीं और कहा—"लीजिए, नेगियों के लिए परमाल ने ये भेजी हैं। अब मैं विदा करवाकर ही जाऊँगा।" यह सुनकर पृथ्वीराज ने उनसे कहा—"घोड़े पर से उतरकर आसन पर बैठो और महोबे के समाचार कहो।" फिर पृथ्वीराज ने बहुमूल्य कुण्डलों की एक जोड़ी देते हुए कहा—"लीजिए, हमारी तरफ़ से आपकी यह भेंट है।" ऊदल उन कुण्डलों को लेकर दरबार से चले आये।

इधर ऊदल के चले जाने पर बेला अपनी माँ के पास अपने गहने लेने गई। कहते हैं कि इसी समय ताहर की स्त्री ने उससे कहा—"राजकुमारी! आपने आज तक न तो अपने पति का मुख ही देखा है और न अपनी ससुराल ही। इससे अब आप अपनी बाक़ी ज़िन्दगी शान्तिपूर्वक यहीं बितावें।" इस पर बेला ने कहा—"तुम्हारे पति ताहर मुझ पर रीझ गये हैं, तभी तो उन्होंने मेरे निरपराध पति को धोखे से मारा है। अब मैं इस घर में पल भर भी नहीं रह सकती। याद रखना; इसके बदले में दिल्ली के क्षत्रियों की सभी क्षत्राणियाँ विधवा होंगी और जिस प्रकार मल्हना पुत्रहीना की गई हैं उसी प्रकार रानी अगमा का यह बचा हुआ पुत्र ताहर भी मारा जायगा।" अब बेला अपने महल में चली गई। वहाँ सब शृङ्गार करके वह पालकी में बैठ गई। वह पालकी लाखन की संरक्षकता में उसी दम ब्रह्मा के डेरों की ओर चल पड़ी। पालकी जब योगमाया देवी के मन्दिर के पास आई तब देवी का पूजन करने के लिए बेला मन्दिर में गई। वहाँ उसने, यह सोचकर कि लाखन कहीं संयुक्ता के बदले में मेरा डोला क़न्नौज न ले जावे, मालिन से कहा—

"तू जाकर अभी ताहर को सूचना दे कि बेला का डोला कन्नौज के युवराज लिये जाते हैं।" इस पर मालिन क़िले की ओर गई और बेला पालकी में आकर बैठ गई। पालकी फिर आगे बढ़ चली।

ताहर ने ख़बर पाते ही दो हज़ार योद्धाओं समेत वहाँ आकर लाखन को घेर लिया। अब क्या था? दोनों ओर से तलवारें चलने लगीं और थोड़ी ही देर में युद्ध ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। यह युद्ध बहुत देर तक हुआ। अन्त में लाखन की बेंड़ी मार से बिलबिलाकर ताहर का घोड़ा भाग निकला। लाखन विजय का डङ्का बजाते हुए आगे बढ़े। थोड़ी देर में चौंड़ा ने आकर उन पर आक्रमण किया। शीघ्र ही कन्नौजिये वीर प्राणों की बाज़ी लगाकर शत्रु पर टूट पड़े। कहते हैं कि कई बार चौंड़ा ने उस पालकी को कन्नौजियों से छीना परन्तु वह हर बार उनके हाथ से निकल गई। अन्त में जब चौंड़ा का हाथी मारा गया तब वह रणक्षेत्र छोड़कर भागा और लाखन विजय का डङ्का बजाते हुए आगे बढ़े।

अपनी हार पर हार होने के समाचार सुनकर अब पृथ्वीराज स्वयं सेना सहित लाखन का सामना करने को बढ़े। यह युद्ध पिछले युद्धों से बहुत भयानक हुआ। हज़ारों वीर खेत रहे। चार घंटे तक बराबर वहीं युद्ध होता रहा। बेला की पालकी कभी तो पृथ्वीराज की सेना में दिखाई पड़ती थी और कभी लाखन की सेना में। धनुआँ तेली ने धाँधू को मार भगाया और लाखन ने चौंड़ा तथा ताहर को। यह देखकर पृथ्वीराज ने तुरन्त अपनी लाल कमान उठाई। उन्होंने ज्योंही अपने तरकस की ओर हाथ बढ़ाया त्योंही ऊदल ने आकर उन्हें रोकते हुए कहा—"महाराज! आपको यह युद्ध शोभा नहीं देता। लड़कों के खेल में बुड्ढों का न बोलना ही उचित है। आपकी बेटी का डोला आपके घायल दामाद के डेरों में ही जा रहा है; दूसरी जगह नहीं। हाँ, यदि आप इतने कठोर हों कि मरते समय भी पति का मुख बेला को न देखने दें तो हमसे साफ़-साफ़ कह दीजिए। महाराज, अपनी बेटी और बहुओं को विधवा करवाकर भी आपको

लज्जा नहीं आती ! वे विधवा होकर सती हों या दुःख का जीवन वितावें; और आप अपने रनिवास में बैठकर भोग-विलास करें—क्या आपका यही धर्म है ? महाराज ! बहुत हुआ; अब बस कीजिए। अन्याय और अधर्म की भी कोई सीमा होती है ?"

ऊदल के इन समयोचित और मर्मस्पर्शी वचनों को सुनकर पृथ्वीराज बहुत लज्जित हुए और सेना समेत दिल्ली को लौट गये।

अब ऊदल ने बेला के डोले को ले जाकर ब्रह्मा के डेरे में रखवा दिया। ब्रह्मा इस समय घावों की पीड़ा से अचेत पड़े थे।

डेरों में बेला का डोला पहुँच जाने पर माहिल भेद लेने को आया। उसको आते देख इन्दल ने ऊदल से कहा—"चाचा ! समस्त अनर्थों की जड़ यही दुष्ट है। परमाल की उदार नीति से ही इसका हौसला बढ़ गया है; परन्तु अब इसकी चालबाज़ियाँ सहन नहीं होतीं। यदि आप कहें तो मैं आज इसे ठीक कर दूँ।" ऊदल ने कहा—"बात तो ठीक है; परन्तु इसे मारना परमाल की आज्ञा का उल्लंघन करना है। इससे अच्छा यह होगा कि यह क़ैद कर लिया जाय और इसकी गति बन्द कर दी जाय।" अब क्या था ! इन्दल तुरन्त अपनी सेना लेकर आगे बढ़े। उनका मतलब समझकर माहिल ने डेरों का रास्ता छोड़कर उरई का मार्ग लिया। यह देख ज्योंही इन्दल ने उसे पकड़ने के लिए अपना घोड़ा उस ओर बढ़ाया, त्योंही माहिल प्राण लेकर भागा।

उरई पहुँचकर माहिल सेना समेत इन्दल का सामना करने को तुरन्त लौटा। युद्ध में महोबे की भारी फ़ौज ने उरई की सेना को तहस-नहस कर दिया। माहिल पकड़ा गया और उसकी गढ़ी की ईंट-ईंट खुदवाकर फेंकवा दी गई। फिर माहिल की आधी मूँछ और दाढ़ी मुड़वाकर काला मुख किया गया और गदहे पर बैठाकर वह अपने समस्त राज्य में घुमाया गया। अन्त में हाथ-पैर बँधवाकर उसे एक गहरे ख़न्दक़ में डाल दिया गया।

राजकुमारी ब्यलमदेवी और राजकुमार ताहर का युद्ध

ब्रह्मा के डेरे में पहुँचने पर राजकुमारी बेला ने अपने पति को अचेत पड़ा पाया। यह देखकर उसने गुलाबजल और चन्दन-युक्त जल से पंखे को तर किया। उसी पंखे से वह ब्रह्मा के मुख पर हवा करने लगी। शीतल सुगन्धित जल के छींटे लगने से ब्रह्मा ने आँखें खोलीं और बेला को देखकर ऊदल से पूछा—"भैया! यह स्त्री कौन है?" ऊदल कुछ कहना ही चाहते थे कि बेला ने हाथ जोड़कर कहा—"प्राणनाथ! मैं अभागिनी हूँ। मेरा ही नाम ब्यलम दे है और मैं अभागिनी ही आपके चरणों की चेरी हूँ।" यह सुनते ही ब्रह्मा ने नेत्र बन्द कर लिये और ऊदल से कहा—"साँप के बच्चे भी साँप ही हुआ करते हैं। यह विश्वासघातक की बेटी है; अतः यह भी वैसी ही होगी। इसे अभी यहाँ से निकाल दो।" यह सुनते ही बेला को बेहद दुःख हुआ। वह ब्रह्मा के चरण पकड़कर बोली—"मेरी डूबती हुई नैया के सहारे आप मुझ अभागिनी से ऐसी आशङ्का न करें। मैं वही दुखिया हूँ। मेरा सर्वस्व लुट रहा है। जब तक आपके शरीर में प्राण है, तब तक आपको देखकर मैं अपने को सौभाग्यवती समझती हूँ। ऐसी बातें कहकर मुझे और दुखी न करें। इस पर भी यदि आपको विश्वास न हो तो आप जैसी चाहें वैसी मेरी परीक्षा कर लें। आप जो कहेंगे मैं वही करके दिखा दूँगी।" यह सुनकर ब्रह्मा की आँखों से दो बूँद आँसू निकल पड़े। अब उन्होंने कहा—"राजकुमारी! तुम्हारे साथ विवाह करके मैंने बड़ा अन्याय किया। मेरे कारण तुम संसार का कुछ भी सुख न देख सकीं। इसका मुझे बड़ा खेद है। अच्छा, अब तुम हमारी आत्मा को शान्ति देना चाहती हो तो रणभूमि में जाकर अपने भाई ताहर का सिर काट लाओ।" बेला ने कहा—"नाथ! यह कोई बड़ी

बात नहीं। मैं वीर-पुत्री और वीर-पत्नी हूँ। मैं आपकी आज्ञा का पालन अवश्य करूँगी; परन्तु मैं इससे पहले अपनी ससुराल महोबे को देखना चाहती हूँ। आप मेरे साथ आल्हा को भेज दीजिए।" इस पर ब्रह्मा ने आल्हा से कहा—"आप इन्हें महोबा दिखाकर जल्दी लौटा लावें।" अब बेला को पालकी में बिठाकर आल्हा अपनी फ़ौज के साथ महोबे की ओर चल दिये।

कहते हैं, इसकी ख़बर पाकर पृथ्वीराज ने पहले चौंड़ा को भेजा; परन्तु वह आल्हा और ऊदल के आगे न ठहर सका और लौट आया। अन्त में ख़ुद पृथ्वीराज ने फ़ौज लेकर बेला के डोले को आ घेरा। कहते हैं कि इस पर आल्हा ने पृथ्वीराज को बहुत ऊँच-नीच समझाकर शान्त कर दिया तब वे सेना समेत लौट गये। अब बेला का डोला महोबे की ओर बेधड़क चला।

महोबे में बेला के आने की ख़बर पहुँची तो रानी मल्हना और अन्य रानियों ने द्वार पर आकर बहू को आदर से उतारा। मल्हना ने बहू का मुख देखकर अपना नौलखा हार उसको पहनाया। फिर आल्हा ने युद्ध में ब्रह्मा के घायल होने का वृत्तान्त कहा। इससे परमाल और रानियाँ रोने लगीं।

बेला ने घूम-फिरकर महोबे का क़िला देखा और कीरतसागर तथा ब्रह्मा की फुलवगिया भी देखी। ब्रह्मा के महल देखकर बेला ने अपना सिर दीवाल पर दे मारा। वह अनेक प्रकार से विलाप करके रोई।

सारा नगर और क़िला देख लेने पर बेला अपने सास-ससुर से आज्ञा लेकर फिर दिल्ली की ओर चल पड़ी। दिल्ली लौटने के पहले मल्हना और परमाल ने बहुत समझा-बुझाकर रोकना चाहा, किन्तु वह न रुकी। रास्ते में उसने सिरसा के सतीचौरा का भी पूजन किया। ब्रह्मा के डेरे पर पहुँचकर बेला ने अपने पति के सभी वस्त्र पहने, उनकी बैंजनी पाग बाँधी और ब्रह्मा के सभी हथियार बाँधे। फिर वह हरनागर पर सवार हुई। बेला को तैयार देखकर तुरन्त महोबिये और कन्नौजिये वीर उसके साथ जाने को तैयार हो गये। उन सैनिकों के सिवा बेला ने आल्हा और ऊदल आदि में से किसी को अपने साथ न लिया। रणभूमि में पहुँचकर उसने पृथ्वीराज से कहला भेजा—

यद्यपि आपने हमारी स्त्री की विदा कर दी है, तथापि आपने दहेज में हमें कुछ भी नहीं दिया। आपने विवाह में जितना दहेज दिया है, उससे आधा दहेज इसी दम हमारे पास भेजवा दीजिए।" पृथ्वीराज ने ब्रह्मा के वेष में सजी हुई बेला का यह सन्देश पाया, तो उन्होंने तुरन्त ताहर को मैदान में विशाल सेना के साथ भेजा।

ताहर ने वहाँ आकर बेला से कहा—"ब्रह्मा! पिछले घाव अच्छे न होने पर भी तुम यहाँ प्राण देने आये हो!" बेला ने उत्तर दिया—"ताहर! मुझे तेरी बहन बेला ने भेजा है। इससे मैं तो दहेज लेकर ही लौटूँगा।" यह सुनते ही ताहर ने तोपख़ाने में पलीता लगवा दिया। अब दोनों ओर से भयङ्कर गर्जन करती हुई तोपें आग उगलने लगीं।

तोपों के युद्ध के बाद महोबिये और कन्नौजिये वीर हथेली पर प्राण रखकर टूट पड़े। बेला उस वीर-वेश में साक्षात् चण्डी-सी जान पड़ती थी। उसके भीषण और अचूक प्रहारों से दिल्ली के चौहान वीरों के पैर उखड़ गये। यह देख ताहर ने उसके सामने आ 'ब्रह्मा! सावधान' यह कहकर तुरन्त तलवार का वार किया। कहते हैं कि इस वार को रोकने के लिए बेला ने ज्योंही ढाल बढ़ाई त्योंही तलवार उसके जामा की आस्तीन में लगी। आस्तीन फट जाने से बेला के हाथ की लाल और हरी चूड़ियाँ चमकने लगीं। यह देखकर चौंड़ा ने ताहर से कहा—"भैया! यह ब्रह्मा नहीं; यह तो बेला है।" यह देख-सुनकर ताहर हक्का-बक्का हो गया। इसी समय उसको दुचित्ता देखकर बेला ने तलवार से उसका सिर काट लिया। ताहर के मरते ही चौहान-सेना भाग खड़ी हुई

अपने सर्वनाश की ख़बर पाकर पृथ्वीराज और उनकी रानी अगमा ने सिर पटक दिया और दिल्ली में हाय-हाय मच गई। पृथ्वीराज के वंश का नाश हो गया। ताहर की स्त्री पति के साथ सती हो गई।

———

चन्दनबगिया और चन्दन खम्भा की लड़ाई

भाई का कटा हुआ सिर लेकर चण्डीरूपिणी बेला ब्रह्मा के पास पहुँची और बोली—"प्राणनाथ! लीजिए; मैंने आपकी आज्ञा का पालन कर दिया।" यह सुनते ही ब्रह्मा ने आँखें खोल दीं और उस कटे हुए सिर की ओर एक बार देख बेला की ओर देखा और कहा—"मैं अब तुमसे प्रसन्न हूँ। मेरी आत्मा को अब किसी प्रकार का क्लेश या चिन्ता नहीं। राजकुमारी! अब तुम्हें जहाँ सुख मिले वहीं रहो; चाहे महोबे में चाहे दिल्ली में। चाहो तो सती भी हो सकती हो।" इसके बाद ब्रह्मा ने कृतज्ञता भरी आँखों से लाखन, ऊदल और आल्हा की ओर देखा। फिर उन्होंने बेला की ओर दुबारा देखकर सदा के लिए आँखें बन्द कर लीं।

अब वहाँ पर हाहाकार मच गया। आल्हा, ऊदल, लाखन और ढेवा सभी धाड़ मारकर रोने लगे। बेला भी विलाप करके रोने लगी।

थोड़ी देर में बेला ने ऊदल से कहा—"ऊदल! तुम दिल्ली की चन्दन-बगिया में जाकर चन्दन काट लाओ। मैं प्राणनाथ के साथ सती होऊँगी।"

कहते हैं कि पहले तो सभी ने बेला को सती होने से रोका, परन्तु जब वह अपने सत्य पर दृढ़ रही, तब ऊदल दिल्ली की ओर गये।

बढ़इयों और फ़ौज के साथ वहाँ जाकर ऊदल ने चन्दन कटवाया और उसे चिरवाकर छकड़ों में भरवा दिया। यह ख़बर पाकर पृथ्वीराज ने चौंड़ा और धाँधू को वह चन्दन छीन लेने के लिए भेजा। चौंड़ा ने आकर ऊदल और उन छकड़ों को रास्ते में घेर लिया तब वहाँ भीषण युद्ध होने लगा। कहते हैं कि लगभग तीन घण्टे तक युद्ध हुआ। इसमें दोनों ओर के बड़े-बड़े वीर मारे गये। लाखन के सामन्त राजा हरीसिंह, वीरसिंह (गाँजर के राजा) मारे गये और दिल्ली के सामन्त राजा विजयसिंह और हीरामणि भी खेत रहे। इनके सिवा और भी हज़ारों सैनिक मारे गये। अन्त में विजय-लक्ष्मी

ऊदल के हाथ लगी। वे उन छकड़ों को लेकर अपने डेरों में आये और चौंड़ा तथा धाँधू पराजित होकर लौट गये।

वेला ने उस चन्दन को देखकर कहा—"यह चन्दन हरा होने के कारण जलने के काम का नहीं।" थोड़ी देर के बाद उसने सोचकर ऊदल से कहा—"हमारे पिता के दरबार में चन्दन के बारह खम्भे हैं। तुम जाकर उन्हीं खम्भों को कटवा लाओ।" यह सुनकर ऊदल ने कहा—"महारानी! वहाँ जाकर जीवित लौटना और उन खम्भों को ले आना बहुत ही कठिन है। आप आज्ञा दें तो मैं महोवे की चन्दनबगिया से सूखा चन्दन ले आऊँ।" वेला लाल-लाल आँखें करके बोली—"ऊदल! मैं तुम्हारे मतलब को समझ गई हूँ। तुम हमारे प्राणनाथ को मरवाकर महोवे पर एकाधिपत्य करना चाहते हो। हमारे बाद तुम वहाँ सुख से रहना चाहते हो। इससे मैं शाप देती हूँ कि महोवे में जितनी भी सधवाएँ हैं वे शीघ्र ही विधवा हों तथा दिल्ली में भी घर-घर विधवा क्षत्राणियाँ देख पड़ें।" अब उसने कहा—"यदि तुम वे खम्भे न लाओगे तो मैं अपने सत्य के बल से ही जल जाऊँगी।" यह सुनकर लाखन ने कहा—"ऊदल! क्षत्रिय होकर आज तुमने प्राणों के प्रति मोह दिखाया है। चलो, हम और तुम चलकर दिल्लीश्वर का मद चूर्ण करें।"

दिल्ली के क़िले में हाहाकार और हृदयविदारी रोदन हो रहा था। पृथ्वीराज एकान्त में बैठे अपने किये पर पछता रहे थे। इसी समय एक चाकर ने आकर कहा—"अन्नदाता! ऊदल और लाखन ने दरबार में घुसकर चन्दन के खम्भे उखड़वा लिये हैं और उन्हें छकड़ों पर लदवाकर लिये जा रहे हैं।" अपने दरबार की दुर्दशा का विचार करके पृथ्वीराज को फिर क्रोध आ गया। उन्होंने तुरन्त वीर भुगन्ता को सेना सहित उनको रोकने को भेजा।

वीर भुगन्ता के पहुँचते ही वहाँ तलवारें चलने लगीं। तुरन्त ही लाश पर लाश गिरने लगी। युद्ध में रूपा ठाकुर व राजा अङ्गद ने वीरगति पाई और महोबियों में से केवल परशू राजा खेत रहे। भुगन्ता के साथी भाग निकले। कहते हैं कि यहाँ से बढ़कर लाखन ने अगमा के महलों को जा घेरा और ऊदल से

कहा—"आज मैं संयोगिन के बदले में अगमा का डोला लेकर जाऊँगा।" यह सुनकर ऊदल हक्के-वक्के से हो गये। यह ख़बर पाकर अगमा ने ऊदल को बुला भेजा। उन्होंने जाकर अगमा से कहा—"मौसी! लाखन किसी के समझाने से नहीं मान सकते। अतएव दासी को डोले में बैठाकर बाहर भेज दें तो हम लाखन को समझाकर वह डोला भी लौटवा देंगे।" यह सुनते ही अगमा ने दासी का डोला ऊदल के साथ भेज दिया। लाखन ने जब यह सुना कि यही अगमा का डोला है तब वे बड़े प्रसन्न हुए। इस समय ऊदल ने लाखन को बहुत ऊँच-नीच समझाया। इससे वे मान गये। उन्होंने वह डोला अपनी तरफ़ से लौटा दिया।

यह ख़बर मिलने पर पृथ्वीराज को और भी क्रोध आया। उन्होंने चौंड़ा और धाँधू को साथ लेकर ऊदल तथा लाखन को रास्ते ही में आ घेरा। फिर क्या था, दोनों ओर से छपक-छपक करती हुई तलवारें चलने लगीं। धाँधू ने धनुआँ और लला तमोली को मार गिराया। ऊदल ने पृथ्वीराज के सामन्त राजा देवीसिंह को तलवार के घाट उतारा। जब लाखन ने धनुआँ तेली और लला तमोली के जूझने की ख़बर पाई, तब उन्होंने क्रुद्ध होकर अपनी भुरुही हथिनी को साँकल दे दी। वह साँकल को घुमाने लगी। उस साँकल की लपेट में हज़ारों वीर मारे गये और हज़ारों घायल हुए। यह देखकर चौहान लोग भागने लगे।

इसी समय ऊदल ने पृथ्वीराज के पास जाकर कहा—"महाराज! इन खम्भों से हमें कोई मतलब नहीं। आपकी पुत्री बेला ही इनकी चिता बनाकर सती होगी। हम लोग उसी के आदेश से यहाँ आये थे। हमने उसके पति का नमक खाया है। अब चाहे हमारे मांस के छिछड़े-छिछड़े ही क्यों न कर दिये जायँ पर इन खम्भों से सती की चिता ज़रूर बनाई जायगी।"

इस पर पृथ्वीराज कुछ सोच-विचार कर दिल्ली को चले गये। ऊदल और लाखन उन खम्भों को लेकर डेरों में आये।

बनाफरों का सर्वनाश

पाठको ! इस अध्याय में चरितनायक आल्हा और ऊदल की महा-यात्रा का वर्णन है। इसका स्मरण करने से ही दुःख होता है तो पढ़ने की कौन कहे। परन्तु क्या किया जाय ! संसार में जो आता है, वह एक दिन संसार से हाथ पसारे चला भी जाता है। हाँ, उस मनुष्य के भले-बुरे कर्म सदा जीवित रहते हैं। हमारे चरितनायक की वीरता, योग्यता और न्याय-परायणता सबके लिए आदर्श-रूप है। तभी इनकी वीरगाथाओं का स्मरण करके वीरहृदय फड़कने लगते हैं। शीतल और मन्द रक्त-वाहिनी धमनियों में भी एक बार गर्मी उत्पन्न हो जाती है।

ऊदल जब उन खम्भों को ले आये तब वेला ने कहा—"ऊदल ! हमारी चिता वहाँ पर बना दो जहाँ पर महोबे, कन्नौज, दिल्ली और बलख-बुखारे के राज्यों की सीमाएँ मिलती हैं। तुम्हीं हमारी चिता का अग्निसंस्कार भी करो।" उसी स्थान पर एक बड़ी चिता तैयार की गई। यह ख़बर बिजली की तरह सारे देश में फैल गई और दूर-दूर के मनुष्य उस सती के दर्शन के लिए वहाँ आ गये। उस समय पृथ्वीराज भी सेना के साथ पहुँचे। महोबे और कन्नौज के वीर वहाँ पहले ही से मौजूद थे।

ब्रह्मा की मृत्यु के कारण चन्द्रवंश का नाश हो जाने से ऊदल को बड़ा दुःख था। उस समय वे आत्महत्या करने को तैयार हो गये थे। वेला जब सोलहों शृङ्गार कर और पति के सिर को अपनी गोद में रख चिता पर जा बैठी तब पृथ्वीराज ने कहा—"इस चिता में चन्द्रवंशी ही अग्नि-संस्कार करें। यदि बनाफरों ने यह संस्कार किया तो मैं उनका नाश करके ही छोड़ूँगा।" यह सुनते ही ऊदल ने डङ्का बजवा दिया। अब वहाँ भयङ्कर युद्ध होने लगा। बात की बात में चारों ओर लोथें ही लोथें दिखाई पड़ने लगीं और ख़ून का समुद्र सा भर गया। इस युद्ध में लाखों वीर मारे गये। वीरों के

सिवा हज़ारों हाथी, घोड़े और ऊँट भी मारे गये। रणचण्डी अपने हाथों में रक्त से भरा हुआ खप्पर लिये ताण्डव करती हुई घूमने लगी। कुत्ते तथा गीदड़ दिन में ही आकर लाशों को खींचने लगे। मारू बाजों की ध्वनि और गीदड़ों के चीत्कारों से दिशाएँ प्रतिध्वनित होने लगीं। घायलों की मर्मस्पर्शी आहों से सुननेवालों के हृदय विदीर्ण होने लगे। सूर्यदेव भी इस दृश्य को देख कभी-कभी बदली की ओट में छिपने लगे। इसी समय चौंड़ा ने वीरवर ढेवा को सुरपुर पहुँचाया। यह देखकर जगनिक आगे बढ़े। उनको आते देख यमदूत मुस्कराये। उन्होंने भी वीर गति पाई।

अब वीर सैयद ने आगे बढ़कर भूरा मुग़ल को तलवार के घाट उतारा। फिर वीर भुगन्ता ने सैयद को, गङ्गाधर ठाकुर ने भुगन्ता को और धाँधू ने गङ्गाधर को मारकर स्वर्ग पहुँचाया। अपने मामा को मरा हुआ देख लाखन ने अपनी भुरुही को आगे बढ़ाया। थोड़ी ही देर के युद्ध में लाखन ने धाँधू का काम तमाम कर दिया। इसी समय पृथ्वीराज चौहान अपने नौ सौ हथिसवारों के साथ आगे बढ़े। उन्होंने लाखन को घेर लिया। यह देख लाखन ने अपनी हथिनी की सूँड़ में साँकल दे दी। वह साँकल घुमाने लगी। साँकल की मार से हाथी चिंघाड़-चिंघाड़कर भागने लगे। इस समय पृथ्वीराज ने लाखन को समझा-बुझाकर युद्ध से अलगकर देना अथवा उन्हें अपनी ओर मिला लेना चाहा परन्तु लाखन विश्वासघात करने को तैयार न हुए।

पृथ्वीराज लाखन को एक भी बात न मानते देख बहुत क्रुद्ध हुए। तब उन्होंने तुरन्त बाण चलाना शुरू किया। कहते हैं कि उनके तरकस में बड़े विकट बाईस बाण थे। पृथ्वीराज ने उन बाणों से लाखन के शरीर को चलनी की तरह छेद डाला। वीरवर लाखन ने अपने मित्र के लिए प्रसन्नता से प्राणों की बलि दे दी।

लाखन के जूझ जाने पर चौंड़ा ने ऊदल के सामने जाकर कहा—"ऊदल! तुम यहाँ युद्ध कर रहे हो, पर तुम्हारे पास रानी तिलका तथा कुसुमा की जो थाती थी वह सदा के लिए लुट गई। अब तुम कन्नौज में जाकर जयचन्द, रानी

तिलका तथा लाखन की रानी कुसुमा को अपना मुँह क्या लेकर दिखाओगे ?" यह सुनते ही ऊदल हक्का-बक्का से हो गये। उन्होंने जाकर जब लाखन को हौदे में मरा पड़ा पाया तो वे फूट-फूटकर रोने लगे। ऊदल ने विलाप में जो कहा था उसे कवि ने इस प्रकार लिखा है—

हाय विधाता ! यह कैसी भई, बिछुरे हमसे मित्र हमार।
बचन बँधे हमरे सँग आये, यहँ पर दीन्हें प्राण गँवाय ॥
अब कहँ मिलिहौ लाखन राना, सो तो नेकु देहु बतलाय।
माता मिलिहै नहिं देवै सी, भाइ न मिलै वीर मलखान ॥
मित्र कनौजी से ना मिलिहैं, चाहे कोटि धरौं औतार।
दिया बुझाय गयो कनउज को, अब हम दीहैं कौन जवाब ॥
तिलका कुसुमा सौं का कहिहैं, का जैचन्द को दिहैं जवाब।
हम कहि आये थे कनउज में, पहिले मरै उदयसिंह राय ॥
बात हमारी झूठी हुइ गई, हमरे जीवन को धिक्कार ॥

कहते हैं कि जब लाखन घेर लिये गये थे तब बेला ने अग्निसंस्कार होने में विलम्ब देखकर सत्य के बल से अग्नि उत्पन्न कर ली थी। वह आग धकधक करती हुई चिता में चारों ओर फैल गई और देखते-देखते बेला जलकर भस्म हो गई। न देखने योग्य इन दृश्यों को अपने सामने प्रत्यक्ष होते देख ऊदल के मन में बड़ी ग्लानि पैदा हुई। फिर वे शत्रुओं के ऊपर बड़े वेग से टूट पड़े। कहते हैं कि ऊदल ने चौंड़ा से डटकर युद्ध किया। चार घंटे के परस्पर युद्ध के बाद चौंड़ा की तलवार से ऊदल मारे गये। उनके मारे जाने की खबर पाकर आल्हा को होश*

---

* आल्हा-ऊदल ने शारदा देवी की बहुत दिनों तपस्या की थी। देवी प्रसन्न होकर उन दोनों के सामने प्रत्यक्ष हुई थीं। तभी उन्होंने आल्हा से संकेत करके कहा था "तुम अमर हो गये। अब तुम्हें कोई न मार सकेगा।" परन्तु आल्हा ने यह समझा कि यह वरदान ऊदल के लिए है। ऊदल जानते थे कि

आया। उन्होंने तुरन्त चौंड़ा के मोर्चे की ओर पचशावद को बढ़ाया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने चौंड़ा से डटकर युद्ध किया। थोड़ी देर में उन्हें ऊदल का स्मरण हो आया, तब उनकी आँखें लाल हो गईं। उन्होंने तुरन्त बढ़कर चौंड़ा को पकड़ लिया। कहते हैं कि आल्हा ने गला घोंटकर चौंड़ा को मार डाला। यह देखकर पृथ्वीराज को बहुत क्रोध आया। उन्होंने तुरन्त आदि-भयङ्कर को पचशावद के सामने लाकर खड़ा कर दिया। अब पृथ्वीराज को सामने देखकर आल्हा ने देवी की दी हुई अपनी तलवार निकाल ली। और पचशावद की सूँड़ में साँकल भी दे दी। आल्हा और इन्दल की तलवारों की मार से दिल्ली की फ़ौज के धुर्रें उड़ गये। शत्रु के सभी सैनिकों के मारे जाने और केवल चन्द्र भाट तथा पृथ्वीराज के बच जाने पर आल्हा पृथ्वीराज की ओर झपटे।

इसी समय महान् योगीश्वर बाबा गोरखनाथ वहाँ आ गये। उन्होंने तुरन्त आल्हा का हाथ पकड़ लिया और कहा—"बच्चा! रहने दो। तुम्हारी वीरता सराहनीय है। अब तुम इसे अपनाकर छोड़ दो और हमारे साथ तपस्या को चलो।" आल्हा ने गोरखनाथ को देखकर प्रणाम किया। फिर म्यान में तलवार करके इन्दल को साथ ले वे चल दिये।

महोवे में जब इस दुःखान्त नाटक की ख़बर पहुँची तब सुनवाँ, फुलवा आदि रानियाँ युद्धक्षेत्र में आईं और सबसे पूछने लगीं—"कहीं किसी ने आल्हा-ऊदल को देखा है?" यह सुनकर आल्हा ने इन्दल से कहा—"बेटा! अब घोर कलिकाल है; क्योंकि स्त्रियाँ अपने पतियों का नाम अपने मुँह से लेने लगी हैं।"

आल्हा को जाते देख विलाप करते-करते सुनवाँ ने उनका पीछा किया। उसने जब उनके घोड़े की पूँछ पकड़ ली तब आल्हा तलवार के वार से पूँछ काटकर हवा हो गये। सुनवाँ वहीं गिर पड़ी। सबके देखते-देखते आल्हा और इन्दल आँखों से ओझल हो गये।

आल्हा ही अमर हैं। अतः जब ऊदल मर गये तब आल्हा ने जाना कि मैं ही अमर हूँ। आल्हा का पुत्र इन्दल भी देवी के वरदान से अमर हो चुका था। आल्हा को शारदा देवी ने एक तलवार भी दी थी।

पाठको ! इसके बाद सुनवाँ, फुलवा, देवै और इन्दल की स्त्रियाँ वहीं चिता कर जल गईं। बनाफरों का वंश इस प्रकार जगत् से सदा के लिए लुप्त हो गया।

महाराज परमाल ने भी दुखी होकर प्राण त्याग दिये। मल्हना ने पारस पत्थर को सागर में फेंक दिया। गहने वग़ैरह सब चीज़ों के साथ वह सती हो गई। मल्हना के साथ ही महोबे के राजवंश की सभी स्त्रियाँ जलकर मर गईं। इस प्रकार चन्देलों, चौहानों, बनाफरों और राठौरों के राजवंश* का सत्यानाश हो गया।

---

* उरई का राजा माहिल जीवित तो रहा, परन्तु कीरतसागर पर भुँजरियों के युद्ध में अभयसिंह के मारे जाने से उसका भी नाश हो गया था।

विशेष शब्दों के अर्थ

ऐपनवारी—जब बारात पहुँच जाती है तब बारात का नाई अथवा बारी बारात के आने की सूचना देने को एक हँडिया या सकोरे में कुछ आवश्यक चीज़ें लेकर लड़कीवाले के यहाँ जाता है। इसी हँडिया या सकोरे को एपनवारी कहते हैं।

औभड़—युद्ध में जब वीर लोग शत्रु को दुचित्ता या अपने सन्निकट देखते थे तब ढाल का वार करके उसे नीचे गिरा देते थे। इस प्रकार ढाल की मार को ढाल की औभड़ मारना कहते हैं। इससे शत्रु मरता न था बल्कि गिर पड़ता था तब क़ैद कर लिया जाता था।

खोटा होना—यदि किसी त्यौहार के दिन घर का कोई आदमी मर जाय अथवा किसी प्रकार के अनिष्ट होने से वह त्यौहार न हो सके तो वह त्यौहार सदा के लिए खोटा हो जाता है अर्थात् वह त्यौहार फिर कभी नहीं मनाया जाता। यदि भविष्य में उसी खोटे त्यौहार के दिन किसी बालक का जन्म हो अथवा अकस्मात् कोई अन्य उत्सव या मङ्गल कार्य हो जाय तब वह त्यौहार फिर मनाया जाने लगता है। महोबे में पहले श्रावणी के दिन तालाब में भुजरियाँ सिराई जाती थीं परन्तु जब इस वर्ष युद्ध के कारण उस दिन न सिराई जा सकीं और दूसरे दिन अर्थात् भाद्र कृष्ण प्रतिपदा को सिराई गईं तब से महोबे में श्रावणी के दिन भुजरियाँ नहीं सिराई जातीं बल्कि प्रतिपदा के दिन सिराई जाती हैं।

चौथी—जब लड़की को उसकी ससुराल से पहली बार माँ-बाप या भाई आदि बुलाते हैं तो उस बुलाने को चौथी चलाना कहते हैं। पहली बार बिदा कराने को जाने के समय जो वस्तुएँ या पकवान उसकी ससुराल को ले जाये जाते हैं उनको भी चौथी कहते हैं।

जूझ का कङ्कन—प्राचीन काल में युद्ध को जाते समय वीर लोग अपनी माताओं, बहनों और पूज्य लोगों से उनके आशीर्वाद-स्वरूप एक धागा बँधवा लेते थे। बड़े राजा लोग धागे के स्थान पर सोने का कङ्कन पण्डितों द्वारा पहनते थे। ऊदल को अधिक वीर और युद्ध-प्रिय देखकर परमाल ने उन्हें एक क़ीमती जड़ाऊ कङ्कन पुरस्कार में दिया था। इसको ऊदल सदा पहने रहते थे।

इन्हीं कङ्कनों और धागे के रक्षाबन्धन को जूझ का कङ्कन कहते हैं। कहते हैं कि इन कङ्कनों को पहनकर जो कोई वीरगति पाता है, उसे स्वर्ग मिलता है।

धान देना—बहन के विवाह के समय भाई लोग अपनी बहन को प्राचीन प्रथा के अनुसार धान देते हैं। उसी समय ये धान किसी आवश्यक काम में आते हैं। धान देनेवाले को वर-पक्ष से बहुत से उपहार मिलते हैं।

तोरणद्वार—राजधानियों में जो शहर-पनाह के बड़े-बड़े दरवाज़े होते हैं उन्हें तोरणद्वार कहते हैं।

पखारना—धोना।

धूरा—नगर की सीमा जहाँ से आरम्भ होती है वह स्थान।

परिछन—वर जब विवाह करने के बाद अपनी दुलहिन को लेकर अपने घर के द्वार पर आता है, तब वर की माँ अथवा उसके घर की कोई वृद्धा स्त्री द्वार पर आकर दूलह-दुलहिन का स्वागत करके उसकी आरती उतारती है तथा दुलहिन का मुख देखकर उसे क़ीमती गहने वग़ैरह लेती है। यही बहू का परछन है।

पक्ष-द्वार—चोर दरवाजे। बड़े-बड़े क़िलों में पीछे की ओर छोटे-छोटे गुप्त द्वार बने होते हैं। उनका रास्ता और भेद मुख्य पुरुषों को ही ज्ञात रहता है। सङ्कट के समय राज-वंश के लोग इन्हीं द्वारों से निकलकर भाग जाते हैं।

भात खाना—भाँवरें पड़ने के दूसरे दिन बारात को कच्ची रसोई (दाल, चावल, रोटी आदि) की ज्यौनार दी जाती है। इसी ज्यौनार को भात खाना कहते हैं।

भुजरियाँ—हिन्दुओं के यहाँ श्रावण-शुक्ल नवमी को ढाक के पत्तों के दोनों में मिट्टी भरकर जौ बोये जाते हैं। तीन-चार दिन में जौ के अङ्कुर निकलकर बड़े-बड़े हो जाते हैं। इन्हीं को भुजरियाँ कहते हैं। ये भुजरियाँ श्रावणी के दिन तालावों या नदियों में सिरा दी जाती हैं। महोवे और बुन्देलखण्ड में वे प्रतिपदा को सिराई जाती हैं।

भेदिनियाँ—प्रत्येक रजवाड़ों में गुप्तचर रहा करते थे। इनमें प्रायः स्त्रियाँ भी होती थीं। इनको भेदिनी कहते हैं।

रुण्ड का तलवार चलाना—प्राचीन काल में जब बड़े-बड़े वीरों के सिर कट जाते थे तब कहते हैं कि, उनके कटे हुए धड़ तलवार लेकर शत्रु का संहार करते थे। उन धड़ों या रुण्डों पर नीले कपड़े की झण्डियाँ फेरी जाने पर धड़ निर्जीव होकर गिर पड़ते थे।

समधौरा—दूलह-दुलहिन का विवाह हो जाने पर ज्यौनारों के दिन या बिदा के दिन दोनों समधी (वर का पिता और कन्या का पिता) एक दूसरे की छाती में दही लगाकर पान चिपकाते हैं और फिर आलिङ्गन करते हैं। इस प्रथा को समधौरा और कहीं-कहीं अङ्क-माला भी कहते हैं।

शहवाला—पालकी में दूलह के साथ जो उसका छोटा भाई या कोई उससे छोटा लड़का बैठकर जाता है, उसे शहवाला कहते हैं।

सिंहपौरि—महलों के मुख्य द्वार का कक्ष।

सेल—यह वल्लम की तरह का एक अस्त्र होता है।
